बुखार का एक उपन्यास। डिस्कवरी & हिस्टरिया

कलकत्ता गुणसूत्र

"मन मोह लेने वाला...एक दिमाग घुमा देने वाली साज़िश की कहानी।"
-द न्यूयॉर्क टाइम्स बुक रिव्यू

उन्होंने कहा, "हर शहर के अपने राज़ होते हैं, लेकिन कलकत्ता, जिसका काम ज़्यादा करना है, में इतने राज़ हैं कि यह किसी भी दूसरे शहर से ज़्यादा राज़ है..."

अमिताव घोष

A NOVEL OF FEVERS, DELIRIUM & DISCOVERY

THE CALCUTTA CHROMOSOME

"Mesmerizing…a mind-boggling conspiracy saga."
—The New York Times Book Review

"'Every city has its secrets,' he began, 'but Calcutta, whose vocation is excess, has so many that it is more secret than any other…'"

AMITAV GHOSH

अल्फ्रेड ए. नोपफ, कनाडा द्वारा प्रकाशित
कॉपीराइट © 1995 अमिताव घोष द्वारा
अंतर्राष्ट्रीय और पैन-अमेरिकन कॉपीराइट के अंतर्गत सभी अधिकार सुरक्षित हैं।
सम्मेलन। कनाडा में अल्फ्रेड ए. नोपफ कनाडा, टोरंटो द्वारा और साथ ही ग्रेट ब्रिटेन में
मैकमिलन के एक प्रकाशन पिकाडोर द्वारा प्रकाशित।
1996 में लंदन स्थित पब्लिशर्स लिमिटेड द्वारा प्रकाशित। पहली बार 1995 में रवि
दयाल द्वारा प्रकाशित।
प्रकाशक, नई दिल्ली। वितरक: रैंडम हाउस ऑफ कनाडा।
माइटेड, टोरंटो।
कैनेडियन कैटलॉगिंग इन पब्लिकेशन डेटा घोष, अमिताव
कलकत्ता क्रोमोसोम: बुखार, प्रलाप और खोज का एक उपन्यास
ISBN ()-3~)4-28193-4
1. शीर्षक
PR9499.3.G536C35 1996 823 C96-930491-9
पहला कनाडाई संस्करण
टाइपसेट hy CentraCct Limited, Cambridge l'rinu-d hy Mackuys of
चैथम, तस्वीर, चैथम, केंट

कोएली के लिए

आज के दिन ईश्वर दया कर रहा है
मेरे हाथ में रखा है
एक अद्भुत बात; और ईश्वर
आपकी प्रशंसा हो। उनके आदेश पर,

उसके गुप्त कार्यों की खोज में
आँसुओं और साँस फूलते हुए,
मुझे तुम्हारे धूर्त बीज मिल गए हैं,
हे लाखों हत्या करने वाली मृत्यु!

सर रोनाल्ड रॉस
(चिकित्सा के लिए नोबेल पुरस्कार, 1902)

20 अगस्त: मच्छर दिवस

अध्याय 1

अगर सिस्टम रुका न होता तो अंतर को कभी पता ही नहीं चलता कि उसकी स्क्रीन पर दिख रहा कागज़ का टुकड़ा किसी पहचान पत्र का अवशेष है। ऐसा लग रहा था मानो उसे आग से बचाया गया हो: उसकी प्लास्टिक की परत किनारों से मुड़ी और पिघल गई थी। अक्षर लगभग अस्पष्ट थे और तस्वीर कालिख के धब्बे के नीचे गायब हो गई थी। लेकिन चार इंच की धातु की चेन किसी तरह उससे जुड़ी हुई थी: वह ऊपर बाईं ओर के एक छेद से जंग लगे लूप की तरह लटक रही थी, मानो कोई लटकती हुई पूंछ हो। सिस्टम के रुकने का कारण कार्ड नहीं, बल्कि चेन थी।

यह कार्ड उन नियमित इन्वेंट्री में से एक में मिला, जो एक लयबद्ध नियमितता के साथ पूरी दुनिया में चलती रहती थी। अंटार को इसका कोई कारण समझ नहीं आया, सिवाय इसके कि सिस्टम यही सबसे अच्छा करता था। एक बार शुरू होने के बाद, यह घंटों तक दस्तावेजों और वस्तुओं का अंतहीन सिलसिला जारी रखता था, केवल तभी रुकता था जब इसे कोई ऐसी चीज मिल जाती थी जिसे यह दर्ज नहीं कर सकता था: आमतौर पर सबसे मामूली चीजें।

एक बार यह कांच का पेपरवेट था, जिसे उल्टा करने पर बर्फ के टुकड़े गिरने लगते हैं; दूसरी बार यह अरल सागर के ठीक दक्षिण में स्थित एक सिंचाई निरीक्षक के कार्यालय से लाई गई सुधारक तरल पदार्थ की बोतल थी। दोनों बार मशीन एक नियंत्रित उन्माद में चली गई और एक के बाद एक सवाल पूछने लगी।

अंतर ऐसे बच्चों से मिल चुका था जो ऐसे ही सवाल पूछते थे: क्यों? क्या? कब? कहाँ? कैसे? लेकिन बच्चे तो जिज्ञासावश पूछते हैं; इन AVA/IIe सिस्टम के साथ कुछ और ही बात थी—कुछ ऐसा जिसे वह आत्म-सुधार की एक बनावटी ललक ही कह सकता था। वह पिछले कुछ सालों से अपनी Ava का इस्तेमाल कर रहा था और उसकी खुद को बेहतर बनाने की ललक देखकर अब भी अचंभित था। जो भी चीज़ वह पहचान नहीं पाती थी, उसे स्क्रीन पर बारीकी से विश्लेषण करती, छवियों को बार-बार घुमाती, उलट-पलट करती, एक तरफ रखती और फिर भी बारीकियों को और भी ज़्यादा परिष्कृत करती जाती।

जब तक अंतर उसे स्क्रीन पर चल रही किसी भी चीज़ के बारे में सब कुछ नहीं बता देता, तब तक वह रुकने वाली नहीं थी। उसने उसे अपने ज्ञानकोशों की ओर मोड़ने की कोशिश की, लेकिन वह काफी नहीं था। कहीं न कहीं उसे वास्तविक समय की जानकारी खोजने के लिए प्रोग्राम किया गया था, और वह वही हासिल करने के लिए दृढ़ थी। उससे आखिरी, अर्थहीन जानकारी निचोड़ लेने के बाद, वह अपनी स्क्रीन पर मौजूद वस्तु को एक अजीब मानवीय आत्मसंतुष्टि के साथ अंतिम बार घुमाती, और फिर उसे अपनी स्मृति के अनंत अंधकार में धकेल देती।

उस समय पेपरवेट के साथ उसे यह समझने में पूरा एक मिनट लग गया कि क्या हो रहा है। वह पढ़ रहा था: उसे एक ऐसा उपकरण दिया गया था जो किसी पत्रिका या किताब के पन्नों को कमरे की दूर वाली दीवार पर प्रोजेक्ट कर सकता था। जब तक

वह अपना सिर ज्यादा नहीं हिलाता और सही बटन को नियमित रूप से दबाता रहता, आवा को पता नहीं चलता कि उसका पूरा ध्यान उस पर नहीं है। यह उपकरण बेशक गैरकानूनी था, क्योंकि यह उसके जैसे लोगों के लिए बनाया गया था, जो घर पर अकेले काम करते थे।

पहली बार तो एवा ने ध्यान नहीं दिया, लेकिन सुधार करने वाले तरल पदार्थ के साथ फिर वही हुआ: वह दीवार को घूरते हुए पढ़ रहा था, तभी वह एकदम शांत हो गई। फिर अचानक उसकी स्क्रीन पर चेतावनी चमकने लगीं। उसने झट से किताब हटा दी, लेकिन एवा पहले ही समझ चुकी थी कि कुछ गड़बड़ है। सप्ताह के अंत में, उसे अपने नियोक्ता, अंतर्राष्ट्रीय जल परिषद से एक नोटिस मिला, जिसमें बताया गया था कि 'उत्पादकता में गिरावट' के कारण उसके वेतन में कटौती की गई है, और चेतावनी दी गई थी कि आगे और गिरावट आने पर उसकी सेवानिवृत्ति सुविधाओं में भी कमी हो सकती है।

उसके बाद उसने और जोखिम लेने की हिम्मत नहीं की। उस शाम वह गैजेट अपने साथ लेकर पेन स्टेशन तक अपनी एक घंटे की रोज़ाना की पैदल यात्रा पर गया। वह उसे लॉन्ग आइलैंड रेलरोड के टिकट काउंटर के पास स्थित अपने नियमित डोनट की दुकान पर ले गया और उसे उस सूडानी बैंक-कैरियर को लौटा दिया जिसने उसे उधार दिया था। अंटार की सेवानिवृत्ति में केवल एक वर्ष शेष था और अगर उसकी पेंशन दरें अब कम हो गईं तो वह जानता था कि वह उन्हें फिर से बढ़ा नहीं पाएगा। वर्षों से वह न्यूयॉर्क छोड़कर मिस्र वापस जाने का सपना देख रहा था: इस बदबूदार अपार्टमेंट से बाहर निकलने का, जहाँ सड़क पर देखने पर उसे केवल बंद खिड़कियाँ ही दिखाई देती थीं, जो लगभग उसकी अपनी इमारत की तरह ही खाली थीं।

उसके बाद उसने एवा को नीचा दिखाने की कोशिश करना छोड़ दिया। वह अपने काम पर लौट गया, उन अंतहीन इन्वेंट्री को धैर्यपूर्वक देखता रहा, और सोचता रहा कि आखिर ये सब किस लिए है।

कई साल पहले, जब अंटार मिस्र में एक लड़का था, तब एक पुरातत्वविद् उस छोटे से गाँव में आ गई जहाँ उसका परिवार रहता था – नील नदी के पश्चिमी छोर पर, रेगिस्तान से पुनः प्राप्त की गई ज़मीन की एक पट्टी पर बसा हुआ। वह पुरातत्वविद् एक महिला थी, एक बहुत बूढ़ी हंगेरियन प्रवासी, जिसकी त्वचा सूखे यूकेलिप्टस के पत्ते की तरह नाजुक और घनी नसों वाली थी। कोई भी उसका नाम ठीक से नहीं बोल पाता था, इसलिए गाँव के बच्चों ने उसे अल-मगारी, यानी हंगेरियन नाम दिया।

हंगरी की रहने वाली वह महिला कुछ महीनों के अंतराल में कई बार गाँव आई। शुरुआती कुछ मौकों पर वह अपने साथ सहायकों और मजदूरों की एक छोटी टीम लेकर आती थी। वह एक विशाल टोपी के नीचे, कैनवास की पीठ वाली कुर्सी पर बैठती और चांदी की नोक वाली छड़ी से खुदाई का काम निर्देशित करती। कभी-कभी वह स्कूल के बाद या जब उनके पिता उन्हें खेतों से छुट्टी देते, तब अंटार और उसके चचेरे भाइयों को मदद करने के लिए पैसे देती थी। बाद में लड़के एक घेरे में बैठ जाते और उसे ब्रश और चिमटी से रेत और मिट्टी छानते हुए और आवर्धक लेंस से मिट्टी की जांच करते हुए देखते।

'ये क्या कर रही है?' वे एक-दूसरे से पूछते। 'ये सब किसलिए?' ये सवाल अक्सर अंतर से पूछे जाते थे, क्योंकि स्कूल में वही एक ऐसा लड़का था जिसके पास हमेशा जवाब होते थे। सच तो ये था कि अंतर को भी नहीं पता था; वो भी उतना ही हैरान था जितना वे सब थे। लेकिन उसे अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखनी थी, इसलिए एक दिन उसने गहरी सांस ली और कहा: 'मुझे पता है कि वे क्या कर रहे हैं: वे धूल गिन रहे हैं; वे धूल गिनने वाले हैं।'
'क्या?' बाकी सबने हैरानी से पूछा, तो उसने समझाया कि वह हंगेरियन व्यक्ति मिट्टी को उसी तरह गिन रहा था जैसे बूढ़े लोग प्रार्थना की माला गिनते हैं। सबने उसकी बात मान ली क्योंकि वह गाँव का सबसे होशियार लड़का था।
एक दोपहर, अंटार के मन में अचानक एक स्मृति कौंध गई - रेत, मिट्टी की ईंटों और चरमराते पानी के पहियों का एक चमकीला, धूप से जगमगाता दृश्य। वह खुद को जगाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा था, तभी एक लंबी सूची उसकी आंखों के सामने से गुजरी। यह सूची किसी प्रशासनिक भवन की थी, जिसे अंतर्राष्ट्रीय जल परिषद ने अपने नियंत्रण में ले रखा था - ओवाम्बूलैंड या बारोट्सलैंड में स्थित कोई छोटा-सा कृषि विस्तार कार्यालय। जांच अधिकारियों ने अवा में जो कुछ भी मिला, सब कुछ खंगाला था - बीसवीं सदी के सरकारी कामकाज का हर अंतहीन कचरा - पेपर क्लिप, फाइल कवर, डिस्क। ऐसा लगता था मानो उन्हें विश्वास था कि ऐसी जगहों पर मिली हर चीज का दुनिया की जल आपूर्ति के चित्रण से कोई न कोई संबंध है।
अंतर को कभी समझ नहीं आया था कि वे इतनी मेहनत क्यों कर रहे थे, लेकिन उस सुबह पुरातत्वविद् के बारे में सोचते हुए, उसे अचानक समझ आ गया। वे अपने विशाल जल-नियंत्रण प्रयोगों से इतिहास रच रहे थे: वे अपने किए गए हर काम और भविष्य में किए जाने वाले हर काम का ब्यौरा दर्ज करना चाहते थे। वे चाहते थे कि कोई इतिहासकार उनकी मिट्टी की छानबीन करके अर्थ निकाले, लेकिन वे खुद ऐसा करना चाहते थे: वे अपनी मिट्टी में अपने अर्थ भरना चाहते थे।
वह चौंककर उठ बैठा और अरबी में बोला: 'तुम यही हो, आवा, एक धूल गिनने वाली, 'अद्दाद अल-तुराब।'
उसने ये बात दबी आवाज़ में कही, लेकिन आवा ने फिर भी सुन ली। उसे लगा मानो आवा सचमुच चौंक गई हो: उसकी 'आँख', एक लेज़र-गाइडेड सर्विलांस कैमरा, उस पर घूम गई और स्क्रीन पर स्टैंडबाय ग्राफ़िक्स धुंधले हो गए। फिर आवा अरबी वाक्यांशों का अनुवाद करने लगी, दुनिया की भाषाओं का अनुवाद जनसंख्या के घटते क्रम में करती हुई: मंदारिन, स्पैनिश, अंग्रेज़ी, हिंदी, अरबी, बंगाली... पहले तो मज़ा आया, लेकिन जब ऊपरी अमेज़न की बोलियों की बारी आई तो अंटार का सब्र टूट गया। 'दिखावा करना बंद करो,' वह चिल्लाया। 'तुम्हें मुझे ये दिखाने की ज़रूरत नहीं है कि तुम्हें सब कुछ पता है। इस्कुटी; चुप रहो।'
लेकिन आवा ने ही उसे चुप करा दिया, शांत भाव से वही शब्द उसे वापस सुना दिए। अंटार विस्मय से सुनता रहा जब ऊपरी अमेज़न के घने जंगलों में 'चुप रहो' की आवाज़ गूंज उठी।

अध्याय दो

अंतर साइन ऑफ करने का इंतज़ार कर रहा था कि तभी आवा की स्क्रीन पर कार्ड और चेन दिखाई दिए। उसकी नज़र बार-बार टाइमलाइन पर जा रही थी; वह कुछ मिनट पहले छुट्टी लेना चाहता था। उसकी पड़ोसी, एक युवती जो कुछ महीने पहले ही बगल वाले घर में रहने आई थी, उस शाम खुद ही उसके घर आ गई थी। वह खाना लेकर आने वाली थी। अंतर को उसके आने से पहले कुछ समय अकेले चाहिए था: उसने नहाने और पेन स्टेशन तक अपनी रोज़ की शाम की सैर पर जाने की योजना बनाई थी। उसकी छुट्टी होने में अभी आधा घंटा बाकी था, उसका समय छह बजे था। अंतर बेचैन था, इसलिए शायद उसने कार्ड पर दोबारा नज़र भी नहीं डाली होती; अगर उसे अपने हाल पर छोड़ दिया जाता, तो वह एक बटन दबाकर उसे अवा के दिल के असीम अंधकार में फेंक देता। अवा जब उस धातु की चेन को देखकर अपनी पहचान खो बैठी, तभी अंतर ने उस कार्ड को गौर से देखा।

यह चेन बहुत छोटे-छोटे आपस में जुड़े धातु के गोलों से बनी थी। इस पर खरोंचें और जंग लगी हुई थी, और इसकी निकल परत पूरी तरह से उतर चुकी थी, लेकिन अंटार ने इसे देखते ही पहचान लिया कि यह क्या है। उसने खुद भी लाइफवॉच में काम करते समय कई सालों तक ऐसी ही चेन पहनी थी।

लाइफवॉच एक छोटा लेकिन सम्मानित गैर-लाभकारी संगठन था जो वैश्विक जन स्वास्थ्य परामर्श और महामारी विज्ञान डेटा बैंक के रूप में कार्य करता था। अंटार ने अपने जीवन का अधिकांश समय वहाँ एक प्रोग्रामर और सिस्टम विश्लेषक के रूप में बिताया था। एक तरह से वह अभी भी वहीं काम कर रहा था, सिवाय इसके कि लाइफवॉच, कई अन्य स्वतंत्र एजेंसियों के साथ, नवगठित अंतर्राष्ट्रीय जल परिषद के विशाल जन स्वास्थ्य विभाग में समाहित हो चुका था। अपने अधिकांश सहयोगियों की तरह, अंटार को भी सेवानिवृत्ति तक अपना गुजारा चलाने के लिए एक महत्वहीन 'घर से काम' करने की नौकरी दी गई थी। वह तकनीकी रूप से अभी भी परिषद के वेतनभोगी कर्मचारियों में से एक था, लेकिन उसने कभी भी उसके न्यूयॉर्क कार्यालयों में कदम नहीं रखा था। उसे जाने का कोई कारण नहीं था: वे जब चाहें, आवा के माध्यम से उससे संवाद करते थे, जो कि अक्सर नहीं होता था।

अंतर को वह समय याद था जब लाइफवॉच में बारकोड वाले पहचान पत्रों के साथ-साथ ये छोटी-छोटी चेन भी अनिवार्य रूप से दी जाती थीं। कुछ लोग अपने कार्ड क्लिप पर पहनना पसंद करते थे; उसे खुद चेन ही पसंद थीं। उसे अपनी उंगलियों के नाखूनों में धातु की गेंदों का स्पर्श अच्छा लगता था; वे मानो छोटी-छोटी चिंता दूर करने वाली मालाएँ थीं।

वह कुछ पल के लिए उस चेन पर टकटकी लगाए रहा। ये चेन अब कई सालों से चलन में नहीं थीं और उसे ठीक से याद नहीं था कि इन्हें पहली बार कब पेश किया गया था: शायद 1980 के दशक में। उस समय तक वह लाइफवॉच में दस साल से अधिक समय से काम कर रहा था। उसने मॉस्को के पैट्रिस लुमुम्बा विश्वविद्यालय से स्नातक होने के तुरंत बाद ज्वाइन किया था: ये वो दिन थे जब रूसी सरकारें अभी भी

गरीब देशों के छात्रों को छात्रवृत्तियां दे रही थीं; जब लीनियर प्रोग्रामिंग की पढ़ाई के लिए मॉस्को दुनिया का सबसे अच्छा स्थान था। लाइफवॉच ने अपने खातों को ऑनलाइन करने के लिए एक प्रोग्रामर और विश्लेषक के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विज्ञापन दिया था। यह संख्याओं का हिसाब-किताब करने वाला काम था, जिसके लिए उसे प्रशिक्षित नहीं किया गया था। लेकिन, दूसरी ओर, यह सुरक्षित, स्थिर और स्थायी था, और इसमें अमेरिकी वेतन और गारंटीशुदा वीजा की पेशकश की गई थी। उसने तुरंत आवेदन कर दिया, हालांकि उसे नौकरी मिलने की उम्मीद नहीं थी: वह जानता था कि प्रतिस्पर्धा कड़ी होगी। जैसा कि हुआ, वह शॉर्टलिस्ट में तीसरे स्थान पर था, लेकिन उससे आगे के दो लोगों को अन्य प्रस्ताव मिल गए।

अंतर ने अपनी उंगलियों को रगड़ा, पुरानी यादों में खो गया, उन जंजीरों और लैमिनेटेड प्लास्टिक आईडी कार्डों का एहसास उसे याद आ गया। उसे याद आया कि जंजीरें दो साइज़ में आती थीं: उन्हें गले में पहना जा सकता था या बटनहोल में पिरोया जा सकता था। उसे हमेशा छोटी जंजीरें ही पसंद थीं।

उसने आवा के सवालों के जवाब टाइप करने में काफी समय लिया। इसी बीच आवा कार्ड से खेल रही थी, उसे पलट रही थी और उसके हिस्सों को बेतरतीब क्रम में उड़ा रही थी।

अचानक मॉनिटर पर एक प्रतीक चमक उठा, जो एक कोण पर तेजी से आगे बढ़ा, घूमता हुआ और छोटा होता चला गया। स्क्रीन के किनारे से बाहर निकलने से ठीक पहले अंतर की नज़र उस पर पड़ी। वह कीबोर्ड की ओर झपटा और धीरे-धीरे पीछे मुड़ा। जब उसने प्रतीक को केंद्र में देखा, तो उसने फ्रेम को रोक दिया।

लाइफवॉच का जाना-पहचाना लोगो, दो आपस में गुंथी हुई लॉरेल की मालाओं की एक सुंदर और सुव्यवस्थित छवि, उसे देखे हुए कई साल बीत गए थे। और अब यह उसके सामने था, एक खोए हुए पहचान पत्र के नीचे से निकाला हुआ। अंटार ने आवा की स्क्रीन पर कार्ड को पलटा, उस प्रतीक को देखकर उत्सुक हो गया, जो इतना जाना-पहचाना था और इतने लंबे समय से भुला दिया गया था। उसने कार्ड को वापस स्क्रीन पर असली आकार में लाया और धीरे-धीरे ज़ूम किया। इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता था: यह एक लाइफवॉच आईडी थी।

उसने अंदाज़ा लगाया कि यह कार्ड अस्सी के दशक के मध्य या नब्बे के दशक के शुरुआती दौर का होगा – उस समय जब उसने स्प्रेडशीट पर इतना समय बिताया था कि उसे लाइफ वॉच के पेरोल पर आने वाले हर व्यक्ति का नाम याद हो गया था। अपने सामने लटके उस पुराने, गंदे कार्ड को देखकर वह सोचने लगा कि यह किसका रहा होगा। उसे पूरा यकीन था कि वह नाम तो जानता ही होगा – कम से कम इतना तो ज़रूर। हो सकता है कि वह तस्वीर में दिख रहे चेहरे को भी पहचान ले।

बिना सोचे-समझे उसने एक के बाद एक कमांड टाइप कर दिए। कार्ड को दोबारा बनाने और मूल कार्ड को बहाल करने की प्रक्रिया शुरू होने पर आवा की स्क्रीन क्षण भर के लिए खाली हो गई। लगभग तुरंत ही अंटार को अपने इस आदेश पर पछतावा हुआ। इस प्रक्रिया में समय लग सकता था, और साइन-ऑफ का समय अब सिर्फ पच्चीस मिनट दूर था। उसने गुस्से में अपनी कुर्सी को एक लात मारी। जैसे ही कुर्सी

घूमी, उसने देखा कि स्क्रीन पर 'उत्पत्ति बिंदु' के नीचे एक शब्द दिखाई दिया है। उसने अपना पैर ज़मीन पर पटका और कुर्सी को रोक दिया।
वह आमतौर पर यह जाँचने की ज़हमत नहीं उठाता था कि माल कहाँ से आया है: इतनी अधिक मात्रा में माल आता था कि इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता था। लेकिन अब वह उत्सुक था, खासकर जब उसकी स्क्रीन पर 'ल्हासा' दिखाई दिया। उसने अस्सी और नब्बे के दशक को याद करने की कोशिश की और सोचा कि क्या उस समय लाइफ वॉच का वहाँ कोई कार्यालय था। तभी उसने देखा कि 'ल्हासा' शब्द के आगे एक चिन्ह लगा हुआ था, जिससे पता चलता था कि यह वस्तु केवल सूचना प्रवाह में शामिल हुई है। यह कहीं और से आई है।
उसने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि उसके बैठक कक्ष में, कुछ ही दूरी पर, एक विशाल सफेद त्रिकोण की धुंधली आकृति उभरने लगी थी। आवा ने पुनर्निर्मित कार्ड का एक होलोग्राफिक प्रक्षेपण बनाना शुरू कर दिया था: धुंधला त्रिकोण कार्ड के ऊपरी बाएँ कोने को दर्शाता था, जो बहुत बड़ा दिखाई दे रहा था। वह अपनी कुर्सी के बाजूबंदों पर उंगलियाँ थपथपाने लगा, यह सोचते हुए कि क्या उसमें आवा से यह पूछने की हिम्मत या इच्छा है कि कार्ड कहाँ मिला था। यह बताना हमेशा मुश्किल होता था कि कोई चीज़ ल्हासा से कब आती है।
ल्हासा, अंतर्राष्ट्रीय जल परिषद का एशिया के लिए महाद्वीपीय कमान केंद्र था। परिषद के अधिकारी इसे एशिया की वास्तविक राजधानी कहते थे क्योंकि इसे यह विशिष्ट गौरव प्राप्त था कि यह दुनिया का एकमात्र कमान केंद्र था जो एक नहीं बल्कि कई प्रमुख जलक्षेत्रों - गंगा-ब्रह्मपुत्र, मेकांग, ट्रांस-यांग्त्ज़ी और ह्वांग-हो - का प्रभारी था। महाद्वीप के पूर्वी भाग के लिए परिषद की सभी सूचनाएँ ल्हासा से होकर गुजरती थीं। इसका अर्थ यह था कि कार्ड कराची और व्लादिवोस्तोक के बीच कहीं भी सिस्टम में प्रवेश कर सकता था।
उसने एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा। आवा को उम्मीद से ज़्यादा समय लग रहा था: वह कार्ड के ऊपरी दाहिने कोने पर फ़ोटो खींचना अभी शुरू ही कर रही थी। उसने टाइमलाइन पर नज़र डाली। अगर उसे अपनी पड़ोसी तारा के आने से पहले पेन स्टेशन तक पैदल जाना था, तो उसके पास ज़्यादा समय नहीं था।
आवा के तस्वीर को जोड़ने का इंतज़ार करते हुए, उसने यूँ ही एक और निर्देश टाइप किया, जिसमें कार्ड के मूल स्थान के बारे में विस्तृत जानकारी माँगी गई थी। आवा को सामान्य से थोड़ा ज़्यादा समय लगा, लेकिन कुछ ही सेकंड में उसने उस शहर का नाम बता दिया जहाँ कार्ड मिला था।
यह कलकत्ता था।

अध्याय 3

आवा के कार्ड का काम पूरा करने का इंतज़ार करते हुए, अंतर ने अपनी कुर्सी को पहियों पर पीछे धकेला, ताकि वह अपने लिविंग रूम के दरवाज़े से होते हुए अपनी रसोई में देख सके। सिंक के ऊपर एक खिड़की थी, और गर्दन उठाकर देखने पर उसे

इमारत के हवादार हिस्से के दूसरी तरफ तारा के अपार्टमेंट का पिछला भाग मुश्किल से दिखाई दे रहा था। उसे यह देखकर राहत मिली कि वह अभी तक घर नहीं आई थी; अपार्टमेंट में अभी भी अंधेरा था।

वह जम्हाई लेते हुए कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया। पेन स्टेशन की जगमगाती डोनट की दुकान पर उसका इंतज़ार कर रही मीठी, गाढ़ी चाय के गर्म प्याले के ख्याल से उसकी आँखें धुंधली होने लगीं; उन दूसरे नियमित ग्राहकों के ख्याल से जो कभी-कभी प्लास्टिक की मेज के चारों ओर बैठने के लिए आते थे – सूडानी बैंक-कैलर, चेल्सी के एक पुराने कपड़ों की दुकान में काम करने वाली सजी-धजी गुयाना की महिला, और मेट्रो स्टेशन के न्यूज़स्टैंड पर काम करने वाला युवा बांग्लादेशी लड़का। अक्सर वे दुकान के पीछे एक गोल प्लास्टिक की मेज के चारों ओर सौहार्दपूर्ण चुप्पी में बैठे रहते थे, कागज़ के कपों में चाय या कॉफ़ी पीते हुए एक छोटे से पोर्टेबल मॉनिटर पर अरबी और हिंदी फ़िल्मों के टेप देखते थे। लेकिन कभी-कभार कोई चर्चा होती थी, या वे एक-दूसरे को टिप्स देते थे – कहीं बिक रहे किसी गैजेट के बारे में, या मेट्रो टोकन पर बचत करने के किसी नए तरीके के बारे में।

अंतर डोनट की दुकान पर जाने लगा था क्योंकि उस फ्रैंचाइज़ का मालिक उसी की तरह मिस्र का था। ऐसा नहीं था कि उसे अरबी बोलने की कमी खलती थी: बिलकुल नहीं। उसे दिन भर आवा से अरबी बोलने का भरपूर मौका मिलता था। जब से आवा को 'स्थानीयकरण' का अनुकरण करने के लिए प्रोग्राम किया गया था, तब से वह उससे नील डेल्टा की उपयुक्त ग्रामीण बोली में बात करती थी। उसकी आवाज़ को दोहराने की क्षमता को इतना उन्नत कर दिया गया था कि वह बोले जा रहे शब्दों के अनुसार अपनी आवाज़ का लहजा भी बदल सकती थी - चाहे वह युवा हो या बूढ़ा, पुरुष हो या महिला। अंतर को अपनी बोली का ज्ञान कम हो गया था; वह चौदह साल का था जब उसने अपना गाँव छोड़कर काहिरा का रुख किया और फिर कभी वापस नहीं लौटा। कभी-कभी उसे आवा की बात समझने में दिक्कत होती थी। और कभी-कभी वह किसी अनोखे भाव या मुहावरे में अपने किसी पुराने रिश्तेदार की बोली पहचान लेता था।

शाम के समय उन आवाज़ों से छुटकारा पाना राहत की बात थी; उस उजाड़, ठंडी इमारत से बाहर निकलना, जो जंग लगे स्टील की सीढ़ियों के जाल में घिरी हुई थी; उसकी सीढ़ियों और गलियारों की धातुई गूंज से दूर जाना। उस हवा से भरी सड़क से निकलकर पेन स्टेशन के जगमगाते रास्तों में चलना, टिकट काउंटरों के आसपास उमड़ती भीड़, पैरों के नीचे ट्रेनों की गड़गड़ाहट, और कंक्रीट में गूंजते एक सड़क वादक के डिडगेरिडू की गहरी, गूंजती ध्वनि, मानो किसी तेज़ धड़कन की तरह, एक अलग ही ताजगी और जादू का एहसास कराती थी।

और हां, चाय तो थी ही। मालिक ने खास तौर पर अपने और अंतर के लिए एक टूटे-फूटे एनामेल के बर्तन में चाय बनाई, जो गाढ़ी और सिरप जैसी थी, जिसमें पुदीने का हल्का सा स्वाद था - बिल्कुल वैसी ही जैसी अंतर को अपने बचपन की याद थी। उसने अपनी गीली कॉलर पर उंगली फेर ली। आज अंदर बहुत उमस थी: खिड़की बंद करने पर बहुत गर्मी लगती थी और खुली छोड़ने पर उमस। नीचे, इमारत का मुख्य

दरवाज़ा एक लय में खुल और बंद हो रहा था: हर बार जब वह ज़ोर से बंद होता, तो उसे फर्श से उसकी आवाज़ सुनाई देती थी। पहली तीन मंज़िलों पर बने गोदामों और भंडारण कक्षों में काम करने वाले लोग अब घर जा रहे थे, आने वाले लंबे सप्ताहांत के कारण थोड़ा जल्दी। वह उन्हें सड़क पर एक-दूसरे को आवाज़ लगाते हुए सुन सकता था, जब वे 7वीं एवेन्यू पर स्थित मेट्रो स्टेशन की ओर चल रहे थे। जब भी दरवाज़े की आवाज़ बंद होती और इमारत में सन्नाटा छा जाता, तो उसे हमेशा राहत मिलती थी।
एक ज़माने में इस इमारत में सिर्फ़ अपार्टमेंट ही अपार्टमेंट थे, और सभी परिवारों को किराए पर दिए गए थे: बड़े-बड़े, शोरगुल मचाने वाले मध्य पूर्वी और मध्य एशियाई परिवार – कुर्द, अफ़ग़ान, ताजिक और कुछ मिस्रवासी भी। उन्हें अक्सर अपने पड़ोसियों के दरवाज़े खटखटाकर उनसे शोर कम करने के लिए कहना पड़ता था। उनकी पत्नी तैसीर गर्भावस्था के आखिरी तीन महीनों में बिस्तर पर रहने के बाद शोर के प्रति बहुत संवेदनशील हो गई थीं। पहले उन्हें कभी पता नहीं चलता था जब पड़ोसी एयर-शाफ़्ट के उस पार चिल्लाकर शोर मचाते थे, या जब उनके बच्चे गलियारों में स्केटबोर्डिंग करते थे। वह काहिरा में बाब ज़ुवेला के आसपास के छतरीदार बाज़ारों की आवाज़ के पास पली-बढ़ी थीं: उन्हें इमारत का बाज़ारी माहौल पसंद था, जहाँ हर कोई एक-दूसरे के घर आता-जाता रहता था और गर्मियों की शामों में लोग बरामदे में बैठते थे, जबकि बच्चे हाइड्रेंट के आसपास खेलते रहते थे। उन्हें इमारत पसंद थी, हालाँकि आस-पड़ोस उन्हें डराता था, खासकर इसके दोनों ओर का भारी ट्रैफ़िक – एक तरफ़ वेस्ट साइड हाईवे और दूसरी तरफ़ लिंकन टनल की ओर जाने वाली सड़कें। लेकिन वह वैसे भी वहां जाना चाहती थी: उसे लगा कि वहां इतनी सारी महिलाओं और बच्चों के बीच बच्चे को जन्म देना आसान होगा।
अंततः इसका कोई महत्व नहीं रहा: गर्भावस्था के पैंतीसवें सप्ताह में एमनियोटिक एम्बोलिज्म के कारण उसकी और बच्चे की मृत्यु हो गई।
अब वे सब जा चुके थे, वे सभी शोरगुल भरे, उत्सवप्रिय परिवार जिन्होंने तैसीर को इतना आकर्षित किया था। अपने बढ़ते व्यवसायों और लगातार बढ़ते परिवारों की मांगों के कारण वे धीरे-धीरे छोटे कस्बों और उपनगरों में चले गए थे। अंतर ने भी कभी-कभी जाने के बारे में सोचा था, लेकिन कभी भी दृढ़ निश्चय के साथ नहीं। पहले तो उन्हें उम्मीद थी कि उनके पुराने पड़ोसियों के चले जाने के बाद इमारत उनके चारों ओर भर जाएगी - ठीक वैसे ही जैसे पिछली पीढ़ियों में हुआ था, प्रवासियों की एक लहर बाहर जाती थी और दूसरी अंदर आती थी। लेकिन कुछ समय बाद यह पैटर्न बदल गया: ज़ोनिंग नियमों में बदलाव के कारण इमारत के मालिकों ने खाली अपार्टमेंटों को व्यावसायिक संपत्तियों में बदलना शुरू कर दिया।
जल्द ही वहां सिर्फ उन्हीं जैसे उम्रदराज लोग रह गए: ऐसे लोग जो अपने किराए पर नियंत्रित अपार्टमेंट से बाहर निकलने का खर्च वहन नहीं कर सकते थे। हर साल इमारत खाली होती गई, जबकि भंडारण स्थान बढ़ते गए।
बगल वाले अपार्टमेंट में रहने वाला व्यक्ति अंटार के आने से पहले से ही वहाँ रहता था। वह शतरंज का शौकीन खिलाड़ी था और दावा करता था कि उसका संबंध तिग्रान पेट्रोसियन से है। अंटार कभी-कभार उसके साथ खेलता था और हर बार बुरी तरह हार

जाता था।
फिर एक गर्मी के मौसम में – क्या यह पंद्रह या बीस साल पहले की बात है? – शतरंज खिलाड़ी की हालत बिगड़ने लगी। वह अब शतरंज नहीं खेल पाता था; मोहरों को हिलाने की भी ताकत नहीं बची थी। उसके भतीजे उत्तरी कैरोलिना से आए, जहाँ उसका बाकी परिवार बस गया था। उन्होंने उसका अपार्टमेंट खाली किया और सारा सामान एक पीले रंग के ट्रक में लाद दिया। जाने से पहले उन्होंने अंटार को एक गहरे लाल रंग का शतरंज सेट यादगार के तौर पर दिया; वह सेट अभी भी उसके पास कहीं रखा हुआ था। अंटार ने अपने बैठक कक्ष की खिड़की से देखा कि कैसे शतरंज खिलाड़ी को ट्रक में ले जाया जा रहा था।
इसके बाद नीचे वाले अपार्टमेंट में रहने वाली महिला की बारी आई। वह साठ के दशक से इसी इमारत में रह रही थी, जब वह पहली बार अज़रबैजान से अमेरिका आई थी। वह इसी अपार्टमेंट में बूढ़ी हो गई थी, यहीं उसने अपने दो बच्चों का पालन-पोषण किया था; उसके पास कहीं और जाने की जगह नहीं थी, खासकर जब उसकी नज़र कमज़ोर होने लगी थी। उस परिचित जगह में वह अब भी अपना काम खुद संभाल सकती थी; कहीं और होती तो वह असहाय हो जाती। उसके बच्चों ने अपनी समझ के विरुद्ध जाकर उसकी विनतियों को मान लिया था और उसे अपने यहाँ रहने दिया था। वे हर दूसरे महीने अपने छोटे से मिडवेस्ट कस्बे से उससे मिलने आते थे। उन्होंने हफ्ते में दो बार उसके लिए शहर के ऊपरी हिस्से की एक किराने की दुकान से खाना भिजवाने का इंतज़ाम किया था।
और एक दिन डिलीवरी बॉय ने लोहे के तवे से उसका सिर कुचलकर उसकी हत्या कर दी। शव को अंटार ने पाया। वह उसके चलने-फिरने की लय से परिचित हो चुका था, और जब उसने पूरे दिन उसकी छड़ी की जानी-पहचानी आवाज नहीं सुनी, तो वह समझ गया कि कुछ गड़बड़ है।
वह चार साल से चौथी मंज़िल पर अकेला रह रहा था। फिर, कुछ महीने पहले डोनट की दुकान वाली गुयाना की महिला मारिया, तारा को पेन स्टेशन लेकर आई और उसे वहाँ के अन्य नियमित ग्राहकों से मिलवाया। तारा छोटी और चिड़िया जैसी थी, उसकी नाक पतली चोंच जैसी थी। वह जवान थी - अंटार के अनुमान से तीस के आसपास - मारिया से काफी छोटी। उसने तुरंत अंदाज़ा लगा लिया कि वह भारत से है: यह संबंध वास्तव में स्पष्ट था, क्योंकि मारिया भारतीय मूल की गुयाना निवासी थी और वह जानता था कि उसके अभी भी वहाँ रिश्तेदार हैं।
दोनों महिलाओं में एक दिलचस्प विरोधाभास था, हालाँकि वे एक-दूसरे के साथ बहुत सहज दिखती थीं। मारिया लंबी, गरिमापूर्ण और हमेशा सलीके से कपड़े पहनती थी, हालाँकि वह न्यूनतम मजदूरी से भी कम कमाती थी। दूसरी ओर, तारा पश्चिमी कपड़ों में इतनी असहज लग रही थी कि यह स्पष्ट था कि वह अभी-अभी आई है: जब वह पहली बार पेन स्टेशन आई थी, तो उसने एक ढीली सफेद कमीज पहनी हुई थी जो उसके घुटनों तक लटक रही थी और एक गहरे रंग की पतलून जो उसके टखनों के ऊपर बेजान सी फड़फड़ा रही थी।
लेकिन उनके व्यवहार में कोई बनावटीपन या नयापन नहीं था। परिचय होने पर उन्होंने

अंतर को मुस्कुराकर सिर हिलाया और उनकी बगल वाली कुर्सी पर बैठ गईं। 'आप क्या पी रहे हैं?' उन्होंने उनके कप को छूते हुए कहा। उन्होंने बताया, 'पुदीने की चाय, दुकान के मालिक ने इसे खास तौर पर उनके लिए मिस्र के तरीके से बनाया है।'
'शानदार!' उसने कहा। 'बिल्कुल वैसा ही जैसा मैंने सोचा था। क्या आप कृपा करके उनसे पूछ सकते हैं कि क्या मुझे भी थोड़ा मिल सकता है?'
अंतर उसकी आवाज सुनकर दंग रह गया: उसका मधुर लहजा और शब्दों का अप्रत्याशित प्रयोग।
बाहर निकलते समय, ब्रॉडवे के निकास की ओर चलते हुए, मारिया ने उसे एक तरफ ले जाकर कहा कि तारा एक अपार्टमेंट की तलाश कर रही थी; कि उसे अभी-अभी नौकरी मिली है और उसे मैनहट्टन में रहने के लिए एक जगह की जरूरत है।
'वह क्या करती है?' अंतर ने पूछा।
'वह चाइल्ड केयर में है,' मारिया ने कहा।
'तुम्हारा मतलब है कि वह एक बेबीसिटर है?' अंतर हैरान था: किसी तरह तारा उसे ऐसी व्यक्ति नहीं लगी जो जीविका के लिए बच्चों की देखभाल करना चुनेगी।
'हां,' मारिया ने कहा। उसने आगे बताया कि तारा को एक कुवैती राजनयिक और उसके परिवार ने अपने बच्चों की देखभाल के लिए कुवैत में लाया था। यह व्यवस्था सफल नहीं हुई, इसलिए उसने ग्रीनविच विलेज में बच्चों की देखभाल का दूसरा काम ढूंढ लिया। लेकिन जिस परिवार के लिए वह अभी काम कर रही थी, वे उसे रहने की जगह नहीं दे पा रहे थे।
अंतर ने सिर हिलाया। हालाँकि मारिया ने ऐसा कहा नहीं, लेकिन उसने अनुमान लगाया कि नौकरी बदलने के कारण तारा की स्थिति अवैध हो गई थी और उसे ऐसी जगह ढूंढनी होगी जहाँ वह बिना ज्यादा पूछताछ के नकद भुगतान कर सके।
उसने कंधे उचका दिए। 'मुझे खेद है,' उसने कहा। 'मैं कुछ नहीं कर सकता।'
मारिया ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। उसने कहा, 'लेकिन मैंने सुना है कि आपकी इमारत में बहुत खाली जगह है। क्या आपकी मंजिल पर कोई खाली अपार्टमेंट नहीं है?'
अंतर चौंक गया। उसने कहा, 'आपको कैसे पता कि मैं कहाँ रहता हूँ?' डोनट की दुकान का एक अलिखित नियम यह था कि वे एक-दूसरे के जीवन के विवरणों में ज़्यादा दखल नहीं देते थे।
मारिया ने हैरानी भरा इशारा किया। 'ओह, मुझे अभी किसी से खबर मिली...' उसने कहा। उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई।
अंतर को चौथी मंजिल पर अकेले रहने की आदत हो गई थी: उसे दोबारा पड़ोसी होने का ख्याल ही अच्छा नहीं लगा। उसने कहा, 'उसके लिए यह ठीक नहीं होगा। इमारत की हालत बहुत खराब है, और अपार्टमेंट की भी।'
लेकिन जब मारिया ने उससे विनती की कि वह तारा को वह इमारत दिखाए तो वह मान गया: उसने सोचा कि वैसे भी वह पड़ोस उसे डरा देगा।
उनका अनुमान गलत साबित हुआ: तारा को अपार्टमेंट देखते ही पसंद आ गया और वह एक महीने के भीतर ही वहाँ रहने लगी। फिर भी, जब वह अपनी रसोई में गए

और एयर-शाफ्ट में तेज़ रोशनी देखी तो उन्हें आश्चर्य हुआ। सालों से उन्होंने रसोई की खिड़की पर पर्दा लगा रखा था क्योंकि एयर-शाफ्ट में केवल मरे हुए चूहे और कबूतर ही होते थे। अब वह अक्सर वहाँ ज़रूरत से ज़्यादा देर तक रुकने लगे थे।
अंतर की नज़र एक बार फिर टाइमलाइन पर पड़ी। 'क्या पौने छह बज गए हैं?' उसने अनजाने में ज़ोर से कहा।
तुरंत ही अवा ने जोर से पुष्टि करते हुए, मिस्र के किसी गांव के चौकीदार की शैली में, लकड़ी की छड़ी से टैप करने की आवाज तक, हर विवरण में पूर्णता के साथ घंटा बताया।

अध्याय 4

लिविंग रूम के बीचोंबीच, ऊपर से नीचे की ओर, पहचान पत्र पर छपी तस्वीर धीरे-धीरे आकार लेने लगी थी। सबसे पहले जो चीज़ नज़र आई, वह थी बालों का एक गुच्छा, जो करीने से कटा हुआ था, लेकिन पतला और फीका था: निश्चित रूप से एक पुरुष के बाल। फिर चमकीली काली आँखें दिखाई दीं। अंटार के मन में यह सवाल उठा कि क्या वह मिस्र का हो सकता है, चाहे वह कोई भी हो: वह हो सकता था - लेकिन वह पाकिस्तानी, भारतीय या लैटिन अमेरिकी भी हो सकता था।
लेकिन जब गाल, नाक और मुंह दिखाई दिए, तो अंतर को कोई संदेह नहीं रहा। वह लोगों को पहचानने में हमेशा माहिर था, उसे इस बात पर गर्व था, यह एक ऐसी प्रतिभा थी जो वैश्विक एजेंसी के लिए काम करते हुए विकसित होती है। वह व्यक्ति भारतीय था, इस बात का उसे पूरा यकीन था।
अब तस्वीर बहुत बड़ी हो गई थी और हवा में लहराते झंडे की तरह थोड़ी हिल रही थी। चेहरा भरा हुआ, चाँद जैसा, गाल तुरही बजाने वाले की तरह फूले हुए, और आक्रामक ढंग से उभरी हुई ठुड्डी करीने से कटी दाढ़ी में समाप्त हो रही थी। लेकिन नाक ने अंतर को सोचने पर मजबूर कर दिया – किसी मुक्केबाज की नाक, जो पुल के पास धँसी हुई थी। उस सुगठित, गोल चेहरे पर वह नाक बेमेल लग रही थी। और साथ ही किसी तरह जानी-पहचानी भी।
अंतर अपनी कुर्सी से उठा और पीछे हट गया: एक सपाट, द्वि-आयामी छवि को त्रि-आयामी प्रक्षेपण में देखना अजीब तरह से विचलित करने वाला था। वह एक तरफ और फिर दूसरी तरफ बढ़ा, छवि के मुख पर अपनी नज़रें टिकाए हुए। उसने देखा कि होंठ थोड़े से खुले हुए थे, मानो वह कुछ बोल रहा हो। उसके मन में एक स्मृति आकार लेने लगी - लिफ्टों और गलियारों में झलकने वाले किसी व्यक्ति की, एक मोटे पेट वाला छोटा आदमी, जो हमेशा बेदाग कपड़े पहनता था - पिन-स्ट्राइप सूट, रेज़र-एज्ड ट्राउज़र, कड़क इस्त्री की हुई कमीज़, जो हमेशा कलाई पर बटन बंद रखती थी, यहाँ तक कि गर्मी के सबसे गर्म दिनों में भी। और एक टोपी - उसके पास हमेशा एक टोपी होती थी। इसीलिए अंतर को उसे पहचानने में इतना समय लगा था। उसने उस आदमी के बाल कभी नहीं देखे थे; उसका सिर आमतौर पर ढका रहता था - वास्तव में, ऐसे बालों के साथ इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

अंतर के मन में छवि और स्पष्ट होती गई: उसे याद आया कि वह आदमी गलियारों में व्यस्तता से अकड़ते हुए चल रहा था, संगमरमर पर उसके जूतों की आवाज़ आ रही थी, और उसकी बगल में फाइलें दबी हुई थीं; उसे एक अजीब लहजा याद आया, न अमेरिकी, न भारतीय, न ही कुछ और, और एक तेज़, कर्कश, आत्मसंतुष्ट आवाज़; एक ऐसी आवाज़ जो भीड़ भरी लिफ्टों में गूंजती थी और ट्रस्ट की चमकदार लॉबी में गूंजती थी, जिससे लोगों की निगाहें मटकती थीं और वे फुसफुसाते हुए पूछते थे: 'यह कौन है?' और 'अरे, क्या आप नहीं जानते? यह तो हमारे अपने श्रीमान ... हैं।'
उन्हें वर्षों पहले कहीं हुई एक मुलाकात, एक बातचीत याद आई, जब वे किसी के सामने बैठे थे। लेकिन जैसे ही वह स्मृति स्पष्ट होने लगी, वह धुंधली पड़ गई।
नाम: यही सबसे महत्वपूर्ण था। उसका नाम क्या था?
कुछ सेकंड बाद, धीरे-धीरे, अक्षर-दर-अक्षर, अक्षर दिखने लगे और फिर अचानक अंटार को समझ आ गया। उसके सामने केवल चार अक्षर ही बचे थे कि वह तुरंत आवा के कीबोर्ड की ओर भागा और खोज कमांड के साथ अक्षर टाइप कर दिए।
उनका नाम एल. मुरुगन था।
पहली खोज में कुछ नहीं मिला, इसलिए अंटार, अवा को लेकर परिषद के विशाल अभिलेखागार में जल्दी से गया, जहाँ सभी पुराने वैश्विक संगठनों के रिकॉर्ड रखे गए थे। दस मिनट तक द्वारपाल प्रणाली ने उसे अंदर जाने की अनुमति दी, लेकिन एक बार अंदर पहुँच जाने के बाद, सब कुछ पलों में हो गया।
जब उनके सामने पुरानी शैली की फाइल आई तो उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई: स्क्रीन के शीर्ष पर, 'एल. मुरुगन' शीर्षक के ऊपर, अरबी अक्षर 'ऐन' की एक छोटी सी झलक चमक रही थी। वह इस चिह्न को पहचानते थे: उन्होंने इसे स्वयं ही वहाँ रखा था। कार्यालय में किसी ने शर्त लगाई थी कि कौन सबसे अधिक बार स्पेलचेक का उपयोग करता है। सभी ने अपने-अपने काम को चिह्नित करने के लिए अपने-अपने चिह्न बनाए थे। उन्होंने 'ऐन' को इसलिए चुना था क्योंकि यह उनके नाम 'अंतर' का पहला अक्षर था।
लेकिन फाइल देखकर वह हैरान रह गया: उसे कुछ लंबा और मोटा होने की उम्मीद थी; उसे याद था कि उसने उसमें काफी सामग्री डाली थी। उसने जल्दी से पन्ने पलटे और सीधे अंत तक पहुँच गया।
अंतिम पंक्ति पर पहुँचकर वह पीछे झुककर बैठ गया और अपनी ठुड्डी को सहलाने लगा।
उसे अब याद आया – उसने खुद ही इसे कुछ साल पहले टाइप किया था।
इसमें कहा गया है कि व्यक्ति 21 अगस्त 1995 से लापता है, उसे आखिरी बार कलकत्ता, भारत में देखा गया था।

अध्याय 5

कलकत्ता में अपने पहले दिन, 20 अगस्त 1995 को, सेंट पॉल कैथेड्रल के पास से गुजरते समय, मुरुगन अचानक हुई भारी मानसूनी बारिश की चपेट में आ गए। वे

लोअर सर्कुलर रोड पर स्थित प्रेसिडेंसी जनरल अस्पताल जा रहे थे, ताकि ब्रिटिश वैज्ञानिक रोनाल्ड रॉस के स्मारक को देख सकें।
उन्होंने इसकी तस्वीरें देखी थीं और उन्हें ठीक-ठीक पता था कि क्या ढूंढना है। यह अस्पताल की बाहरी दीवार में बना एक मेहराब था, जो रॉस की पुरानी प्रयोगशाला के पास स्थित था। इस पर एक पदक लगा था जिस पर एक चित्र और एक शिलालेख था जिसमें लिखा था: इस द्वार से सत्तर गज दक्षिण-पूर्व में स्थित छोटी प्रयोगशाला में सर्जन-मेजर रोनाल्ड रॉस आई.एम.एस. ने 1898 में मच्छरों द्वारा मलेरिया के संचरण के तरीके की खोज की थी।
उसे ज़्यादा दूर नहीं जाना था कि बारिश ने उसे घेर लिया। उसने अपनी हरी बेसबॉल टोपी पर बारिश की पहली बूँदें महसूस कीं और मुड़कर देखा तो मैदान के हरे-भरे विस्तार में बारिश की एक मोटी दीवार उसकी ओर बढ़ती हुई दिखाई दी। उसने अपनी चाल तेज़ कर दी और खुद को कोसने लगा कि वह अपना छाता गेस्ट हाउस में क्यों भूल गया। ललित कला गैलरी में नाश्ता बेचने वाले, जो अपनी टोकरियों को तिरपाल से ढकने में लगे थे, उसे खाकी सूट और हरी बेसबॉल टोपी पहने हुए तेज़ी से गुज़रते देख रुक गए।
उन्होंने बेशक एक छाता पैक किया था, एक शानदार छाता, जो एक बटन दबाते ही खुल जाता था: उन्हें अच्छी तरह पता था कि साल के इस समय कलकत्ता का मौसम कैसा होता है। लेकिन छाता अभी भी उनके सूटकेस में ही था, रॉबिन्सन स्ट्रीट के गेस्ट हाउस में। रॉस के स्मारक पर जाने की उनकी इतनी जल्दी थी कि वे उसे खोलना ही भूल गए थे।
बारिश अब उसके पीछे ज़ोरों से पड़ रही थी। थोड़ी ही दूरी पर उसे रबींद्र सदन सभागार के खुले द्वार दिखाई दिए और वह दौड़ने लगा। तभी एक हॉर्न बजाती हुई मिनीबस तेज़ी से गुज़री और एक गड्ढे से पानी की तेज़ बौछार उठी, जिससे उसकी खाकी प्राडो पैंट पूरी तरह भीग गई। दौड़ते हुए मुरुगन ने कंडक्टर की ओर उंगली से इशारा किया, जो बस के दरवाज़े से बाहर झाँककर उसे देख रहा था। ज़ोरदार हंसी की आवाज़ आई और बस धूसर-हरे रंग का धुआँ उगलते हुए तेज़ी से निकल गई।
बारिश शुरू होने से ठीक पहले मुरुगन रवींद्र सदन में बदल गए और सीढ़ियों पर उछलते हुए चढ़ गए। सभागार की बाहरी गैलरी जगमगा रही थी और पोस्टरों से सजी हुई थी: उन्हें अंदर माइक्रोफोन की हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई दे रही थी। उन्हें समझ आ गया था कि कोई बड़ा आयोजन चल रहा है: लोग सभागार के दरवाजे के आसपास भीड़ लगाए हुए थे, अंदर जाने की कोशिश कर रहे थे। उनकी नज़र के सामने ही एक टेलीविजन क्रू केबल और कैमरे लिए तेज़ी से निकल गया। फिर रोशनी धीमी हो गई और वे गैलरी में अकेले रह गए।
मुँह फेरकर, उसने खिड़की से बाहर दूर स्थित पीजी अस्पताल की दीवारों को देखा, इस उम्मीद में कि उसे रॉस के स्मारक की एक झलक मिल जाए। लेकिन तभी सभागार के लाउडस्पीकर चालू हो गए और एक पतली, कर्कश आवाज़ सुनाई देने लगी। उस आवाज़ ने ज़बरदस्ती उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया, अपनी तीव्र गंभीरता से वह उस पर हावी हो गया।

'हर शहर के अपने रहस्य होते हैं,' आवाज़ शुरू हुई, 'लेकिन कलकत्ता, जिसका पेशा अतिरेक है, इतने रहस्यों से भरा है कि यह किसी भी अन्य शहर से कहीं अधिक रहस्यमय है। अन्य जगहों पर, विरोधाभास के कारण, रहस्य कहने में ही जीवित रहते हैं: वे नीरस गलियों और सुनसान रास्तों में, कूड़े से भरे खिड़कीविहीन मकानों के पिछले हिस्सों में और तेल से सने कार्यशालाओं के काले फर्शों में जीवन का संचार करते हैं। लेकिन हमारे इस शहर में, जहाँ सभी कानून, प्राकृतिक और मानवीय, अनिश्चित स्थिति में हैं, जो छिपा है उसे जीवन देने के लिए शब्दों की आवश्यकता नहीं है; किसी भी ऐसे प्राणी की तरह जो एक विकृत वातावरण में रहता है, यह पोषण को ठीक उसी जगह खोजने के लिए रूपांतरित होता है जहाँ यह सबसे स्पष्ट रूप से छिपा हुआ प्रतीत होता है - इस मामले में, मौन में।'
मुरुगन चौंक गया और उसने काँच के सामने वाले हॉल को ऊपर-नीचे देखा। वह अभी भी खाली था। तभी उसने दो महिलाओं को सीढ़ियों से ऊपर भागते हुए देखा। वे तेज़ी से हॉल में आईं और दरवाज़े के पास खड़ी होकर अपने बालों से बारिश का पानी पोंछने लगीं और अपनी साड़ियों से उसे झाड़ने लगीं। उनमें से एक लगभग पच्चीस वर्ष की थी, पतली, नुकीली, सुंदर चेहरे वाली महिला, जिसने ढीली-ढाली, कुछ हद तक मैली-कुचैली साड़ी पहनी हुई थी। दूसरी लंबी और उम्र में बड़ी थी, जवानी की दहलीज पर खड़ी, सांवली, आकर्षक और शांत स्वभाव वाली, जिसने काली सूती साड़ी पहनी हुई थी। उसके कंधे तक लंबे बालों में सफेद बालों की एक चौड़ी लकीर थी।
हॉल पार करते हुए मुरुगन ने देखा कि दोनों महिलाओं ने अपनी साड़ियों के ऊपर कंधों पर प्रेस टैग लगा रखे थे। कुछ कदम दूर जाकर उन्होंने एक जाना-पहचाना लोगो पहचाना: दोनों टैग पर कलकत्ता पत्रिका का नाम अंकित था।
पत्रिका का गॉथिक मुखपृष्ठ दोबारा देखकर मुरुगन को एक अजीब सी अनुभूति हुई: उसके माता-पिता कलकत्ता में पत्रिका के नियमित पाठक थे। उस परिचित अक्षर को लघु रूप में देखकर, उसे तुरंत उन दोनों महिलाओं से जुड़ाव महसूस हुआ।
गर्दन उठाकर देखने पर उसने पाया कि छोटी उम्र की महिला का नाम उर्मिला रॉय था; लंबी और आकर्षक महिला का नाम सोनाली दास था।
मुरुगन आगे बढ़ा और उसने अपना गला साफ किया।

अध्याय 6

उर्मिला सोनाली से एक सवाल पूछने ही वाली थी कि तभी उसे बीच में ही रोक दिया गया। वह झुंझलाहट में घूमी और देखा कि एक छोटा, अजीब सा दिखने वाला आदमी उसके बगल में खड़ा खाँस रहा है। उसकी हरी टोपी, छोटी दाढ़ी और मिट्टी से सने खाकी पतलून को देखकर उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। फिर उसने कुछ कहा, बहुत तेज़ी से। उसे यह समझने में थोड़ा समय लगा कि वह अंग्रेज़ी बोल रहा है: उसका लहजा ऐसा था जैसा उसने पहले कभी नहीं सुना था।

उसने अपनी सहेली सोनाली की ओर हैरानी भरी नज़र से देखा, भौंहें चढ़ाते हुए, लेकिन उसकी नज़रें नहीं मिलीं। सोनाली उस आदमी से ज़रा भी नाराज़ नहीं लग रही थी। बल्कि वह उस पर मुस्कुरा रही थी। 'माफ़ कीजिए,' उसने कहा, 'मैं समझ नहीं पाई।'
उस आदमी ने अपने कंधे के ऊपर अंगूठा घुमाकर सभागार की ओर इशारा किया। 'अंदर क्या चल रहा है?' उसने इस बार थोड़ी धीमी आवाज़ में कहा।
उर्मिला ने सोनाली के कुछ कहने से पहले ही जवाब दे दिया, इस उम्मीद में कि वह चला जाएगा। उसने कहा, 'यह एक पुरस्कार समारोह है। लेखक फूलबोनी के लिए - उनके 85वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में।'
जाने के बजाय, वह आदमी अब अपना परिचय देने लगा – धीरे से एक नाम बुदबुदाते हुए जो मॉर्गन जैसा लग रहा था। सोनाली ने उसे एक ऐसी मुस्कान दी जिसे आसानी से प्रोत्साहन का संकेत समझा जा सकता था। ऐसे में उसका वहाँ थोड़ी देर रुकना स्वाभाविक था।
'फुलबोनी?' मुरुगन ने अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कहा। 'लेखक?'
'हां,' सोनाली ने धीमी आवाज़ में कहा। 'हमारे सबसे महान जीवित लेखक।'
उर्मिला ने सोनाली को कोहनी मारी। 'सोनाली दीदी,' उसने कहा। 'मुझे आपसे कुछ पूछना है...'
वह आदमी बिना रुके बोलता रहा, मानो उसने उसकी बात सुनी ही न हो। 'हाँ,' उसने कहा, 'मुझे लगता है मैंने उसके बारे में सुना है।'
सोनाली ने अपने हैंडबैग में हाथ डाला, एक सिगरेट निकाली और लाइटर से जलाने की कोशिश करने लगी। उर्मिला को थोड़ा झटका लगा: वह जानती थी कि सोनाली सिगरेट पीती है, उसने उसे अपने ऑफिस में सिगरेट जलाते हुए देखा था। लेकिन यहाँ, सबके सामने?
'सोनाली दीदी!' उसने दबी आवाज़ में कहा। 'कोलकाता के सभी लोग यहाँ हैं; अगर किसी ने देख लिया तो...?'
'कोई बात नहीं, उर्मिला,' सोनाली ने थकी हुई आवाज़ में कहा और खाली गलियारे की ओर इशारा किया। 'कोई इधर नहीं देख रहा है।' उसने सिगरेट जलाई और धुआँ हवा में उड़ाते हुए अपना सिर पीछे की ओर झुका लिया।
'मुझे याद है,' मुरुगन ने अचानक कहा। 'फुलबोनी' उस आदमी का उपनाम है, है ना?'
'हाँ, बिल्कुल सही,' सोनाली ने सिर हिलाया। 'उनका असली नाम सैयद मुराद हुसैन है। उन्होंने छद्म नाम से लिखना शुरू किया क्योंकि उनके पिता ने उन्हें लेखक बनने पर बेदखल करने की धमकी दी थी।'
'यह तो बस एक किंवदंती है,' उर्मिला ने कहा।
सोनाली ने हंसते हुए कहा, 'फुलबोनी सबसे पहले आपको यही बताएगी कि किंवदंतियां हमेशा असत्य नहीं होतीं।'
अचानक लेखक की आवाज़ लाउडस्पीकर से गूंज उठी। 'वे लोग गलत हैं जो यह मानते हैं कि मौन में जीवन नहीं है; कि यह निर्जीव है, इसमें न तो आत्मा है और न ही आवाज़। ऐसा नहीं है: वास्तव में, शब्द इस मौन के लिए वही है जो परछाईं भविष्य

की झलक के लिए है, जो पर्दा आँखों के लिए है, जो मन सत्य के लिए है, जो भाषा जीवन के लिए है।'
सोनाली ने धुएं का एक गुबार उड़ाया। 'बस उसकी बात सुनो!' उसने उसकी आवाज़ सुनने के लिए अपना सिर थोड़ा झुकाते हुए कहा। 'आज तो वो बहुत उत्तेजित लग रहा है। आजकल उसका यही हाल होता है, खासकर जब वो अंग्रेज़ी बोलता है। तुम्हें तो उसे परसों एलायंस फ्रांसेज़ में सुनना चाहिए था।'
उर्मिला ने बड़ी निराशा के साथ देखा कि सोनाली मुरुगन को देखकर फिर से मुस्कुरा रही थी, मानो उसे उकसा रही हो। उसका दिल बैठ गया। सोनाली हमेशा ऐसी ही हरकतें करती थी – अजनबियों से बात करने के लिए रुक जाती थी, लिफ्ट में बातचीत में उलझ जाती थी और अपना फ्लोर भूल जाती थी, वगैरह। आम तौर पर उर्मिला को कोई आपत्ति नहीं होती थी: बल्कि उसे तो यह बात प्यारी लगती थी कि सोनाली दास जैसी मशहूर हस्ती को अनजान लोगों से बात करने में इतना आनंद आता है। लेकिन आज उर्मिला को जल्दी थी: उसे एक असाइनमेंट पूरा करना था और सोनाली से बात करना ज़रूरी था।
दिन में पहले वह सोनाली से मिलने उसके पांचवीं मंजिल के दफ्तर गई थी, ताकि वे साथ में समारोह में जा सकें और रास्ते में उससे बात कर सकें। लेकिन आखिरकार, वे उन टैक्सियों में से एक में सवार हो गईं जिनके ड्राइवर चौरंगी के एक छोर से दूसरे छोर तक का रास्ता भी नहीं जानते थे। पत्रिका के धर्मातोला कार्यालय से रवींद्र सदन तक की बीस मिनट की पूरी यात्रा के दौरान वह और सोनाली आगे की सीट पर झुकी रहीं और पल-पल निर्देश देती रहीं: 'यहाँ से दाएँ मुड़ो... सावधान रहो... आगे बस है... वहाँ कुत्ता है... सामने गड्ढा है।'
और अब, जब आखिरकार उसे वह अकेली मिल ही गई थी, तभी टोपी और दाढ़ी वाला यह अजीब दिखने वाला आदमी वहाँ आ गया।
उर्मिला ने पहले तो और भी ज़ोरदार तरीके से दखल देने के बारे में सोचा, लेकिन फिर अपना इरादा बदल दिया। वह सोनाली के साथ अभी भी थोड़ी अनिश्चित थी: दरअसल, बिना निमंत्रण के आज उसके दफ्तर जाना बिल्कुल भी आसान नहीं था। उर्मिला तीन साल पहले कॉलेज के दिनों से ही कलकत्ता में काम कर रही थी। उसे गंभीर खबरों को संभालने और रिपोर्टिंग डेस्क पर इकलौती महिला होने पर गर्व था। अब उसे राइटर बिल्डिंग स्थित गृह सचिव के कार्यालय में धावा बोलने या मुख्यमंत्री की प्रेस कॉन्फ्रेंस में तीखे सवाल पूछने में कोई हिचक नहीं होती थी। लेकिन जब बात सोनाली दास की आती, तो वह खुद को असामान्य रूप से शर्मीला और चुप हो जाता। सोनाली शहर में एक ऐसी शख्सियत थीं; जिनके बारे में आप फिल्म पत्रिकाओं और अखबारों के गॉसिप कॉलम में पढ़ते थे; जिनका नाम आप अपनी चाचियों और चचेरी बहनों के मुंह से अक्सर सुनते थे, जो आलोचना, प्रशंसा, ईर्ष्या और आक्रोश के मिले-जुले भावों के साथ उनका उच्चारण करती थीं। वह उन लोगों में से एक थीं जिनके बारे में हर कोई बात करता था, भले ही उसे ठीक से पता न हो कि क्यों।
उनकी प्रसिद्धि का कुछ श्रेय उनकी दिवंगत मां को भी जाता है, जो चालीस और पचास के दशक की एक प्रसिद्ध रंगमंच अभिनेत्री थीं। लेकिन सोनाली ने किशोरावस्था

में ही मुंबई की कुछ फिल्मों में अभिनय किया था। उनकी पहली फिल्म ने सनसनी मचा दी थी, क्योंकि वह आम नृत्य-प्रधान फिल्मों से अलग थी। लेकिन फिर, जब उनका करियर उज्ज्वल दिख रहा था, तभी उन्होंने मुंबई छोड़ दिया और कलकत्ता लौट आईं। कुछ वर्षों बाद, उन्होंने एक छोटी सी लेकिन अद्भुत आत्मकथा प्रकाशित की, जो हास्यपूर्ण होने के साथ-साथ भावुक और थोड़ी उदास भी थी। यह मुख्य रूप से उनकी मां के बारे में थी, लेकिन कुछ हद तक उनके अपने बचपन के बारे में भी थी - साहित्यिक जगत में उनकी मां के दोस्तों के बारे में, टॉलीगंज और मुंबई के पुराने स्टूडियो के बारे में, और उन दिनों के बारे में जब उनकी मां ग्रामीण इलाकों में घूम-घूम कर ऐतिहासिक नाटक प्रस्तुत करती थीं। एक क्रांतिकारी युवा निर्देशक ने इस पुस्तक को नाटक में रूपांतरित किया; फिर इस नाटक पर फिल्म बनी, जिसे आलोचकों और फिल्म सोसाइटियों से खूब सराहना मिली। तब से सोनाली दास हमेशा के लिए मशहूर हो गईं, हालांकि उन्होंने इसके अलावा और कुछ नहीं किया - या कम से कम तब तक नहीं जब तक कि वह मालिक के विशेष अनुरोध पर महिलाओं के पूरक की देखभाल करने के लिए कलकत्ता में शामिल होने के लिए सहमत नहीं हो गईं।

उर्मिला को पत्रिका में सोनाली की नियुक्ति के बारे में सुनकर उत्सुकता हुई, लेकिन उसने कभी सोचा भी नहीं था कि वे दोस्त बन जाएँगी। फिर एक दिन वह लिफ्ट में सोनाली के बगल में खड़ी थी। उसने उसे तुरंत पहचान लिया, हालाँकि उसने उसे सालों पहले सिर्फ़ एक बार देखा था। सोनाली बहुत बदल गई थी, लेकिन उर्मिला ने तुरंत तय कर लिया कि ये सारे बदलाव अच्छे के लिए थे: उदाहरण के लिए, उसके बालों में वह सफ़ेद लकीर – उसे दिखाना सही था। यह उस पर जँचती थी, उसे दूसरों से अलग बनाती थी।

पहली नज़र में ही उर्मिला ने अपनी निगाहें लिफ्ट के दरवाजे पर टिकाए रखीं, और घूरने से बचने का पक्का इरादा कर लिया। लेकिन देखते ही देखते सोनाली उससे बात करने लगी। कुछ ही मिनटों में वे पत्रिका की छोटी सी गंदी कैंटीन में बैठकर चाय पी रही थीं और बातें कर रही थीं।

उस सुबह भीड़ भरी मिनीबस में संतुलन बनाए रखने की कोशिश में उर्मिला की घड़ी का पट्टा टूट गया था। उसे यह बात बताने में शर्म आ रही थी: भला सोनाली दास जैसी किसी को टूटे हुए घड़ी के पट्टे में क्या दिलचस्पी हो सकती है? लेकिन सोनाली बिल्कुल भी बोर नहीं हुई, बल्कि बहुत मददगार साबित हुई: उसने उर्मिला को मेट्रो सिनेमा के पास एक दुकान के बारे में बताया जहाँ कुछ ही रुपयों में घड़ी का पट्टा ठीक करवाया जा सकता था। उर्मिला यह जानकर हैरान रह गई कि सोनाली को ऐसी बात कैसे पता चल सकती है।

और अब, उसी अंधाधुंध मददगार अंदाज में, सोनाली दाढ़ी वाले अजनबी को बता रही थी कि उपराष्ट्रपति फूलबोनी को उनका पुरस्कार देने के लिए दिल्ली से इतनी दूर आए हैं।

उर्मिला समझ गई थी कि उस आदमी से छुटकारा पाने का एकमात्र तरीका सभागार में जाना ही था। 'चलो, सोनाली दीदी,' उसने हाथ हिलाते हुए कहा। 'चलिए, वरना हम सब कुछ खो देंगे।'

सोनाली ने सिगरेट का आखिरी लंबा कश लिया और जलती हुई नोक को रेत से भरी ऐशट्रे में बुझा दिया। 'मुझे खेद है कि अब हमें जाना होगा,' उसने मुरुगन को मुस्कुराते हुए कहा। 'मेरे दोस्त को काम है।'
उर्मिला आगे-आगे चलकर एक दरवाजे तक गई और उसे खोल दिया। सभागार खचाखच भरा हुआ था: लोगों के सिर चमकीली रोशनी से जगमगाते मंच की ओर लहराते जा रहे थे, जहाँ एक लंबा, सफ़ेद बालों वाला आदमी एक मंच पर खड़ा था, जिसने एक सादी सफ़ेद कमीज़ और पुराने ज़माने की, ऊँची कमर वाली फीकी मिलिट्री ग्रीन रंग की पतलून पहन रखी थी। ऊपर से आती स्पॉटलाइट्स ने उसके खुरदुरे चेहरे पर लंबी परछाइयाँ डाल दी थीं, लेकिन उभरी हुई भौंहों के नीचे उसकी गहरी, चमकती आँखें स्पष्ट थीं। उर्मिला स्तब्ध रह गई: उसने उसके बारे में बहुत कुछ सुना था, उसकी लिखी हुई बहुत सी चीज़ें पढ़ी थीं, लेकिन उसने उसे पहले कभी अपनी आँखों से नहीं देखा था, न ही कभी साक्षात।
वह अंधेरे गलियारे में हिचकिचाते हुए एक कदम आगे बढ़ी। अनमने ढंग से उसने देखा कि उपराष्ट्रपति, फूलबोनी के पीछे मंच पर नींद में झूम रहे थे।
लेखक मंच के किनारे को कसकर पकड़े हुए, आगे की ओर झुके हुए, धीमी, कर्कश आवाज़ में बोल रहे थे। उन्होंने कहा, 'शहर की खामोशी ने मेरे लेखन के सभी वर्षों में मुझे सहारा दिया है: मुझे इस उम्मीद में जीवित रखा है कि मेरी स्याही सूखने से पहले यह मुझे भी अपने वश में कर लेगी। अनगिनत वर्षों से मैं इन गलियों के अंधेरे में भटकता रहा हूँ, इस खामोशी पर राज करने वाली अदृश्य उपस्थिति की तलाश में, इसमें समा जाने का प्रयास करता रहा हूँ, समय समाप्त होने से पहले मुझे पार ले जाने की भीख माँगता रहा हूँ। पार जाने का समय निकट है, मैं जानता हूँ, और इसीलिए मैं अब यहाँ, आपके सामने खड़ा हूँ: भीख माँगने के लिए - इस खामोशी की स्वामिनी, उस सबसे गुप्त देवी से, विनती करने के लिए कि वह मुझे वह दे जो उसने इतने लंबे समय से मुझसे छीन रखा है: स्वयं को मेरे सामने प्रकट करे...'
उर्मिला ने पीछे मुड़कर गलियारे में एक नज़र डाली। उसने देखा कि मुरुगन उसके ठीक पीछे आ रहा था और उसके बगल में खड़ा होकर सभागार में घुसने की कोशिश कर रहा था। एक कर्मचारी हाथ में टॉर्च लिए हुए आया। उसने सोनाली के प्रेस टैग पर नज़र डाली और फिर उर्मिला के टैग पर और उन्हें अंदर जाने का इशारा किया। अंधेरे गलियारे में चलते हुए उर्मिला ने फिर पीछे मुड़कर देखा। उसे राहत मिली जब उसने देखा कि कर्मचारी मुरुगन को दृढ़ता से सभागार से बाहर ले जा रहा था।
मंच पर थोड़ी हलचल मच गई: उपराष्ट्रपति का ऊंघता हुआ सिर उनकी कुर्सी के पीछे से टकरा गया।

अध्याय 7

एक विशेष डाकाला-श्रेणी के संदेशवाहक का आह्वान करते हुए, अंटार ने परिषद के मुख्यालय को संदेश भेजा कि उसे 21 अगस्त 1995 से लापता लाइफवॉच कर्मचारी

का पहचान पत्र मिल गया है। फिर वह अपनी कुर्सी पर आराम से बैठ गया और उस फाइल को देखने लगा जिसे एवा परिषद के अभिलेखागार से लाई थी। उन्हें लगभग एक घंटे में फाइल वापस चाहिए होगी, और वह जानता था कि उसे इसे देख लेना चाहिए, कहीं मुख्यालय को आगे कोई काम न करना पड़े। अनुमान के अनुसार, इसमें उसे लगभग बीस मिनट लगेंगे - तारा के साथ रात्रिभोज से पहले पेन स्टेशन तक टहलने के लिए उसके पास पर्याप्त समय होगा।

कुछ ही मिनटों में उन्होंने पाया कि फाइल में मुख्यतः एल. मुरुगन के 'लापता' होने के समय प्रकाशित सूचनाएँ और समाचार पत्रों की कतरनें थीं। इनमें से अधिकतर कार्यालय में फैली अफवाहों को ही दोहरा रही थीं। अंतर को याद आया कि उस समय सभी ने यही मान लिया था कि 'लापता' होना आत्महत्या का ही दूसरा नाम है। कुछ समाचार पत्रों की कटिंग में भारतीय पुलिस द्वारा 'लापता होने' के तुरंत बाद शुरू की गई स्पष्ट रूप से निष्फल खोज का उल्लेख किया गया था: यह देखना मुश्किल नहीं था कि उन्होंने, मुरुगन के लाइफवॉच के सहयोगियों की तरह ही, इस शब्द का व्यंजनात्मक उपयोग करने का निर्णय लिया था।

फाइल में आखिरी आइटम ने अंतर को सोचने पर मजबूर कर दिया। यह एक अप्रत्याशित स्रोत से आया लेख था - लाइफवॉच का आंतरिक न्यूज़लेटर। इस लेख में शोक संदेश की तरह ही यादों से भरा, शांत और सम्मानजनक लहजा था, हालांकि लेखक ने मुरुगन को 'मृत' के बजाय 'लापता' बताया था। इसकी शुरुआत हमेशा की तरह एक किस्से से हुई, जिसमें उन्हें 'मॉर्गन' कहकर संबोधित किया गया था - 'जिस नाम से उनके दोस्त उन्हें जानते थे'। इसमें उन्हें 'एक घमंडी, छोटे मुर्गे जैसा आदमी' बताया गया था; इसमें उनके जुझारू स्वभाव, बहस से पीछे न हटने की उनकी क्षमता, उनकी बेमिसाल बोलने की कला और लाइफवॉच के मुख्य अभिलेखागार प्रमुख के रूप में उनके अनेक योगदानों का जिक्र था। इसमें उनके 'वैश्विक' बचपन का भी जिक्र था, जो उन्होंने अपने टेक्नोक्रेट पिता के साथ दुनिया की राजधानियों में घूमते हुए बिताया था, और हॉलीवुड की बी-मूवीज़ और पुराने अमेरिकी टीवी धारावाहिकों के प्रति उनके प्रेम का भी संक्षेप में उल्लेख था - 'जो कई लोगों की तरह, एक घुमक्कड़, अंतर्राष्ट्रीयकृत युवावस्था में एकमात्र स्थिर चीज़ थी'।

लेख में कहा गया है कि सिराक्यूज़ में स्नातक छात्र के रूप में ही 'मॉर्गन' को अपने जीवन का सबसे बड़ा प्यार मिला: मलेरिया का चिकित्सा इतिहास। उन्होंने न्यूयॉर्क के एक छोटे से कॉलेज में कई वर्षों तक पढ़ाया और इस दौरान इस विषय के एक विशेष पहलू में उनकी रुचि बढ़ती गई: मलेरिया अनुसंधान का प्रारंभिक इतिहास। बाद में, लाइफवॉच के लिए काम करते हुए भी, उन्होंने अपने खाली समय का सदुपयोग इस शोध कार्य को आगे बढ़ाने में किया - अक्सर अपने करियर की कीमत पर भी। उन वर्षों में उन्होंने बहुत कम या न के बराबर प्रकाशन किया था, लेकिन वे अक्सर अपने मजाकिया अंदाज में कहते थे कि उन्हें अपने क्षेत्र में सर्वोपरि होने की सुखद स्थिति का आनंद मिलता है क्योंकि यह सब कुछ उन्हीं पर निर्भर है।

यह विषय ब्रिटिश कवि, उपन्यासकार और वैज्ञानिक रोनाल्ड रॉस के शोध कार्य से संबंधित था। 1857 में भारत में जन्मे रॉस को मलेरिया परजीवी के जीवन चक्र पर

उनके कार्य के लिए 1902 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उस समय व्यापक रूप से यह माना जाता था कि इस युगांतरकारी खोज से संभवतः दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे व्यापक बीमारी का उन्मूलन हो जाएगा: दुर्भाग्य से, यह उम्मीद पूरी तरह से गलत साबित हुई, जैसा कि 'लाइफ वॉच' ने अपने अनुभव से जाना। गंभीरता के क्षणों में, मुरुगन यह स्वीकार करते थे कि इस अपेक्षाकृत अस्पष्ट विषय में उनकी रुचि की शुरुआत उनके जीवन से जुड़ी थी। रोनाल्ड रॉस के कार्य का अंतिम महत्वपूर्ण चरण 1898 की गर्मियों में कलकत्ता में पूरा हुआ। मुरुगन का जन्म भी उसी शहर में हुआ था, हालांकि उन्होंने कम उम्र में ही शहर छोड़ दिया था। संभवतः इस जीवनी संबंधी संबंध का मुरुगन की इस विषय में अत्यधिक रुचि से कुछ संबंध था। 1987 में उन्होंने अपने कुछ मित्रों को बताया कि उन्होंने अंततः अपने शोध का सारांश 'रोनाल्ड रॉस के प्लास्मोडियम बी के विवरण में कुछ व्यवस्थित विसंगतियाँ' शीर्षक से एक लेख में लिख दिया है। हालाँकि उनके कुछ सहयोगियों ने रुचि दिखाई, लेकिन उनमें से किसी को भी यह लेख देखने का अवसर नहीं मिला। इसे जिन भी पत्रिकाओं में भेजा गया, वहाँ इसकी इतनी नकारात्मक प्रारंभिक समीक्षाएँ मिलीं कि मुरुगन ने इसे प्रकाशित करने से पहले संशोधित करने का निर्णय लिया।

लेकिन अंततः, संशोधित लेख का हाल मूल लेख से बेहतर नहीं रहा। नए लेख का दुर्भाग्यपूर्ण शीर्षक था 'उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में मलेरिया अनुसंधान की एक वैकल्पिक व्याख्या: क्या इसमें कोई गुप्त इतिहास छिपा है?'। इसे पहले वाले संस्करण से भी कहीं अधिक प्रतिकूल प्रतिक्रिया मिली, और इसने मुरुगन को एक सनकी और विक्षिप्त व्यक्ति के रूप में बदनाम कर दिया।

1989 में मुरुगन ने हिस्ट्री ऑफ साइंस सोसाइटी को पत्र लिखकर सोसाइटी के अगले सम्मेलन में मलेरिया पर प्रारंभिक शोध पर एक पैनल आयोजित करने का प्रस्ताव रखा। जब उनका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया गया, तो उन्होंने समीक्षा समिति के सदस्यों को कई पन्नों के ईमेल भेजे, जिससे उनके मेलबॉक्स भर गए। एक साल बाद सोसाइटी ने अभूतपूर्व कदम उठाते हुए उनकी सदस्यता रद्द कर दी। उन्हें चेतावनी दी गई कि यदि उन्होंने आगे किसी भी बैठक में भाग लेने का प्रयास किया तो उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। तब मुरुगन ने अंततः सार्वजनिक रूप से अपना पक्ष रखने का प्रयास छोड़ दिया।

आम तौर पर, लाइफवॉच में मुरुगन के सहकर्मी उनके 'शोध' को एक हानिरहित, हालांकि समय लेने वाला शौक मानते थे: किसी ने भी इसके लिए उन्हें बुरा नहीं समझा, सिवाय तब जब यह उनके नियमित काम में बाधा डालता था। लेकिन जल्द ही उन्हें अच्छी तरह जानने वालों को यह स्पष्ट हो गया कि विद्वान समुदाय से अलग-थलग किए जाने से उन्हें बहुत दुख हुआ था। वास्तव में, यही उनके लगातार अनियमित और जुनूनी व्यवहार का तात्कालिक कारण हो सकता है। उदाहरण के लिए, लगभग इसी समय उन्होंने तथाकथित 'अन्य मन' की अपनी धारणा के बारे में खुलकर बोलना शुरू किया: एक सिद्धांत जिसके अनुसार किसी व्यक्ति या व्यक्तियों ने मलेरिया अनुसंधान को कुछ दिशाओं में धकेलने और अन्य दिशाओं से दूर ले जाने के लिए रोनाल्ड रॉस

के प्रयोगों में व्यवस्थित रूप से हस्तक्षेप किया था। इस विचित्र परिकल्पना के उनके समर्थन ने धीरे-धीरे उनके कई मित्रों और सहयोगियों से उनके अलगाव का कारण बना।
मुरुगन का मानना था कि 1990 के दशक के आरंभ में मलेरिया अनुसंधान में हुए विकास – जैसे कि पटरॉयो का प्रतिरक्षा संबंधी कार्य और प्लास्मोडियम फाल्सीपेरम परजीवी में प्रतिजीनिक विविधताओं पर अनुसंधान में हुई महत्वपूर्ण खोजें – रॉस के लगभग एक शताब्दी पूर्व के कार्य के बाद इस विषय में सबसे महत्वपूर्ण प्रगति थीं। मुरुगन ने स्वयं को (और दूसरों को भी) आश्वस्त किया कि इन विकासों से उनके जीवन भर के कार्य की सार्थकता सिद्ध होगी। निर्णायक मोड़ 1995 में आया जब उन्होंने रॉस की खोजों के स्थल कलकत्ता भेजे जाने के लिए पैरवी शुरू की: वे विशेष रूप से 20 अगस्त से पहले वहाँ पहुँचने के लिए उत्सुक थे, जिस दिन रॉस ने अपनी एक खोज की स्मृति में 'विश्व मच्छर दिवस' घोषित किया था।
दुर्भाग्यवश, लाइफवॉच का कलकत्ता में कोई कार्यालय नहीं था; और केवल मुरुगन के लिए एक कार्यालय खोलने का खर्च वहन करना भी संभव नहीं था। हालांकि, जब यह स्पष्ट हो गया कि मुरुगन नौकरी जाने की परवाह किए बिना भी कलकत्ता जाने के लिए दृढ़ संकल्पित थे, तो संगठन के विभिन्न लोगों ने मिलकर एक छोटा शोध प्रोजेक्ट तैयार किया, जिससे उन्हें कम वेतन पर ही सही, कुछ समय कलकत्ता में बिताने का अवसर मिल सके। मुरुगन की अपार प्रसन्नता के लिए, कागजी कार्रवाई ठीक समय पर पूरी हो गई और वे 20 अगस्त 1995 को कलकत्ता पहुंच गए।
बाद में, मुरुगन के 'गायब' होने के बाद, कुछ लोगों ने लाइफ वॉच को ही दोषी ठहराने की कोशिश की कि उसने मुरुगन को जाने ही क्यों दिया। हालांकि, सच्चाई यह थी कि संगठन ने उसे रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया था। उदाहरण के तौर पर, कार्मिक विभाग के प्रतिनिधियों ने जुलाई 1995 में, उसके जाने से कुछ समय पहले, उससे कई बैठकें कीं और उसे इस परियोजना को आगे न बढ़ाने के लिए समझाने की कोशिश की। लेकिन तब तक यह योजना इतनी पक्की हो चुकी थी कि संभवतः कोई भी मुरुगन को उसके चुने हुए रास्ते पर चलने से नहीं रोक सकता था।
लेख में आगे कहा गया, 'इसलिए अगस्त 1995 की दुखद घटनाओं के लिए लाइफवॉच में मुरुगन के शुभचिंतकों को दोषी ठहराना अनावश्यक है: एक अपूरणीय मित्र के खोने पर उनके साथ शोक व्यक्त करना अधिक उचित होगा।'

अध्याय 8

मूसलाधार बारिश अब हल्की फुहार में बदल गई थी। मुरुगन तेजी से रबींद्र सदन परिसर से निकलकर लोअर सर्कुलर रोड के जाम से भरे किनारे की ओर बढ़े। ट्रैफिक आइलैंड पर खड़े परेशान पुलिसकर्मी की अनदेखी करते हुए, वे सीधे ट्रैफिक में घुस गए और आगे बढ़ते हुए, सामने से आ रही कारों और बसों को रोकने के लिए हाथ ऊपर उठाते रहे, मानो उनकी तेज ब्रेक और हॉर्न की आवाज से बेखबर हों।
दूसरी तरफ का फुटपाथ पैदल चलने वालों से खचाखच भरा हुआ था। हरीश मुखर्जी

रोड और पीजी अस्पताल की ओर बढ़ रही भीड़ में मुरुगन लगभग गिरते-गिरते बचा। भीड़ के साथ कदम मिलाते ही उसे किसी की आवाज़ सुनाई दी। वह अचानक रुक गया और पैदल चलने वालों की अथक भीड़ ने उसे आगे धकेल दिया।
जैसे ही वह आगे बढ़ा, उसने एक पल के लिए पीछे मुड़कर देखा। उसे फिर से वही आवाज़ सुनाई दी: 'अरे साहब, कहाँ जा रहे हैं?' सचमुच, उसके पीछे लोगों की भीड़ में ऊपर-नीचे हिलता हुआ एक दुबला-पतला लड़का दिखाई दिया, जिसके दाँत टूटे हुए थे - किसी अज्ञात किस्म का दलाल, जिसने दिन में पहले उसके गेस्ट हाउस के ठीक बाहर उसे रोका था।
मुरुगन ने अपनी चाल तेज़ कर दी और लड़का फिर ज़ोर से चिल्लाया: 'रुको, साहब; आप कहाँ जा रहे हैं?' उसने चटख रंगों वाली टी-शर्ट पहनी हुई थी जिस पर ताड़ के पेड़ों से घिरे समुद्र का चित्र और 'पटाया बीच' लिखा था। मुरुगन उसे फिर से इतनी नज़दीक देखकर परेशान हो गया: पहले उसे पीछा छुड़ाने में उसे लगभग एक घंटा लग गया था।
मुरुगन किसी तरह संघर्ष करते हुए फुटपाथ के किनारे बनी दीवार तक पहुंचा और लड़के का इंतज़ार करने लगा। उसने पहले अपनी अधूरी याद वाली बंगाली में और फिर हिंदी में कहा, 'सुनो दोस्त, मेरे पीछे चलना बंद करो: तुम्हें मुझसे कुछ नहीं मिलेगा।'
लड़के ने मुस्कुराते हुए अपने दांत दिखाए। उसने कहा, 'डॉलर का छुट्टा चाहिए?'
'अच्छा रेट है।'
मुरुगन भड़क उठा। 'क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा?' वह चिल्लाया। 'मैं इसे कितने तरीकों से कहूँ: नहीं, ना, नाहिन, न्येट, नथिंग, निक्स। मैं डॉलर नहीं बदलना चाहता, और अगर मैंने ऐसा किया भी तो तुम इस दुनिया में आखिरी इंसान होगे जिसके पास मैं जाऊँगा।'
उसने अपनी जेब में हाथ डालकर लड़के के हाथ में मुट्ठी भर सिक्के थमा दिए। उसने कहा, 'बस इतना ही मिलेगा तुम्हें। इसे लो और यहाँ से चले जाओ।'
वह झटपट भीड़ में वापस घुस गया, लड़के को मुट्ठी भर सिक्कों को घूरते हुए छोड़कर। अब वह हरीश मुखर्जी रोड के कोने पर था। झुककर, मुरुगन कोने से मुड़ा और दीवार से सटकर खड़ा हो गया। तेज़ी से भागती भीड़ में छिपकर, उसने अपने पीछा करने वाले को दूसरी दिशा में भागते हुए देखा; उसने उसे चारों ओर देखते हुए, सड़क का जायज़ा लेते हुए देखा। फिर लड़का उससे अलग हुआ और सीधे यातायात में घुस गया, दूर दिख रहे विक्टोरिया मेमोरियल की ओर दौड़ पड़ा।
'और आपको भी शुभ रात्रि,' मुरुगन ने भीड़ में वापस जाते हुए कहा।
मोड़ के बाद भीड़ कम हो गई। पी.जी. अस्पताल की लाल ईंटों से बनी इमारतें उसके बाईं ओर थीं, जो कंधे जितनी ऊंची चारदीवारी और उसके किनारे बनी संकरी खाई के पीछे थीं। उसने अपनी चाल धीमी कर दी और स्मारक मेहराब को देखने के लिए दीवार पर नज़रें गड़ाए रखीं।
फिर अचानक ही वह चीज़ सामने आ गई, खाई के उस पार, गुज़रते ट्रक की हेडलाइट्स की रोशनी में एक जंग लगे लोहे के गेट को घेरे हुए एक मेहराब। उसके

शिखर पर एक पदक था, जिस पर रोनाल्ड रॉस का दाढ़ीदार चेहरा बना हुआ था। उसके नीचे, दाईं ओर, एक शिलालेख था: इस गेट के दक्षिण-पूर्व में सत्तर गज की दूरी पर स्थित छोटी सी प्रयोगशाला में सर्जन-मेजर रोनाल्ड रॉस आई.एम.एस. ने 1898 में मच्छरों द्वारा मलेरिया के संचरण के तरीके की खोज की थी। बाईं ओर, संगमरमर पर, रॉस की कविता 'निर्वासन में' की तीन पंक्तियाँ खुदी हुई थीं।
मुरुगन ने उन परिचित रेखाओं पर सरसरी नजर डाली:

आज के दिन ईश्वर दया कर रहा है
मेरे हाथ में रखा है
एक अद्भुत बात; और ईश्वर
आपकी प्रशंसा हो। उनके आदेश पर,

उसके गुप्त कार्यों की खोज में
आँसुओं और साँस फूलते हुए,
मुझे तुम्हारे धूर्त बीज मिल गए हैं,
हे लाखों हत्या करने वाली मृत्यु!

मुझे यह छोटी सी बात पता है
असंख्य लोग बचाएंगे।
ओ डैथ, वेयर इज़ दायी स्टिंग?
हे कब्र, तेरी विजय?

रोनाल्ड रॉस

मुरुगन हंसने लगे। मुड़कर उन्होंने अपनी बाहें फैलाईं और उसी कविता को एक गहरी, आनंदित और बुलंद आवाज में सुनाना शुरू किया:

मैं अधमरा होकर चारों ओर देखता हूँ।
और मृत्यु की भूमि देखो
मृत हड्डियाँ जो ज़मीन पर रेंगती हैं
और नीचे मृत हड्डियाँ;

अभागों की एक जाति फंस गई,
आवश्यकता की हथेलियों के बीच
और रगड़ने से बिल्कुल व्यर्थ हो गया,
मानव वीर्य का छिलका।'

चौड़ी सड़क के दूसरी ओर से आती तालियों की आवाज से वह रुक गया। 'बहुत बढ़िया, महोदय,' एक आवाज सुनाई दी।

मुरुगन ने अपने हाथ नीचे किए और सड़क के उस पार पेड़ों की छाया में अंधेरे में झाँका। उसे एक प्रिंटेड टी-शर्ट और एक मुस्कुराता हुआ, दाँतों के बीच गैप वाला चेहरा दिखाई दिया।
'क्या तुम मेरा पीछा कर रहे हो, मानव वंश के भूसे?' उसने हाथों को जोड़कर चिल्लाते हुए कहा। 'क्यों? क्यों, इसमें तुम्हारा क्या फायदा है?'
लड़के ने हाथ हिलाकर जवाब दिया और गाड़ियों की भीड़ में घुस गया। मुरुगन ने रेस कोर्स की दिशा से अपनी ओर आती हुई एक ट्रक को देखा। उसने तब तक इंतज़ार किया जब तक ट्रक उसके बगल में आकर रुक नहीं गई और लड़के की नज़र से ओझल नहीं हो गई। फिर वह मुड़ा, दीवार फांदकर मेहराब के दूसरी तरफ कूद गया। उसके पैर किसी नरम और लचीली चीज़ पर पड़े। पहले तो उसे लगा कि यह कीचड़ है; उसे अपने नए जूतों के मुलायम चमड़े में नमी महसूस हो रही थी। थोड़ी देर बाद उसे बदबू आई। 'धत् तेरे की,' उसने धीमी आवाज़ में कहा और चारों ओर देखने लगा। वह अस्पताल की मुख्य इमारतों के पीछे एक संकरे, झाड़ियों से भरे बंजर इलाके में था। उसके सामने कुछ साधारण से दिखने वाले छोटे-छोटे मकान और एक छोटा सा सीमेंट का ढांचा था जिसमें पानी का पंप लगा था। ऊपर बने अस्पताल के वार्डों से परावर्तित प्रकाश में, मुरुगन ने पास ही एक खुले कूड़े के ढेर में कुत्तों के एक झुंड को खाना ढूंढते देखा। अपनी आंखों पर हाथ रखकर उसने अंधेरे में झांका: दूर-दूर तक कोई नहीं दिख रहा था सिवाय एक बूढ़े आदमी के, जो दीवार से सटकर बैठा अपने नितंब धो रहा था। उसके सामने टूटी हुई ईंटों के ढेर लगे थे। उनके बीच बिखरे हुए गोबर के ढेर थे, जो स्ट्रीट लैंप की नियॉन रोशनी में राख जैसे चमक रहे थे।
मुरुगन ने अपनी नाक पर हाथ रखा और दीवार से सटकर बैठ गया। उसे दूसरी तरफ से दौड़ते हुए कदमों की आहट सुनाई दी; वे रुके, दूर गए, फिर वापस आए। उसने लड़के को खुद से कुछ बुदबुदाते हुए सुना, फिर वह जल्दी से चला गया।
फिर से सांस लेते हुए मुरुगन बगल की ओर बढ़ने लगा, अपने खुले हाथों से दीवार का सहारा लेते हुए। दीवार पर धक्का देते हुए, उसका बायां हाथ संयोगवश खुरदरी ईंटों की सतह में बने एक छेद के किनारे पर जा पहुँचा। मुरुगन झुककर देखने लगा और पाया कि वह छेद वास्तव में एक छोटा सा आले था: या यूं कहें कि एक खाली जगह थी जहाँ स्मारक मेहराब के पीछे से कुछ ईंटें हटाई गई थीं।
उसने धीरे से अपना हाथ अंदर डाला। हाथ किसी चीज़ से टकराया; एक छोटी सी वस्तु। उसकी उंगलियाँ उस पर बंद हो गईं और उसने उसे बाहर खींच लिया। वह मिट्टी की एक छोटी सी मूर्ति थी।
मुरुगन ने मूर्ति को अपनी बांह की लंबाई तक फैलाकर दूर जल रही सड़क की बत्ती की हल्की रोशनी में देखा। यह मूर्ति रंगी हुई मिट्टी से बनी थी और इतनी छोटी थी कि आसानी से उनकी हथेली में समा जाती थी। इसे देखकर उन्हें अपनी मां द्वारा यात्राओं के दौरान अपने साथ ले जाने वाली देवी-देवताओं की छोटी-छोटी मूर्तियों की याद आ गई।
मूर्ति का केंद्रीय भाग एक साधारण, अर्धवृत्ताकार टीला था, जिसे बेढंगे ढंग से बनाया गया था और उसमें कोई विशेषता नहीं थी, सिवाय पकी हुई मिट्टी पर बनी दो बड़ी,

शैलीबद्ध आँखों के, जिन्हें गहरे काले और सफेद रंगों में चित्रित किया गया था। मुरुगान को ये आँखें देखकर एक पल के लिए चौंक गए; मंद नियॉन रोशनी में वे चमकती हुई दिखाई दीं, मानो उनकी खुली हथेली से सीधे उनकी ओर देख रही हों। ऐसा लगा जैसे वे उनकी आँखों पर टिकी हुई हों, उनकी निगाहें थामे हुए हों; उन्हें नज़रें हटाने से पहले पलकें झपकानी पड़ीं।
उसने अपनी हथेली में वस्तु को घुमाया। टीले के दाहिनी ओर एक छोटा सा पक्षी था, जो स्पष्ट रूप से कबूतर था, जिसे पंख, आँखें और सब कुछ बड़ी बारीकी से बनाया गया था। टीले के दूसरी ओर से एक छोटा सा उभार निकला हुआ था, जैसे किसी कटे हुए हाथ का ठूंठ हो। हाथ से एक छोटी सी धातु की वस्तु जुड़ी हुई थी; मुरुगन यह नहीं बता सका कि वह क्या थी - उसे बस एक छोटा सा धातु का सिलेंडर दिखाई दे रहा था। उसने मूर्ति को पास लाकर ध्यान से देखा, यह समझने की कोशिश की कि वह धातु की वस्तु किस चीज का प्रतीक है।
फिर एक बार फिर उनकी बात बीच में ही रुक गई: 'महाराज; मैंने आपको ढूंढ लिया; आप यहां क्या कर रहे हैं?' लड़का दीवार के ऊपर से झाँक रहा था, उसका चेहरा मुरुगन के सिर के ठीक ऊपर था, और वह हंस रहा था।
मुरुगन का आपा टूट गया। 'मेरी नजरों से दूर हो जा, कमीने!' वह चिल्लाया।
लड़के ने मुंह बनाकर सिर हिलाया। तभी उसकी नज़र मुरुगन के हाथ में रखी मूर्ति पर पड़ी। उसने हाथ बढ़ाकर मुरुगन से वह मूर्ति छीन ली।
मुरुगन ने मूर्ति पर झपट्टा मारा, लेकिन उनके हाथ ने लड़के की मुट्ठी को पकड़ लिया और मूर्ति को गिरा दिया। मूर्ति दीवार के दूसरी तरफ ज़मीन पर जा गिरी। लड़का दीवार से नीचे गिर गया और मूर्ति के बगल में घुटनों के बल बैठ गया।
मुरुगन ने सिर उठाकर दीवार के उस पार देखा। लड़का चारों हाथों-पैरों के बल बैठा टूटी हुई मिट्टी के टुकड़े इकट्ठा कर रहा था। उसने मुरुगन की ओर कंधे के ऊपर से देखा और अपशब्द कहे।
'तुमने ही ऐसा चाहा था,' मुरुगन ने कहा। 'इसमें मेरी कोई गलती नहीं है।' दीवार से पीठ टिकाए मुरुगन बाईं ओर बढ़ने लगा, मल-मूत्र और मलबे पर सावधानी से कदम रखते हुए। वह एक जर्जर लाल ईंटों के बने छोटे से कमरे के पास आकर रुका, जो ज़मीन से इतना सटा हुआ था कि चारदीवारी से लगभग पूरी तरह छिपा हुआ था। वह ढांचा एक परित्यक्त ढांचे जैसा लग रहा था, जिसकी टूटी हुई प्लास्टर से पेपुल की शाखाएँ निकल रही थीं और पुरानी खिड़कियों और दरवाजों में बड़े-बड़े छेद दिखाई दे रहे थे।
मुरुगन ने खिड़की के खुले हिस्से से धीरे से अपना सिर अंदर डाला। 'हेलो,' उसने पुकारा। 'कोई है क्या?'
अचानक पंखों के फड़फड़ाने और सरसराहट की आवाज़ आई और उसके चेहरे पर चोट लगी। कबूतरों का एक झुंड चक्कर लगाते हुए गुजरा और उनके पंख उसके चेहरे को छू गए।
मुरुगन पीछे की ओर गिर पड़ा और अपने हाथों से अपना सिर ढक लिया। उसके कानों में एक आवाज़ गूंजी; कुछ सेकंड बीतने के बाद उसे एहसास हुआ कि वह चीख

पड़ा था। फिर उसने अपने बगल में ज़मीन पर एक छोटा पत्थर गिरने की आवाज़ सुनी। उसने ऊपर देखा और लड़के को चारदीवारी के ऊपर लटकते हुए, एक और पत्थर फेंकने के लिए अपनी बांह मोड़े हुए पाया।
मुरुगन एक संकरे रास्ते से होते हुए मुख्य सड़क पर पहुंचा और दौड़ते हुए अस्पताल के गेट की ओर चल पड़ा। गोखले रोड पर प्रवेश द्वार पर कई टैक्सियाँ खड़ी थीं। मुरुगन एक टैक्सी में कूद गया और दरवाजा जोर से बंद कर दिया। 'चलो चलें,' वह चिल्लाया, 'चलो चलें, जल्दी करो।'
सिख टैक्सी ड्राइवर ने बिना किसी हड़बड़ी के उसकी ओर मुड़कर देखा। उसने हिंदी में पूछा, 'कहाँ जाना है?'
'रॉबिन्सन स्ट्रीट,' मुरुगन ने हांफते हुए कहा। 'लाउडन और रॉडन स्ट्रीट के बीच।'
ड्राइवर ने इग्निशन की चाबी घुमाई। पुरानी एम्बेसडर एक गर्जना के साथ स्टार्ट हुई और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी।
मुरुगन खिड़की के पास दुबक कर बैठा था और सड़क व फुटपाथ पर नज़र गड़ाए बैठा था। लड़के का कोई निशान न देखकर वह वापस सीट पर बैठ गया। उसकी नज़र उसके जूतों पर पड़ी; वे भूरे धब्बों से ढके हुए थे। उसे एक दुर्गंध महसूस हुई और उसने अपने पैर आगे की सीट के नीचे दबा लिए, इस उम्मीद में कि गंध ड्राइवर तक न पहुँचे। लेकिन गंध बनी रही; वह उससे छुटकारा नहीं पा सका। उसने अपने हाथ पर एक रुमाल लपेटा, जूते उतारे और उन्हें खिड़की से बाहर फेंक दिया।
वह राहत की सांस लेते हुए अपनी सीट पर बैठ गया। लेकिन कुछ ही पल बाद पीछे की विंडशील्ड पर एक ज़ोरदार आवाज़ हुई। उसने जैसे ही पीछे मुड़कर देखा, उसका दूसरा जूता हवा में उड़ता हुआ दिखाई दिया। वह खिड़की से टकराया और उछलकर शीशे पर एक लंबा भूरा धब्बा छोड़ गया।
ड्राइवर ने खिड़की से सिर बाहर निकाला और उस लड़के पर चिल्लाने लगा, जो ट्रैफिक के बीच से उनकी ओर तेज़ी से आ रहा था। तभी सिग्नल बदले, पीछे से आ रही गाड़ियों ने हॉर्न बजाना शुरू कर दिया और टैक्सी तेज़ी से आगे बढ़ गई।
जैसे ही टैक्सी लोअर सर्कुलर रोड पर मुड़ी, उसने रवींद्र सदन सभागार के जगमगाते अग्रभाग पर एक नज़र डाली। उसने देखा कि दो महिलाएं सीढ़ियों से तेज़ी से नीचे उतर रही हैं, और उसने खिड़की से अपना सिर बाहर निकाला। टैक्सी अब थोड़ी तेज़ चल रही थी और वह उन्हें गेट की ओर जाते हुए बस एक झलक ही देख पाया। उसे लगभग यकीन था कि वे वही दो महिलाएं थीं जिनसे उसने शाम को पहले बात की थी।

अध्याय 9

लाइफवॉच न्यूज़लेटर में छपे लेख में एक बात गलत थी। मुरुगन के कलकत्ता रवाना होने से पहले, मुरुगन और कार्मिक विभाग के प्रतिनिधि के बीच केवल एक ही बैठक हुई थी।
एक सुबह जब अंतर वेस्ट 57वीं स्ट्रीट स्थित लाइफवॉच के मुख्यालय में अपने केबिन

में पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि उनकी स्क्रीन पर एक फाइल रखी हुई है: इसमें मुरुगन के तबादलों के सभी अनुरोधों का पूरा रिकॉर्ड था। अंतर को पूरा यकीन था कि फाइल गलती से उनके पास आ गई है: वे तकनीकी रूप से तो कार्मिक विभाग के सदस्य थे; उनका काम लगभग पूरी तरह से लेखा विभाग से जुड़ा था। उन्होंने तुरंत अपने विभाग के निदेशक को एक पत्र भेजा। कुछ घंटों बाद निदेशक ने उन्हें एक संदेश भेजा जिसमें उन्हें मिलने के लिए कहा गया था।

निदेशक एक गंभीर और कर्तव्यनिष्ठ स्वीडिश व्यक्ति थे, जो अपने कर्मचारियों को यह याद दिलाने का कोई अवसर नहीं छोड़ते थे कि उनका असली काम देखभाल करना है। उन्होंने अंतर से कहा, 'चलिए, थोड़ी देर के लिए स्क्रीन से दूर चलते हैं। आज आपके लिए मेरे पास एक अधिक मानवीय काम है।' उन्होंने मुरुगन की फाइल निकाली और अंतर को उसे दिखाया। 'देखिए, क्या आप इस मुरुगन को कुछ समझा सकते हैं: मेरा मतलब है, आर्थिक रूप से समझाना। उन्हें पेंशन योजनाओं, चिकित्सा लाभों और इस तरह की सभी चीजों के बारे में बताइए। आप रिकॉर्ड से देखेंगे कि यह सज्जन पहले से ही अपने वेतन का एक तिहाई हिस्सा गुजारा भत्ता के रूप में देते हैं: अगर वह इस व्यर्थ की खोज में कलकत्ता चले जाते हैं, तो वास्तव में उन्हें कुछ भी नहीं मिलेगा।'

अंतर ने उसी दोपहर मुरुगन को ईमेल भेजा। कुछ दिनों बाद, दोपहर के भोजन से ठीक पहले, अंतर ने विभाग के खुले कार्यालय में एक तेज़, कर्कश आवाज़ गूंजती सुनी। हालाँकि वह अपने केबिन से उसे देख नहीं पा रहा था, फिर भी वह तुरंत समझ गया कि यह किसकी आवाज़ है।

मुरुगन अपने परिचितों को गीत गाकर अभिवादन कर रहे थे: 'अरे, आप लोग इस सुहावने दिन में कैसे हैं? कम पराग कणों का आनंद ले रहे हैं?'

अंतर और उसके बगल वाले केबिन में बैठे उसके पड़ोसी ने हैरानी भरी नजरों से एक-दूसरे को देखा।

आवाज कई डेसिबल ऊंची हो गई: 'तुममें से किसका नाम चींटी... चींटी... है?'

'इधर आओ,' अंतर चिल्लाया और उछलकर खड़ा हो गया। उसने खुद को एक स्कूली बच्चे की तरह अपना हाथ ऊपर उठाते हुए पाया, ताकि वह उसके केबिन की प्लाईवुड की छत के ऊपर से झाँक सके।

'चींटी, तुम यहीं रहो,' मुरुगन ने खुशी से पुकारा। 'मैं तुम्हारे पास आने का रास्ता खोज लूंगा।'

एक मिनट बाद वह मुरुगन के कमरे के प्रवेश द्वार पर प्रकट हुआ; एक चुस्त-दुरुस्त, तोंद निकला हुआ आदमी, गहरे रंग के तीन-पीस सूट और एक फेल्ट टोपी पहने हुए। अंटार के अनुमान के अनुसार, दोनों की उम्र लगभग एक जैसी थी; दोनों चालीस वर्ष के आसपास थे।

'अरे, चींटी,' मुरुगन ने मुस्कुराते हुए उससे कहा और अपना हाथ आगे बढ़ाया। 'यह तो तुमने खुद ही बना लिया है!'

उस व्यक्ति के व्यवहार से विचलित होकर, अंतर ने उसे हल्की सी मुस्कान दी और एक कुर्सी की ओर इशारा किया। आंकड़ों की एक सूची निकालते हुए, वह सीधे अपने

तैयार किए गए संक्षिप्त भाषण पर उतर आया, जिसमें उसने बताया कि कलकत्ता जाना उसके करियर के लिए कितना बड़ा नुकसान साबित होगा।
मुरुगन चुपचाप उस एकालाप को सुनते रहे, अपनी दाढ़ी सहलाते रहे, उनकी तेज और पैनी निगाहें अंतर पर टिकी रहीं। जब अंतर की सांस फूलने लगी और वह रुका, तो उन्होंने उसे प्रोत्साहन देने के लिए सिर हिलाया।
'बोलते रहो, एंट,' उसने कहा, 'मैं सुन रहा हूँ।'
अंतर ने अपना तुरुप का पत्ता आखिरी के लिए बचाकर रखा था। उसने अब उसे खेला। 'और क्या तुमने अपने भुगतानों के बारे में सोचा है?' उसने शुरू किया। थोड़ी सी शर्मिंदगी के कारण वह रुका और गला साफ किया। 'मेरा मतलब है, तुम्हारी पूर्व पत्नी को किए जाने वाले भुगतान?' उसने कहा। 'अगर तुम यह सब करते रहे तो तुम्हारे पास खुद का गुजारा करने के लिए भी मुश्किल से पैसे बचेंगे।'
अचानक मुरुगन आगे झुके और अंतर की आँखों में देखते हुए बोले, 'क्या तुम्हारी कभी शादी हुई है, अंतर?'
चौंककर अंतर अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर गिर पड़ा। अनजाने में ही उसने सिर हिला दिया।
'और अब आप नहीं हैं?'
'नहीं,' अंतर ने कहा।
'हाँ।' मुरुगन ने अपने होंठ सिकोड़े, मानो वह खुद से किसी बात की पुष्टि कर रहा हो। 'मुझे पता चल गया था।'
'कैसे?'
'बिल्कुल कर सकता हूँ,' मुरुगन ने कहा। 'तो बताओ, एंट: क्या तुम भी गुजारा भत्ता दे रहे हो? लगता है तुम्हें इस विषय की काफी जानकारी है।'
'नहीं!' अंतर ने उग्र स्वर में कहा। 'मेरी पत्नी की मृत्यु उसकी पहली गर्भावस्था में ही हो गई थी...'
'यह तो बहुत बुरा हुआ,' मुरुगन ने कहा। 'क्या आप दोनों लंबे समय से साथ थे?'
'हां।' प्रश्न की सीधी-सादी प्रकृति ने अंटार को चौंका दिया। 'आप जानते हैं, मैं अनाथ था, और जब मैं किशोर था, मिस्र में उसके परिवार ने मुझे गोद ले लिया था। वह मेरे लिए सब कुछ थी—' वह घबराकर अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
मुरुगन ने सहानुभूति जताते हुए कहा, 'ऐसी चीजें होती रहती हैं।' उसने अपनी घड़ी पर नज़र डाली और कुर्सी पीछे धकेली। 'चलो, कुछ खाने चलते हैं।'
अंतर का सिर सवालों की बौछार से चकरा रहा था। 'कुछ खा लें?' उसने क्षण भर के लिए असमंजस में पड़कर कहा।
मुरुगन जोर से हँसा: 'कुछ दोपहर का भोजन करो, कुछ खाने को ले आओ।'
अंतर अपना लंच साथ लाया था, बिल्कुल। वह उसके ब्रीफकेस में, ठीक उसके पीछे रखा था; एक सैंडविच और एक सेब। उसे अकेले अपने केबिन में लंच करना अच्छा लगता था। लेकिन अभी वह यह बात कहने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।
'ठीक है,' उसने कहा। 'चलो चलते हैं।'
कॉरिडोर में, लिफ्ट की ओर जाते हुए, मुरुगन ने खुशी से कहा: 'लगता है तुम्हारे साथ

बहुत बुरा बर्ताव हुआ है, है ना?'
बातचीत को अपनी ओर मोड़ने की कोशिश करते हुए, अंतर ने जल्दी से कहा: 'और आपके बारे में क्या?'
'मेरा तलाक काफी सीधा-सादा था,' मुरुगन ने दोपहर के भोजन के समय लिफ्ट के लिए लगी कतार में खड़े होते हुए लापरवाही से कहा। लिफ्ट में कदम रखते ही उनकी आवाज़ तेज़ होती चली गई। 'यह सब एक गलती थी - हमारे परिवारों द्वारा तय किया गया था। कुछ ही साल चला। कोई बच्चे नहीं हैं।'
मुरुगन जोर से हँसा, जिसकी कर्कश आवाज़ लिफ्ट में गूंज उठी। उसने कहा, 'हम इस विषय पर कैसे आ गए?' 'अरे हाँ, तुम ही तो कह रहे थे कि अगर मैं कलकत्ता गया तो तलाक के बाद मैं एक निकम्मा पति साबित होऊंगा।'
अंतर ने एक परिचित की घूरती निगाह को भांपते हुए अपनी नजरें नीचे कर लीं। उसने तब तक अपनी नजरें नीचे ही रखीं जब तक वे लिफ्ट से बाहर नहीं निकल गए।
वे एक छोटे से थाई रेस्तरां में गए, जो उस इमारत के ठीक पास था जहाँ लाइफवॉच का कार्यालय था। वेटर ने उनका ऑर्डर लिया और कुछ पल की खामोशी छा गई।
अंतर ने पहले बोलना शुरू किया। 'आप कलकत्ता जाने के लिए इतने बेताब क्यों हैं?' उसने अचानक ही कह दिया। कहने के बाद उसे पछतावा हुआ; उसे अजनबियों से, खासकर इस तरह के मुखर और उद्दंड व्यक्ति से, अपने दिल की बातें साझा करने की आदत नहीं थी। फिर भी, उस व्यक्ति की आवाज़ और व्यवहार से वह जितना भयभीत था, उतना ही उसे उससे एक अजीब सा अपनापन भी महसूस हुआ।
मुरुगन मुस्कुराया। उसने कहा, 'क्या मैं तुम्हें बताऊं कि मुझे क्यों जाना पड़ रहा है, चींटी? बात सीधी सी है: मुझे नहीं पता कि मेरे पास कितने साल बचे हैं, और मैं अपने जीवन में कुछ करना चाहता हूं।'
'अपनी ज़िंदगी में कुछ करो?' अंटार ने उपहास भरे लहजे में कहा। 'जो तुम करोगे, उससे तुम अपने सारे भविष्य को बर्बाद कर दोगे - कम से कम लाइफ-वॉच में तो ज़रूर।'
'लेकिन इसे इस तरह से देखें,' मुरुगन ने कहा। 'आपको एक हजार लोग मिल सकते हैं - नहीं, दो हजार... शायद दस - जो वह काम कर सकते हैं जो मैं अभी कर रहा हूं। लेकिन आपको जीवित कोई दूसरा व्यक्ति नहीं मिलेगा जो उस विषय के बारे में मुझसे ज्यादा जानता हो जिसमें मैं विशेषज्ञता रखता हूं।'
'और वो क्या है?' अंतर ने विनम्रता से पूछा।
'रोनाल्ड रॉस,' मुरुगन ने कहा। 'नोबेल पुरस्कार विजेता जीवाणुविज्ञानी। मेरी बात मानिए, रोनी रॉस के विषय में मैं ही एकमात्र जानकार हूं।'
अंतर के चेहरे पर कुछ संदेह के भाव अवश्य झलके होंगे, क्योंकि मुरु-गान ने तुरंत कहा, 'मुझे पता है कि यह शेखी बघारने जैसा लग रहा है, लेकिन यह कोई बहुत बड़ा दावा नहीं है। रॉस पाश्चर या कोच जैसे महान वैज्ञानिक नहीं थे: उनके काम में विविधता की कमी थी। मलेरिया पर उनका शोध ही एकमात्र ऐसा काम था जो उन्होंने किया और जो काफी क्रांतिकारी था। और वह भी एक अनोखा और अप्रत्याशित काम था। क्या आप जानते हैं कि इसमें उन्हें कितना समय लगा?'

अंतर ने विनम्रतापूर्वक सिर हिलाकर उत्तर दिया।
'वास्तविक शोध, यानी व्यावहारिक कार्य, में सिर्फ तीन साल लगे, घर-घर जाकर; ये तीन साल पूरी तरह से भारत में ही बीते। उन्होंने 1895 की गर्मियों में सिकंदराबाद नामक एक छोटे से सैन्य शिविर में शुरुआत की और 1898 की गर्मियों में कलकत्ता में अपना अंतिम कार्य पूरा किया। और उस समय का लगभग आधा ही समय उन्होंने वास्तव में प्रयोगशाला में बिताया। बाकी समय उन्होंने महामारियों को नियंत्रित करने, टेनिस और पोलो खेलने, पहाड़ों में छुट्टियां मनाने, आदि में बिताया। मेरे हिसाब से उन्होंने मलेरिया पर काम करते हुए कुल मिलाकर लगभग पांच सौ दिन बिताए। और जानते हैं क्या? मैंने उन पांच सौ दिनों में से हर एक दिन उन पर नज़र रखी है: मुझे पता है कि वे कहाँ थे, उन्होंने क्या किया, उन्होंने कौन सी स्लाइड देखीं; मुझे पता है कि वे क्या देखना चाहते थे और उन्होंने वास्तव में क्या देखा; मुझे पता है कि उनके साथ कौन था, कौन नहीं था। ऐसा लगता था जैसे मैं उनके कंधे पर से देख रहा था। अगर उनकी पत्नी ने पूछा होता, "आपका दिन कैसा रहा, प्रिय?" तो मैं उन्हें बता सकता था।'
'और तुम्हें इन सब बातों के बारे में कैसे पता चला?' अंतर ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा।
'देखो,' मुरुगन ने कहा, 'रोनाल्ड रॉस जैसे व्यक्ति की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह सब कुछ लिख लेता है। तुम्हें याद रखना होगा: इस व्यक्ति ने इतिहास की किताबों को फिर से लिखने का निश्चय कर लिया है। वह चाहता है कि हर कोई कहानी को वैसे ही जाने जैसे वह सुनाने वाला है; वह किसी भी बात को अनसुना नहीं करना चाहता, एक मिनट भी नहीं, अगर संभव हो तो। उसने मेरे जैसे किसी व्यक्ति के आने की उम्मीद रखी थी और मुझे उसकी मदद करने में खुशी है। अगर तुम सोचो तो, यह जानने के लिए बहुत कुछ नहीं है: एक व्यक्ति के जीवन के पाँच सौ दिन।'
'क्या रॉस वाकई इतना दिलचस्प था?' अंटार ने कहा।
'दिलचस्प?' मुरुगन जोर से हँस पड़ा। 'हाँ और ना। वह बेशक एक प्रतिभाशाली व्यक्ति था, लेकिन वह एक बदतमीज़ भी था।'
'हां,' अंतर ने कहा, 'बोलते रहो, मैं सुन रहा हूं।'
'ठीक है,' मुरुगन ने कहा, 'ज़रा कल्पना कीजिए: एक आदमी है, बिल्कुल फिल्मों के किरदारों की तरह, शिकार करने वाला, मछली पकड़ने वाला, निशानेबाज़ी करने वाला औपनिवेशिक टाइप का; टेनिस और पोलो खेलता है और सूअर का शिकार भी करता है; सुंदर, घनी मूंछों वाला, गोल-मटोल गुलाबी गालों वाला, कभी-कभार शहर में घूमने का शौकीन; कुछ सुबह नाश्ते में व्हिस्की पीता है; लंबे समय तक उसे समझ नहीं आया कि वह अपने जीवन में क्या करना चाहता है; उसने सोचा कि उसे उपन्यास लिखना अच्छा लगेगा; कोशिश की, कुछ मध्ययुगीन प्रेम कहानियाँ लिखीं; फिर खुद से कहा, "अरे यार, ये तो मेरी सोच के मुताबिक नहीं हो रहा, चलो कविताएँ लिखने की कोशिश करते हैं।" लेकिन वो भी कामयाब नहीं हुआ और फिर पा रॉस, जो भारत में ब्रिटिश सेना के एक बड़े जनरल थे, ने उनसे कहा, "रॉन, तुम ये सब क्या कर रहे हो? हमारा परिवार भारत में तब से है जब से यह अस्तित्व में आया है और यहाँ कोई भी ऐसी सेवा नहीं है जिसमें कोई रॉस न हो, सिविल सेवा, भूवैज्ञानिक सेवा, प्रांतीय

सेवा, औपनिवेशिक सेवा... मैंने सबके बारे में सुना है, लेकिन किसी ने मुझे अभी तक किसी काव्यात्मक सेवा के बारे में नहीं बताया। तुम्हें अपनी नाक साफ करनी होगी, बेटा, और मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम्हें यह कहाँ करना है, इसलिए ध्यान से सुनो। एक ऐसी संस्था है जिसमें रॉस की कमी है: भारतीय चिकित्सा सेवा। इसमें तुम्हारा नाम लिखा है, इतने बड़े अक्षरों में कि तुम इसे अंतरिक्ष यान से भी पढ़ सकते हो। तो इस कविता के चक्कर में मत पड़ो, कविता से कुछ नहीं चलता।"
तो युवा रॉनी ने सलामी दी और लंदन के मेडिकल स्कूल में दाखिला लेने के लिए निकल पड़ा। अगले कुछ साल उसने जैसे-तैसे गुज़ारे, कुछ कविताएँ लिखीं, ओपन-माइक नाइट्स में परफॉर्मेंस दीं, और अपने अगले उपन्यास की रूपरेखा तैयार करने का सपना देखा। चिकित्सा उसके दिमाग में आखिरी चीज़ थी, लेकिन फिर भी वह भारतीय चिकित्सा सेवा में भर्ती हो गया और देखते ही देखते वह भारत लौट आया, हाथ में स्टेथोस्कोप लिए पशु चिकित्सकों का ऑपरेशन कर रहा था। तो उसने फिर से कुछ साल ऐसे ही गुज़ारे, टेनिस खेला, घुड़सवारी की, वही पुरानी दिनचर्या। और फिर एक सुबह वह बिस्तर से उठा और पाया कि उसे विज्ञान का चस्का लग गया है। उसकी शादी हो चुकी थी, बच्चे थे, वह अपने मध्य जीवन संकट से गुज़र रहा था; उसे तो बिजली से चलने वाली लॉनमॉवर के लिए पैसे बचाने चाहिए थे, लेकिन उसने इसके बजाय क्या किया? उसने आईने में देखा और खुद से पूछा: "अभी चिकित्सा जगत में क्या चल रहा है? नए विचारों के चरम पर क्या हो रहा है? मुझे नोबेल पुरस्कार किससे मिलेगा?"
और नाबालिग उसे क्या बताता है? आप समझ गए होंगे: मलेरिया, यही इस मौसम का मुख्य प्रकोप है।
तो रॉनी के दिमाग में बत्ती जल उठी और वह इतना बेसुध हो गया जैसे साफ रात में ब्रुकलिन ब्रिज: "हाँ," उसने कहा, "मैंने इसके बारे में पहले क्यों नहीं सोचा? यही तो कारगर उपाय है: मलेरिया।"
'क्या रॉस को खुद मलेरिया हुआ था?' अंटार ने पूछा।
'उसे यह काम अपने आधे काम के दौरान मिला,' मुरुगन ने कहा।
उसने अंटार की ओर तीखी निगाहों से देखते हुए कहा, 'तुमने क्यों पूछा? क्या तुमने खुद कभी इसका अनुभव किया है?'
अंतर ने सिर हिलाया। 'हां,' उसने कहा, 'बहुत समय पहले, मिस्र में।'
मुरुगन उठ बैठा। उसने कहा, 'यह तो अजीब बात है। मिस्र में मलेरिया की दर काफी कम है।'
'मुझे लगता है कि मैं एक अपवाद था,' अंटार ने कहा।
'तो क्या आपका मामला एक अपवाद था? या यह किसी खास इलाके तक ही सीमित था?'
'मुझे नहीं पता,' अंटार ने संक्षेप में कहा।
'क्या आपको कभी-कभी रोग का पुनः अनुभव होता है?' मुरुगन ने प्रश्न को आगे बढ़ाते हुए पूछा।
'कभी-कभी,' अंटार ने कहा।

'ऐसा ही होता है,' मुरुगन ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा। 'आपको लगता है कि यह हमेशा के लिए चला गया है और अचानक, ऐसा लगता है, अरे, बहुत दिनों बाद मिले।'
'तो तुम्हें भी मिल जाएंगे!' अंतर ने अपनी भौहें उठाते हुए कहा।
'मैं तो बिल्कुल नहीं!' मुरुगन हँसा। 'लेकिन आप जानते हैं, मैं इसके बारे में ज्यादा चिंता नहीं करता। मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि मलेरिया सिर्फ एक बीमारी नहीं है। कभी-कभी यह इलाज भी होता है।'
'इलाज?' अंटार ने कहा। 'किसका?'
'क्या आपने कभी जूलियस वैगनर-जौरेग के बारे में सुना है?'
'नहीं।'
'उन्होंने मलेरिया पर अपने काम के लिए नोबेल पुरस्कार भी जीता था। उनका जन्म भी रोनी रॉस के ही साल में हुआ था, लेकिन ऑस्ट्रिया में। वे एक मनोवैज्ञानिक थे: फ्रायड के साथ उनके कुछ गंभीर मतभेद भी थे। लेकिन उनका नाम इतनी प्रसिद्धि का कारण यह है कि उन्होंने मलेरिया के बारे में कुछ ऐसा खोजा था जिसकी रॉस कल्पना भी नहीं कर सकते थे।'
'क्या?' अंतर ने कहा।
'उन्होंने यह पता लगाया कि कृत्रिम रूप से प्रेरित मलेरिया सिफलिस का इलाज कर सकता है - कम से कम डिमेंशिया पैरालिटिका चरण में जब यह मस्तिष्क पर हमला करता है।'
'यह अविश्वसनीय लगता है,' अंटार ने कहा।
'ज़रूर,' मुरुगन ने कहा। 'लेकिन फिर भी उन्हें 1927 में नोबेल पुरस्कार मिला। कृत्रिम रूप से प्रेरित मलेरिया 1940 के दशक तक सिफिलिटिक पैरेसिस का मानक उपचार था। सच तो यह है कि मलेरिया मस्तिष्क पर ऐसे प्रभाव डालता है जिनके बारे में हम अभी भी केवल अनुमान ही लगा रहे हैं।'
'लेकिन रॉस की बात पर वापस आते हैं,' अंटार ने कहा। 'आप कहते हैं कि उसे मलेरिया तब तक नहीं हुआ जब तक वह अपने काम में काफी आगे नहीं बढ़ गया था? तो फिर उसे इसमें दिलचस्पी कैसे हुई?'
मुरुगन ने कहा, 'यह उस समय की भावना थी। मलेरिया उस दौर की सबसे चर्चित बीमारी थी; रविवार के अखबार इसे अपने मुखपृष्ठ पर छापने के लिए होड़ कर रहे थे। और यह स्वाभाविक भी है: मलेरिया शायद अब तक की सबसे घातक बीमारियों में से एक है। सर्दी-जुकाम के बाद यह दुनिया की सबसे आम बीमारी है। हम किसी ऐसी बीमारी की बात नहीं कर रहे हैं जो प्लेग, चेचक या सिफलिस की तरह अचानक किसी सदी में फैल गई हो। मलेरिया तो सृष्टि के सृजन काल से ही मौजूद है, और लगभग हमेशा से एक ही स्तर पर बना हुआ है। धरती पर ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ मलेरिया न फैला हो: आर्कटिक सर्कल, बर्फीली पहाड़ की चोटी, जलता रेगिस्तान, आप जो भी सोच लें, मलेरिया वहाँ मौजूद रहा है। हम यहाँ लाखों मामलों की बात नहीं कर रहे हैं; बल्कि करोड़ों मामलों की बात कर रहे हैं। हमें यह भी नहीं पता कि कितने मामले हैं, क्योंकि मलेरिया इतना व्यापक है कि यह हमेशा आंकड़ों में दर्ज नहीं

होता।' और तो और, यह भेस बदलने में माहिर है: यह अनगिनत बीमारियों के लक्षणों की नकल कर सकता है – कमर दर्द, फ्लू, मस्तिष्क रक्तस्राव, पीत ज्वर। और सही निदान होने पर भी, यह ज़रूरी नहीं कि कुनैन हमेशा आपको सुरक्षित घर पहुंचा दे। कुछ प्रकार के मलेरिया में आप दिन भर कुनैन का इंजेक्शन लेते रहें, फिर भी शाम होते-होते आपकी लाश मुर्दाघर में ही मिलेगी। रिपोर्ट किए गए मामलों में से केवल कुछ ही मामलों में यह जानलेवा होता है, लेकिन जब बात करोड़ों लोगों की हो, तो यह कुछ ही मामले मिलकर एक विशाल अर्थव्यवस्था वाले देश की आबादी के बराबर हो जाते हैं।

'तो जब रॉस ने शुरुआत की,' अंटार ने कहा, 'क्या मलेरिया में नई रुचि पैदा हुई थी?'

'बिल्कुल,' मुरुगन ने कहा। 'उन्नीसवीं सदी के मध्य में ही वैज्ञानिक समुदाय मलेरिया के प्रति जागरूक होने लगा था। याद रखिए, यही वो सदी थी जब प्राचीन यूरोप अपने सभी अनछुए क्षेत्रों को बसा रहा था: अफ्रीका, एशिया, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, यहाँ तक कि अपने ही कुछ अछूते हिस्सों को भी। जंगल, रेगिस्तान, महासागर, युद्धप्रिय आदिवासी - इन सब से निपटना आसान था जब आपके पास डायनामाइट और गैटलिंग तोपें थीं; मलेरिया के सामने ये कुछ भी नहीं था। यह मत भूलिए कि कुछ समय पहले तक मिसिसिपी नदी के किनारे बसे लगभग हर निवासी को हर दूसरे दिन कंपकंपी के कारण छुट्टी लेनी पड़ती थी। रोम के आसपास के दलदलों में भी यही हाल था; या अल्जीरिया में, जहाँ फ्रांसीसी निवासी तेजी से अपना विस्तार कर रहे थे। और यही वो समय था जब जीवाणु विज्ञान और परजीवी विज्ञान जैसे नए विज्ञान यूरोप में अपनी पहचान बनाने लगे थे। मलेरिया शोध के शीर्ष विषयों में से एक बन गया।'

फ्रांस, इटली, अमेरिका, इंग्लैंड को छोड़कर हर जगह सरकारों ने मलेरिया अनुसंधान में पैसा लगाना शुरू कर दिया। लेकिन क्या रॉनी ने इसे अपने रास्ते की रुकावट बनने दिया? नहीं, बिल्कुल नहीं, उन्होंने तो बस अपने कपड़े उतार दिए और सीधे इस काम में जुट गए।

अंतर ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा: 'आपका मतलब है कि रॉस को ब्रिटिश सरकार से कोई आधिकारिक समर्थन नहीं मिला?'

नहीं, महोदय: साम्राज्य ने उसके रास्ते में हर संभव बाधा डाली। इसके अलावा, मलेरिया के मामले में ब्रिटिशों की कोई भूमिका ही नहीं थी: मोर्चे पर काम फ्रांस और फ्रांसीसी उपनिवेशों, जर्मनी, इटली, रूस, अमेरिका - हर जगह हो रहा था, सिवाय उन जगहों के जहाँ ब्रिटिश मौजूद थे। लेकिन आपको लगता है कि रॉस को परवाह थी? उस आदमी की हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी, उसमें वाकई दम था। वह रहा: वह उस उम्र में है जब अधिकांश वैज्ञानिक अपनी पेंशन की जाँच करने लगते हैं; उसे मलेरिया (या किसी और चीज़) के बारे में कुछ भी नहीं पता; वह कहीं दूर-दराज के इलाके में बैठा है जहाँ किसी प्रयोगशाला का नाम तक नहीं लिया गया है; उसने मेडिकल स्कूल छोड़ने के बाद से कभी माइक्रोस्कोप को हाथ नहीं लगाया; वह एक छोटी सी संस्था, इंडियन मेडिकल सर्विस में काम करता है, जिसे लैंसेट की कुछ प्रतियाँ मिलती हैं और कुछ नहीं, यहाँ तक कि रॉयल सोसाइटी ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन के ट्रांजैक्शन भी नहीं, जॉन्स हॉपकिंस बुलेटिन या पाश्चर इंस्टीट्यूट के एनल्स की तो बात ही छोड़

दीजिए। लेकिन हमारे रॉनी को कोई परवाह नहीं: एक धूप वाले दिन सिकंदराबाद या कहीं और वह बिस्तर से उठता है और अपने अजीब से अंग्रेजी लहजे में खुद से कहता है, "हे भगवान, मुझे नहीं पता कि आज मैं क्या करने वाला हूँ, सोचता हूँ कि जाकर सदी की वैज्ञानिक पहेली को सुलझा लूँ, कुछ घंटे बिता दूँ।" मैदान में मौजूद सभी बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को भूल जाओ। लैवरन को भूल जाओ, टाइफाइड पर कमाल करने वाले जर्मन वैज्ञानिक रॉबर्ट कोच को भूल जाओ; रूसी जोड़ी, डैनिलेव्स्की और रोमानोव्स्की को भूल जाओ, जो इस बीमारी के साथ तब से खेल रहे हैं जब छोटा रोनाल्ड अपने पालने में ही डर के मारे पेशाब कर देता था; उन इटालियन वैज्ञानिकों को भूल जाओ जिन्होंने मलेरिया पर काम करने के लिए पूरी पास्ता फैक्ट्री लगा रखी है; बाल्टीमोर में मौजूद डब्ल्यू. जी. मैक्कलम को भूल जाओ, जो पक्षियों में रक्त संक्रमण पर एक बड़ी सफलता के कगार पर हैं; बिग्नामी, सेली, गोल्गी, मार्चियाफावा, केनन, नॉट, कैनालिस, ब्यूपरथुई को भूल जाओ; इतालवी सरकार, फ्रांसीसी सरकार, अमेरिकी सरकार, जिन्होंने मलेरिया से निपटने के लिए बेतहाशा पैसा खर्च किया है, उन्हें भूल जाओ; उन सबको भूल जाओ। उन्हें तो रोनी के आने का तब तक पता भी नहीं चलता जब तक वह समय को रोकने के लिए तैयार नहीं हो जाता।

'बस यूं ही?' अंतर ने कहा।

'बिल्कुल सही। कम से कम शुरुआत तो ऐसे ही हुई थी। और जानते हैं क्या? उसने कर दिखाया; उसने लैवरन, कोच, ग्रासी और पूरे इतालवी गिरोह को हरा दिया; उसने अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी और रूस की सरकारों को हरा दिया; उसने सबको हरा दिया। या कम से कम आधिकारिक कहानी तो यही है: युवा रॉनी, अकेला प्रतिभाशाली खिलाड़ी, मैदान में दौड़ता हुआ आया और विश्व कप लेकर भाग गया।'

'मुझे लगता है कि आप इससे सहमत नहीं हैं,' अंटार ने कहा।

'तुमने सही कहा, एंट। यह एक ऐसी कहानी है जिस पर मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं होता।'

'क्यों नहीं?'

एक वेटर उनकी मेज पर आया और उनके सामने सूप के कटोरे रख दिए। अपनी हथेलियों को आपस में रगड़ते हुए, मुरुगन ने अपना सिर सूप के कटोरे से उठ रही नींबू की खुशबूदार भाप में डुबो दिया।

'मेरा मानना है,' अंटार ने जोर देकर कहा, 'कि रोनाल्ड रॉस ने अपनी खोजें कैसे कीं, इसका आपका अपना एक संस्करण है?'

'निश्चित रूप से इसे कहने का यह एक तरीका है,' मुरुगन ने कहा।

'तो इस कहानी का आपका क्या पक्ष है?' अंटार ने कहा।

'मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ, एंट,' मुरुगन ने चम्मच उठाते हुए कहा। 'एक दिन जब हम दुनिया भर की क्रूज यात्रा पर होंगे, तो मैं तुम्हें तीनों खंड पढ़कर सुनाऊंगा: तुम खरीदो, मैं बात करूंगा।'

अंतर हँस पड़ा। 'ठीक है,' उसने कहा। 'शुरुआत के लिए बस कुछ पन्ने ही काफी हैं?'

मुरुगन ने चॉपस्टिक की मदद से नूडल्स की एक लंबी, टपकती हुई चोटी को अपने

मुंह तक उठाया। उन्होंने उसे एक ज़ोरदार वैक्यूम क्लीनर जैसी आवाज़ के साथ चट कर लिया और अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गए, अपनी दाढ़ी पर कागज़ का नैपकिन पोंछते हुए। थोड़ी देर रुकने के बाद जब उन्होंने बोलना शुरू किया तो उनकी आवाज़ नरम और सहज थी।
'क्या मैं आपसे एक दार्शनिक प्रश्न पूछ सकता हूँ, चींटी?'
अंतर अपनी कुर्सी पर थोड़ा हिल गया। 'आगे बढ़ो,' उसने कहा, 'हालांकि मुझे आपको बता देना चाहिए कि मैं बड़े सवालों का जवाब देने में माहिर नहीं हूं...'
'मुझे बताओ, अंतर,' मुरुगन ने अपनी तीखी निगाहें अंतर के चेहरे पर टिकाते हुए कहा। 'मुझे बताओ: क्या तुम्हें लगता है कि अगला अध्याय जानने की उत्सुकता होना स्वाभाविक है?'
'खैर,' अंटार ने असहज होकर कहा। 'मुझे यकीन नहीं है कि मैं समझ पा रहा हूँ कि आप क्या कहना चाहते हैं।'
'तो चलिए मैं इसे इस तरह से कहता हूँ,' मुरुगन ने कहा। 'क्या आपको लगता है कि जो कुछ भी जाना जा सकता है, वह सब जाना जाना चाहिए?'
'बिल्कुल,' अंतर ने कहा। 'मुझे इसमें कोई बुराई नहीं दिखती।'
'ठीक है,' मुरुगन ने अपने चम्मच को धनुष में डुबोते हुए कहा। 'मैं आपके लिए कुछ पन्ने पलट देता हूँ; लेकिन याद रखना, यह आपने ही कहा था। यह आपका अंतिम संस्कार है।'

अध्याय 10

सभागार से बाहर निकलते ही उर्मिला को लगा कि उसे सोनाली से अकेले में बात करने का मौका मिल गया है। उसने पूछा, 'क्या आपके पास कुछ मिनट हैं?' लेकिन सोनाली पहले ही ड्राइववे से होते हुए सड़क की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी।
उर्मिला गेट पर उससे मिली, ठीक उसी समय सभागार के अंदर तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दी, जो फूलबोनी के भाषण के अंत का संकेत था।
सोनाली ने कहा, 'मुझे इतनी जल्दी जाना पड़ा, इसके लिए मुझे खेद है। मैं बाकी समय रुकना चाहती थी, लेकिन आठ बज चुके हैं और मुझे अब घर जाना ही होगा।'
'ओह।' उर्मिला ने अपनी निराशा को छिपाने की आधी-अधूरी कोशिश की। 'तुम्हें अभी इसी वक्त जाना है?'
सोनाली थोड़ी देर रुकी। 'हां,' उसने कहा। 'मैं गर्भवती हूं। क्यों?'
'मैं बस आपसे बात करना चाहती थी,' उर्मिला ने कहा।
'किस बारे में?'
'उनके बारे में,' उर्मिला ने सभागार की ओर सिर झुकाते हुए कहा। 'फुलबोनी।'
'उसकी क्या खबर है?'
उर्मिला ने कहा, 'मुझे उनके बारे में एक लेख लिखना है। और मैं कुछ बातों को लेकर सोच रही थी। किसी ने मुझे बताया कि शायद आप ही वह व्यक्ति हैं जिनसे मुझे इस बारे में बात करनी चाहिए।'

'मैं?' सोनाली चौंक गई। 'मुझे नहीं पता कि मैं आपको ज्यादा कुछ बता पाऊंगी या नहीं।'
वह एक पल के लिए असमंजस में खड़ी रही। फिर अपनी घड़ी पर एक नज़र डालकर उसने कहा: 'अच्छा, क्यों न तुम मेरे साथ घर चलो? हम मेरे मेहमान के आने तक बातें कर सकते हैं।'
जवाब का इंतज़ार किए बिना सोनाली बाहर निकली और एक टैक्सी रोकी। उर्मिला के विरोध को अनसुना करते हुए, उसने उसे टैक्सी में बिठाया और खुद भी अंदर बैठ गई। ड्राइवर से उसने कहा, 'अलीपुर,' और फिर खिड़की नीचे कर ली, टैक्सी रेस कोर्स के ठंडे अंधेरे में धीरे-धीरे आगे बढ़ गई।
अलीपुर पुल से ठीक पहले टैक्सी ट्रैफिक जाम में फंस गई और ज़ोरदार आवाज़ करते हुए रुक गई। सोनाली ने उर्मिला की ओर मुड़कर कहा, 'तुम मुझसे क्या पूछना चाहती थी?' उसकी आवाज़ रुकी हुई कार की आवाज़ के साथ कांप रही थी।
'फूलबोनी की शुरुआती कहानियों के बारे में,' उर्मिला ने कहा।
सोनाली ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'लेकिन मुझसे ही क्यों?' उसने कहा। 'तुम्हें किसने कहा कि मुझसे ही पूछो, वो भी किसी से?'
उर्मिला हिचकिचाई। 'कोई जिसे मैं जानती हूँ,' उसने कहा।
'कौन?' सोनाली ने कहा।
'तुम भी उसे जानते हो,' उर्निला ने कहा। 'या कम से कम जानते तो थे। वह तुम्हारे बारे में बहुत बातें करती है।'
'यह कौन है?' सोनाली ने कहा। 'तुम मुझे उत्सुक कर रही हो।'
'श्रीमती अराटूनियन।' उर्मिला ने गर्मजोशी भरी मुस्कान के साथ नाम कहा।
'श्रीमती अराटूनियन?' सोनाली चिल्लाई। 'आपका मतलब रसेल स्ट्रीट स्थित डटन नर्सरी की श्रीमती अराटूनियन से है?'
'जी हां,' उर्मिला ने कहा। 'वही श्रीमती अराटूनियन। क्या आपको वह याद हैं?'
सोनाली ने सिर हिलाया, लेकिन सच्चाई यह थी कि उसने श्रीमती अराटूनियन को सालों से नहीं देखा था और उसे बस इतना ही याद था कि वह एक साफ-सुथरी, कुछ हद तक गंभीर महिला थीं, जो काली स्कर्ट और सुनहरे फ्रेम वाले चश्मे पहने रहती थीं। वह हमेशा सोनाली को अपने कॉन्वेंट स्कूल की आयरिश ननों की याद दिलाती थीं: उनकी आवाज़ वैसी ही दमदार और व्यवहार भी वैसा ही था। सोनाली को याद था कि वह एक अर्मेनियाई परिवार से थीं जो पीढ़ियों से कलकत्ता में रह रहा था: उनके पास डटन नर्सरी का हमेशा से मालिकाना हक था।
'हे भगवान!' उसने हैरानी से कहा... 'डटन का! मुझे वहां गए हुए कई साल हो गए होंगे।'
'लेकिन तुम्हें पता है,' उर्मिला ने जल्दी से कहा, 'मैंने तुम्हें पहली बार डटन के यहाँ देखा था।'
'डटन में?' सोनाली ने हैरानी से उसकी तरफ देखा। 'अरे, मुझे तो पता ही नहीं था कि कलकत्ता में काम शुरू करने से पहले हम मिल चुके थे।'
'हमारी मुलाकात तो हुई ही नहीं थी।' उर्मिला को अब शर्मिंदगी महसूस हो रही थी;

उसे पछतावा हो रहा था कि उसने यह बात क्यों कही।
यह घटना कई साल पहले की है: उर्मिला स्कूल के अपने आखिरी साल में थी और उस सुबह डटन नर्सरी में होने का कारण यह था कि वह ग्राउंड्स एंड गार्डन्स कमेटी में छात्र प्रतिनिधि थी। कमेटी के शिक्षक सदस्य उसे स्कूल की वैन में वहाँ लेकर गए थे। वह घबराई हुई थी: श्रीमती अराटूनियन की कठोर आवाज़ और पैनी नज़रें उसे डरा देती थीं। पिछली बार जब वह नर्सरी में थी, तो उसने एक गुलाब को छूने के लिए हाथ बढ़ाया था, तभी उसे लगा कि कोई उसे घूर रहा है। वह शर्मिंदगी से घूम गई और अपना हाथ झटक लिया, और वाकई, श्रीमती अराटूनियन कमरे के दूसरे कोने से उसे देख रही थीं। 'यह एक पौधा है, कुत्ता नहीं,' उन्होंने अपने सुनहरे फ्रेम वाले चश्मे की चमक के साथ कहा, 'और इसमें कांटे इसलिए हैं क्योंकि यह सहलाया जाना नहीं चाहता।' उर्मिला ने खुद को इतना छोटा महसूस किया कि वह खुद को मिटा देना चाहती थी, जैसे चाक का धब्बा।
इस बार मुलाकात की शुरुआत अच्छी रही। श्रीमती अराटोनियन ने विशेष स्नेह दिखाया। उन्होंने गमलों में लगे गुलदाउदी के एक समूह की ओर इशारा करते हुए कहा: 'प्यारे, इनमें से एक चुन लो, मैं तुम्हें दे दूंगी। बस एक बार के लिए।'
उर्मिला गुलदाउदी के फूलों को देख रही थी तभी दरवाजे पर अचानक हलचल हुई। उसने मुड़कर देखा तो सोनाली दास अंदर आ रही थी।
डटन की दुकान लोगों से खचाखच भरी हुई थी – साल का वो समय था जब हर कोई बीज और पौधे खरीद रहा था। सोनाली के आते ही सनसनी मच गई: उसकी किताब अभी-अभी प्रकाशित हुई थी और उसकी तस्वीर हर जगह छाई हुई थी। उसने हरे और सफेद रंग की शिफॉन साड़ी पहनी हुई थी, और बालों पर बड़ा सा धूप का चश्मा लगाया हुआ था, बिल्कुल किसी फिल्म स्टार की तरह लग रही थी।
उर्मिला ने हाल ही में उसकी एक फिल्म देखी थी: वह उसे मुंह खुला रखकर देखती रही, गुलदाउदी के बीच सिमटती हुई, अपनी गंदी स्कूल यूनिफॉर्म और अपनी दो पतली चोटियों में देखे जाने के विचार से शर्मिंदा थी।
श्रीमती अराटूनियन से बात करते समय, सोनाली के पास एक लंबा, हट्टा-कट्टा आदमी आकर बैठ गया, जिसका चेहरा भारी और जबड़ेदार था। उसका जबड़ा और भौहें स्पष्ट रूप से उभरी हुई थीं, जबकि उसका सिर लगभग पूरी तरह से गंजा था। यह स्पष्ट था कि वे दोनों एक साथ आए थे।
उर्मिला को लगा कि वह उसकी उम्र से ज़्यादा बूढ़ा है, लेकिन दिखने में बुरा नहीं था, हालांकि उसमें गुंडों वाली झलक थी। वह सोचने लगी कि आखिर वह कौन है।
फिर उस आदमी ने श्रीमती अरतूनियन से कुछ कहा। उर्मिला के लिए यह बेहद भयावह था कि श्रीमती अरतूनियन ने मुड़कर उसकी ओर, गुलदाउदी के फूलों की ओर इशारा किया। एक पल के लिए उर्मिला असमंजस में खड़ी रह गई। जब तक वह संभली, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। वे ठीक उसके सामने खड़े थे और सोनाली गमला लेने के लिए गर्दन घुमा रही थी।
उर्मिला तेज़ी से एक तरफ हट गई और सोनाली के रास्ते से हट गई। लेकिन जल्दबाजी में उसने सोनाली के हाथ को छू लिया। घड़ा ज़मीन पर गिर गया और

ज़ोरदार आवाज़ के साथ चकनाचूर हो गया, जिससे पत्तियाँ, पंखुड़ियाँ और मिट्टी ज़मीन पर बिखर गईं।
भयभीत होकर उर्मिला घुटनों के बल बैठ गई। उसने बिखरी हुई मिट्टी और मिट्टी के बर्तनों को समेटना शुरू किया, उसकी निगाहें ज़मीन पर टिकी हुई थीं, ऊपर देखने की हिम्मत नहीं हो रही थी। उसकी आँखों में आँसू आ रहे थे।
फिर उसके सामने ज़मीन पर हाथों का एक बहुत बड़ा जोड़ा उतरा, जिसने उसकी पूरी दृष्टि को घेर लिया। हाथ घने, घुंघराले बालों से लिपटे हुए थे और उंगलियों के जोड़ अखरोट के आकार के थे। हालांकि उर्मिला का ध्यान कहीं और था, उसने देखा कि एक हाथ आंशिक रूप से लकवाग्रस्त था, जिसका अंगूठा हथेली से सटा हुआ अकड़ा हुआ था। फिर वे हाथ उसकी मदद करने लगे, अनाड़ीपन से मिलकर ज़मीन को साफ करने लगे।
उर्मिला ने सिर उठाया और देखा कि वह उस आदमी को देख रही है जो सोनाली के पीछे दुकान में आया था। वह उसे घूर रहा था - गुस्से से नहीं, बल्कि एक टकटकी भरी, परखने वाली निगाहों से। उसकी नज़र में कुछ ऐसा था जिससे उर्मिला डर गई और उसने अपनी नज़रें नीचे कर लीं।
अगले ही पल, सोनाली ने उसे बाहों में भर लिया और उठने में उसकी मदद की।
'बेचारी,' वह श्रीमती अराटूनियन से कह रही थी। 'इसमें उसकी कोई गलती नहीं है: मैं भुगतान कर दूंगी।'
स्कूल लौटते समय वैन में उर्मिला को जमकर डांट पड़ी। लेकिन जल्द ही उसके शिक्षकों ने उसमें दिलचस्पी खो दी और सोनाली दास और उसके साथ आए आदमी के बारे में गपशप करने लगे।
उर्मिला को आश्चर्य हुआ जब उसे पता चला कि वह उसका नाम जानती है: उसका नाम रोमेन हलदार था। उसने घर पर उसके बारे में सुना था: वह उनके फ्लैट से थोड़ी ही दूर एक बड़े से घर में रहता था। वह जानती थी कि वह एक धनी बिल्डर और ठेकेदार था, और एक बड़े क्लब में उसका काफी प्रभाव था। उसका छोटा भाई, जो प्रथम श्रेणी में खेलने का सपना देखता था, अक्सर उसके बारे में बात करता था।
अब उस घटना को याद करके उर्मिला हंस पड़ी। उसने सोनाली से कहा, 'यह कई साल पहले की बात है। मैंने तुम्हारे हाथ से गुलदाउदी का गमला गिरा दिया था।'
'मुझे याद नहीं,' सोनाली ने कहा।
'बिल्कुल नहीं,' उर्मिला ने कहा। 'लेकिन आपने इस बारे में बहुत अच्छा बर्ताव किया। श्रीमती अराटूनियन ने भी। उसके बाद वह मेरी सच्ची दोस्त बन गईं।'
'तो आप श्रीमती अराटूनियन को अच्छी तरह जानती हैं?' सोनाली ने पूछा।
उर्मिला ने कहा, 'मैं कभी-कभार रॉबिन्सन स्ट्रीट स्थित उनके फ्लैट पर उनसे मिलने जाती हूँ। वह हमेशा मेरे प्रति बहुत दयालु रही हैं। अपने रूखे स्वभाव में भी वह बहुत दिलचस्प हैं। इसके अलावा, उनका फ्लैट बहुत शांत है - वहाँ ढेर सारे पौधे, आरामदायक कुर्सियाँ और सोफे हैं। पत्रिका की भागदौड़ से कभी-कभार दूर रहना अच्छा लगता है। जब भी मौका मिलता है, मैं उनसे मिलने जाती हूँ।'
'मैंने सुना है कि श्रीमती अराटूनियन सेवानिवृत्त हो गईं और उन्होंने डटन की दुकान बेच

दी,' सोनाली ने कहा। 'उस जगह की वजह से उन्होंने खूब पैसा कमाया होगा।'
'मुझे नहीं पता,' उर्मिला ने कहा। 'मैंने कभी पूछा नहीं। लेकिन सच तो यह है कि मुझे लगता है कि अब जब वह रिटायर हो चुकी है, तो उसे गुजारा करने में दिक्कत हो रही है। वह हमेशा अतिरिक्त पैसे कमाने के लिए नए-नए तरीके सोचती रहती है। 'मैं पूरी जिंदगी व्यापार में रही हूं,' वह कहती है - आप जानते ही हैं कि वह कैसे बात करती है - 'और मुझे पूरा यकीन है कि मैं अब रुकने वाली नहीं हूं।'
सोनाली हंस पड़ी। उसने कहा, 'उसकी क्या-क्या योजनाएँ हैं?'
'उसकी नवीनतम योजना यह है कि वह किराए पर मेहमान रखेगी और अपने फ्लैट को एक व्यवसायी के अतिथि गृह में बदल देगी।'
'नहीं!' सोनाली ने अविश्वास से कहा।
'हां,' उर्मिला ने आगे कहा। 'उसने अपने दरवाजे पर एक तख्ती भी लगा रखी है। दिक्कत ये है कि सीढ़ियों से ऊपर जाते समय ही कोई उसे देखता है, इसलिए अभी तक उसके घर कोई मेहमान नहीं आया है।'
'उसे यह विचार कैसे आया?' सोनाली ने पूछा।
उर्मिला ने कहा, "मैंने उससे यही पूछा था। उसने बताया कि उसे यह विचार इसलिए आया क्योंकि रॉबिन्सन स्ट्रीट के दूसरी तरफ एक पुराने मकान को एक डेवलपर होटल में बदल रहा है। उसने कहा, 'उस बदमाश में इतनी हिम्मत है कि उसने लॉन पर एक बोर्ड टांग दिया है। नाक पर मस्से की तरह साफ-साफ लिखा है, 'रॉबिन्सन होटल के लिए जगह।' अगर वह कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं कर सकती?"
और फिर अचानक उर्मिला निराशा की मुद्रा में जम गई और उसने अपने खुले मुंह पर हाथ रख लिए।
सोनाली मुस्कुराई और अपने पर्स से एक सिगरेट निकाली। "शायद उसका मतलब रोमेन से था?" उसने रूखेपन से कहा और लाइटर जलाया। "रोमेन ने मुझे कुछ दिन पहले रॉबिन्सन स्ट्रीट वाला वो घर दिखाया था। उसे उस पर बहुत गर्व है; वो तो उस जगह का पुनर्निर्माण करवाने जा रहा है।" उसने सिगरेट का कश लिया और धुएँ को धीरे-धीरे अपने होठों से बाहर निकलने दिया।
उर्मिला ने जल्दबाजी में माफी मांगते हुए बुदबुदाना शुरू कर दिया।
सोनाली हंस पड़ी: 'चिंता मत करो। मुझे सच में कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग रोमेन के बारे में क्या कहते हैं। तुम्हें सुनना चाहिए कि उसके क्लब में उसके बारे में मज़ाक उड़ाने वाले लोग क्या-क्या बातें करते हैं। बेशक, कलकत्ता विकेट क्लब दुनिया की आखिरी जगह है जहाँ मज़ाक उड़ाने वाले लोग अभी भी मौजूद हैं और मज़ाकिया बातें करते हैं। तुम्हें सुनना चाहिए जब वे रोमेन के बारे में बातें करना शुरू करते हैं।'
उसने उर्मिला के हाथ पर तसल्ली भरे अंदाज़ में थपथपाते हुए कहा, 'क्या तुम कभी रोमेन से मिली हो?'
'नहीं।' उर्मिला ने सिर हिलाया। 'मैंने उसे सिर्फ एक बार डटन के यहाँ तुम्हारे साथ देखा था।'
'मुझे लगता है कि आपको वह पसंद आएगा,' सोनाली ने कहा। 'उसने एक असाधारण जीवन जिया है, आप जानते हैं।'

'सचमुच?' उर्मिला ने अनिश्चित स्वर में कहा। उसे याद आया कि उसने सुना था कि रोमेन हलदार ने शून्य से शुरुआत की थी; कि वह कलकत्ता के सियालदह स्टेशन पर बिना एक भी सिक्का लिए पहुंचा था।
सोनाली ने सिर हिलाया। 'तुम देख लोगी,' उसने कहा। 'वह बिल्कुल वैसा इंसान नहीं है जैसा लोग उसे बताते हैं। तुम उससे आज रात मिलोगी: मैं उसी का इंतज़ार कर रही हूँ। उसने कहा था कि वह आज शाम आएगा।'
टैक्सी भारी-भरकम स्टील के फाटकों के पास रुकी। सोनाली ड्राइवर को किराया देने के लिए अपने पर्स में पैसे ढूंढने लगी।
वर्दी पहने एक चौकीदार बूथ से बाहर निकला। उसने टैक्सी को आलीशान रिहायशी परिसर में प्रवेश करने देने से पहले ध्यान से निरीक्षण किया। परिसर में चार फ्लैटों की इमारतें थीं, जो एक-दूसरे से काफी दूरी पर बनी थीं, प्रत्येक इमारत दूसरे से एक कोण पर स्थित थी, ताकि हर बरामदे से अलीपुर की हरियाली का उचित दृश्य दिखाई दे।
जैसे ही टैक्सी परिसर के चारों ओर घूमी, सोनाली की नज़र एस्टेट के एक पार्किंग क्षेत्र पर पड़ी। उर्मिला ने भी उसकी नज़र का पीछा करते हुए एक खाली जगह पर लटके एक छोटे से बोर्ड पर ध्यान दिया। उस पर लिखा था: आरक्षित, आर. हलदर।
सोनाली ने आह भरी। 'रोमन अभी तक नहीं आया है,' उसने कहा। 'हम उसके आने तक बातें कर सकते हैं।'

अध्याय 11

रेस्टोरेंट के चमकीले रंग के पेपर नैपकिन पर तारीख लिखकर मुरुगन ने उसे अंतर के सामने रख दिया।
'बात ये है,' उसने कहा। 'मई 1895 की बात है। हम सिकंदराबाद के सैन्य अस्पताल में हैं, इतनी गर्मी है कि फर्श चमक रहे हैं, न पंखे हैं, न बिजली, एक कमरा जारों से भरा है, सब अलमारियों पर करीने से रखे हैं, एक मेज है जिस पर सीधी पीठ वाली कुर्सी है, एक अकेला माइक्रोस्कोप है जिस पर स्लाइडें बिखरी पड़ी हैं, एक आदमी वर्दी में माइक्रोस्कोप पर झुका हुआ है और उसके चारों ओर कई वार्ड बॉय हैं। ये रॉनी है और बाकी लोग कोरस लाइन हैं, या कम से कम रॉनी तो यही सोचता है। "ये करो," वो कहता है और वे कर देते हैं। "वो करो," वो कहता है और वे झटपट करने लगते हैं। यही वो माहौल में पला-बढ़ा है, यही उसकी आदत है। ज्यादातर तो उसे उनके नाम भी नहीं पता, मुश्किल से उनके चेहरे भी: उसे लगता ही नहीं कि जानने की जरूरत है। वे कौन हैं, कहाँ से हैं और ये सब बातें, छोड़ो, उसे इनमें कोई दिलचस्पी नहीं है।' वे दोस्त हो सकते हैं, चचेरे भाई हो सकते हैं, जेल में साथ काम करने वाले कैदी हो सकते हैं; रॉनी के लिए यह सब एक जैसा ही होगा।'
'एक मिनट रुको,' अंटार ने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'मई 1895? तो रोनाल्ड रॉस मलेरिया पर अपना शोध शुरू कर रहे थे?'
'जी हां,' मुरुगन ने कहा। 'रॉनी अभी-अभी इंग्लैंड में छुट्टियां बिताकर लौटा है। वहां

रहते हुए, उसकी मुलाकात लंदन में पैट्रिक मैनसन से हुई थी।'
'पैट्रिक मैनसन?' अंटार ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। 'क्या तुम्हारा मतलब हाथीपांव के उस 'मैनसन' से है?'
'यही तो वो आदमी है,' मुरुगन ने कहा। 'मैन्सन सर्वकालिक महान वैज्ञानिकों में से एक हैं; वो चीन में इतने लंबे समय तक रहे हैं कि चॉपस्टिक से अजगर की खाल उतार सकते हैं; उन्होंने फाइलेरिया पर किताब लिखी है, जो हाथीपांव का कारण बनने वाला कीटाणु है। अब वो इंग्लैंड लौट आए हैं जहाँ वो रानी के यहाँ जीवाणु अनुसंधान के प्रमुख बन गए हैं। डॉ. मैन्सन मलेरिया का पुरस्कार जीतना चाहते हैं - ब्रिटेन के लिए, वो कहते हैं, साम्राज्य के लिए: उन जर्मनों, फ्रांसीसी लोगों, ब्रिटिश लोगों और अमेरिकियों को धिक्कार है। वो भले ही स्कॉटिश हों, लेकिन खेल के समय वो रानी और देश का समर्थन करते हैं: उन्हें यह समझाने की ज़रूरत नहीं है कि किसी भी स्कॉटिश व्यक्ति ने लंदन के राजमार्ग से बेहतर नज़ारा कभी नहीं देखा: वो इसे पहले ही मान चुके हैं।'
'अगर मुझे सही याद है,' अंटार ने कहा, 'मैनसन ने साबित किया था कि मच्छर फाइलेरिया का वाहक होता है। क्या मैं सही हूँ?'
'ठीक है,' मुरुगन ने कहा। 'अब उसे शक हो रहा है कि मलेरिया फैलाने वाले कीटाणु में मच्छर का भी कुछ हाथ है। उसके पास खुद काम करने का समय नहीं है, इसलिए वह क्वीन और एम्पायर के लिए किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहा है जो इस काम को आगे बढ़ा सके। अंदाज़ा लगाइए कौन आता है? रॉनी रॉस। दिक्कत यह है कि रॉनी इस समय सबसे आगे नहीं है। दरअसल, मलेरिया अनुसंधान में सदी की सबसे बड़ी सफलता हाल ही में मिली है, लेकिन रॉनी को इसकी जानकारी नहीं है। 1840 के दशक में मेकेल नाम के एक व्यक्ति ने मलेरिया रोगियों के अंगों में काले रंगद्रव्य के सूक्ष्म कणिकाएं पाईं - काले धब्बे, कुछ गोल, कुछ अर्धचंद्राकार, जो प्रोटोप्लाज्म के छोटे-छोटे पिंडों के अंदर छिपे हुए थे। चालीस साल तक कोई यह पता नहीं लगा पाया कि यह चीज़ क्या है। सफलता 1880 में मिली: अल्जीरिया में फ्रांसीसी सेना के सर्जन अल्फोंस लैवरन दोपहर का भोजन लेने के लिए बाहर गए और अपने माइक्रोस्कोप के नीचे एक प्लेट में खाना पकने के लिए छोड़ दिया।' वह हिकॉरी की लकड़ी पर ग्रिल किए हुए मर्गेज़ (एक प्रकार का सूप) खाकर वापस आता है और अंदाज़ा लगाइए क्या होता है? उन अर्धचंद्राकार दानों में से एक हिलने लगता है। वह देखता है कि वह नाचने लगता है, एक छोटे ऑक्टोपस में बदल जाता है, अपनी सूंडें फैलाता है और पूरे सेल को हिला देता है।
तो लैवरन ने दो और दो को मिलाकर सोचा: अरे, यह चीज़ हिलती है, यह एक कीड़ा है। उन्होंने पेरिस स्थित चिकित्सा अकादमी को फैक्स भेजा; उन्हें बताया कि उन्होंने मलेरिया का कारण खोज लिया है और यह एक जीव है, एक प्रोटोजोआ – एक पशु परजीवी। लेकिन पेरिस ने इसे नहीं माना। वहाँ पाश्चर का दबदबा था और उन्होंने सभी बुद्धिमान निवेशकों को जीवाणुओं की खोज में लगा दिया था। लैवरन के प्रोटोजोआ जीव पर किसी ने विश्वास नहीं किया: यह ऐसा था जैसे उन्होंने येती को खोज लिया हो। चिकित्सा जगत के कुछ बड़े नाम "लैवरनवाद" का खंडन करने में जुट गए। केवल

इतालवी ही लैवरनवाद के अनुयायी बने: वे नव-पुनर्जन्मित लैवरनवादी बन गए।
1886 में कैमिल्लो गोल्गी ने दिखाया कि लैवरन का परजीवी लाल रक्त कोशिका के अंदर बढ़ता है, अपने मेजबान को खाता है और काला रंगद्रव्य उत्सर्जित करता है; कि यह रंगद्रव्य केंद्र में एकत्रित होता है जबकि कीड़ा विभाजित होना शुरू कर देता है; उन्होंने प्रदर्शित किया कि मलेरिया बुखार की पुनरावृत्ति अलैंगिक प्रजनन के इस पैटर्न से जुड़ी हुई है।
'जब पार्टी ज़ोरों पर थी, तब रॉनी एक शांत और किनारे खड़ा था। वह लैवरन विरोधी खेमे में था। उसका मानना था कि लैवरन का बग मौजूद ही नहीं है: उसने पिछले कई महीनों से उसे देखने की कोशिश की, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली। उसने तो लैवरन के मतिभ्रम को साबित करने के लिए एक लेख भी प्रकाशित किया था। रॉनी ने पहली बार उस बग को मैनसन की प्रयोगशाला में देखा। वहाँ पहुँचते ही उसका मन बदल गया, और मैनसन ने उसे वेक्टर की तलाश के लिए वापस भारत भेज दिया।'
अंतर ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'तो क्या मलेरिया और मच्छरों के बीच संबंध की कल्पना करने के लिए मैनसन ही जिम्मेदार था?'
'यह कोई बिलकुल नया विचार नहीं था,' मुरुगन ने कहा। 'मलेरिया से जूझने वाली अधिकांश संस्कृतियों को पता था कि दोनों के बीच कुछ न कुछ संबंध है।'
'लेकिन,' अंटार ने जोर देकर कहा, 'आप कह रहे हैं कि रॉस को यह विचार सबसे पहले मैनसन ने दिया था?'
मुरु-गान ने कहा, 'आप कह सकते हैं कि मैनसन ने एक सामान्य दिशा की ओर इशारा किया। बस फर्क इतना था कि उसने उसे घुमावदार रास्ते से भेजा। उसका एक बेतुका सिद्धांत था कि मलेरिया का कीटाणु मच्छर से मनुष्य में पीने के पानी के माध्यम से फैलता है। उसकी योजना थी कि रॉनी से अपने इस सिद्धांत पर काम करवाए।'
'और रॉस इस सिद्धांत में विश्वास करता था?'
'बिलकुल।'
'तो क्या हुआ?' अंतर ने कहा।
ठीक है, हम 1895 में वापस आ गए हैं, है ना? रॉस डॉ. मैनसन के मच्छर के रस वाले सिद्धांत पर काम शुरू करने के लिए बेताब है। वह मद्रास में जहाज से उतरता है और अपनी रेजिमेंट, 19वीं मद्रास इन्फैंट्री में शामिल होने के लिए ट्रेन लेता है। उनकी तैनाती सिकंदराबाद के बेगमपेट नामक इलाके में होती है। रास्ते में रॉनी हर हिलती-डुलती चीज़ में सुई चुभोता है। बेगमपेट पहुँचते ही वह मलेरिया के खून के नमूनों के लिए पैसे देने लगता है - असली पैसे, एक सुई चुभोने के लिए एक रुपया! ज़रा सोचिए। यह 1895 है; एक रुपये में चार लोगों के परिवार के लिए एक महीने का चावल खरीदा जा सकता था। इस जगह पर मलेरिया इतना फैला हुआ है कि मच्छर दुगनी शिफ्ट में काम कर रहे हैं और फिर भी काम नहीं कर पा रहे हैं। और यहाँ रॉनी मलेरिया के खून की कुछ बूंदों के लिए असली पैसे देने को तैयार है, और उसे एक भी खरीदार नहीं मिल रहा है। किसी ने यह बात फैला दी है कि यह अजीब डॉक्टर शहर में आया है और उसे नग्न पुरुषों को मच्छरों के साथ बिस्तर पर लिटाकर मज़ा आता है। कोई उसके पास नहीं जा रहा; सब उससे दूर भागने के लिए सड़क पार कर रहे हैं।

अचानक रॉनी खुद को एक बदबूदार सांस के विज्ञापन में देखता है: जब भी वह बेगमपेट की मुख्य सड़क पर निकलता है, वह खाली मिलती है।
फिर अचानक उसकी किस्मत पलट गई। 17 मई 1895 को, जब हालात बिल्कुल निराशाजनक लगने लगे थे, उसे मलेरिया का पहला सटीक मामला मिला - अब्दुल कादिर नाम का एक मरीज। रॉनी ने तुरंत कार्रवाई शुरू की: उसने अब्दुल कादिर के कपड़े उतारे, उसे बिस्तर पर लिटाया, उस पर एक गीला मच्छरदानी डाला और उसमें मच्छरों से भरी एक टेस्ट ट्यूब छोड़ दी। अगली सुबह उसने अपनी फसल काट ली और अचानक रॉनी की प्रयोगशाला बेगमपेट में चर्चा का केंद्र बन गई। तब तक उसने परजीवी के केवल दो फ्लैजेलेट रूपों का ही अवलोकन किया था। 18 मई को उसने अब्दुल कादिर के एक मच्छर (मच्छर संख्या 18) को चपटा किया और उसे एक ही खेत में साठ परजीवी मिले। वह इतना उत्साहित था कि अपनी डेस्क तक जाते हुए उसने कई बार बैक-फ्लिप की। उसने डॉक्टर मैनसन को लिखा कि उसे एक "चमत्कारी मामला" मिला है। यह तो बस शुरुआत थी। रॉनी ने परजीवी के अर्धचंद्राकार रूपांतरण को पहली बार 26 जून 1895 को अब्दुल कादिर के रक्त में देखा। अगले कुछ महीनों में अब्दुल कादिर का रक्त ही उनके शोध के सभी महत्वपूर्ण चरणों में उनका मार्गदर्शन करता है।
अंतर ने कहा, 'क्या एक अकेला मामला इतना बड़ा बदलाव ला सकता है?'
'रॉनी को ऐसा ही लगता था,' मुरुगन ने कहा। 'उसे पूरा यकीन था कि अब्दुल कादिर उसके काम के लिए बेहद ज़रूरी है। उसने पहले ही कई खून के नमूने देखे थे, लेकिन उनमें से किसी में भी उसे वो लक्षण नहीं दिखे जो अब्दुल कादिर के खून में दिखे थे। आप सोचेंगे कि मलेरिया परजीवी जैसा कीटाणु किसी भी होनहार छात्र को नहीं ढूंढेगा, लेकिन शायद ऐसा नहीं होता। शायद कुछ मामलों में ये लक्षण ज़्यादा साफ़ दिखते हैं। कम से कम रॉनी तो यही सोचता था। वो अब्दुल कादिर और उसके खून के पीछे पागल हो गया था। जिन दिनों अब्दुल कादिर के परजीवी शांत होते थे, रॉनी बेचैन हो जाता था। "अफ़सोस! किस्मत ने मुझे जो चमत्कारिक मामला भेजा था, वो अब खत्म हो रहा है," उसने 22 मई को डॉक्टर मैनसन को लिखा। उस मूर्ख का अहंकार इतना बड़ा था कि उसे लगा कि फॉर्च्यून पत्रिका उसे अपने कवर पेज पर छाप रही है। वह अच्छी तरह जानता था कि अब्दुल कादिर एक खास मामला है। लेकिन उसने कभी खुद से ये नहीं पूछा कि आखिर ये आदमी ठीक उसी समय कैसे आ गया जब उसे उसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। उसे लगा कि ये महज़ किस्मत थी।'
अंतर ने कहा, 'मैं इस बारे में स्पष्ट कर दूं। क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि 17 मई को अब्दुल कादिर का अस्पताल पहुंचना महज एक संयोग नहीं था?'
'आपको आश्चर्य होगा,' मुरुगन ने कहा। 'इसे इस तरह से देखें: रॉस जानता है कि कोई और उसके पास नहीं आएगा, चाहे वह एक रुपये प्रति सुई की दर को दोगुना या तिगुना ही क्यों न कर दे; 17 जुलाई को वह डॉक्टर मैनसन को लिखता है: "बाजार के लोग मेरे पास नहीं आते, भले ही मैं उन्हें भारी भरकम भुगतान करता हूँ। मैं एक उंगली में सुई चुभोने के लिए दो-तीन रुपये लेता हूँ और अगर मुझे अर्धचंद्राकार निशान मिलते हैं तो और भी अधिक - वे सोचते हैं कि यह जादू टोना है।" लेकिन रॉनी

कभी खुद से यह नहीं पूछता: अगर कोई और नहीं है तो यह अब्दुल कादिर यहाँ क्यों है? वह इसे जादू टोना क्यों नहीं मानता? उसमें ऐसा क्या खास है? वह कहाँ से आया है? वह यहाँ क्या कर रहा है? उसकी कहानी क्या है? हम किसी गहन चिकित्सा की बात नहीं कर रहे हैं: बस सामान्य, रोजमर्रा की जिज्ञासा की बात कर रहे हैं। लेकिन रॉनी अपनी सारी जिज्ञासा मलेरिया परजीवी के जीवन चक्र तक ही सीमित रखता है; उसके मेजबानों के जीवन चक्र के बारे में उसे ज़रा भी परवाह नहीं है।'
'तो आप क्या कहना चाह रहे हैं?' अंतर ने तीखे स्वर में कहा।
'मैं इस समय कुछ भी सुझाव नहीं दे रहा हूं,' मुरुगन ने कहा। 'मैं बस आपको तथ्य और घटनाक्रम बता रहा हूं।'
'ठीक है,' अंतर ने कहा। 'आगे बढ़ो।'
'ठीक है,' मुरुगन ने कहा। 'हम सीधे अब्दुल कादिर के आगमन के एक हफ्ते बाद यानी 25 मई 1895 पर चलते हैं। डॉक्टर मैनसन को लगता है कि रॉनी भटक रहा है, इसलिए उन्होंने उसे अपने सिद्धांत की याद दिलाने के लिए लिखा है: कि "मच्छर में छिपा कीड़ा... मच्छर की धूल के ज़रिए इंसान तक पहुँचता है"। वह चाहते हैं कि रॉनी मरे हुए मच्छरों से कॉकटेल बनाए और किसी को पिलाए।'
'रॉनी अपने चश्मे निकालता है और मिश्रण बनाना शुरू कर देता है। दिक्कत ये है कि उसके पास इसे देने के लिए कोई नहीं है: कोई भी इतना बेवकूफ नहीं मिल रहा जो स्वेच्छा से आगे आए। वही पुरानी कहानी: रॉनी बेगमपेट में अपनी प्रयोगशाला में है, पूरी तरह तैयार है लेकिन कहीं जाने को नहीं।'
और क्या पता? रॉनी की किस्मत एक बार फिर चमक उठी। या शायद यह सिर्फ किस्मत की बात नहीं थी; शायद उसने डॉक्टर मैनसन का पत्र अपनी मेज पर छोड़ दिया था और किसी ने उसे पढ़ लिया। शायद। खैर, 25 मई 1895 को, ठीक रात 8 बजे, लुचमैन नाम का एक आदमी रॉनी की जिंदगी में आया। उसने रॉनी का कॉकटेल पीने की पेशकश की। रॉनी ने बोतल का ढक्कन खोला और मॉस्किटो मार्गरिटा निकाली।
रॉनी ने गौर किया, "यह लचमैन तो 'तंदुरुस्त-दुरुस्त दिखने वाला नौजवान' है: बिलकुल वैसा ही गिनी पिग जिसकी उसे तलाश थी।" उसने लचमैन को प्रयोग के बारे में समझाया और उसे मरे हुए मच्छरों का घोल थमा दिया। लचमैन ने ऐसा दिखाया जैसे उसे पता ही न हो कि यह क्या है और उसे गटक लिया। रॉनी थोड़ा चिंतित था, लेकिन उसने यह ज़ाहिर नहीं होने दिया। लचमैन के बारे में उसे बस इतना पता था कि वह 'धूली उठाने वाला' है: दूसरे शब्दों में, ब्रिटिश सरकार उसे गंदगी साफ़ करने के लिए पैसे देती है। रॉनी जानता था कि अगर महारानी को लंदन ब्रिज पर स्थित अपने महल में या कहीं और इस छोटे से प्रयोग के बारे में पता चला, तो वह बिल्कुल भी खुश नहीं होंगी। बाद में उसने डॉ. मैनसन को लिखकर अपनी गलती छुपाई: "भगवान के लिए ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन में लचमैन का ज़िक्र मत करना... वह एक सरकारी कर्मचारी है। एक सरकारी कर्मचारी को बुखार देना अपराध होगा!"
अगली सुबह लुचमैन को बुखार आ जाता है: सुबह 8 बजे 99.8 डिग्री ("बीमार लग रहा है", रॉनी कहता है)। लगता है डॉक्टर मैनसन को अपनी मुसीबत से बाहर

निकलना पड़ेगा; शायद मलेरिया सचमुच मच्छर मारने वाली दवा से फैलता है। रॉनी जश्न मनाने के लिए तैयार हो जाता है; वह अपने एजेंट को फोन करने ही वाला होता है। लेकिन तभी निराशा हाथ लगती है। युवा लुचमैन न सिर्फ स्वस्थ दिखता है, बल्कि वह स्वस्थ है भी। उसे सिर्फ मच्छर मारने वाली दवा से एलर्जी है। एक दिन बाद वह इतना चुस्त हो जाता है कि बेगमपेट मैराथन दौड़ सकता है: उसके खून में मलेरिया का कोई निशान नहीं। मच्छर मारने वाली दवा वाली थ्योरी यहीं खत्म हो जाती है। रॉनी अब अब्दुल कादिर के पास वापस जाने के लिए स्वतंत्र है: उसे आखिरकार रोक दिया गया है।

'रुको, रुको,' अंटार ने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'मैं इस बारे में स्पष्ट होना चाहता हूँ। क्या आप यह तर्क दे रहे हैं कि लुचमैन को रॉस की प्रयोगशाला में विशेष रूप से मैनसन के सिद्धांत को गलत साबित करने के लिए भेजा गया था?'

'मैं किसी बात पर बहस नहीं कर रहा,' मुरुगन ने कहा। 'बस तथ्यों को वैसे ही बता रहा हूँ जैसे वे सामने आते हैं। और तथ्य ये हैं: रॉनी लगभग एक महीने से मलेरिया के जीवाणु पर काम कर रहा था जब अब्दुल कादिर और लचमैन उसके जीवन में आए। रॉनी ने अपने काम को छिपाया नहीं था: उसने मलेरिया के मरीजों की ज़रूरत के बारे में प्रचार किया था। अगर कोई देख रहा था, मान लीजिए कि कोई देख रहा था, अगर कोई खास तरह के प्रयोग करने के लिए किसी शोध वैज्ञानिक की तलाश कर रहा था, तो उन्हें इस बात का पता चल गया होगा। तो यह कोई, जो ध्यान से देख रहा था, शायद रॉनी के लैब नोट्स और डॉक्टर मैनसन को लिखे उसके पत्रों को पढ़ रहा था, इस किसी ने फैसला किया, ठीक है, अब एक नए खिलाड़ी को लाने का समय आ गया है। उन्हें सबसे पहले यह सुनिश्चित करना होगा कि रॉनी को कोई मरीज न मिले। इसलिए उन्होंने जादू-टोने की बात फैलाई; यह बाजार में फैल गई; रॉनी बेगमपेट का खलनायक बन गया।'

मई के मध्य तक उन्हें पता चल जाता है कि रॉनी हताश हो रहा है, न मरीज़, न परजीवी, कुछ भी नहीं। उसकी पार्टियों में कोई नहीं आ रहा और उसे समझ नहीं आ रहा कि ऐसा क्यों हो रहा है। तभी वे उसके पास अब्दुल कादिर को भेजते हैं, जिसके पास औद्योगिक स्तर के परजीवी हैं; वे रॉनी का हाथ थामते हैं जब वह धीरे-धीरे सब कुछ समझने लगता है; वे खुश हैं, सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा है, वे रॉनी को ठीक उसी दिशा में ले जा रहे हैं जहाँ वे उसे ले जाना चाहते हैं। और फिर रॉनी को बॉस मैनसन का पत्र मिलता है; अचानक सब कुछ गड़बड़ हो जाता है। रॉनी मच्छर मारने वाले पाउडर जैसी चीज़ों के चक्कर में पड़ जाता है। वे बौखला जाते हैं: उन्हें पता है कि इस रास्ते का कोई अंत नहीं है; उन्हें उसे सही रास्ते पर वापस लाने का कोई तरीका ढूंढना होगा। तो वे क्या करते हैं? वे उसके पास लचमैन को भेजते हैं।

'लेकिन लुचमैन ही क्यों?' अंटार ने कहा।

मुरुगन ने कहा, 'मैं इसे ऐसे समझाता हूँ, जिसने भी लुचमैन को चुना, उसे पता था कि वह क्या कर रहा है। पहली बात तो यह कि उसे सूक्ष्मदर्शी विज्ञान की इतनी जानकारी थी कि वह यह सुनिश्चित कर सके कि उसके खून में मलेरिया के परजीवी नहीं हैं। रॉनी के बारे में यहाँ संदेह किया जा रहा था। किसी ने यह पता लगा लिया था कि अगर

लुचमैन को मच्छर का पानी पिलाने के बाद रॉनी का परिणाम सकारात्मक आता है तो क्या होगा। वह परजीवियों को डॉक्टर मैनसन के सिद्धांत से जोड़ेगा और बस! सारा काम बिगड़ जाएगा। रॉनी बेगमपेट में घूमता रहेगा और 19वीं मद्रास इन्फैंट्री को मरे हुए मच्छर पिलाता रहेगा, और इस तरह कई महीने, शायद साल भी बीत सकते हैं।' तो उन्होंने हस्तक्षेप किया; उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को भेजा जिसके शरीर में कोई परजीवी नहीं था। याद रखिए कि यह एक ऐसी जगह है जहाँ आम आबादी में मलेरिया की दर इतनी अधिक है कि वह बेकाबू है। ऐसे लोगों को ढूंढना आसान नहीं है जिनके खून में परजीवी का कोई अंश न हो। लेकिन इन लोगों ने अपनी खेप में से एक ऐसे व्यक्ति को चुना जो बिल्कुल सही था, और फिर उसे बेगमपेट जनरल अस्पताल भेज दिया। यह कारगर साबित हुआ: रॉनी फिर से पटरी पर आ गया, और बिल्कुल तय समय पर। और इससे भी बेहतर बात यह है कि उन्होंने लुचमैन को ठीक उसी जगह तैनात कर दिया जहाँ वे उसे चाहते थे, जहाँ वह पूरी टीम के लिए बाधा बन सकता है।
'लेकिन,' अंटार ने कहा, 'क्या रॉस ने इतनी स्पष्ट बात पर ध्यान नहीं दिया होगा?'
'रॉनी?' मुरुगन हँसा। 'अगर लुचमैन इसे टी-शर्ट पर भी पहन लेता, तो रॉनी को पता भी नहीं चलता। अगर कोई परजीवी के अलावा कोई और आता है, तो रॉनी दोपहर के खाने पर निकला होता है। रॉनी की कहानी के अनुसार, उस समय उसके पास नौकरों की कमी थी, इसलिए उसने लुचमैन को घर के नौकर-सह-कामकाजी के तौर पर रख लिया। रॉनी को उसके बारे में बस इतना ही पता था कि उसका नाम "लुचमैन" था और वह पेशे से "ढोल ढोने वाला" था।'
अगले चौंतीस महीनों तक - यानी मलेरिया पर रॉन के पूरे शोध काल के दौरान - लुचमैन रोल-ऑन डियोड्रेंट की तरह उससे चिपका रहा। मई 1895 से लेकर जुलाई 1898 तक, जब रॉन ने कलकत्ता में अपनी अंतिम सफलता हासिल की, लुचमैन ने लगभग कभी भी रॉन को अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दिया। वह सामान ढोने में माहिर हो गया था। रॉनी कहते हैं, "मैं सिकंदराबाद से सबसे छोटे 'किट' के साथ निकला था, जिसमें मेरा माइक्रोस्कोप और मेरा वफादार लुचमैन था।"
बात यहाँ तक पहुँच जाती है कि रॉन भी इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं कर पाता कि लचमैन उसके लिए कुछ बेहद महत्वपूर्ण संपर्क बना रहा है। अप्रैल 1897 में, रॉन नीलगिरी पहाड़ियों में छुट्टियाँ बिताने जाता है। वह लचमैन को अपने साथ ऊटाकामंड ले जाता है – "नीलगिरी पहाड़ियों की गोल चोटियों पर बसा इंग्लैंड का एक छोटा सा हिस्सा", रॉन कहता है। लेकिन रॉन मलेरिया के परजीवियों की तलाश में एक घाटी में स्थित वेस्टबरी कॉफी एस्टेट जाता है, और वहाँ उसे अपने जीवन में पहली बार मलेरिया हो जाता है।
जब वह ठीक हो रहा था, लुचमैन उसके दिमाग में एक बेहद महत्वपूर्ण विचार डालने में कामयाब हो जाता है: कि मलेरिया फैलाने वाला मच्छर एक विशेष प्रजाति का हो सकता है। "ओह, सच में?" रॉन कहता है; उसे लगता है कि लुचमैन झूठ बोल रहा है: उसे कई बार नकारात्मक परिणाम मिले हैं, लेकिन उसे कभी यह ख्याल नहीं आया कि इनका मच्छरों के बीच पारिवारिक भिन्नताओं से कुछ लेना-देना हो सकता है।
"सुनो, लुच," रॉन कहता है, "अगली बार जब मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत होगी, तो

मैं तुमसे माँग लूँगा।" लेकिन लुचमैन के इस छोटे से विचार के बाद, रॉन के दिमाग में कुछ हलचल होने लगती है; एक जीव आकार लेने लगता है।
वह अपने हाथ में आने वाली हर अलग-अलग प्रजाति के मच्छर को ध्यान से देखने लगता है। दिक्कत यह है कि रॉन को मच्छरों के बारे में रत्ती भर भी जानकारी नहीं है: उसने कभी एनाफिलीस शब्द तक नहीं सुना। वह क्यूलेक्स, स्टेगोमिया आदि के पीछे भागता रहता है – हर दिशा में भटकता रहता है, सिवाय आगे बढ़ने के। तभी लुटचमैन एक बार फिर बीच में आता है। 15 अगस्त 1897 को वह अपने बाकी साथियों के साथ बैठक करता है और फैसला करता है कि कुछ बहुत जल्दी करना होगा।
रॉनी के अनुसार: "अगली सुबह, 16 अगस्त को, नाश्ते के बाद जब मैं दोबारा अस्पताल गया, तो अस्पताल के कर्मचारी (मुझे खेद है कि मैं उनका नाम भूल गया हूँ) ने दीवार पर बैठे एक छोटे मच्छर की ओर इशारा किया जिसकी पूंछ बाहर निकली हुई थी।" रॉनी ने तंबाकू के धुएं से उसे मार डाला और चीरा लगाया: कुछ नहीं मिला। लेकिन आखिरकार वह सही राह पर था: लचमैन उसे मलेरिया फैलाने वाले असली मच्छर का पीछा करने के लिए उकसा रहा था। रॉनी को अभी भी नहीं पता था कि उन्हें एनोफिलीस मच्छर कहते हैं: वह उन्हें "धब्बेदार पंखों वाले मच्छर" कहता था। अगले दिन लुचमैन यह सुनिश्चित करता है कि रॉनी को वही चीज़ दोबारा मिले: वह उसी सहायक के साथ एनोफिलीस मच्छरों से भरा एक जार भेजता है। रॉनी कहता है, "हाँ, वे वहीं थे: लगभग एक दर्जन बड़े, भूरे रंग के, पतले शरीर और धब्बेदार पंखों वाले, भूख से बेताब होकर उस बोतल के जालीदार आवरण से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे जो भाग्य के देवदूत ने मेरे विनम्र सेवक को दी थी! - चित्तीदार पंखों वाले मच्छर..." भाग्य का देवदूत, बकवास! रॉनी के साथ तो हमेशा कोई बड़ा-बड़ा आदमी ही होता है: जो उसकी नाक के नीचे है, वह उसे देख ही नहीं सकता।
20 अगस्त 1897 को रॉनी ने अपनी पहली बड़ी सफलता हासिल की: उन्होंने एनोफेलेस स्टेफेन्सी के पेट की थैली में प्लास्मोडियम युग्मकों की स्थिति देखी। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा, "यूरेका, समस्या हल हो गई।"
"वाह!" लुचमैन ने अपने चेहरे से पसीना पोंछते हुए कहा। "सोचा था कि उसे कभी समझ नहीं आएगा।"
बाद में रॉन उससे पूछता है: "यार, लुच, मच्छरों की प्रजातियों के बारे में यह दिलचस्प जानकारी तुम्हें कहाँ से मिली?" लुचमैन अनजान बनने का नाटक करता है: "अरे, पहाड़ियों में रहने वाले कुछ ग्रामीणों ने एक सुबह अपनी बकरियाँ चराते समय इसका ज़िक्र किया था।" और जानते हैं क्या? रॉन उसकी बात पर यकीन कर लेता है। उसे लगता है कि लुचमैन को यह शानदार विचार पहाड़ियों में खुशमिजाज आदिवासियों के साथ मौज-मस्ती करते हुए आया होगा।
'इस परिदृश्य में जो बात मुझे सबसे ज्यादा परेशान करती है, वह है मजाक। ये रहा रॉनी, है ना? उसे लगता है कि वह मलेरिया परजीवी पर प्रयोग कर रहा है। और हर समय असल में वही मलेरिया परजीवी पर प्रयोग होता है। लेकिन रॉनी को यह बात कभी समझ नहीं आती; अपने जीवन के अंत तक भी नहीं।'

अध्याय 12

चौरंगी रोड पर टैक्सी की रफ्तार धीमी हो गई। मुरुगन जब भी पीछे मुड़कर देखता, उसे पूरा यकीन होता कि प्रिंटेड टी-शर्ट पहने वो लड़का दौड़ते हुए ट्रैफिक के बीच से निकलता हुआ दिख जाएगा। लेकिन जब टैक्सी थिएटर रोड पर मुड़ी, तब भी उसका कोई अता-पता नहीं था। मुरुगन की उंगलियां खुलने लगीं।

थिएटर रोड पर आधे रास्ते में मुरुगन को सड़क किनारे रबर की चप्पलें बेच रहा एक विक्रेता दिखा और उसने टैक्सी रोक दी। उसने कुछ मिनट लगाकर अपने लिए एक चप्पल चुनी और उसे बहुत अच्छा लगा। वह टैक्सी में कूद गया और ड्राइवर को आगे बढ़ने का इशारा किया, क्योंकि वह रॉबिन्सन स्ट्रीट स्थित गेस्ट हाउस वापस जाने के लिए बेचैन था।

गेस्ट हाउस एक ऐसी चीज़ थी जिस पर वह खुद को बधाई दे सकता था। यह उस जगह से बस थोड़ी ही दूर था जहाँ रोनाल्ड रॉस कलकत्ता में रहते थे। रॉस नंबर तीन पर स्थित एक 'केवल यूरोपियों के लिए' बोर्डिंग हाउस में रुके थे; रॉबिन्सन गेस्ट हाउस, जहाँ मुरुगन ठहरे हुए थे, नंबर 22 की चौथी मंजिल पर था।

मुरुगन को यह जगह बिल्कुल संयोग से मिली थी, हवाई अड्डे के पर्यटक सूचना केंद्र पर एक पुरानी, फटी-पुरानी टाइप की हुई सूची में। डेस्क पर बैठी महिला उसे ग्रैंड और ताज जैसे पांच सितारा होटलों की ओर इशारा कर रही थी। जब उसने रॉबिन्सन गेस्ट हाउस चुना तो वह महिला संशय में थी। उसने बताया कि यह सूची में हाल ही में शामिल हुआ है; वह इसकी गारंटी नहीं दे सकती, वह किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानती जो वहां रुका हो। उसके लिए होटल में ठहरना बेहतर होगा।

'लेकिन मैं बिल्कुल यहीं रहना चाहता हूं,' मुरुगन ने विजयी भाव से कहा, 'रॉबिन्सन स्ट्रीट पर।'

उन्हें इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि यह कैसा होगा, और जब उन्होंने देखा कि रॉबिन्सन स्ट्रीट हरियाली से भरी और अपेक्षाकृत शांत है, जिसमें आधुनिक फ्लैटों की बड़ी-बड़ी इमारतें और कुछ पुराने जमाने की औपनिवेशिक हवेली हैं, तो उन्हें खुशी हुई। बाईसवीं इमारत पुरानी इमारतों में से एक थी, एक विशाल चार मंजिला भवन, जिसमें सुंदर स्तंभों वाली बालकनियाँ थीं: शायद कभी यह सड़क की सबसे भव्य इमारत रही होगी, लेकिन अब इसका डोरिक मुखौटा काफी क्षतिग्रस्त और बदरंग हो चुका था, और इसका प्लास्टर फफूंदी से काला पड़ गया था।

वह एक खड़खड़ाती लिफ्ट में चौथी मंजिल तक गया, जो घुमावदार सागौन की सीढ़ियों के बीच से ऊपर जाती थी। लिफ्ट के रुकने पर मुरुगन ने लकड़ी के टूटे हुए तख्तों पर सावधानी से कदम रखा। रंगीन कांच की खिड़की के एक छेद से आती सूरज की किरण ने उसके दाहिनी ओर ऊंचे दरवाजे के बगल में लगे एक छोटे से बोर्ड को दिखाया। उस पर लिखा था: रॉबिन्सन गेस्ट हाउस। उसके नीचे एन. अराटूनियन का नामपट्ट लगा था।

अपने चमड़े के सूटकेस को घसीटते हुए मुरुगन दरवाजे तक गया और घंटी बजाई। कुछ मिनट बाद उसे दूसरी तरफ कदमों की आहट सुनाई दी। फिर दरवाजा खुल गया

और उसने खुद को एक पीली पड़ी हुई, बूढ़ी औरत के सामने पाया, जिसने फटी हुई ड्रेसिंग गाउन और रबर की चप्पलें पहन रखी थीं। 'नमस्ते,' मुरुगन ने हाथ बढ़ाते हुए कहा। 'आज कोई वैकेंसी है?'
उसके हाथ को अनदेखा करते हुए, महिला ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और अपने सुनहरे फ्रेम वाले चश्मे से भौंहें चढ़ाते हुए बोली, 'तुम्हें क्या चाहिए?'
'एक कमरा,' मुरुगन ने कहा। उसने दरवाजे के पास लगे बोर्ड को थपथपाया। 'यह गेस्ट हाउस है, है ना?'
श्रीमती अराटोनियन ने अपना सिर थोड़ा झुकाया ताकि वह अपने चश्मे के निचले हिस्से से उन्हें देख सकें। उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि आपने अपना परिचय दिया है।'
उन्होंने कहा, 'मेरा नाम मुरुगन है। लेकिन आप मुझे मॉर्गन भी कह सकते हैं।'
श्रीमती अराटूनियन ने नाक सिकोड़ी। उन्होंने कहा, 'श्रीमान मॉर्गन, बेहतर होगा कि आप अंदर आ जाएं। मेरे पास रहने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है, लेकिन मैं आपको अपना खाली कमरा दिखा दूंगी। आप खुद तय कर सकते हैं कि आप रुकना चाहते हैं या नहीं।'
वह मुरुगन को एक दुर्गंधयुक्त ड्राइंग रूम से ले गई, जो डोरी से ढकी खूंटीदार मेजों, चांदी के फ्रेम वाली तस्वीरों और चीनी मिट्टी की मूर्तियों से भरा पड़ा था। एक दरवाजा खोलकर, उसने उसे एक बड़े, धूप से रोशन और ऊँची छत वाले कमरे में पहुँचाया। संगमरमर के फर्श के बीचोंबीच मच्छरदानी से ढका एक पलंग ऐसे पड़ा था मानो कोई तैरता हुआ बेड़ा हो। ठीक उसके ऊपर, लोहे के हुक से लटका हुआ, एक गोल, लंबे डंठल वाला छत का पंखा था।
कमरे के दूसरे छोर पर एक छोटी सी बालकनी थी। कमरे को पार करते हुए मुरुगन बाहर निकले, रेलिंग पर झुके और सड़क पर ऊपर-नीचे नज़र डाली - लाउडन स्ट्रीट के छोर पर पेड़ों से घिरे कब्रिस्तान से लेकर दाईं ओर रॉडन स्ट्रीट पर चल रहे वाहनों तक। अपनी आँखों पर हाथ रखकर उन्होंने तिरछी नज़र रॉबिन्सन स्ट्रीट नंबर तीन पर डाली। उन्हें ऊँची दीवारों से घिरे और सजावटी ताड़ के पेड़ों से युक्त एक विशाल, पुराने ज़माने के औपनिवेशिक हवेली की एक झलक दिखाई दी। उन्होंने देखा कि घर का सामने का हिस्सा बांस के मचान से ढका हुआ था और ड्राइववे ईंटों और सीमेंट के ढेरों से भरा पड़ा था।
मुरुगन ने मुट्ठी भींचकर खुशी जाहिर की: जगह उनकी उम्मीदों से कहीं बेहतर थी। उन्होंने श्रीमती अराटूनियन से कहा, 'मैं इसे स्वीकार करता हूँ।' उन्होंने अपना सामान बिस्तर पर रखा, स्नान किया और रॉस स्मारक की तलाश में निकल पड़े।
कुछ ही घंटे पहले की बात है, लेकिन अब रॉबिन्सन स्ट्रीट का नज़ारा बिलकुल अलग था। पूरी सड़क कारों से भरी हुई थी: आम एम्बेसडर और मारुति जैसी गाड़ियाँ नहीं, बल्कि बड़ी-बड़ी महंगी जापानी और जर्मन कारें। कारों से कड़क धोती और कुर्ते पहने पुरुष और हीरे जड़ित चमकीली साड़ियाँ पहने महिलाएं उतर रही थीं। एक बड़ी बहुमंजिला इमारत के परिसर में शादी का कार्यक्रम चल रहा था। रंग-बिरंगे पंडाल की छज्जी के नीचे संगीत गूंज रहा था। प्रवेश द्वार के ऊपर जगमगाते मेहराब पर फूलों से

'नीरज और नीलिमा का विवाह' लिखा हुआ था। पूरी सड़क रोशनी से जगमगा रही थी - सिवाय नंबर तीन के, जो इसके विपरीत, अंधेरे में डूबी हुई लग रही थी, हालांकि वह शादी के ठीक बगल में थी।
अतिथिगृह की ओर चलते हुए मुरुगन तीसरे नंबर के द्वार पर रुक गया। उसे हवेली का केवल ऊँचा दीवारनुमा हिस्सा ही दिखाई दे रहा था, जिस पर पर्चे और नारे लिखे हुए थे; चारों ओर लगी तेज़ रोशनी ने परिसर के चारों ओर के अंधेरे को और भी गहरा कर दिया था। स्टील के फाटकों के पास जाकर उसने देखा कि वे एक भारी जंजीर से जकड़े हुए थे। उसने फाटकों पर दस्तक दी, शायद अंदर कोई चौकीदार हो जो उसे अंदर आने दे। कोई जवाब नहीं आया। पीछे हटकर मुरुगन ने हवेली की विशाल आकृति को देखा: पास से देखने पर यह उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक भव्य थी।
अचानक बिजली चली गई और गली भर की बत्तियाँ बुझ गईं। एक पल के लिए सन्नाटा छा गया; सब कुछ शांत हो गया, सिवाय पास के पेड़ों में झींगुरों की चहचहाहट और दूर से आती शंखों की आवाज़ के। उसी क्षण मुरुगन को हवेली के भीतर कहीं से धातु के झांझों की मधुर घंटी जैसी आवाज़ सुनाई दी। उसने ऊपर बंद खिड़कियों की ओर देखा और अंधेरे में एक टिमटिमाती हुई नारंगी आयताकार आकृति को उभरते हुए देखा।
वह चौंककर उछल पड़ा और फिर से देखा। यह तो बस एक सड़ी हुई खिड़की के फ्रेम के किनारों से छनकर आती धुंधली आग की रोशनी थी। तभी बगल वाले घर में हो रही शादी में एक जनरेटर ज़ोरदार आवाज़ के साथ चालू हो गया, और एक रुका हुआ फिल्मी गाना तेज़ आवाज़ में बजने लगा, जैसे ही रिकॉर्ड प्लेयर धीरे-धीरे फिर से चलने लगा।
मुरुगन को अब पूरा यकीन हो गया था कि महल खाली नहीं था: अंदर से आ रही आवाज़ों से लग रहा था कि कोई समारोह चल रहा है। वह दरवाज़े तक गया और जंजीरों को हिलाया। उसे आश्चर्य हुआ कि जंजीरें खंभे से अलग हो गईं: किसी ने उन्हें ताला लगाना भूल गया था।
मुरुगन ने फाटक खोलकर अंदर कदम रखा। अंधेरा था, लेकिन उसकी चाबी के गुच्छे में एक छोटी टॉर्च लगी हुई थी। उसने टॉर्च निकाली, उसे जलाया और आगे की ओर रोशनी डाली। रोशनी ड्राइववे में पड़े ईंटों और सीमेंट के ढेरों पर पड़ी। घुमावदार ड्राइववे के शीर्ष पर एक स्तंभों वाला बरामदा था, जो बांस के मचान से ढका हुआ था। मुरुगन को उसके पार एक दरवाजा दिखाई दिया, जो घर के भीतरी हिस्से के घोर अंधेरे में खुलता था।
मुरुगन जब ड्राइववे पर चल रहा था, तो उसकी रबर की चप्पलों में धूल और सीमेंट के कण फंस गए। उसने उन्हें झाड़ा और बरामदे की ओर बढ़ा। बरामदा एक विशाल गलियारे में खुलता था। उसने अपनी टॉर्च अंधेरे में घुमाई। रोशनी कोनों में करीने से रखे गद्दों और मच्छरदानियों के ढेर पर पड़ी।
उसने अपने हाथों को मुंह के चारों ओर रखकर चिल्लाया: 'कोई अंदर है?' पास के जनरेटर की कान फाड़ देने वाली गर्जना में उसकी आवाज़ दब गई। उसने चारों ओर देखा, गलियारे के घने अंधेरे में मंडराती बेचैन परछाइयों का पीछा करते हुए। तभी

उसके कानों में एक आवाज़ आई, ढोल की तरह धीमी-धीमी थाप। ऐसा लग रहा था कि यह घर के अंदर ही कहीं से आ रही है, लेकिन जनरेटर और तेज़ आवाज़ वाले लाउडस्पीकरों के कारण निश्चित रूप से कहना मुश्किल था।
वह गलियारे में और आगे बढ़ने ही वाला था कि दरवाजे पर रोशनी की एक दूसरी किरण दिखाई दी। उसने गुस्से में चिल्लाती हुई आवाज सुनी: 'कौन है? कौन है? यहाँ क्या कर रहे हो?'
वह घूमा और उसकी टॉर्च की रोशनी नेपाली टोपी पहने एक आदमी पर पड़ी, जो उसकी ओर दौड़ रहा था और चौकीदार की लाठी से गुस्से में इशारा कर रहा था।
मुरुगन ने दो उंगलियों से उसे सलाम किया, मानो वह घमंड दिखा रहा हो, जबकि वास्तव में उसे ऐसा महसूस नहीं हो रहा था। उसने कहा, 'बस इधर-उधर देख रहा था।'
नेपाली चौकीदार ने मुरुगन की नाक के नीचे अपनी छड़ी हिलाई, उसे घुमाया और बरामदे की सीढ़ियों से नीचे धकेलने लगा।
'बस देख रहा था,' मुरुगन ने नरमी से कहा। 'मैंने कुछ नहीं छुआ।'
चौकीदार ने लंबी-चौड़ी बातें कहना शुरू कर दिया; मुरुगन को बस कुछ-कुछ ही सुनाई दे रहा था: वह उसे बता रहा था कि किसी को भी अंदर जाने की अनुमति नहीं है, अंदर निर्माण कार्य चल रहा है।
ड्राइववे के आधे रास्ते में, चौकीदार ने हाथ बढ़ाकर गुस्से से एक बड़े टिन के साइनबोर्ड की ओर इशारा किया। यह ड्राइववे के किनारे एक पेड़ के तने में ठोंका हुआ था। मुरुगन को आश्चर्य हुआ कि आते समय वह इसे देख नहीं पाया था। उस पर लिखा था: रॉबिन्सन होटल के लिए जगह: निजी संपत्ति; अनाधिकृत प्रवेश वर्जित; स्वामी और विकासकर्ता रोमेन हलदर।
मुरुगन ने अपना हाथ छुड़ाया और करीब से देखने के लिए आगे बढ़ा। चौकीदार उसके पीछे-पीछे आया, उसकी आवाज़ तेज़ होती जा रही थी।
मुरुगन अचानक उसकी ओर मुड़ा। उसने कहा, 'यह कौन है? रोमन हलदर कौन है?'
चौकीदार ने उसके सवाल पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने उसकी कोहनी पकड़ी, उसे एक तरफ झटका दिया और फाटक की ओर धकेलने लगा। मुरुगन की नज़र उसकी पतलून के ऊपर से झाँकती हुई म्यान में रखी कुकरी की मूठ पर पड़ी।
जैसे ही चौकीदार ने फाटक खोला, मुरुगन ने आखिरी बार मुड़कर मलबे से भरे बगीचे पर अपनी टॉर्च की रोशनी डाली। रोशनी दो ताड़ के पेड़ों के तनों के बीच बंधी एक कपड़े सुखाने की रस्सी पर पड़ी। धोती, अंडरवियर और साड़ियों के बीच ताड़ के पेड़ों और समुद्र तट की छपाई वाली एक टी-शर्ट लटकी हुई थी।
फिर चौकीदार ने उसे धक्का दिया और गेट को जोर से बंद कर दिया।

अध्याय 13

अंतर ने मुरुगन को रेस्तरां की गर्म हरी चाय का एक और कप दिया। 'क्या आपके पास इस बारे में कोई सिद्धांत है कि लुचमैन वास्तव में कौन था?'

'मुझे कुछ सुराग मिले हैं,' मुरुगन ने कहा। 'शायद बहुत ज्यादा। जैसा कि मुझे लगता है, वह हर जगह मौजूद था, नाम बदल रहा था, पहचान बदल रहा था। मुझे शक है कि वह इस योजना के असली मास्टरमाइंड का मुखपत्र था।'
'मैं समझ गया,' अंटार ने कहा। 'लेकिन रॉस ने जो बताया उसके अलावा क्या तुम उसके बारे में कुछ भी जानते हो?'
'दरअसल, मुझे पता है,' मुरुगन ने कहा। 'एक डायरी में उनका जिक्र है।'
'किसकी डायरी?' अंतर ने कहा।
'बात कुछ इस तरह है,' मुरुगन ने कहा। 'एक आदमी था जिसके बारे में हम जानते हैं, जिसने एक बार सेकुंडेरा-बाद में उस घर में एक सप्ताहांत बिताया था जहाँ रॉन रहता था। लुचमैन भी उस घर का हिस्सा था: वास्तव में वह रॉन के लिए लगभग परिवार जैसा था।'
'जारी रखें।'
मुरुगन ने कहा, 'याद रखना, जब रॉन मलेरिया पर काम करना शुरू करता है, तब तक वह दो बच्चों वाला एक खुशहाल शादीशुदा आदमी बन चुका होता है। लेकिन वह एक सेना अधिकारी भी है, जो सैन्य सेवा शर्तों के तहत काम कर रहा है। इसका मतलब यह है कि जब वह सिकंदराबाद की भीषण गर्मी में तप रहा होता है, तब उसकी पत्नी और बच्चे पहाड़ियों में रह रहे होते हैं, और उनके साथ ब्रिटिश सैनिकों की पत्नियों की एक समानांतर सेना भी होती है।'
रॉन ने सिकंदराबाद में अपने गैर-वैज्ञानिक जीवन का वर्णन अपने संस्मरणों में केवल दो वाक्यों में किया है: "23 अप्रैल 1895 को मैं सिकंदराबाद के लिए रवाना हुआ... और मैं वहाँ एक बंगले में कैप्टन थॉमस, एडजुटेंट और लेफ्टिनेंट होल के साथ रहता था, दोनों ही बेहतरीन लोग थे। हमारे यहाँ भोजन की व्यवस्था थी, और सिकंदराबाद क्लब भी था, जहाँ हम गोल्फ और टेनिस खेलते थे; लेकिन मैंने कोई टट्टू नहीं पाला, क्योंकि मुझे किसी भी समय मलेरिया से संबंधित विशेष कार्य में लगाया जा सकता था।"
सिकंदराबाद में रॉन के रहने की जगह की कल्पना करने में आपको ज़रा भी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी: यह बीबीसी के उन किराये के धारावाहिकों में से एक जैसा है: विशाल औपनिवेशिक बंगला; सफेदी की हुई दीवारें, बहुत ऊंची छतें, ठंडा, अंधेरा इंटीरियर, ड्राइववे में खड़े हाथी, साहबों को सलाम करते पगड़ीधारी नौकर, ताड़ के पत्तों के पंखों से हवा में धुआं करते नशे में धुत पंखे, पोलो टट्टू, टेनिस रैकेट, कमरबंद, पूरा का पूरा पराठा।
'वह इसे बंगला कहता है, लेकिन उसकी बातों में मत आना: इस जगह में दो दर्जन कमरे हैं और आधा एकड़ का बगीचा है। फिर नौकरों के क्वार्टर हैं, जो बिल्कुल पीछे हैं, जहाँ से उन्हें देखना मुश्किल है: कमरों की एक लंबी, नीची कतार। कमरे काफी छोटे हैं, लेकिन कुछ कमरों में छह या सात लोग रहते हैं और कुछ में पूरे परिवार रहते हैं। यहीं पर लुचमन रहने आता है, रॉन के सिकंदराबाद पहुँचने के ठीक एक महीने बाद। लेकिन लुचमन का रुतबा काफी ऊँचा है: उसे बड़े डॉक्टर साहब ने खुद चुना है। उसे एक अलग कमरा मिलता है। वह अपना सारा सामान लेकर आता है और आराम

से रहने लगता है।'
रॉन के लिए यह बंगले वाली झंझटें तो रोज़मर्रा की बात हैं; उसे शायद ही इसका एहसास होता है: अरे, एक और दिन। अगर वह सिकंदराबाद में इस तरह नहीं रह रहा होता तो कहीं और भी ऐसा ही कर रहा होता। दुनिया भर में हज़ारों ब्रिटिश सेना अधिकारी हैं जो ठीक इसी तरह रह रहे हैं - दक्षिण अफ्रीका, मलेशिया, सिंगापुर, केन्या, आप नाम लीजिए। उनमें से ज़्यादातर बेवकूफ हैं जो आपकी बात पर यकीन कर लेंगे अगर आप उन्हें बता दें कि प्लास्मोडियम जूलियस सीज़र का मध्य नाम था। बस संयोग से सिकंदराबाद के इस खास बंगले में एक ऐसा आदमी है जो विश्व स्तरीय विज्ञान पर काम कर रहा है, और वह अपने काम में इतना डूबा हुआ है कि उसे शायद ही पता चलता है कि उसके आसपास कुछ हो रहा है या नहीं, जबकि उसके आसपास बहुत कुछ हो रहा है, बस वह बेवकूफ इतना बड़ा जीनियस है कि उसे पता ही नहीं चलता।
और फिर एक दिन एक और आदमी सप्ताहांत बिताने के लिए आता है। उसका नाम जे. डब्ल्यू. डी. ग्रिगसन है; वह अभी-अभी कैम्ब्रिज से निकला है और उसने 'भाषाई सर्वेक्षण भारत' नामक एक संस्था में काम करना शुरू किया है। बीस साल बाद वह 'पूर्वी भारत की भाषाओं और बोलियों की ध्वन्यात्मक संरचनाओं का तुलनात्मक सर्वेक्षण' नामक एक पुस्तक लिखने जा रहा है। यह बेस्टसेलर तो नहीं बनेगी, लेकिन अपने विषय में यह उपभोक्ता गाइड के समान उपयोगी साबित होगी। यह ग्रिगसन एक अनोखा व्यक्ति है: उसकी मृत्यु चालीस के दशक में उत्तरी बर्मा में एक जनजातीय विवाद को सुलझाने की कोशिश करते हुए होगी।
ग्रिगसन जहाँ भी जाता है, नोट्स बनाता है। सच में, वह खूब नोट्स बनाता है: वह डायरी रखता है, जर्नल रखता है। जब 1990 में यप्सिलेंटी कॉलेज ने उसके सभी कागजात खरीदे, तो उन्हें सामान भेजने के लिए आठ एक्सल वाला ट्रक किराए पर लेना पड़ा। ऐसी कोई चीज नहीं है जिसका वह नोट न बनाए: और इसका कोई मतलब नहीं है। क्योंकि उसे सिर्फ भाषाओं में ही दिलचस्पी नहीं है: उसे शरीर रचना विज्ञान में भी गहरी रुचि है। वह हर उस चीज पर नज़र रखता है जो हिलती-डुलती है: अगर वह पैर उठा सकती है, तो वह उसके नीचे जाना चाहता है। तो ग्रिगसन कुछ दिन उस बंगले में बिताने के लिए आता है जहाँ रॉन अपने कार्यकाल के दौरान रह रहा है। पता चलता है कि वह रॉन के एक रूममेट, लेफ्टिनेंट होल के साथ प्राथमिक विद्यालय में पढ़ा था। वे एक-दूसरे को देखना भी पसंद नहीं करते, लेकिन उनकी माताओं ने उन्हें पड़ोसी होने का तमन्ना रखी है। इसलिए जब लेफ्टिनेंट को पता चलता है कि ग्रिगसन शहर में आ रहा है, तो वह उससे पूछता है कि क्या उसे रहने के लिए जगह चाहिए; सोचता है कि इससे उसे कुछ अच्छी छवि मिल जाएगी। ग्रिगसन कहता है, ज़रूर, मेरा क्या नुकसान है? वह कुछ रातों के लिए अतिथि शयनकक्ष में रहने चला जाता है।
ग्रिगसन को यह समझने में ज़्यादा समय नहीं लगता कि इस लचमैन नाम के लड़के के बारे में कुछ तो गड़बड़ है; कुछ तो गड़बड़ है, लेकिन वह नहीं जानता कि क्या। उन दोनों ने आपस में बस इतना ही कहा है, "क्या आप चाय पीना चाहेंगे, महोदय?" और

"ठीक है, लच, चाय डालिए," लेकिन ग्रिगसन की नज़र इस बात पर टिकी रहती है। लचमैन के बोलने के तरीके में कुछ ऐसा है जो उसे उत्सुक कर देता है: वह इस लड़के के बारे में सोचने लगता है।
'वह एक छोटा सा प्रयोग करता है: उसे "वाहक" या "लड़का" या "अरे तुम" या जो भी हो, कहने के बजाय, वह अचानक उसे "लुचमैन" कहकर पुकारता है।'
वह अपनी डायरी में लिखता है कि लुचमन के जवाब देने में बस एक पल का विलंब होता है: बस वह अतिरिक्त नैनोसेकंड जो तब लगता है जब कोई ऐसे नाम का जवाब देता है जो वास्तव में उसका अपना नहीं होता। अब ग्रिगसन को यकीन है कि उसका असली नाम लुचमन नहीं है: उसने इसे इसलिए बदल दिया है ताकि लगे कि वह इसी इलाके का है। ग्रिगसन को यह समझ आ गया है कि यह सबसे आम नामों में से एक है, सिवाय इसके कि एक जगह जो "लुचमन" है, वह कहीं और लाखन है, कहीं और लोखखोन है, और कहीं और लक्ष्मण है: यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप देश के किस हिस्से से हैं।
उस शाम उसने रॉन से पूछा, "इस लुचमैन के बारे में क्या कहानी है? क्या वह यहीं का रहने वाला है?" रॉन अभी-अभी आठ घंटे लगातार मच्छरों के पेट की परत को घूरते हुए लौटा था। वह फालतू की बातों के मूड में नहीं था। उसने कहा, "मैंने कभी पूछा ही नहीं। लगता है वह यहीं का रहने वाला है।"
"क्या यह सही है?" ग्रिगसन कहते हैं। "लेकिन जिस तरह से वह अपने अघोषित लेबियल और रेट्रोफ्लेक्स डेंटल उच्चारण करते हैं, उससे ऐसा लगता है कि वह बहुत उत्तर से आए हैं।"
"अरे वाह!" रॉन जम्हाई लेते हुए कहता है: वह खुद से पूछ रहा है कि यह बेवकूफ कहाँ से आ गया। "अरे वाह! लगता है मुझे जाकर देखना चाहिए कि क्या मुझे टेनिस खेलने का मौका मिल सकता है।" वह चिल्लाते हुए किनारे की ओर चला जाता है, "कोई टेनिस खेलना चाहता है?"
इस समय तक ग्रिगसन की दिलचस्पी केवल लचमैन के टेढ़े-मेढ़े दांतों में ही नहीं थी: बल्कि वह उसके होंठों के पीछे की बनावट को भी जानने में व्यक्तिगत रुचि विकसित कर रहा था। अगली सुबह जब वह बिस्तर पर ही था, लचमैन उसके लिए चाय का प्याला लेकर आया। ग्रिगसन को अपना मौका मिल गया: ठीक है, उसने मन ही मन सोचा, चलो कोशिश करते हैं। चाय का प्याला लेते समय उसने अपना हाथ लचमैन की बांह पर थोड़ी देर रखा; एक पल बाद ही उसने लचमैन का हाथ पकड़ लिया। और अब उसने लचमैन के बारे में एक प्यारी सी बात पर ध्यान दिया: उसके बाएं हाथ में केवल चार उंगलियां थीं और अंगूठा नहीं था। लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसे अंगूठे की ज़रूरत ही नहीं थी: उसने अपनी तर्जनी उंगली को इस तरह मोड़ रखा था कि वह अंगूठे की तरह काम करती थी।
'ग्रिगसन को उस अंगूठे से सचमुच रोमांच मिलता है जो था ही नहीं।'
वह उसे सहलाता है। "अरे, लुच," वह अपने बिस्तर पर थपथपाते हुए कहता है। "जल्दी क्या है, यहीं बैठ जाओ और चलो थोड़ी देर बातें करते हैं।" इस पूरे समय ग्रिगसन ऐसे दिखावा कर रहा है जैसे उसे सिर्फ टूटी-फूटी हिंदुस्तानी आती हो, जैसे

भारत में बाकी सभी अंग्रेजों को आती है।
लुचमैन उसे एक तीखी नज़र से देखता है, मानो उसे परखने की कोशिश कर रहा हो। ग्रिगसन को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता: वह सोचता है, वाह, यह नया डियोड्रेंट वाकई काम करता है। तभी उन्हें रॉन की आवाज़ सुनाई देती है, जो अपने कमरे से चिल्ला रहा है: "अरे, सामान ढोने वाले, मेरी चाय कहाँ है?"
लुचमैन उछलकर भाग जाता है। ग्रिगसन बाद में फिर कोशिश करने का फैसला करता है। वह लुचमैन पर नज़र रखता है और उसके रहने का पता लगाता है: वह देखता है कि नौकरों के क्वार्टर में उसकी खिड़की पर एक बड़ी धातु की लालटेन लटकी हुई है।
उस रात सिकंदराबाद क्लब में पार्टी थी। ग्रिगसन गया, लेकिन वह जल्दी ही चुपके से निकल गया; उसने कहा कि उसे सिरदर्द है; वह बंगले पर वापस जाना चाहता है। उन्होंने उसके लिए गाड़ी का इंतजाम किया; वह वापस गया; उसने अपनी मच्छरदानी के नीचे कुछ तकिए ठूंस दिए और चुपके से निकल गया।
'अंधेरा है, चाँद नहीं है। मानसून का मौसम है: पूरा आँगन कीचड़ में बदल गया है।' ग्रिगसन कीचड़ में लथपथ होकर नौकरों के क्वार्टर की ओर बढ़ता है। उसे अंधेरे में बस एक विशाल आकृति दिखाई देती है। वह मन ही मन बड़बड़ाता है, लेकिन थोड़ा और पास जाकर उसे खिड़की में एक रोशनी दिखाई देती है, एक छोटा सा चमकीला गोला, लाल रंग में चमक रहा है। वह अपने पायजामे को ऊपर खींचता है और दबे पांव खिड़की तक जाकर दस्तक देता है। लुचमैन का चेहरा दिखाई देता है; वह चौंक जाता है और उसकी आँखें फटी रह जाती हैं।
“मैं हूँ!” ग्रिगसन कहता है। “बस आपकी कला का संग्रह देखने आया हूँ।” लचमैन अपना दरवाज़ा खोलता है और ग्रिगसन कमरे में कदम रखता है। कमरा छोटा है, उसमें कपड़ों, पसीने और सरसों के तेल की गंध आ रही है। एक कोने में रस्सी का पलंग है और रस्सी पर कुछ कपड़े टंगे हैं। कमरा बहुत अंधेरा है। कमरे में एकमात्र रोशनी खिड़की में लगे लैंप से आ रही है। अब जब वह इतनी दूर आ ही गया है, तो वह इस आदमी को अच्छे से देखना चाहता है। लेकिन यह कोई साधारण लैंप नहीं है। यह बड़ा है, मजबूत है, टिकाऊ है, इसमें एक लंबा हैंडल है और इसमें लाल कांच का एक छोटा गोलाकार टुकड़ा लगा है। ग्रिगसन एक पल के लिए रुकता है और फिर उसे समझ आता है कि यह क्या है: यह एक आम रेलवे सिग्नल लैंप है। वही लैंप जो स्टेशनों पर ट्रेनों को रोकने के लिए इस्तेमाल होता है। यह उस तरह का लैंप नहीं है जो आपको किसी मोहल्ले की दुकान पर मिल जाए: अगर सोचें तो, इसे खिड़की में लटकाना शायद एक संघीय अपराध है।
अब तक ग्रिगसन बुरी तरह उत्तेजित हो चुका है; उसकी उत्तेजना चरम पर है। लेकिन साथ ही वह जिज्ञासा से भी भरा हुआ है। वास्तव में, उसे यह तय नहीं है कि कौन सी बात उसे ज्यादा उत्तेजित कर रही है: किस करना या सच्चाई का पता लगाना।
वह टूटी-फूटी हिंदुस्तानी में दीपक की ओर इशारा करते हुए कहता है: "यह क्या है?"
'लुचमैन नाटक करता है। "क्या बात है?"
"ऊपर लगा हुआ वो लैंप।"
"ओह, वह: आप जानते हैं कि वह क्या है।"

"हां, लेकिन आप इसे क्या कहते हैं?" ग्रिगसन कहते हैं।
"ये सवाल कैसे हैं?" लचमैन कहता है। वह भी टूटी-फूटी हिंदुस्तानी बोल रहा है, इसलिए ग्रिगसन को बात समझने में दिक्कत हो रही है।
ग्रिगसन कहते हैं, "मुझे बस जिज्ञासा है।"
"क्यों?" लचमैन ने कहा। "क्या तुम इतनी दूर सिर्फ मुझसे ये बेवकूफी भरे सवाल पूछने आए हो?"
"नहीं," ग्रिगसन ने कहा। "मैं बस उत्सुक हूं, बस इतना ही।"
"'किस बात को लेकर उत्सुक हो?"
"शब्दों के बारे में।"
"आपका मतलब है कि आप जानना चाहते हैं कि इसे क्या कहते हैं?"
"हां," ग्रिगसन ने कहा। "बिल्कुल सही।"
"'आपने पहले क्यों नहीं बताया?" लचमैन ने कहा। "इसे लालटेन कहते हैं।"
और तभी ग्रिगसन को पता चला। उसे इसलिए पता चला क्योंकि लुचमैन ने उस शब्द का उच्चारण वैसे नहीं किया जैसा उसे करना चाहिए था अगर वह सचमुच उसी जगह से था जहाँ से वह होने का दावा कर रहा था। उसने जो कहा वह था "लालटेन"।
तो ग्रिगसन उसे देखकर मुस्कुराता है और अपनी ही बोली में उससे कहता है: "तो तुम्हारा नाम सचमुच लखन है, है ना? क्या तुम्हारे यहाँ ऐसे ही बोलते हैं?"
जैसे ही उसने वह शब्द कहा, लुचमैन का चेहरा एकदम अकड़ गया। लेकिन ग्रिगसन ने इस पर ध्यान नहीं दिया; वह अपनी अचूक श्रवण क्षमता पर गर्व कर रहा था। उसने लुचमैन की ओर उंगली हिलाते हुए कहा, "मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते। मैंने तुम मूल निवासियों को अच्छी तरह समझ लिया है: मुझे पता है कि तुममें से हर एक कहाँ का है। ये उधार लिए गए शब्द हर बार तुम्हारी पोल खोल देंगे।"
अब अचानक, लुचमैन हरकत में आता है। वह अपनी लालटेन उठाता है और कहता है, "चलो, मेरे पीछे आओ।"
"'कहाँ जाना है?" ग्रिगसन पूछता है, लेकिन लचमैन पहले ही दरवाजे से बाहर निकल चुका होता है। ग्रिगसन भी दौड़ने लगता है।
संयोगवश, सिकंदराबाद, कई ब्रिटिश छावनी कस्बों की तरह, एक बड़ा रेलवे केंद्र है। स्टेशन रॉस के बंगले से ज़्यादा दूर नहीं है: दरअसल, शंटिंग यार्ड बगीचे के निचले हिस्से से बस कुछ सौ फीट की दूरी पर है। लेकिन ग्रिगसन शहर में नया है और उसे इस बात का अंदाज़ा नहीं है। वह लचमैन की लाल बत्ती का पीछा करते हुए बहुत तेज़ी से दौड़ रहा है। वह हांफ रहा है; उसके सिर में एंडोर्फिन शैम्पेन के बुलबुलों की तरह फूट रहे हैं। उसकी हालत ठीक नहीं है; जितनी तेज़ी से वह दौड़ता है, उतना ही वह भ्रमित होता जाता है।
वह अपनी पूरी ताकत लगा रहा है, लेकिन लालटेन हमेशा उससे थोड़ा आगे है, हिलती-डुलती, घूमती-फिरती हुई: ऐसा लगता है जैसे वह उसे कहीं ले जा रही हो। बहुत अंधेरा है; लालटेन की रोशनी ही एकमात्र ऐसी चीज है जो ग्रिगसन को दिखाई दे रही है। उसे ठीक से पता नहीं है कि वह कहाँ है, लेकिन वह जानता है कि वह अब घास पर नहीं दौड़ रहा है: उसके पैरों के नीचे कंकड़ हैं। उसे धातु पर कुछ बजने की

आवाज सुनाई दे रही है। लेकिन वह जो सुन रहा है उस पर भरोसा नहीं कर सकता; वह थका हुआ है, उसके कान दुख रहे हैं।
तभी उसे एक ऐसी आवाज़ सुनाई देती है जिससे उसके कान के पर्दे फटने ही वाले थे: यह एक सीटी थी। उसने पीछे मुड़कर देखा और अचानक उसे लगा जैसे फ़िल्मों का आविष्कार हो गया हो और वह सबसे आगे वाली पंक्ति में बैठा हो: एक रेलगाड़ी भाप के बादल उड़ाती हुई उसकी ओर तेज़ी से बढ़ रही थी। वह घबरा गया और पटरियों के बीच भागने लगा; वह कुचलकर मरने ही वाला था। लेकिन आखिरी आधे सेकंड में वह कूदने में कामयाब हो गया: रेलगाड़ी के फेंडर बाल-बाल उससे बच गए।
लाल बत्ती अब चली गई है। किसी तरह ग्रिगसन बंगले तक वापस पहुँचने में कामयाब हो जाता है। वह डरा हुआ है: उसे यकीन है कि लुचमैन उसे मारने के लिए एक दुर्घटना का नाटक रच रहा था। वह सोचता है कि उसे रॉस को चेतावनी देनी चाहिए कि उसके घर में कुछ बहुत ही अजीब हो रहा है। लेकिन वह हिम्मत हार जाता है: वह यह नहीं समझाना चाहता कि वह नौकरों के क्वार्टर में क्या कर रहा था। तो इसके बजाय वह क्या करता है? वह सब कुछ अपनी डायरी में लिख लेता है।
अगली सुबह लुचमैन नाश्ते की मेज पर हर दिन की तरह इंतजार कर रहा था, मानो उसके मन में कोई चिंता ही न हो। वह हमेशा की तरह आदर्श नौकर था: मुस्कुराता हुआ, विनम्र और चौकस। ग्रिगसन ने फैसला किया कि वह अब इस शहर में दोपहर का भोजन नहीं करेगा: वह जवान है, उसे अपना जीवन जीना है। वह सिकंदराबाद से अगली ट्रेन पकड़ लेता है।

अध्याय 14

सोनाली ने गौर किया कि उर्मिला अपनी इमारत में कदम रखते ही अचानक चुप हो गई थी; लिफ्ट का इंतज़ार करते हुए उसने एक शब्द भी नहीं कहा, बस होंठ सिकोड़कर लॉबी में चारों ओर देखती रही, हर छोटी-छोटी बात को गौर से देखती रही। सोनाली समझ गई कि उर्मिला कुछ नापसंदगी भरी बात कहने की अपनी इच्छा को दबा रही थी।
सोनाली यहाँ इतने लंबे समय से रह रही थी कि वह भूल चुकी थी कि यह जगह उसे शुरू में कितनी अजीब, यहाँ तक कि विचित्र भी लगी थी: संगमरमर के फर्श, दीवारों पर सजे सुनहरे दर्पण, कोनों में लगे ऊंचे ताड़ के पेड़, जो पॉलिश किए हुए पीतल के गमलों में थे। कलकत्ता में ऐसी कोई चीज़ देखने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी, सिवाय किसी पांच सितारा होटल के।
जब रोमेन ने पहली बार उसे इमारत दिखाई, तो उसने उससे कहा कि यह रहने लायक जगह नहीं लगती - कम से कम सोनाली के लिए तो नहीं। यहाँ तो हर काम को करने के बारे में चिंता करने में ही बहुत समय बीत जाएगा: कपड़े कहाँ टांगने हैं और नया फर्नीचर खरीदना है या नहीं। लेकिन रोमेन बस हँस पड़ा, जैसा कि सोनाली जानती थी कि वह हँसेगा। उसने कहा, 'यह तो बस व्यापार है, यह सारा संगमरमर और पीतल। जो लोग ये फ्लैट खरीदते हैं, वे इसी के लिए पैसे देते हैं। आपको इसे गंभीरता से लेने

की ज़रूरत नहीं है।'
लिफ्ट आई और उर्मिला चुपचाप अंदर चली गई। सोनाली चाहती थी कि काश वह कुछ कह पाती जिससे उर्मिला को स्थिति का सही परिप्रेक्ष्य समझ में आ जाता: उसे यह एहसास हो जाता कि यह वैसी जगह नहीं थी जहाँ वह रहने की आदी थी, कि उसने अपना अधिकांश जीवन अपनी माँ के साथ एक तंग से छोटे फ्लैट से दूसरे में भटकते हुए बिताया था, कि उसकी माँ गरीबी की इतनी आदी और इतनी भयभीत थी कि उसने कभी किसी और तरह से जीने के बारे में सोचा ही नहीं, यहाँ तक कि जब उसके पास पैसा था तब भी नहीं। लेकिन तभी लिफ्ट का दरवाजा खुल गया और बहुत देर हो चुकी थी।
सोनाली ने अपना सामने का दरवाजा खोला और अपने फ्लैट को अंधेरे में देखकर हैरान रह गई। बत्ती जलाकर उसने उर्मिला को अंदर बुलाया।
'घर पर कोई नहीं है?' उर्मिला ने कश्मीरी कालीनों और चमकीले गुजराती दर्पण के काम से सजी नीची कुर्सियों वाले विशाल, कांच के सामने वाले कमरे में चारों ओर देखते हुए कहा।
'एक लड़का है जो खाना बनाता है और सफाई करता है...' सोनाली ने उर्मिला को कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा। 'अक्सर जब मैं घर आती हूँ तो वह कालीन पर बैठा ज़ी टीवी देख रहा होता है और ज़ोर-ज़ोर से गाना गा रहा होता है।'
उसने अपना हैंडबैग एक कुर्सी पर फेंका और गलियारे से होते हुए रसोई की ओर चल पड़ी, जाते हुए उसने बत्तियाँ जला दीं। रसोई साफ-सुथरी थी, सब कुछ अपनी जगह पर था, संगमरमर के काउंटर एकदम चमक रहे थे। वह जल्दी से पीछे वाले कमरे में गई और छत से लटकते हुए नंगे बल्ब को जला दिया, जो एक मुड़ी हुई तार से लटका हुआ था।
कमरा खाली था: गद्दा और चादरें करीने से तह करके चारपाई के नीचे रखी थीं। बाकी सब कुछ गायब था: उसका बेहद शोर मचाने वाला ट्रांजिस्टर रेडियो, उसकी चप्पलें, वो प्रिंटेड टी-शर्ट जो वो हमेशा पहनता था। वह कमरे के कोने में रखी एक छोटी सी मेज के पास गई और एक दराज खोली। वह भी खाली थी: उसकी किताबें, पेंसिलें और बॉलपॉइंट पेन सब गायब थे।
'क्या वह वहां है?' उर्मिला ने पुकार कर पूछा।
'नहीं,' सोनाली ने अनमने ढंग से कहा। 'मुझे लगता है वह चला गया है - उसका सारा सामान गायब है।' उसने लाइट बंद की और धीरे-धीरे ड्राइंग रूम की ओर वापस चली गई।
'क्या वह आपका इकलौता नौकर था?' उर्मिला ने पूछा।
सोनाली ने सिर हिलाया। उसने कहा, 'वह सचमुच नौकर नहीं था। मुझे घर में नौकरों का रहना पसंद नहीं है।'
'तो फिर...?'
सोनाली ने कहा, 'वह दिन में स्कूल जाता था। लेकिन शाम को जब मन करता, खाना बनाता और सफाई करता था: यही व्यवस्था थी। रोमेन ने यह सुझाव दिया था। उसके किसी ठेकेदार या किसी और ने उस लड़के को ढूंढा था: वह भीड़भाड़ वाली लोकल

ट्रेनों में यात्रियों के लिए गणित के करतब दिखाकर अपना गुजारा करता था। रोमेन ने दावा किया कि वह एक विलक्षण प्रतिभा वाला बच्चा है और उसे अपने संरक्षण में ले लिया।'
सोनाली अनमने ढंग से दरवाजे खोल रही थी, कमरों और स्नानघरों में झाँक रही थी, मानो उसे उम्मीद हो कि वह उसे वहाँ पा लेगा। 'मुझे समझ नहीं आ रहा,' उसने कहा। 'वह कहाँ गया होगा? उसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। वह रोमेन के अलावा किसी को नहीं जानता।'
तभी ड्राइंग रूम में फोन की घंटी बजी। सोनाली दौड़कर गई और ग्रे रंग का तार रहित हैंडसेट उठाया। उर्मी-ला से माफी मांगते हुए उसने एक दरवाजा खोला और फोन लेकर बालकनी में चली गई।
'हैलो,' उसने टॉक बटन दबाते हुए कहा। उसने अपनी आवाज़ धीमी करके फुसफुसाते हुए पूछा, 'रोमन?'
फोन में हल्की सी आवाज़ आई और दूसरी तरफ से एक धीमी सी आवाज़ सुनाई दी। सोनाली तुरंत समझ गई कि यह रोमेन नहीं था; कोई और आदमी था। वह शर्मिंदगी और निराशा से एकदम शांत हो गई। उस आवाज़ ने विनम्र और औपचारिक बंगाली में कहा, 'क्या आप बता सकती हैं कि क्या श्री रोमेन हलदार यहाँ हैं?'
'नहीं, वह नहीं है,' उसने अपनी आवाज़ को सावधानीपूर्वक पेशेवर लहजे में बदलते हुए कहा, मानो कुछ क्षण पहले तक उसमें मौजूद आत्मीयता के हर निशान को मिटाने की कोशिश कर रही हो। 'कौन बोल रहा है?'
'ओह, तो वह वहां नहीं है?' दबी हुई हैरानी के साथ जवाब आया।
'नहीं,' सोनाली ने जवाब दिया। अब वह खुद हैरान थी: रोमेन के बारे में पूछने के लिए यहाँ फोन करने वाला एकमात्र व्यक्ति उसका सचिव था। यह रोमेन का नियम था, उसका नहीं, घरेलू मर्यादा बनाए रखने का उसका एक अजीबोगरीब प्रयास। वह हमेशा कहता था, 'यह उसकी रक्षा के लिए है, सोनाली, ताकि लोग गपशप न करें, मानो ऐसा करने से लोग गपशप करना बंद कर देंगे।'
'कौन बोल रहा है?' उसने कहा - कठोर स्वर में नहीं, बल्कि थोड़ी हिचकिचाहट के साथ।
'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,' दूसरी तरफ से आवाज आई।
'रुको,' उसने जल्दी से कहा। 'एक मिनट रुको; कौन है? कौन बोल रहा है?'
लाइन पहले ही कट चुकी थी।
वह बेंत की कुर्सी पर बैठ गई और फोन अपनी गोद में रख लिया। तभी उसकी नज़र सामने वाली इमारत में कहीं फड़फड़ाते हुए पर्दे पर पड़ी। उसका शक तुरंत सही साबित हो गया: पड़ोसी फिर से उस पर नज़र रख रहे थे। जैसे ही वे नज़रों से ओझल हुए, उसने कुछ चेहरों की झलक देखी।
कभी-कभी वह सोचती थी कि क्या वे उसकी बालकनी पर नज़र रखने के लिए अपनी खिड़कियों पर पहरेदार तैनात करते थे? जब उन्हें उसकी एक झलक मिल जाती थी तो वे क्या करते थे? क्या वे अपने फ्लैटों में दौड़ते हुए चिल्लाते थे: 'सोनाली दास फिर से अपनी बालकनी पर है, बाहर आओ और देखो!'

जब भी वो लिफ्ट में या पार्किंग एरिया में उनसे मिलतीं, तो वे हमेशा बहुत शर्मीले लगते थे – ये धनी हृदय शल्यचिकित्सक, बैंक प्रबंधक और उनकी रेशमी वस्त्रों में लिपटी पत्नियाँ। वे अभिवादन में मुस्कुराते और फिर नज़रें झुका लेते, मानो घूरते हुए पकड़े जाने से डरते हों। कभी-कभी वे उन्हें बताते कि उन्हें उनकी फिल्में या उनकी किताब पसंद आई। कुछ बड़े-बुजुर्ग उनकी माँ के अभिनय के बारे में बातें करते: वे कहानियां सुनाते कि कैसे वे नारकेलडांगा के विशाल तंबू तक गए और कामिनीदेवी के कुछ प्रसिद्ध पुराने जात्रा नाटक, जैसे मैरी एंटोनेट, क्वीन ऑफ फ्रांस या रानी रश्मोनी देखने के लिए चार आना के टिकट खरीदे।
वह जानती थी कि वे उसके और रोमेन के बारे में गपशप करते हैं; उसे अक्सर यह जानने की उत्सुकता रहती थी कि वे उसके बारे में क्या सोचते हैं: क्या उन्हें उस पर तरस आता है? क्या वे उसे तुच्छ समझते हैं? क्या वे क्रोधित हैं? यह जानना दिलचस्प होता, भले ही अमूर्त रूप से: वैसे उसे इसकी परवाह नहीं थी। वह गपशप के माहौल में पली-बढ़ी थी: उसकी माँ को इससे दुगनी गपशप झेलनी पड़ी थी और उसे भी कोई फर्क नहीं पड़ता था।
वह अंदर जाने के लिए उठी, लेकिन फिर अचानक ही बैठ गई और विकेट क्लब का नंबर डायल किया। फोन कई बार बजता रहा, आखिरकार हेड बारटेंडर ने फोन उठाया।
'जावेद?' उसने कहा।
'सलाम, मेमसाहिब,' उसने उन्हें तुरंत पहचानते हुए कहा। 'रोमन-साहिब लगभग आधे घंटे पहले चले गए।'
'आधे घंटे पहले?' सोनाली ने कहा। 'तुम्हारा मतलब है कि वह पूरी शाम वहीं था?'
'हां,' बारटेंडर ने कहा। 'उसने आपको फोन करने की कोशिश की थी; मैंने उसे किसी से आपको फोन करने के लिए कहते सुना। उसने थोड़ी देर इंतजार किया और फिर चला गया।'
'ओह,' सोनाली ने कहा। उसे अचानक रोमेन की छवि दिखाई दी, जो घोड़े की नाल के आकार के बार के दूसरे छोर पर खड़ा था, लंबा, हट्टा-कट्टा और गंजा, क्लब के टेलीफोन पर झुका हुआ, अपने उस अजीबोगरीब लड़खड़ाते हाथ से माइक्रोफोन पकड़े हुए था।
'क्या आपको पता है कि वह कहाँ गया?' उसने पूछा।
'नहीं,' जवाब आया। 'लेकिन मुझे पता है कि उसने सिएरा को उसके ड्राइवर के साथ घर भेज दिया था।'
'तो उसका क्या हुआ?'
'उसने टैक्सी ली।'
'टैक्सी!' सोनाली अचंभित रह गई। 'रोमेन तो हमेशा अपनी कार से ही जाता है। वो कहाँ जा रहा था? क्या आपको पता है?'
'नहीं,' बारटेंडर ने कहा। लेकिन फिर उसने कहा, 'एक मिनट रुकिए, मेमसाहिब।' उसने फोन नीचे रख दिया और उसने उसे दूसरे बारटेंडरों से बात करते हुए सुना। फिर वह वापस फोन पर आया। 'मेमसाहिब?' उसने कहा। 'गेट पर ड्यूटी पर तैनात दरवान

ने रोमेन-साहिब को टैक्सी ड्राइवर से बात करते हुए सुना।'
'क्या उसने उसे यह कहते हुए सुना कि वह कहाँ जा रहा है?' सोनाली ने पूछा। 'हाँ। वह रॉबिन्सन स्ट्रीट जा रहा था, लेकिन वह रास्ते में पार्क सर्कस पर रुकना चाहता था।'
'ओह।' सोनाली ने फोन बंद किया और धीरे-धीरे अंदर चली गई।
उर्मिला उछलते हुए बोली, 'क्या बात है?' 'तुम्हें देखकर ऐसा लग रहा है जैसे तुम्हें सदमा लगा हो।'
सोनाली एक कुर्सी पर बैठ गई। "लगता है रोमेन रॉबिन्सन स्ट्रीट जा रहा है," उसने अपनी उंगलियों को चबाते हुए कहा।
उर्मिला ने कहा, 'मैं समझ गई। क्या उनकी कोई अपॉइंटमेंट थी?'
'मुझे तो इसकी जानकारी नहीं है,' सोनाली ने कहा। 'और वह रास्ते में पार्क सर्कस में रुकेगा।'
'वहाँ क्यों?'
'मुझे कोई जानकारी नहीं है,' सोनाली ने कहा। 'मैं वहाँ रहने वाले केवल फूलबोनी को जानती हूँ। लेकिन रोमेन ने उससे मिलने के बारे में कुछ नहीं कहा: उसने कहा कि वह आज रात करीब नौ बजे यहाँ आएगा।'
उर्मिला ने अपनी बांह पर थपथपाया। उसने शांत स्वर में कहा, 'मुझे यकीन है कि वह जल्द ही यहाँ आ जाएगा।'
सोनाली ने बेपरवाही से इशारा किया। 'मुझे नहीं पता,' उसने कहा। 'आज तो सब गायब होते दिख रहे हैं। अगर वह जल्दी नहीं आया तो मुझे जाकर उसे ढूंढना पड़ेगा।'
वह थोड़ी घबराहट के साथ हंसी। उसने कहा, 'अब आप मुझसे क्या पूछना चाहते थे?'
उर्मिला उत्सुकता से उठ बैठी और बोली, 'मुझे जिज्ञासा थी कि क्या आपने कभी फुलबोनी को लाखन नाम के किसी व्यक्ति के बारे में बात करते सुना है?'
'लाखन नाम का कोई?' सोनाली सोफे पर बैठ गई। 'यह दिलचस्प है। आप क्यों पूछ रही हैं?'

अध्याय 15

रेस्तरां में भीड़ अब कम हो रही थी; लोग काम पर वापस जाने की जल्दी में थे, इसलिए मेजें तेजी से खाली हो रही थीं। अंतर ने अपनी घड़ी से नज़र हटाकर सामने बैठे मुरुगन को देखा। वह रेस्तरां की बांस के हैंडल वाली चायदानी से चाय डाल रहा था, मानो उसे समय का कोई एहसास ही न हो। अंतर ने कुछ मिनट और रुकने का फैसला किया।
'मजाक क्या है?' मुरुगन ने तीखी आवाज में कहा, उनकी आवाज शोरगुल के बीच से निकलती हुई सुनाई दी।
अंतर चौंककर उठ बैठा और बोला: 'मुझे माफ़ करना?'
'तुम क्यों हस रहे हो?'

'क्या मैं मुस्कुरा रहा था?'
'बिल्कुल, तुम वही थे,' मुरुगन ने कहा।
'अच्छा, तो फिर,' अंटार ने कहा। 'मुझे लगता है कि मैं मुस्कुरा रहा था।'
'क्या तुम्हें यह परिदृश्य हास्यास्पद लगता है?' मुरुगन ने पूछा।
'सच कहूँ तो, मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या सोचूँ,' अंटार ने कहा। 'मैंने आपकी पूरी बात सुन ली है, और जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, आपके पास कोई ठोस सबूत, प्रमाण या कुछ भी नहीं है...'
'और अगर मैं कहूँ कि यही मेरा सबूत है तो?'
'उसकी कमी से आपका मतलब है?' अंटार ने मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा।
'मेरा मतलब है कि गोपनीयता ही इस सब का मूल है: यह स्वाभाविक है कि कोई सबूत या प्रमाण नहीं होगा।'
अंतर ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'लेकिन अगर मैं यह मान भी लूँ, तो भी आपका संस्करण समझ में नहीं आएगा। अगर मैंने आपको सही समझा है, तो आप यह सुझाव दे रहे थे कि यह दूसरी टीम - आपके शब्दों में कहें तो - इस शोध के कुछ हिस्सों में रॉस से पहले ही आगे थी। लेकिन फिर वे खुद इस शोध को आगे क्यों नहीं बढ़ाते? वे अपने निष्कर्ष प्रकाशित करके नोबेल पुरस्कार के लिए दावेदारी क्यों नहीं करते?'
मुरुगन ने अपनी ठुड्डी पर हाथ फेरा। 'ठीक है,' उन्होंने लंबे विराम के बाद कहा। 'मैं आपको एक परिदृश्य बताता हूँ। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि ऐसा ही हुआ था: मैं बस आपसे मेरी बात सुनने का अनुरोध कर रहा हूँ।'
'आगे बढ़ो,' अंतर ने विनम्रता से कहा।
'चलिए इसे ऐसे समझते हैं,' मुरुगन ने कहा। 'आप पदार्थ और प्रतिपदार्थ के बारे में तो सब जानते ही हैं, है ना? और कमरों, प्रतीक्षालंचों, ईसा मसीह और ईसा मसीह के विरुद्ध आदि के बारे में भी? अब मान लीजिए कि विज्ञान और प्रति-विज्ञान जैसी कोई चीज़ है। अमूर्त रूप से सोचें तो क्या आप यह नहीं कहेंगे कि एक कारगर प्रति-विज्ञान का पहला सिद्धांत गोपनीयता ही होगा? मेरे विचार से, इसे न केवल अपने कार्यों के बारे में गुप्त रहना होगा (वैसे भी इस मामले में यह वैज्ञानिकों को हरा नहीं सकता); बल्कि अपने कार्यों में भी गुप्त रहना होगा। इसे गोपनीयता को एक तकनीक या प्रक्रिया के रूप में इस्तेमाल करना होगा। सिद्धांत रूप में, इसे सीधे तौर पर सभी प्रत्यक्ष संचार को अस्वीकार करना होगा, क्योंकि संवाद करना, विचारों को भाषा में व्यक्त करना, ज्ञान का दावा स्थापित करना होगा - जो कि वह पहली बात है जिस पर प्रति-विज्ञान विवाद करेगा।'
'मुझे समझ नहीं आया,' अंटार ने कहा। 'आप जो कह रहे हैं उसका कोई मतलब नहीं है।'
'तुमने तो मेरे मन की बात कह दी,' मुरुगन ने कहा। 'असल बात तो यही है कि यह बात समझ में नहीं आती - पारंपरिक समझ के हिसाब से। शायद उस दूसरी टीम ने इस विचार से शुरुआत की थी कि ज्ञान आत्म-विरोधी होता है; शायद उनका मानना था कि किसी चीज़ को जानना उसे बदलना है, इसलिए किसी चीज़ को जानने के चक्कर

में आप पहले से ही उस चीज़ को बदल चुके होते हैं जिसे आप जानते हैं, यानी आप उसे असल में जानते ही नहीं: आप सिर्फ़ उसका इतिहास जानते हैं। शायद उन्होंने सोचा होगा कि ज्ञान की असंभवता को स्वीकार किए बिना ज्ञान की शुरुआत ही नहीं हो सकती। समझ रहे हो मैं क्या कह रहा हूँ?'
'मैं सुन रहा हूँ,' अंटार ने कहा। 'जो भी हो।'
'हो सकता है कि इनमें से कुछ भी समझ में न आए,' मुरुगन ने कहा। 'लेकिन चलिए एक मिनट के लिए इसे इसके मूल स्वरूप में समझने की कोशिश करते हैं। आइए देखते हैं कि इससे किस प्रकार की कार्यशील परिकल्पनाएँ निकलती हैं। एक यह है: यदि यह सच है कि किसी चीज़ को जानना ही उसे बदलना है, तो इसका अर्थ यह है कि किसी चीज़ को बदलने का एक तरीका - मान लीजिए, उत्परिवर्तन करने का - उसे या उसके कुछ पहलुओं को जानने का प्रयास करना है। ठीक है?'
अंतर ने सिर हिलाया।
'ठीक है,' मुरुगन ने कहा। 'तो चलिए इसे थोड़ा आगे बढ़ाते हैं। मान लीजिए कि जिस समय रॉनी मलेरिया पर काम करना शुरू कर रहा था, उसी समय एक और व्यक्ति - एक टीम - भी प्लास्मोडियम जैल-सिपरम पर काम कर रही थी, लेकिन एक अलग तरीके से; एक ऐसा अलग तरीका जो किसी भी प्रशिक्षित व्यक्ति को समझ में नहीं आएगा। लेकिन मान लीजिए कि संयोग से या जानबूझकर उन्होंने कुछ प्रगति की है; उन्होंने अपने काम को एक निश्चित बिंदु तक पहुँचाया है और फिर वे एक गतिरोध पर पहुँच गए हैं: वे अटक गए हैं, वे आगे नहीं बढ़ सकते - क्योंकि उनकी अपनी विधियों में खामियाँ हैं, क्योंकि उनके पास सही उपकरण नहीं हैं। जो भी हो। वे तय करते हैं कि उनकी परियोजना में अगली बड़ी छलांग परजीवी में उत्परिवर्तन से आएगी। अब सवाल यह है: वे इस प्रक्रिया को कैसे तेज करें? उत्तर है: उन्हें एक पारंपरिक वैज्ञानिक को ढूंढना होगा जो इसे आगे बढ़ाए।'
रॉनी की एंट्री होती है। लेकिन अब वे आगे क्या करेंगे? वे उसे अपनी जानकारी नहीं बता सकते क्योंकि यह उनके धर्म के खिलाफ है। इसके अलावा, वे उसके पास जाकर यह भी नहीं कह सकते, "अरे रॉनी, क्या चल रहा है?" पहली बात तो यह है कि वे 19वीं मद्रास इन्फैंट्री के गार्डों को पार नहीं कर पाएंगे। और अगर वे कर भी लेते हैं, तो रॉनी उन पर विश्वास नहीं करेगा। उन्हें ऐसा दिखाना होगा कि रॉनी को खुद ही पता चला है। इसलिए वे आपस में बातचीत करते हैं और अपनी अगली चाल के बारे में सोचने लगते हैं। याद रखें कि इन लोगों के पास कुछ खास नहीं है: वे हाशिए पर रहने वाले लोग हैं, समाज से कटे हुए हैं; वे मुख्यधारा से इतने दूर हैं कि किनारे से भी दिखाई नहीं देते। अच्छी बात यह है कि वे संख्या में बहुत हैं और रॉनी के बारे में सब कुछ जानते हैं, लेकिन न तो रॉनी और न ही कोई और उनके बारे में कुछ जानता है। उनके पास शहर के सबसे अच्छे परजीवियों का गिरोह भी है। उन्हें बस सही चाल चलनी है और वे यह कर सकते हैं।
'यह सब तो ठीक है,' अंटार ने कहा। 'लेकिन इससे मूल प्रश्न का उत्तर अभी भी नहीं मिलता।'
'और वो क्या है?' मुरुगन ने कहा।

'क्यों? कोई इतनी परेशानी क्यों उठाएगा? रॉस को इससे क्या फायदा होगा, यह तो साफ है: शोहरत, भविष्य की संभावनाएं, तरक्की, नोबेल पुरस्कार। लेकिन जो लोग आपकी बात को एक पल के लिए भी मान लें, उन्हें इससे क्या हासिल होने की उम्मीद हो सकती है?'
'मुझे पता था कि तुम पूछोगे,' मुरुगन ने कहा। 'और एक बार फिर, मेरे पास इसका जवाब नहीं है। लेकिन अगर मैं सही हूँ - और इस खेल की बनावट ऐसी है कि तुम्हें कभी पता नहीं चलेगा कि मैं सही हूँ या नहीं - लेकिन अगर मैं सही हूँ, मान लो कि थोड़ा सा भी सही हूँ, तो ये लोग जो विकसित कर रहे थे, वह अब तक की सबसे क्रांतिकारी चिकित्सा तकनीक थी। नोबेल पुरस्कार को भूल जाओ, बीमारियों, इलाज, महामारी विज्ञान और ऐसी ही बकवास बातों को भूल जाओ। ये लोग जिस चीज़ के पीछे थे, वह कहीं ज़्यादा बड़ी थी; वे सबसे बड़े पुरस्कार के पीछे थे, सबसे बड़े खेल के पीछे जिसके बारे में किसी भी इंसान ने कभी सोचा भी नहीं होगा: प्रकृति का परम अतिक्रमण।'
'और वह क्या हो सकता है?' अंतर ने विनम्रतापूर्वक पूछा।
'अमरता,' मुरुगन ने कहा।
अंतर ने मेज पर हाथ पटका। 'ओह, मैं समझ गया,' उसने हंसते हुए कहा। 'तुम्हारा मतलब ओसिरिस, होरस और अमून-रा की तरह है? क्या वे सुंदर छोटे सियार के सिर उगाना चाहते थे? या वे आइबिस की चोंच उगाना चाहते थे?'
'शायद मैंने बात को थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर कह दिया,' मुरुगन ने कहा। 'मैं वास्तव में अंतरव्यक्तिगत स्थानांतरण के लिए एक तकनीक के बारे में बात कर रहा हूं।'
'आपसी संबंध का क्या मतलब है?' अंतर ने कहा।
मुरुगन के जवाब देने से पहले ही वेटर आ गया और बिल उनके बीच रख दिया। वह अधेड़ उम्र का था, और उसका व्यवहार कुछ संकोची और घबराया हुआ सा था। जब वे पैसे गिन रहे थे, तो वह बनावटी मुस्कान के साथ उन्हें देखता रहा और अपने हाथों को रगड़ता रहा।
अचानक मुरुगन अपनी कुर्सी पर एकदम सीधा बैठ गया। 'मैं तुम्हें एक उदाहरण देता हूँ,' उसने कहा। उछलकर खड़ा होते हुए उसने अपना चेहरा वेटर के चेहरे के पास ले जाकर ज़ोर से चिल्लाया, 'यो!'
वेटर मुंह खुला रखकर, आंखें चौड़ी करके पीछे की ओर लड़खड़ा गया। प्लेट उसके हाथों से गिरकर ज़मीन पर बिखर गई। वह घुटनों के बल गिर पड़ा और सदमे से सिसकते हुए अपना चेहरा हाथों से ढक लिया।
अंतर चुपचाप, स्तब्ध खड़ा रहा, कुर्सी पर आधा अंदर और आधा बाहर। रेस्तरां में एकदम सन्नाटा पसरा हुआ था; कई लोगों की निगाहें मुरुगन की ओर मुड़ गईं और मुंह से कुछ आवाज़ें सुनाई देने लगीं।
मुरुगन दबी हुई उत्तेजना भरी निगाहों से वेटर को देख रहा था, उसकी आंखें उम्मीद से चमक रही थीं।
'इसका क्या मतलब है?' अंतर ने पूछा। अचानक मुरुगन घूमकर उस पर झपटा। अंतर के चेहरे से एक इंच की दूरी पर अपनी नाक घुसाकर उसने चिल्लाकर कहा, 'बू!'

अंतर पीछे हट गया और अपने चेहरे पर हाथ फेरते हुए बोला, 'क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?'
मुरुगन मुस्कुराते हुए पीछे हट गया। उसने कहा, 'देखो, यह काम कर गया।'
उसने बचे हुए कुछ भोजन करने वालों की ओर लापरवाही से हाथ हिलाया। 'आराम करो,' उसने प्रसन्नता से कहा। 'चिंता की कोई बात नहीं है। बस तनावपूर्ण स्थितियों में व्यक्तियों की शारीरिक प्रतिक्रियाओं में होने वाले बदलावों की जाँच कर रहा हूँ।'
उसने अंतर के कंधे पर थपथपाया। 'देखो,' उसने कहा। 'एक ही उद्दीपन, अलग प्रतिक्रिया: वह कहता है तमातर और तुम कहते हो तमातिम। अब सोचो, अगर तुम और वह "इम" और "अर" को आपस में बदल दें तो क्या होगा? तब क्या होगा? वह तुम्हारी आवाज़ में बोलेगा, या तुम उसकी आवाज़ में। तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि किसकी आवाज़ है। और क्या यही सबसे डरावनी बात नहीं है, अंतर? कुछ सुनना, और यह न जानना कि कौन बोल रहा है? यह न जानना कि कौन बोल रहा है? क्योंकि अगर तुम्हें नहीं पता कि कौन बोल रहा है, तो तुम्हें यह भी नहीं पता चलेगा कि वह क्यों बोल रहा है।'
सन्नाटा टूट गया और रेस्तरां में आक्रोश भरी, विरोधात्मक फुसफुसाहट फैल गई। वेटर धीरे-धीरे ज़मीन से उठा जबकि मैनेजर तेज़ी से उनकी मेज की ओर बढ़ने लगा। तीन अन्य वेटर भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े।
मुरुगन ने उन पर सरसरी नज़र डाली और अपना बटुआ निकाला। 'अब तुम क्या कहोगे, एंट,' उसने पूछा, 'अगर वह सारी जानकारी गुणसूत्रों के ज़रिए एक शरीर से दूसरे शरीर में स्थानांतरित हो सके?' उसने अपना बटुआ एंट की नाक के नीचे हिलाया। 'तुम्हें क्या लगता है, तुम इस तरह की तकनीक के लिए कितना भुगतान करोगे, एंट? ज़रा सोचो, एक नई शुरुआत: जब तुम्हारा शरीर तुम्हारा साथ छोड़ दे, तो तुम उसे छोड़ दो, तुम पलायन करो - तुम या कम से कम तुम्हारे जैसे लक्षण। तुम फिर से शुरुआत करो, एक नया शरीर, एक नई शुरुआत। ज़रा सोचो: कोई गलती नहीं, एक नई शुरुआत। तुम इसके लिए क्या दोगे, एंट: एक ऐसी तकनीक जो तुम्हें अपने अगले जन्म में खुद को बेहतर बनाने दे? क्या तुम्हें लगता है कि ऐसी चीज़ तुम्हारे पेंशन फंड के एक छोटे से हिस्से के लायक होगी?'
वेटर इकट्ठा हो गए और मुरुगन उनसे बात करने के लिए अलग हो गया। उसने अपने बटुए से नोटों का एक बंडल निकालते हुए कहा, 'कोई बात नहीं। मैं सब कुछ चुका दूंगा।'
इस बात को नजरअंदाज करते हुए, उन्होंने उसकी बांहें पकड़ लीं और उसे मेज से दूर धकेलने लगे।
'अरे दोस्तों,' मुरुगन ने विरोध जताते हुए कहा। 'क्या मैंने यह नहीं कहा था कि यह एक प्रयोग है? आपकी जिज्ञासा कहाँ गई?'
वेटरों ने उसे ज़मीन से उठाकर तेज़ी से दरवाजे की ओर ले गए।
'देखो, मुझे कलकत्ता क्यों जाना पड़ रहा है, आंटी?' मुरुगन चिल्लाया, जैसे ही वे उसे ज़बरदस्ती प्रवेश द्वार की ओर ले जा रहे थे। 'अगर कलकत्ता का कोई गुणसूत्र है, तो मुझे उसे ढूंढना ही होगा। मुझे लगता है कि मुझे उसकी ज़रूरत तुमसे ज़्यादा है।'

अध्याय 16

उर्मिला ने सोनाली से कहा, 'मैंने थोड़ी खोजबीन की है और मुझे पता चला है कि जब फूलबोनी युवा थे, तब उन्होंने 'लाखन की कहानियां' नामक कहानियों का एक संग्रह लिखा था। ये कहानियां एक गुमनाम सी छोटी पत्रिका में प्रकाशित हुई थीं और फिर कभी दोबारा नहीं छपीं। मुझे राष्ट्रीय पुस्तकालय में सही अंक मिल गया।'
'मैंने तो इनके बारे में कभी सुना भी नहीं,' सोनाली ने कहा। 'जब ये रिलीज़ हुई थीं, तब शायद मैं बहुत छोटी थी।'
'खैर, कहानियां बहुत छोटी हैं और उन सभी में लाखन नाम का एक किरदार है,' उर्मिला ने कहा। 'एक में वह डाकिया है; दूसरे में वह एक गांव का शिक्षक है, और तीसरे में वह कुछ और है।'
'कितना अजीब है,' सोनाली ने कहा।
'है ना?' उर्मिला ने कहा। 'जब ये पहली बार प्रकाशित हुए थे, तो आलोचकों ने सोचा था कि ये एक जटिल रूपक कथा है जिसमें हर किरदार अलग होते हुए भी एक जैसा है और फिर सब आपस में उलझे हुए हैं, इत्यादि। और फिर ज़ाहिर है, सब इन्हें भूल गए। लेकिन मैंने इनके बारे में पढ़ा, और मुझे स्पष्ट रूप से महसूस हुआ कि इसमें कुछ और भी है।'
'और?' सोनाली ने कहा। 'तुम्हारा क्या मतलब है?'
उर्मिला ने कहा, 'मैं ठीक से बता नहीं सकती। लेकिन एक दिन मैं श्रीमती अराटूनियन से बात कर रही थी—'
'क्या उसने उन्हें पढ़ा था?' सोनाली ने भौंहें चढ़ाते हुए बीच में ही टोक दिया।
'अरे नहीं,' उर्मिला हंस पड़ी। 'उन्हें लेखकों के लिए ज़्यादा समय नहीं है। वैसे भी, आप जानती ही हैं कि वे कैसी हैं: पूरी ज़िंदगी यहीं रहने के बावजूद उन्हें बंगाली का एक शब्द भी नहीं आता। लेकिन वे बहुत समझदार हैं और मुझे अक्सर उनसे बात करने में मदद मिलती है। उन्होंने मुझे सालों से बहुत अच्छी सलाह दी है: असल में, उन्होंने ही मुझे राष्ट्रीय पुस्तकालय जाने का सुझाव दिया था।'
'ठीक है,' सोनाली ने कहा। 'आगे बोलो।'
तो मैंने उसे उन कहानियों के बारे में बताया और वह तुरंत मुझसे सहमत हो गई।
"हमारी आँखों में धूल चली गई है, मेरी प्यारी," उसने कहा। "मेरी बात मानो।"
'उसका क्या मतलब था?'
'उसे लगा कि ये कहानियां किसी के लिए एक संदेश हैं; उन्हें किसी बात की याद दिलाने के लिए - किसी साझा रहस्य की। आप जानते हैं, जैसे कभी-कभी पर्सनल कॉलम में दिखने वाले वे अजीब से छोटे विज्ञापन?'
सोनाली की आंखें चौड़ी हो गईं। 'यह दिलचस्प है,' उसने कहा। 'यह संभव है।'
'तो आपको इन कहानियों के बारे में कुछ तो पता है?' उर्मिला ने उत्सुकता से पूछा।
सोनाली ने अपनी चाय की एक घूंट ली। उसने कहा, 'मुझे नहीं पता कि इसका उन

कहानियों से कोई संबंध है या नहीं जिनके बारे में आप बात कर रहे हैं। लेकिन मुझे इतना पता है कि जब फूलबोनी बीस साल का था, तब उसके साथ कुछ बहुत ही अजीब घटना घटी थी। और उसका संबंध एक 'लाखन' से था।'
'सच में?' उर्मिला उत्सुकता से उठ बैठी। 'क्या हुआ?'
'यह सब तब शुरू हुआ जब मेरी मां ने उनसे पूछा कि उन्होंने शूटिंग क्यों छोड़ दी।'
'शूटिंग?' उर्मिला ने हैरानी से कहा। 'तुम्हारा मतलब है कि फूलबोनी शूटिंग करती थी?'
'हां,' सोनाली मुस्कुराते हुए बोली। 'वह बहुत अच्छा निशानेबाज था। मैं आपको बताती हूं कि मुझे कैसे पता चला।' उसने अपने पैर मोड़ लिए और सोफे के आर्मरेस्ट पर लगे कुशनों पर आराम से बैठ गई, उसके चेहरे पर पुरानी यादों की प्यारी सी मुस्कान थी।
'जब मैं बच्ची थी, तब फुलबोनी अक्सर हमारे घर आते-जाते रहते थे,' उन्होंने कहा। 'वे मेरे लिए चाचा जैसे थे: मैं उन्हें मुराद-मेशो कहकर बुलाती थी। हम पार्क सर्कस के पास एक छोटे से फ्लैट में रहते थे, बस मैं और मेरी माँ। फ्लैट सचमुच बहुत छोटा था, लेकिन हमारे यहाँ हमेशा बहुत सारे मेहमान आते थे - खासकर लेखक और कलाकार: हर शाम कम से कम आधा दर्जन लोग वहाँ होते थे और फुलबोनी उनमें से एक नियमित मेहमान थे। वे हमेशा वही पुरानी फटी हुई पतलून, वही घिसी हुई चमड़े की बेल्ट और कड़क सफेद कमीज पहनकर आते थे। आपको पता है ना कि पसीना आने पर कड़क कड़क की हल्की सी गंध आती है? उनकी गंध भी कुछ ऐसी ही थी: सिगरेट और पसीने से भीगी कड़क कड़क की।'
वह बेहद आकर्षक व्यक्ति थे: छह फीट से भी अधिक लंबे, सीधे और पतले शरीर वाले। उस समय वे बहुत गरीब थे और अकेले रहते थे: उनकी पत्नी उन्हें छोड़कर अपने परिवार के पास चली गई थी। उनके आते ही मेरी माँ नौकरों से फुसफुसाकर कहतीं कि नीचे जाकर बिरयानी ले आओ। एक समय वे एक ब्रिटिश कंपनी, पामर ब्रदर्स में अच्छी नौकरी करते थे, लेकिन लेखन शुरू करने के बाद उन्होंने वह नौकरी छोड़ दी। वे लेखक बनकर जीविका कमाना चाहते थे, लेकिन उनका लेखन आम जनता के लिए बहुत कठिन था: उसमें ऐसी बोलचाल की भाषा के शब्द थे जिनके बारे में किसी ने कभी सुना भी नहीं था। उनके पिता उड़ीसा के एक पर्वतीय महाराजा के यहाँ काम करते थे और वे जंगल में पले-बढ़े, स्थानीय लोगों की भाषा बोलते थे और बेफिक्र रहते थे। इसीलिए बाद में उन्होंने उस क्षेत्र के नाम पर फूलबोनी उपनाम अपनाया।
'जंगल में रहते हुए, उन्होंने बहुत कम उम्र में ही निशानेबाजी सीख ली होगी, लेकिन उन्होंने कभी किसी को इसके बारे में नहीं बताया। यह बिल्कुल संयोग से ही पता चला कि वे एक बेहतरीन निशानेबाज थे। एक बार, मेरी माँ कलकत्ता के बाहरी इलाके में कहीं एक जात्रा में अभिनय कर रही थीं। यह उन जगहों में से एक थी जहाँ प्रदर्शन एक विशाल सर्कस तंबू के नीचे होता है। अंदर एक गोल मंच होता है और साथ ही बाहर एक मेला लगा होता है - आप जानते हैं, फुचका के स्टॉल, झूले और ऐसी ही बहुत सी चीजें।'
'मैं लकड़ी के मंच के नीचे एक छोटी सी जगह में सिमट गई थी, और मैं भीड़ को देख रही थी, बच्चों को देखकर मुंह बना रही थी, इस तरह की हरकतें कर रही थी। नाटक

था 'मैरी एंटोनेट: फ्रांस की रानी'। मेरी माँ मैरी एंटोनेट का किरदार निभा रही थीं, ज़ाहिर है: उनकी उम्र बढ़ रही थी, और अगर कोई दुष्ट रानी या झगड़ालू सास का किरदार होता, तो उन्हें हमेशा वही मिलता था। माँ अपना मशहूर भाषण देने ही वाली थीं, आप जानते हैं ना: "उनके पास चावल नहीं हैं? तो उन्हें लेडिजेनिस खाने दो।'" अचानक मैंने ऊपर देखा और फूलबोनी को आते हुए पाया। मैं चीख पड़ी और भीड़ को चीरते हुए उसकी ओर दौड़ी। हम दोनों ने वह भाषण सौ बार सुना था। मैं ऊब रही थी इसलिए मैंने उसे नाटक नहीं देखने दिया। इसके बजाय मैंने उसे मेले में घुमाया और मेरे लिए झालमुरी, मिही-दाना और इस तरह की चीजें खरीदीं। फिर हम एक ऐसे स्टॉल पर पहुँचे जहाँ एयरगन और कतारों में लगे हुए ढेर सारे गुब्बारे थे। मैंने उसे चिढ़ाना शुरू किया और कहा, क्यों न तुम भी कुछ गुब्बारों पर निशाना लगाने की कोशिश करो: तुम लेखक किसी काम के नहीं हो। वह बार-बार मना करता रहा, लेकिन अंत में मान गया। मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने अपने पहले दस निशानों में एक भी निशाना नहीं चूका। मैंने कहा, "यह तो बस किस्मत थी, देखते हैं कि तुम इसे दोबारा कर पाते हो या नहीं।" उसने कहा, "ठीक है," और पाँच कदम पीछे हट गया, और फिर से उसका निशाना नहीं चूका। वह और पीछे हट गया: उसे देखने के लिए पूरी भीड़ जमा हो गई। एक भी निशाना नहीं चूका। अंत में दुकानदार ने उससे रुकने की विनती की: "साहिब, कृपया मुझे क्षमा करें, लेकिन अगर मैं आपको इस तरह जारी रखने दूं, तो मेरे बच्चे क्या खाएंगे?"

'मैंने अपनी माँ को इस घटना के बारे में बताया और वह भी मेरी तरह ही हैरान थीं। फुलबोनी ने उनसे कभी भी शूटिंग या शिकार के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा था। उन्होंने उससे इसके बारे में पूछा तो उसने बस हंसकर टाल दिया। लेकिन मेरी माँ हार मानने वालों में से नहीं थीं। एक दिन जब उसने बहुत सारी रम पी ली थी, तब उन्होंने उससे बात करने की ठान ली और उसने उन्हें एक कहानी सुनाई। लेकिन अगले दिन वह बहुत परेशान था: उसने कहा कि वह नहीं चाहता कि यह कहानी किसी को पता चले और उसने मेरी माँ से वादा करवाया कि वह किसी को भी नहीं बताएगी।'

'ओह, मैं समझ गई।' उर्मिला अपनी आवाज में निराशा छिपा नहीं सकी।

'दरअसल, उसके बाद से ही वह हमसे दूर रहने लगा,' सोनाली ने कहा। 'अपनी ज़िंदगी के आखिरी सालों में मेरी माँ फूलबोनी को लेकर बहुत चिंतित रहने लगीं। जैसे-जैसे उसकी शोहरत बढ़ती गई, उसका व्यवहार और भी अजीब होता चला गया। वह शराब पीकर रात भर सड़कों पर भटकता रहता, मानो कुछ खोज रहा हो: मैंने सुना है कि वह अब भी ऐसा करता है। वह चाहती थीं कि वह हमारे साथ आकर रहने लगे, लेकिन वह नहीं माने: उन्होंने अपने पुराने दोस्तों से मिलना-जुलना बंद कर दिया और किसी से भी उनका कोई खास वास्ता नहीं रहा। यहाँ तक कि जब वह मर रही थीं, तब भी वह उनसे मिलने नहीं आए। उन्हें पूरा यकीन था कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि फूलबोनी ने उनसे वह कहानी निकलवाने के लिए उन्हें कभी माफ़ नहीं किया था और वह कभी समझ नहीं पाईं कि ऐसा क्यों हुआ। और मुझे भी यह बात समझ नहीं आई।'

'तो उसने तुम्हें बताया?' उर्मिला ने कहा।

'हां,' सोनाली ने कहा। 'उसकी मृत्यु से कुछ समय पहले।'

अध्याय 17

इतने वर्षों बाद भी, अंतर उस दिन को याद करके अपने दांत पीसता था, जब वह थाई रेस्तरां में था, और उसे याद आता था कि कैसे वह शर्मिंदगी से स्तब्ध होकर अपनी कुर्सी पर बैठा था, और आसपास की मेजों से उस पर पड़ रही निगाहों से बचने की कोशिश कर रहा था।

बाहर निकलते समय उसने हिम्मत जुटाकर मैनेजर से माफी मांगी। उसने कहा, 'मैं उसे बिल्कुल नहीं जानता। आज ही उससे पहली बार मिला हूं। वह आदमी साफ तौर पर पागल है। मेरा उससे पहले कभी कोई वास्ता नहीं रहा और उम्मीद है कि आगे भी कभी नहीं रहेगा।' ऑफिस लौटकर उसने मुरुगन के मामले से जुड़ी सारी जानकारी अपलोड करने में जरा भी देर नहीं की और फाइल स्वीडिश डायरेक्टर को वापस भेज दी। उसने याद करते हुए कहा, 'अगर इंसानी पहलू से निपटना यही होता है, तो मुझे लगता है कि मैं लेखा विभाग में वापस जाना ही बेहतर समझूंगा, धन्यवाद।'

जब वह काम से निकला, तो उसे पूरा यकीन था कि उसने सारा मामला भुला दिया है। लेकिन घर पहुँचते ही उसने देखा कि उसकी आंसरिंग मशीन तेज़ी से ब्लिंक कर रही है: उस पर तीन मैसेज थे। उसे थोड़ी घबराहट हुई: उसे शायद ही कभी एक भी मैसेज मिलता था; उसे याद नहीं था कि कभी इससे ज़्यादा मैसेज मिले हों। उसकी अंतरात्मा ने कहा कि रिवाइंड बटन दबाकर टेप को साफ़ कर दे। लेकिन इसके बजाय, उसका हाथ आगे बढ़ा और उसने 'प्ले' बटन दबा दिया – बस यह सुनिश्चित करने के लिए, उसने खुद से कहा, बस यह जानने के लिए कि कौन है।

उसके सबसे बुरे डर तुरंत सच हो गए। वही आवाज़ फिर से मशीन से गूंजी, और अब उसकी आवाज़ असलियत से भी ज़्यादा कर्कश थी: 'सुनो, बेवकूफ कहीं के: तुम्हें क्या लगता है कि ये सब बस हवाई बातें हैं?'

अंतर ने अंगूठे से इशारा करके पहला संदेश काट दिया और अगले संदेश पर भेज दिया। उसी आवाज़ ने कहा, 'मैं फिर से बोल रहा हूँ, तुम्हारा दोस्त मॉर्गन: तुम्हारी बेवकूफ मशीन ने मेरा कॉल काट दिया...' अंतर ने तीसरे और आखिरी संदेश पर भेजा और वहाँ फिर वही आवाज़ थी: 'क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारी मशीन की एकाग्रता एक जमे हुए मुर्गे जितनी है?'

अंतर ने तेज़ी से आगे बढ़ाने वाले बटन पर उंगली दबाई और टेप लगभग खत्म होने तक उसे वहीं दबाए रखा। लेकिन फिर भी उसने आखिरी वाक्य सुन लिया: 'इसी क्षण आपके मेल फ़ोल्डर में एक दस्तावेज़ आपका इंतज़ार कर रहा है...' अंतर घूमकर कमरे के दूसरी ओर रखे मॉनिटर की ओर मुड़ा। वाकई, उसकी स्क्रीन पर वह दस्तावेज़ चमक रहा था। वह उस पुराने ज़माने की स्क्रीन की चमकती हुई अंडाकार सतह को घबराकर देखता रहा: मानो किसी चोर को रंगे हाथों पकड़ लिया हो।

कीबोर्ड तक जाने से पहले उसे खुद को संभालना पड़ा। उसने एक भी पंक्ति पढ़े बिना पूरा दस्तावेज़ डिलीट कर दिया।

अब, अपने बिस्तर के किनारे पर बैठते हुए, अंटार ने 1995 की घटनाओं को याद करने की कोशिश की। उसे याद आया कि उस घटना के कुछ समय बाद उसने आंसरिंग मशीन को फेंक दिया था: लाइफ वॉच में उसके पास वॉइस मेल की सुविधा थी और बाहर रहने पर कॉल फॉरवर्डिंग की सुविधा भी थी, इसलिए उसे इसकी ज़रूरत नहीं थी। उसने मशीन के साथ क्या किया था, यह याद करने की कोशिश में अपना सिर खुजाया। उसका इरादा इसे बेचने या किसी को देने का था, लेकिन किसी ने इसे नहीं चाहा। उसे धुंधली सी याद थी कि उसने इसे एक प्लास्टिक बैग में डालकर अपने पुराने कपड़ों और जूतों के साथ अलमारी में रख दिया था।
रसोई और शयनकक्ष के बीच गलियारे में एक कोठरी थी, एक खाली जगह जिसमें सालों से उसने अपना सारा सामान समेट रखा था। कुर्सी से उठकर वह पास गया और बंद दरवाजे को टकटकी लगाकर देखा। आखिरी बार उसने इसे कुछ हफ्ते पहले एक पुराने लैपटॉप की तलाश में खोला था: अलमारियों से बेकार पड़ी चीजों का ढेर नीचे गिर पड़ा था। उसने मूठ पर हाथ रखा और धीरे से दरवाजा खोला। कोठरी में एक हल्की सी कंपन हुई, लेकिन राहत की बात यह थी कि सब कुछ अपनी जगह पर था। वह एक-एक करके अलमारियों को खाली करने लगा और गलियारे में सब कुछ ढेर करने लगा: पुराने जूते, बिना टाइमर वाले टोस्टर, टूटी छतरियाँ, अकॉर्डियन फाइलें। और तभी उसकी नज़र पीले पड़ चुके अरबी अखबारों के ढेर के पीछे छिपी हुई एक चीज़ पर पड़ी: एक भूरे रंग की आयताकार आकृति, जो पारदर्शी प्लास्टिक में लिपटी हुई थी।
उसने उसे नीचे उतारा और अपने बेडरूम में ले गया, बाकी सब कुछ गलियारे में ही पड़ा रहने दिया। अपने बिस्तर के किनारे बैठकर उसने उसे खोला और धूल झाड़ी। उसने मशीन की माइक्रोकैसेट को ढकने वाले पारदर्शी प्लास्टिक के आयताकार टुकड़े पर अपनी उंगली फेरते हुए इजेक्ट बटन दबाया। उसे कुछ आश्चर्य हुआ कि मशीन ठीक से काम कर रही थी। कैसेट बाहर निकल आई और उसने चादर के कोने से उसे सावधानीपूर्वक साफ किया।
कैसेट को वापस अंदर डालते हुए, उसने मशीन को प्लग में लगा दिया।
टिमटिमाती बत्ती जल उठी और कैसेट घूमने लगी। फिर, कैसेट के धूल भरे पहियों से आती चरमराहट के बीच, उसे एक आवाज़ सुनाई दी, जो समय बीतने के साथ धीमी हो गई थी, लेकिन फिर भी लगभग सुनाई दे रही थी। उसने आवाज़ तेज़ कर दी।
'सुनो, तुम कमीने,' आवाज़ ने ठीक वैसे ही कहा जैसे उसे याद था, 'तुम्हें लगता है कि यह सब बस कोरी कल्पना है? तुम्हें लगता है कि मेरे पास कोई सबूत नहीं है? तो सुनो, मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ: मुझे नहीं पता कि तुम्हारे यहाँ सबूत किसे कहते हैं, लेकिन मेरे पास कुछ ऐसा है जो मेरे लिए काफी है।'
आपको याद है मैंने डब्ल्यू. जी. मैक्कलम का ज़िक्र किया था – एक डॉक्टर और शोध वैज्ञानिक जिन्होंने 1897 में मलेरिया के क्षेत्र में एक बड़ी खोज की थी? ठीक है, सुनिए: इस वैज्ञानिक ने दिखाया कि लैवरन ने परजीवी की हाइलाइन झिल्ली से निकलते हुए जो छोटी-छोटी "छड़ें" देखी थीं, वे फ्लैजेला नहीं थीं, जैसा कि लैवरन ने सोचा था। वास्तव में वे बिल्कुल वैसी ही थीं जैसी दिखती थीं – यानी वीर्य – और

उनका काम वीर्य का ही था, यानी बच्चे पैदा करना। आपको नहीं लगता कि यह पता लगाने के लिए गैलीलियो जैसे वैज्ञानिक की ज़रूरत थी: मेरा मतलब है, वे दिखती कैसी थीं? लेकिन सच तो यह है कि मैक्कलम ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इसे समझा। वे इसे देखने वाले पहले व्यक्ति नहीं थे, लेकिन इसे समझने वाले पहले व्यक्ति थे। लैवरन ने इसे उनसे पहले देखा था, लेकिन वे इसे समझ नहीं पाए: लगता है लैवरन के दिमाग में सेक्स का ख्याल नहीं था। मैक्कलम से लगभग एक साल पहले रॉनी रॉस ने इसे देखा था और उसे लगा कि उसने अपने पिता को देखा है। सच में; उसे लगा कि वह फ्लैजेला एक तरह का सिपाही है, जो युद्ध पर जा रहा है, जैसे पा रॉस अपने सफेद घोड़े पर सवार होते हैं। ज़रा सोचिए: रॉनी एक ऐसी चीज़ देखता है जो किसी लिंग जैसी दिखती है; वह उसकी स्लाइड पर तैरती हुई जाती है और एक अंडे पर चढ़ने लगती है, और रॉनी इसके बारे में क्या सोचता है? वह सोचता है कि यह लाइट ब्रिगेड का हमला है। सीख यह है: सिर्फ इसलिए कि आप एक लड़के को विक्टोरिया के इंग्लैंड से बाहर निकाल लेते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि विक्टोरिया उस लड़के से निकल गई है।

यहाँ एक बीप की आवाज़ आई और अचानक कट गई। कुछ क्षण बाद आवाज़ फिर से शुरू हुई: 'मैं फिर से बोल रहा हूँ, तुम्हारा दोस्त मॉर्गन, तुम्हारी बेवकूफ मशीन ने मुझे बीच में ही रोक दिया। अब, मैं कहाँ था? ओह हाँ, मैक्कलम।'

खैर, मैक्कलम तो बस एक बच्चा था, और एक अमेरिकी था, जो जोश से भरा हुआ था, और वह जानता था कि उसने क्या देखा है। उसने जितनी जल्दी हो सके एक शोध पत्र लिखा और 1897 में टोरंटो में डॉक्टरों के एक बड़े सम्मेलन में उसे प्रस्तुत किया। यह इतना सफल रहा कि उसे स्वयं मिस्टर जर्मिसाइड, लॉर्ड लिस्टर के साथ जॉगिंग करने का मौका मिल गया।

ठीक है, तो मैक्कलम ने सबसे पहले इसका पता लगाया। लेकिन जब उन्होंने अपना शोध शुरू किया था, तब वे बाल्टीमोर के जॉन्स हॉपकिंस में एक पूरी टीम के साथ काम कर रहे थे। टीम के अन्य सदस्य यूजीन एल. ओपी और एलिजा मोनरो फार्ले थे। मैक्कलम और ओपी मुख्य लोग थे, जबकि फार्ले एक तरह से सहायक और छोटे-मोटे काम करने वाले की तरह थे। उनका समय ज्यादा नहीं बीता। जैसे ही टीम मलेरिया पर शोध शुरू कर रही थी, फार्ले को दुनिया घूमने की ललक सवार हो गई। उन्होंने बोस्टन के एक मिशनरी समूह को अपनी सेवाएं देने की पेशकश की, और देखते ही देखते वे भारत के लिए रवाना हो गए।

यहां एक और व्यवधान आया। नाराज़गी भरे लहजे में मुरुगन की आवाज़ फिर से सुनाई दी:

ठीक है, तो आप जानना चाहते हैं कि मुझे यह सब कैसे पता चला? बात कुछ इस तरह है: कुछ साल पहले मैं बाल्टीमोर में यूजीन एल. ओपी के निजी कागजात देख रहा था। मैं उनके लैब नोट्स देख रहा था, और आप क्या सोचते हैं, उसमें से क्या गिरा? डॉ. एलिजा मोनरो फार्ले का ओपी को संबोधित एक पत्र। ऐसा लगा जैसे वह पत्र मेरे लिए ही वहाँ रखा गया हो। फार्ले ने कलकत्ता की एक प्रयोगशाला का दौरा करने के बाद यह पत्र लिखा था - यह प्रयोगशाला डी. डी. कनिंघम नाम के एक

व्यक्ति द्वारा चलाई जाती थी। यह वही प्रयोगशाला थी जहाँ रॉस ने 1898 में अपनी दौड़ का आखिरी चरण पूरा किया था। डी. डी. कनिंघम उस प्रयोगशाला में उनके पूर्ववर्ती थे, और रॉस वहाँ 1898 की शुरुआत में ही पहुँचे थे। लेकिन यह पत्र 1894 में लिखा गया था और यह एलिजा फार्ले द्वारा लिखा गया आखिरी पत्र था।
सीधी बात पर आते हैं: आपको पता है इस पत्र में क्या था? खैर, इसमें बहुत कुछ था – मतलब पन्नों के पन्ने – लेकिन उस सारी बेकार की बातों के नीचे एक वाक्य दबा हुआ था जो साबित करता है कि मैक्कलम से बहुत पहले ही फार्ले को यौन प्रजनन में तथाकथित "फ्लैजेला" की भूमिका के बारे में पता चल चुका था। यानी, वह पहले से ही वह जानता था जो मैक्कलम ने अभी तक नहीं खोजा था। और जब मैंने तारीखों और बाकी चीजों का हिसाब लगाया, तो यह स्पष्ट हो गया कि वह इसे केवल कलकत्ता में ही सीख सकता था। लेकिन उसने यह किससे सीखा होगा? डी. डी. कनिंघम को पता नहीं था और उसे परवाह भी नहीं थी और उस समय रॉनी रॉस अभी भी मोंटेसरी स्कूल के बराबर के शोध में था। सच तो यह है कि रॉनी कभी भी फ्लैजेला के बारे में खुद से पता नहीं लगा पाया: वह अपने 'स्कोप' के नीचे हो रहे उस सारे यौन क्रिया को संभाल ही नहीं पाया। उन्हें इस बारे में 1898 में ही पता चला, जब डॉ. मैनसन ने उन्हें मैक्कलम के निष्कर्षों का सारांश डाक से भेजा।
और बात यहीं खत्म नहीं होती। रॉस के सहायक को याद है ना - लचमैन या लाक-हान या आप उसे जो भी कहना चाहें? मुझे लगता है कि फार्ले उससे रॉस से बहुत पहले मिला था: वास्तव में, फार्ले ने उसे शायद जरूरत से ज्यादा देख लिया था। समस्या ये है कि फ़ार्ले का पत्र कैटलॉग में दर्ज नहीं था, और मैंने उसे सिर्फ़ एक बार देखा था। मैंने उसे वापस रख दिया और उसकी ज़ेरॉक्स कॉपी लेने की अनुमति मांगने के लिए एक फ़ॉर्म भरा। लेकिन अगली बार जब मैंने देखा तो वो वहाँ नहीं था। लाइब्रेरियन ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया, क्योंकि वो कैटलॉग में था ही नहीं। मैं उसे फिर कभी नहीं ढूंढ पाया, इसलिए सच कहूँ तो मेरे पास अभी भी कोई पुख्ता सबूत नहीं है। लेकिन मैंने उसे देखा था, उसे अपने हाथों में पकड़ा था और उस दिन जब मैं अपने मोटल वापस आया तो मैंने उसे वैसे ही लिख लिया जैसे मुझे याद था। और अंदाज़ा लगाइए? आप उसका एक पूर्वावलोकन देख सकते हैं: अगर आप अपने मॉनिटर पर देखेंगे, तो आपको पता चलेगा कि इस समय आपके मेल फ़ोल्डर में एक दस्तावेज़ आपका इंतज़ार कर रहा है...

अध्याय 18

मुरुगन जब गेस्ट हाउस पहुंचा तो उसने देखा कि श्रीमती अराटूनियन टीवी देख रही थीं और हल्के पीले रंग की गिम्लेट पी रही थीं।
'अरे, आप यहाँ हैं, श्रीमान मॉर्गन,' उसने अपने पुराने, घिसे-पिटे सोफे पर थपथपाते हुए कहा। 'बैठ जाइए। मुझे आपकी चिंता होने लगी थी। क्या मैं आपके लिए एक गिम्लेट (एक गिलास) डाल दूँ? क्या आप सच में ऐसा चाहते हैं? बस एक छोटा सा -

एक घूँट, ताकि आपको मीठे सपने आएँ?'
श्रीमती अराटूनियन ने सुबह मुरुगन के आने पर जो नीले मखमली गाउन पहना था, उसे उतार दिया था; अब उन्होंने सफेद ब्लाउज और काली स्कर्ट पहनी हुई थी। उनके बगल में एक छोटी सी नक्काशीदार मेज पर उमर खय्याम ड्राई जिन और रोज़ लाइम कॉर्डियल की बोतलें रखी थीं, जो अलंकृत पीतल के गमलों से उग रही पत्तियों के गुच्छों के बीच मुश्किल से दिखाई दे रही थीं।
जब मुरुगन की निगाहें मेज पर गईं तो वह बेचैनी से उनकी आंखों का पीछा करती रही। 'नहीं?' उसने चश्मे के ऊपर से उसे घूरते हुए कहा। 'तुम्हें उमर खय्याम पसंद नहीं? मेरे पास कहीं ब्लू रिबन जिन की एक बोतल रखी है; सिर्फ खास मौकों के लिए। मैं जाकर उसे ढूंढ सकती हूं: मुझे पता है वह यहीं कहीं है।'
'उमर खय्याम बिल्कुल ठीक रहेंगे,' मुरुगन ने कहा। 'धन्यवाद।'
'अच्छा,' श्रीमती अराटूनियन ने कहा। गिलास उठाते हुए उन्होंने उसमें सावधानी से जिन डाली, फिर उसमें थोड़ा सा नींबू का रस और एक बर्फ का टुकड़ा मिलाया। 'तो आपने आज क्या किया, श्रीमान मॉर्गन?' उन्होंने गिलास मुरुगन को देते हुए कहा।
मुरुगन के जवाब देने से पहले ही टेलीविजन से तेज़ संगीत की आवाज़ आई और एक आवाज़ ने घोषणा की: 'और अब हम आपको अपने विशेष समाचार कार्यक्रम में ले चलते हैं...'
'खबर!' श्रीमती अराटूनियन ने व्यंग्यपूर्वक कहा और अपने सोफे पर वापस बैठ गईं। 'मुझे इस चीज़ से ज़्यादा खबरें सफाईकर्मी से मिलती हैं।'
कुर्ते में एक भावहीन मुस्कान लिए व्यक्ति मुरझाए हुए लिली के गुच्छे के पीछे बैठा हुआ स्क्रीन पर दिखाई दिया। उसने घोषणा की, 'उपराष्ट्रपति आज सुबह कोलकाता में थे, प्रख्यात लेखक सैयद मुराद हुसैन को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान करने के लिए, जिन्हें उनके उपनाम 'फूलबोनी' से जाना जाता है।' अचानक समाचार वाचक का चेहरा स्क्रीन से गायब हो गया, और उसकी जगह उपराष्ट्रपति का चेहरा दिखाई दिया, जो रवींद्र सदन सभागार के मंच पर ऊंघते हुए सिर हिला रहे थे।
'अरे नहीं,' श्रीमती अराटूनियन ने आह भरी। 'यह उन घिनौने समारोहों में से एक है जहाँ हर कोई भाषण देता है। मुझे वाकई केबल कनेक्शन लेना होगा; इमारत में सबके पास है लेकिन मेरे पास नहीं...'
कैमरा एक विशाल, खचाखच भरे सभागार पर घूमा और सामने की पंक्ति पर ज़ूम किया। स्क्रीन के कोने में गलियारे में खड़ी दो महिलाएं मुश्किल से दिखाई दे रही थीं। उनमें से एक ने मंच की ओर थोड़ी देर के लिए मुड़ी और फिर दूसरी महिला के पीछे गलियारे में चली गई।
अचानक श्रीमती अराटूनियन एकदम सीधी होकर बैठ गईं। 'अरे वाह!' उन्होंने उत्साह से चिल्लाते हुए अपनी छड़ी से टीवी की ओर इशारा किया। 'उर्मिला है! सोचो, उर्मिला को टीवी पर देखना! अरे वाह, मैं तो उसे सेंट मैरी कॉन्वेंट में स्कूल के दिनों से जानती हूँ।'
उसने मुरुगन से विश्वास भरी आवाज़ में कहा: "वह छात्रवृत्ति प्राप्त छात्रा थी - उसका परिवार सेंट मैरी जैसे स्कूल में पढ़ाने का खर्च कभी उठा ही नहीं सकता था। वह

इतनी शर्मीली थी कि आपने कभी ऐसी लड़की नहीं देखी होगी, लेकिन देखो, कुछ साल पहले वह कलकत्ता चली गई और वहाँ नौकरी पा ली। मैंने उससे कहा, 'यह दुनिया कहाँ जा रही है, जब मुझे तुम्हारे जैसी दुबली-पतली लड़की से खबरें लेनी पड़ती हैं?'"
कैमरा एक बार फिर दर्शकों की ओर घूमा और उन्हें दोनों महिलाओं की एक और झलक मिली, जिनमें से एक दूसरी से काफी आगे थी।
'अरे!' मुरुगन ने अपना घुटना पटका। 'मैं उन दोनों को जानता हूँ...'
'ये सोनाली दास है,' श्रीमती अराटूनियन चिल्लाईं। 'डटन की दुकान पर मेरी एक और ग्राहक। और कितनी मशहूर हस्ती है!'
उसने मुरुगन को एक सार्थक नज़र से देखा और हल्की सी मुस्कान दी। उसने कहा, 'मैं उसके बारे में आपको कुछ बातें बता सकती हूँ।'
खुद ही मुस्कुराते हुए उसने अपने गिम्लेट का एक घूंट लिया।
कैमरा स्टेज की ओर घूमा और फुलबोनी का झुर्रीदार चेहरा स्क्रीन पर छा गया।
श्रीमती अराटूनियन ने घृणा से चीख मारी। 'ओह नहीं,' उन्होंने कहा। 'भगवान हमारी मदद करे; उन अभिमानी बुढ़ियाओं में से एक भाषण देने वाली है। वे दिन भर भाषण देती रहती हैं। मुझे सच में केबल कनेक्शन लेना चाहिए; मुझे बताया गया है कि बीबीसी भी मिल जाता है...'
अचानक लेखक की कर्कश, खुरदरी आवाज़ कमरे में गूंज उठी: 'जितने वर्षों की गिनती मैं नहीं कर सकता, उतने वर्षों से मैं इस सबसे गुप्त शहर की भीतरी गलियों में भटकता रहा हूँ, हमेशा उसे खोजने की तलाश में जो इतने लंबे समय से मुझसे दूर रही है: स्वयं मौन। मैं जहाँ भी जाता हूँ, मुझे उसकी उपस्थिति के संकेत हर जगह दिखाई देते हैं, छवियों में, शब्दों में, निगाहों में, लेकिन केवल संकेत, इससे अधिक कुछ नहीं...'
श्रीमती अराटूनियन ने झुंझलाहट में अपनी छड़ी ज़मीन पर पटकी। 'क्या मैंने आपको चेतावनी नहीं दी थी, मिस्टर मॉर्गन?' उन्होंने तीखे स्वर में कहा। 'और मैं शर्त लगाती हूँ कि वह हमेशा के लिए ऐसा करता रहेगा।'
अब फुलबोनी की आँखों में आँसू भर आए: 'मैंने हर संभव प्रयास किया है, जितना कोई पुरुष कर सकता है, उसके पास पहुँचने का, उसके सामने आत्मसमर्पण करने का, उसके गुप्त समूह में शामिल होने का, उसके पदचिन्हों की धूल को अपने सिर पर धारण करने का। हर संभव तरीके से मैंने उसे खोजा है, उस अनकही, सदा मायावी स्वामिनी को, उसका अभिनंदन किया है, उससे प्रेम निवेदन किया है, उसके शिष्यों के समूह में शामिल होने की भीख माँगी है।'
श्रीमती अराटोनियन ने गुस्से में अपनी छड़ी ज़मीन पर पटक दी। उन्होंने कहा, 'बेहद घिनौना। यह आदमी सबके सामने बेइज्जती कर रहा है। क्या कोई कुछ नहीं करेगा?'
लेखक की आवाज़ जारी रही, 'जैसे एक पेड़ अपनी शाखाओं को फैलाकर प्रकाश के एक अदृश्य स्रोत को आकर्षित करता है, वैसे ही मैंने आज तक जो भी शब्द लिखे हैं, वे सब उसके लिए लिखे हैं। मैंने उसे शब्दों में खोजा है, मैंने उसे कर्मों में खोजा है, और सबसे बढ़कर मैंने उसे उसके अलिखित विश्वास में खोजा है।'

यहां अचानक लेखक का चेहरा स्क्रीन से गायब हो गया और एक शांत पहाड़ी दृश्य की स्लाइड दिखाई दी। लेकिन लेखक की आवाज रहस्यमय ढंग से शरीरविहीन होकर सुनाई देती रही।
श्रीमती अराटूनियन जोर से हंस पड़ीं। उन्होंने कहा, 'देखिए तो सही, मिस्टर मॉर्गन! ये लोग इतने निकम्मे हैं कि उन्हें रोक भी नहीं सकते।'
आवाज कर्कश होकर बोली: 'अगर मैं आज आपके सामने, इस सबसे सार्वजनिक स्थान पर खड़ा हूँ, तो इसका कारण यह है कि मैं हताशा के चरम पर हूँ और उस तक पहुँचने का मुझे कोई दूसरा रास्ता नहीं सूझ रहा। मुझे पता है कि समय बीत रहा है - मेरा भी और उसका भी। मुझे पता है कि वह मोड़ निकट है; मुझे पता है कि वह बस आने ही वाला है...'
हालांकि लेखक का चेहरा अब स्क्रीन पर नहीं दिख रहा था, फिर भी यह स्पष्ट था कि वह सिसक रहा था: "...जैसे-जैसे घंटे बीतते जा रहे हैं, जब शायद कुछ ही पल बचे हैं, और कोई दूसरा रास्ता न सूझने पर मैं यह आखिरी विनती करता हूँ: मुझे मत भूलना: मैंने तुम्हारी यथासंभव सेवा की है। मैंने केवल एक बार मौन के विरुद्ध पाप किया, कमजोरी के एक क्षण में, अपने प्रिय के बहकावे में आकर। क्या मुझे पर्याप्त दंड नहीं मिल चुका है? अब और क्या बचा है? मैं तुमसे विनती करता हूँ, मैं तुमसे विनती करता हूँ, यदि तुम सच में अस्तित्व में हो, और मैंने इस पर कभी एक पल के लिए भी संदेह नहीं किया - मुझे अपनी उपस्थिति का संकेत दो, मुझे मत भूलना, मुझे अपने साथ ले जाओ..."
स्क्रीन पर हल्की सी हलचल हुई और समाचार वाचक का चेहरा फिर से दिखाई दिया, जो हल्के पसीने से भीगा हुआ था। जबरदस्ती मुस्कुराते हुए उसने कहना शुरू किया: 'हम अपने दर्शकों से माफी मांगते हैं...'
श्रीमती अराटोनियन किसी तरह उठ खड़ी हुईं, टेलीविजन के पास गईं और उसे बंद कर दिया।
'अगर आपके पास केबल टीवी नहीं है, तो आपको इसी तरह की बकवास झेलनी पड़ती है,' उसने झुंझलाहट से कहा। 'रात-रात भर। आप ही बताइए, मिस्टर मॉर्गन, क्या आपने कभी बीबीसी पर इस तरह की बकवास सुनी है?'

अध्याय 19

अंतर ने आंसरिंग मशीन बंद की और खड़ा हो गया। मुरुगन द्वारा उसके मेलबॉक्स में भेजे गए दस्तावेज़ के खो जाने पर पछताने का कोई फायदा नहीं था: अगर उसने उसे

डिलीट नहीं किया होता तो वह जल्द ही कर देता। लेकिन शायद, बस शायद, वह पूरी तरह से खोया नहीं था। हो सकता है कि आवा उसका कोई सुराग ढूंढकर दस्तावेज़ को दोबारा बना ले: यह असंभव नहीं था। आवा को कुछ अच्छे तरीके पता थे।
अंतर बेडरूम के दरवाजे की ओर चल पड़ा: सच जानने का केवल एक ही तरीका था। जैसे ही वह बेडरूम से निकलने वाला था, उसे एक आवाज़ सुनाई दी – एक धीमी, दबी हुई आवाज़, जैसे किसी के कदमों की आहट। वह दीवार की ओर मुड़ा। तारा का बैठक कक्ष दूसरी तरफ था, जिसके बीच में बस कुछ इंच प्लास्टर और ईंटों से बना एक दरवाज़ा था। यह अजीब था कि आवाज़ उस दीवार से कैसे पार हो जाती थी। शायद तारा घर आ गई थी: अंतर को यकीन था कि उसने किसी की आवाज सुनी थी। वह दीवार के पास गया और खटखटाया: 'तारा, क्या तुम वापस आ गई हो?' कोई जवाब नहीं मिला।
वह जल्दी से अपनी रसोई की खिड़की के पास गया और हवादार शाफ्ट के पार तारा के अपार्टमेंट पर एक नज़र डाली। बत्तियाँ अभी भी बंद थीं: ऐसा लग रहा था कि वह घर पर नहीं है। उसने कंधे उचकाए: शायद फर्श गीला हो गया होगा: इस जैसी पुरानी और चरमराती इमारत में कुछ कहा नहीं जा सकता। वह सिंक के ऊपर झुका, अपने चेहरे पर पानी के छींटे मारे और रसोई का तौलिया उठाया।
वह अपने बैठक कक्ष में गया और कीबोर्ड पर बैठ गया। एक बटन दबाते ही उसने अवा को अपने पुराने, अप्रचलित हार्ड डिस्क की संचित यादों को खंगालने का आदेश दे दिया। यह संभव था कि मुरुगन के खोए हुए ईमेल संदेश का कोई बाइनरी 'भूत' सिस्टम में कहीं न कहीं मौजूद हो। उसका हल्का सा भी निशान काफी होगा: बाकी काम अवा कर लेगी।
कुछ ही देर बाद, अवा की स्क्रीन पर एक हाथ दिखाई दिया, जो उदास भाव से इशारा कर रहा था, उंगलियां आधी खुली हुई थीं। अवा ने हाल ही में शरीर-भाषा सीखना शुरू किया था - ज़ाहिर है, मिस्र की बोली में - और यह नकारात्मक संकेत देने का उसका नया तरीका था।
फिर हावभाव बदल गया: उंगलियां आपस में जुड़ गईं, ऊपर की ओर इशारा करते हुए, थोड़ा नीचे की ओर झुक गईं। इसका मतलब था रुको; अभी और भी है। उसकी स्क्रीन खाली हो गई और उसकी आवाज सक्रिय हो गई।
आवा ने उससे कहा, संदेश शायद मिल जाए। बस थोड़ा समय लगेगा। इसे पुराने ज़माने के, संपर्क-आधारित वर्णमाला वाले कीबोर्ड पर टाइप किया गया था। कुंजियों से निकलने वाले इलेक्ट्रॉनिक सिग्नल शायद अभी भी ट्रेस किए जा सकते थे। बस मुरुगन के ईमेल संदेश के इलेक्ट्रॉनिक 'फिंगरप्रिंट' का आयनोस्फीयर में मौजूद हर इलेक्ट्रॉनिक सिग्नल से मिलान करना था।
अंतर ने यह जानने के लिए एक प्रश्न टाइप किया कि पूरी प्रक्रिया में कितना समय लगेगा।
एवा ने जवाब देने में कुछ क्षण लिए। जवाब आया, इसका मतलब होगा लगभग छह हज़ार आठ सौ बानवे ट्रिलियन क्यूबिक बाइट्स की छानबीन करना, यानी लगभग पचासी अरब गुना, जो किसी भी मनुष्य द्वारा अब तक किए गए हर एक उंगली से

किए गए कार्य के अनुमानित योग के बराबर है। इसमें निश्चित रूप से कम से कम पंद्रह मिनट लगेंगे।
अंतर ने कनिंघम और फार्ले नाम टाइप किए और एवा को छोड़ दिया।
अचानक अंतर को बहुत थकान महसूस हुई। उसने नीचे देखा तो पाया कि उसके हाथ में हल्की सी कंपन हो रही है। माथे और गाल को छूते ही उसका दिल बैठ गया। वे गर्म और चिपचिपे थे: ऐसा लगा जैसे उसे बुखार के दौरे की शुरुआत हो रही हो। जाहिर है, आज उसे पेन स्टेशन तक पैदल जाने का विचार छोड़ना पड़ेगा।
एक तरह से अंतर को राहत मिली। उसने लेट जाने का फैसला किया जबकि आवा आसमान में खोजबीन कर रही थी।
अंतर को लगभग नींद आ ही गई थी कि बीस मिनट बाद आवा ने चहचहाते हुए उसे जगाने की आवाज़ लगाई। उसने बिस्तर से चादरें हटाईं, लड़खड़ाते हुए उठा और खुद को ड्रेसिंग गाउन में लपेट लिया। फिर वह गलियारे से होते हुए अपने बैठक कक्ष की ओर चल पड़ा।
आवा की स्क्रीन पर एक संदेश उसका इंतज़ार कर रहा था: खोज में मुरुगन के खोए हुए ईमेल संदेश के कुछ अंश मिले थे। लेकिन संकेत धुंधले और संभवतः विकृत थे। आवा ने स्टोरीलाइन एल्गोरिदम के माध्यम से प्राप्त अंशों को संसाधित करके एक तरह से कहानी का रूपान्तरण किया था। लेकिन वह पुनर्स्थापित पाठ की प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं कर सकती थी।
अंतर ने एक प्रश्न टाइप किया जिसमें पूछा गया था कि क्या आवा अपने सिमल्टेनियस विज़ुअलाइज़ेशन प्रोग्राम से पाठ की छवि-प्रतिबिंबित कर सकती है। इस तरह पाठ की समीक्षा करने के लिए उसे बस अपने सिमल्टेनियस विज़ाइज़र में खुद को लॉक करना होगा। वह आराम से लेटकर देख सकता था: बाकी काम आवा कर देगी। उसके हाथ अब बहुत कांप रहे थे: वह जानता था कि वह एक लंबे दस्तावेज़ को पढ़ने में सक्षम नहीं है।
एवा की स्क्रीन पर एक हाथ दिखाई दिया, जो खेद का भाव दर्शा रहा था। जवाब नकारात्मक था: टेक्स्ट इतना खराब था कि उसे इमेज में बदलना संभव नहीं था। वह केवल शब्दों में ही उसका वर्णन कर सकती थी।
अंतर को असहजता हुई: उसे अवा की सपाट, भावहीन आवाज़ में पढ़ना सुनना बिल्कुल पसंद नहीं था। लेकिन दूसरी ओर, अपनी वर्तमान स्थिति में वह खुद ऐसा करने की हालत में भी नहीं था।
अपने हेडफ़ोन की ओर हाथ बढ़ाते हुए, अंटार ने उन्हें लगा लिया।

अध्याय 20

जब उर्मिला घर लौटी तो ग्यारह बज चुके थे। फ्लैट में अंधेरा था और सब लोग बिस्तर पर सो रहे थे।
वह जितना हो सके चुपचाप अंदर आई और सामने के दरवाजे के पास खड़ी हो गई,

ताकि उसकी आँखें अंधेरे में अभ्यस्त हो सकें। उसका छोटा भाई बैठक में खर्राटे ले रहा था। उसने उस दोपहर द्वितीय श्रेणी का फुटबॉल मैच खेला था: खेल पृष्ठ के एक पत्रकार ने रिपोर्टिंग डेस्क पर आकर उसे बताया था कि वह लगभग गोल करने ही वाला था। वह दबे पांव बैठक में गई और उसे सोफे पर लेटा हुआ पाया, लाइट जल रही थी। वह नग्न था, केवल अपनी टीम की नीली ट्रैक पैंट पहने हुए था, एक पैर फर्श पर और एक हाथ सोफे के पीछे रखा हुआ था। उसका सिर आर्मरेस्ट पर था और जीभ खुले मुंह से बाहर लटक रही थी, जिससे लार की एक पतली धार निकल रही थी। रसोई में, एक जालीदार कवर के नीचे, खाने से भरी एक थाली उसका इंतज़ार कर रही थी। जैसे ही उसने बत्ती जलाई, जाली मानो गायब हो गई; तिलचट्टों का एक झुंड दरारों और कोनों में गायब हो गया। 'क्या किसी को सोने नहीं दिया जाएगा?' उसके बड़े भाई ने अपने शयनकक्ष से, जहाँ वह अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ रहता था, चिल्लाकर कहा। 'रात के इस समय बत्ती किसने जलाई है?'
उर्मिला ने झपट्टा मारा और लगभग अपनी प्लेट गिरा ही दी। दिन में उसका बड़ा भाई शेयरों और स्टॉक की मार्केटिंग करने वाली कंपनी में सेल्समैन का काम करता था। शाम को वह स्कूली बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर थोड़ी अतिरिक्त कमाई करता था। रात को वह हमेशा थका हुआ रहता था।
अंधेरे में लड़खड़ाते हुए वह रसोई से बाहर निकली, थाली को बड़ी सावधानी से हाथों में थामे हुए। वह बाथरूम की ओर बढ़ी, अपने सोने के बिस्तर के पास से गुज़रते हुए, और लाइट जलाने से पहले दरवाज़ा आधा बंद कर दिया। बिस्तर के किनारे पर बैठकर उसने ठंडी दाल और चपातियों से भरी थाली को थोड़ा-थोड़ा करके खाना शुरू किया। सीढ़ियों पर सरसराहट और कदमों की आहट सुनाई दी। उसने ऊपर देखा तो उसकी माँ शिविर के बिस्तर के पास खड़ी थी, सफेद रात की साड़ी पहने हुए। माँ ने नींद में कहा, 'तुम कब अंदर आईं?' 'मैं इंतज़ार करती रही, करती रही...'
'क्यों?' उर्मिला ने कहा। 'तुम्हें इतनी देर तक जागना नहीं चाहिए - तुम्हें याद है होम्योपैथ ने क्या कहा था।'
उर्मिला को अपनी आवाज धीमी रखने का इशारा करते हुए, उसकी मां उसके बगल में बैठ गई और अपना हाथ उसके घुटने पर रख दिया।
'उर्मी, मुझे आज रात तुम्हें यह बात बतानी ही थी,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'एक अच्छी खबर है, बहुत अच्छी खबर है, मुझे पता था कि तुम बहुत खुश हो जाओगी।'
'क्या?' उर्मिला ने कहा।
"मैं आपको यही बताने जा रही थी: हमें विकेट क्लब के सचिव का फोन आठ बजे आया था। आपके भाई दिनू के बारे में। मैंने ही फोन उठाया और आपको बता दूं कि मैंने सबसे पहले यही कहा: 'काश मेरी बेटी यहाँ होती, वह कितनी खुश होती...'"
उन्होंने बताया कि विकेट क्लब की सदस्य-सचिव ने फोन करके उन्हें सूचित किया था कि क्लब की कार्यकारी समिति का एक वरिष्ठ सदस्य अगले दिन व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलने आ रहा है, ताकि दिनू के भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा की जा सके।
'उर्मी, क्या तुम जानती हो इसका क्या मतलब है?' उसकी माँ ने अपने बेटे पर आई अचानक अच्छी किस्मत से खुशी से चमकते हुए कहा।

'क्या?' उर्मिला ने कहा।
'इसका मतलब है कि वे आपके भाई को फर्स्ट डिवीजन का अनुबंध देना चाहते हैं। हर कोई यही कहता है - अगर वे किसी ई.सी. सदस्य को भेज रहे हैं तो इसका मतलब निश्चित रूप से फर्स्ट डिवीजन का अनुबंध ही है।'
'क्या आप निश्चित हैं?' उर्मिला ने कहा। 'हमने फर्स्ट डिविजन कॉन्ट्रैक्ट के बारे में कई बार सुना है, लेकिन कभी कुछ होता नहीं है।'
'पर इस बार बात अलग है,' उसकी माँ रो पड़ी। उसने उर्मिला के कंधों पर हाथ रखा और उसे गले लगा लिया। 'सोचो, उर्मी; फर्स्ट डिविजन का कॉन्ट्रैक्ट – पैसा, शायद एक फ्लैट। आखिरकार तुम इस बेकार की नौकरी को छोड़कर घर पर रह पाओगी। सब कुछ मुफ्त मिलेगा। शायद हम तुम्हारी शादी भी करवा दें, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। हम अखबारों में विज्ञापन दे सकते हैं...'
'माँ, बस करो,' उर्मिला ने थकी हुई आवाज़ में कहा, उसे ठीक-ठीक पता था कि आगे क्या होने वाला है: उसका समय समाप्त हो रहा था; उसके बाल झड़ रहे थे; वह अपनी उम्र से ज़्यादा बूढ़ी दिख रही थी; पड़ोसी उसके घर देर से आने की बातें कर रहे थे...
पूरी बात शुरू होने से पहले ही उर्मिला ने बीच में दखल देते हुए कहा, 'मेरी शादी की योजना बनाने से पहले, आइए पहले देख लें कि क्या हम अनुबंध पर हस्ताक्षर करवा सकते हैं।'
उसकी मां ने उसकी आवाज में संदेह का भाव भांप लिया। 'मुझे लगा था कि तुम खुश हो जाओगी, उर्मी,' उसने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ कहा। 'मुझे लगा था कि हमारी खबर सुनकर तुम्हें खुशी होगी। लेकिन इसके बजाय तुम बस मुंह फुलाए बैठी हो। तुम्हें हमारी कोई परवाह नहीं है; तुम बस अपनी उस घटिया नौकरी के बारे में सोचती रहती हो।'
'माँ, अगर मुझे नौकरी न मिलती,' उर्मिला ने थकी हुई आवाज़ में कहा, 'हमारा गुज़ारा कैसे होता? बाबा की पेंशन से कितना खर्च चलता? हम बच्चों को खाना कैसे खिलाते? क्या आप मुझे इसका जवाब दे सकती हैं?'
उसकी माँ ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया; वह अब अपनी आँखें पोंछ रही थी। 'तुम बस यही सोचती हो,' उसने कहा। 'पैसा, पैसा, पैसा। हमारे सुख-दुख के लिए तुम्हारे दिल में कोई जगह नहीं है। तुम्हें देखना चाहिए था कि जब मैंने तुम्हारे भाई को क्लब से आए फोन के बारे में बताया तो वह कितना खुश हुआ था: सबसे पहले उसने तुम्हारे बारे में सोचा। उसने कहा: "दीदी को कल मछली बनानी चाहिए, कुछ खास जैसे इलिश-मछ, ताकि हम क्लब के प्रतिनिधि को रात के खाने पर रुकने के लिए कह सकें।"
उर्मिला ने अविश्वास भरी निगाहों से माँ की ओर देखा। 'माँ, मैं कल सुबह मछली नहीं बना सकती,' उसने कहा। 'मुझे नौ बजे एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में जाना है - संचार मंत्री दिल्ली से सुबह की फ्लाइट से आ रही हैं। इसका मतलब है कि मुझे ज़्यादा से ज़्यादा आठ बजकर पंद्रह मिनट तक घर से निकलना होगा, नहीं तो मैं डलहौज़ी समय पर नहीं पहुँच पाऊँगी। आपको पता ही है वहाँ कैसा ट्रैफिक होता है।'

उसकी माँ के होंठों से पहली बार सिसकी भरी आवाज़ निकली। 'उर्मी, तुम क्या कह रही हो?' वह सिसकते हुए बोली। 'क्या तुम कह रही हो कि तुम्हारी नौकरी तुम्हारे भाई की जान से ज़्यादा ज़रूरी है? क्या तुम मुझे बता रही हो कि दिल्ली का कोई घमंडी मंत्री हमसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है?'
वह लगातार रोती रही जबकि उर्मिला चुपचाप बिस्तर के किनारे बैठी रही। अंत में उसने अपनी थाली नीचे रखी और झुंझलाहट में पूछा: 'क्या किसी ने मछली खरीदी है?'
'नहीं,' उसकी माँ ने कहा। 'समय नहीं था और हममें से किसी के पास पैसे भी नहीं थे। तुम्हें इसे कल सुबह गरियाहाट से लाना होगा।'
'मैं सुबह गरियाहाट नहीं जा सकती,' उर्मिला ने विरोध करते हुए कहा। लेकिन ये शब्द उसके मुंह से निकलते ही उसने हार मान ली। बहस करना व्यर्थ था; आखिर में, वह जानती थी, उसे खुद ही जाना पड़ेगा। उसके पिता नहीं जाएंगे क्योंकि इससे उनके सुबह के श्वास अभ्यास में बाधा आएगी; उसके भाई नहीं जाएंगे क्योंकि वे सो रहे होंगे; उसकी भाभी नहीं जाएगी क्योंकि कोई उससे पूछने की हिम्मत नहीं करेगा। और उसकी माँ भी नहीं जाएगी, और अगर उर्मिला उनसे पूछती, तो वे फूट-फूटकर रोने लगतीं और कहतीं: 'आप मुझसे ऐसा कैसे कह सकती हैं? क्या आपको नहीं पता कि होम्योपैथ ने मुझे अस्थमा की वजह से सुबह जल्दी बाहर न जाने की सलाह दी थी?' फिर उर्मिला यह बताना चाहती कि अस्थमा होने के बावजूद वह हर दूसरे दिन ढाकुरिया में अपने गुरु के दर्शन करने जाती थी, जब वे सुबह-सुबह अपने अनुयायियों को दर्शन देने के लिए विशेष रूप से प्रकट होते थे। लेकिन वह जानती थी कि चाहे कितना भी मन करे, वह यह बात नहीं कहेगी। अपनी माँ से कहने के बजाय, वह यह बात खुद से कहेगी, जब वह एक मिनीबस में बैठकर डलहौज़ी की ओर तेज़ी से जा रही होगी, उसकी कोहनियाँ उसकी पीठ में धँसी होंगी और उसकी नाक किसी की बगल में दबी होगी। वह मन ही मन बार-बार यही शब्द दोहराती रहती थी – "माँ, आप तो हर दूसरे दिन सुबह अपने गुरु के पास जाती हैं" – और उसका गुस्सा बढ़ता ही जाता, यहाँ तक कि आखिरकार उसने कुछ भयानक कर दिया, जैसा कि उसने उस दिन किया था, जब उसकी माँ ने उसे मिनीबस पकड़ने से पहले अपने भाई के फुटबॉल शॉर्ट्स लाने के लिए इस्त्री वाले की दुकान पर भेजा था: बस में खड़ी होकर, अनकही आपत्तियाँ जताते हुए, वह इतनी गुस्से में आ गई थी कि अंत में उसने अपना पैर उठाया और किसी के पैर के तलवे पर ज़ोर से मार दिया। उसे यह भी नहीं पता था कि उसने ऐसा क्यों किया; वह बस अपने जूते की एड़ी के मांस और हड्डी में धंसने की आवाज़ सुनना चाहती थी। और उसे मज़ा भी आया, उस मोटे आदमी से गालियाँ बकने में, जिसके पैर पर उसने पैर रखा था; वे लैंसडाउन से लॉर्ड सिन्हा रोड तक एक-दूसरे पर चिल्लाते रहे, जब तक कि आखिरकार उसने उसे चुप नहीं करा दिया।
उसने महसूस किया कि उसकी माँ के हाथ उसके कंधे को थामे हुए हैं। 'अभी मत सो जाओ, उर्मी,' उसने कहा। 'पहले मुझे बताओ: क्या तुम मछली लाकर पकाओगी?'
'शायद मुझे ऐसा करना न पड़े,' उसने नींद में कहा। 'शायद कोई मछली बेचने वाला आ जाए।'

'लेकिन क्या तुम फिर भी ऐसा करोगी?' उसकी माँ ने ज़ोर देकर पूछा।
'ठीक है,' उर्मिला ने हार मानते हुए कहा। 'मैं कर लूंगी - अब मुझे सोने दो।'
उसकी मां ने उसके कंधे पर थपथपाया। 'मुझे पता था तुम ऐसा करोगी,' उसने कहा। 'मेरी प्यारी छोटी उर्मी। ओह, तुम्हारा भाई कितना खुश होगा। तुम्हें देखना चाहिए था कि जब मैंने उसे बताया कि रोमेन हलदार हमारे घर आ रहे हैं तो वह कितना उत्साहित था...'
नाम को समझने में थोड़ा समय लगा और फिर उर्मिला अचानक उठ बैठी।
'कौन?' उसने हैरानी से कहा।
'रोमेन हल्दार,' उसकी माँ ने फिर कहा। 'वही है जो क्लब से हमसे मिलने आ रहा है। तुम जानती हो ना कि वह कौन है?'
'हां,' उर्मिला ने नींद भरी आवाज में कहा। 'हां, मैं जानती हूं कि वह कौन है। यह महज एक संयोग है, बस इतना ही।'

अध्याय 21

एवा ने लिखा है कि एलिजा मोनरो फार्ले अक्टूबर 1893 में भारत के लिए रवाना हुए, बाल्टीमोर स्थित जॉन्स हॉपकिंस विश्वविद्यालय की अनुसंधान प्रयोगशालाओं से निकलने के दो साल बाद। उनके कई मित्र और परिचित उन्हें विदा करने के लिए न्यूयॉर्क गए, जिनमें उनके गुरु, प्रख्यात मलेरिया विशेषज्ञ डब्ल्यू. एस. थायर और उनकी पूर्व टीम के दो अन्य सदस्य, डब्ल्यू. जी. मैक्कलम और यूजीन एल. ओपिए शामिल थे। 1894 की गर्मियों तक युवा रेवरेंड फार्ले हिमालय की पूर्वी तलहटी में स्थित सुदूर कस्बे बरिच के एक छोटे से धर्मार्थ क्लिनिक में कार्यरत हो गए थे। यह क्लिनिक अमेरिकन इकोनोमिकल मिशन द्वारा संचालित था और इसके कर्मचारी ही जिले के एकमात्र प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मी थे।
फ़ार्ले छब्बीस वर्ष का एक लंबा, दुबला-पतला आदमी था, जिसके बाल लाल और आँखें काई-हरे रंग की थीं। स्वभाव से गंभीर और चिंतनशील होने के कारण, उसने अपने नए पेशे की कठिनाइयों को आसानी से अपना लिया। यदि उसे अपने वैज्ञानिक के रूप में पहले के पेशे की थोड़ी भी याद आती थी, तो उसने किसी को इसका एहसास नहीं होने दिया: उसका हर जागने का क्षण क्लिनिक में ही व्यतीत होता था।
फ़ार्ले को क्लिनिक में आए पाँच महीने हो गए थे कि उन्हें पहला पत्र मिला। यह पत्र बाल्टीमोर में रहने वाले उनके पुराने मित्र और सहकर्मी यूजीन ओपी का था। पत्र में ज़्यादातर मौसम और उनके जान-पहचान वालों के वैवाहिक और पेशेवर हालातों से जुड़ी मामूली बातें थीं। लेकिन ओपी ने संक्षेप में ही सही, उस शोध परियोजना का भी ज़िक्र किया जिसे उन्होंने और मैक्कलम ने हाल ही में शुरू किया था। एक व्यस्त शोध छात्र की तरह लापरवाही से संक्षिप्त शैली में लिखते हुए, ओपी ने इस काम के

सैद्धांतिक पहलुओं को विस्तार से बताने का समय नहीं लिया। लेकिन फ़ार्ले को तुरंत समझ आ गया कि ओपी और मैक्कलम फ्रांसीसी शोधकर्ता अल्फोंस लैवरन के शोध को आगे बढ़ा रहे थे।
इस अप्रत्याशित खबर ने फार्ले को गहरी हैरानी में डाल दिया। छात्र जीवन में उन्होंने लैवरन के कार्यों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था, क्योंकि उनका मानना था कि उन्हें आम तौर पर अमान्य मान लिया गया है। इस मामले में उन्होंने जॉन्स हॉपकिंस के मार्गदर्शक विलियम ओस्लर से प्रेरणा ली थी, जिन्होंने सार्वजनिक रूप से 'लैवरनवाद' के प्रति अपनी शंका व्यक्त की थी। फार्ले भारत के लिए इस पूर्ण विश्वास के साथ रवाना हुए थे कि लैवरन का सिद्धांत चिकित्सा जगत के उन अमान्य सिद्धांतों के विशाल कब्रिस्तान में समा जाएगा: इस खबर से उनका आश्चर्य इतना गहरा था कि इसकी पुष्टि होना असंभव था।
एक बार जब लैवरैनिटी के बारे में ये आशंकाएँ जागृत हुईं, तो वे धीरे-धीरे युवा मिशनरी के मन में घर कर गईं, और जहाँ पहले निश्चितता व्याप्त थी, वहाँ संदेह और अविश्वास का भाव पैदा हो गया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए, ये संदेह उस पर सूक्ष्म और अप्रत्याशित तरीकों से असर करने लगे, जिससे उसे एक बार फिर वह जीवन याद आ गया जिसे उसने त्याग दिया था, और प्रयोगशाला की लगभग भूली हुई आदतों और दिनचर्या के लिए एक प्रबल लालसा उत्पन्न हो गई। उसे उस आवेग पर गहरा पछतावा होने लगा जिसके कारण वह अपना सूक्ष्मदर्शी अपने परिवार के न्यू इंग्लैंड स्थित घर पर ही छोड़ आया था, अन्यथा उसके लिए वहीं पर एक अस्थायी प्रयोगशाला स्थापित करना बहुत आसान होता।
फिर, संयोगवश, न कि किसी योजना के तहत, उन्हें एक प्रार्थना पुस्तक के पन्नों के बीच एक अंग्रेज डॉक्टर, सर्जन-ऑन-कर्नल लॉरी का कार्ड मिला, जो भारतीय चिकित्सा सेवा में कार्यरत थे। फ़ार्ले की मुलाकात लॉरी से कलकत्ता स्थित मिशन के मुख्यालय में उनकी कभी-कभार की यात्राओं में से एक के दौरान हुई थी। उनकी संक्षिप्त मुलाकात के दौरान, सर्जन-ऑन-कर्नल ने उन्हें बताया कि वे हैदराबाद जा रहे हैं, जहाँ उन्हें उस राज्य के राजकुमार, निज़ाम द्वारा हाल ही में स्थापित चिकित्सा विद्यालय में प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति मिलनी है। सौभाग्य से, उन्होंने अपने कार्ड के पीछे अपना नया पता लिख दिया था और फ़ार्ले ने तुरंत उन्हें एक पत्र लिखकर लॉरी के सिद्धांतों के बारे में वर्तमान राय जानने की कोशिश की।
उन्हें ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा: उनकी राहत के लिए कर्नल लॉरी ने एक महीने के भीतर ही जवाब लिख दिया। लेकिन जब उन्होंने पत्र पढ़ा, तो उनकी उलझन और बढ़ गई: कर्नल अब भी इस बात पर अडिग थे कि लैवरानवाद निराधार था।
कर्नल ने लिखा कि कुछ अनुयायियों के प्रयासों के बावजूद, जहाँ तक तर्कसंगत मत की बात है, यह सच बना रहा कि लैवरन की अटकलें पूरी तरह से अनुभवजन्य आधारहीन थीं। उन्होंने स्वयं हाल ही में एक ऐसा दृश्य देखा था जिसने इस बात का ज़बरदस्त प्रमाण प्रस्तुत किया था, और वह दृश्य हास्यास्पद होता यदि उसने नायक को इतनी बुरी तरह शर्मिंदा न किया होता।
रोनाल्ड रॉस नाम का एक अहंकारी और अपनी राय पर अड़ा रहने वाला युवा सेना

डॉक्टर हाल ही में हैदराबाद से कुछ ही दूरी पर स्थित बेगमपेट के सेना अस्पताल में तैनात हुआ था। उसके पास ज़रूरत से ज़्यादा खाली समय था, इसलिए उसने मलेरिया पर शोध शुरू करने का बीड़ा उठाया – एक ऐसी बीमारी जिसके बारे में उसे ज़रा भी व्यावहारिक जानकारी नहीं थी। सिकंदराबाद क्लब में उसे कई बार लैवरन के काल्पनिक जीव के बारे में शेखी बघारते हुए सुना गया था। निज़ाम स्कूल ऑफ़ मेडिसिन के सभी शिक्षकों के सामने इस जीव के अस्तित्व को प्रदर्शित करने का निमंत्रण मिलने पर उसने ज़रा भी संकोच नहीं किया। इसके लिए उसने एक बेचारे कांपते हुए बदकिस्मत व्यक्ति को बैलगाड़ी में लादकर ग्यारह मील दूर स्थित स्कूल तक पहुँचाया। लेकिन ज़ाहिर है, जब व्याख्यान कक्ष में सभी लोग इकट्ठा हुए, तो उस बेचारे आदमी के खून में लैवरन के काल्पनिक जीव का कोई अंश नहीं मिला। जब उससे स्पष्टीकरण मांगा गया तो उसने लड़खड़ाती हुई एक कहानी सुनाई कि कैसे वह प्राणी अस्थायी रूप से एकांतवास में चला गया था: मानो वह परजीवी एक नींद में डूबा हुआ लैटिन व्यक्ति हो जिसे प्रतिदिन दोपहर की नींद की आवश्यकता होती है।
सर्जन-कर्नल लॉरी के अनुसार, इस आकस्मिक घटना ने मामले को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया था। हालांकि, कर्नल ने आगे कहा कि वे अच्छी तरह समझते हैं कि ऐसे मामलों में व्यक्ति स्वयं निर्णय लेना चाह सकता है। चिकित्सा सेवा में उनके एक सहकर्मी, डी. डी. कनिंघम, एफआरएस, जो एक बहुत ही समझदार और प्रतिष्ठित वैज्ञानिक थे, कलकत्ता में एक प्रयोगशाला का कार्यभार संभाल रहे थे। यद्यपि यूरोप या अमेरिका की अग्रणी प्रयोगशालाओं के समकक्ष नहीं, कनिंघम की सुविधाएं निश्चित रूप से भारत में और संभवतः पूरे एशिया महाद्वीप में सर्वश्रेष्ठ थीं। कनिंघम भी लैवरन के सिद्धांत से उतना ही सहमत नहीं थे जितना कोई और, लेकिन वे एक निष्पक्ष व्यक्ति थे और किसी अच्छे कार्य के लिए अपनी सुविधाओं का उपयोग करने की सहर्ष अनुमति देंगे। यदि आदरणीय डॉक्टर चाहें, तो सर्जन-कर्नल लॉरी कनिंघम के लिए परिचय पत्र लिखने में प्रसन्न होंगे, इत्यादि।
फार्ले ने तुरंत लॉरी को पत्र लिखकर उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, और जल्द ही यह व्यवस्था की गई कि वह मिशन के कलकत्ता मुख्यालय की अपनी अगली यात्रा पर कनिंघम की प्रयोगशाला का दौरा करेंगे।
फार्ले बेहद उत्सुकता से ट्रेन में सवार हुए। तीन दिन बाद जब वे कलकत्ता के सियालदह स्टेशन पर उतरे तो उनकी उत्सुकता जरा भी कम नहीं हुई थी।
अगले दिन दोपहर ठीक पाँच बजे, फ़ार्ले डॉ. कनिंघम के गेस्ट हाउस में चाय पीने के लिए पहुँचे। डॉ. कनिंघम एक लंबे-चौड़े और लाल रंग के व्यक्ति थे। उन्होंने फ़ार्ले का गर्मजोशी से स्वागत किया और उनके पूर्व गुरु डब्ल्यू. एस. थायर के स्वास्थ्य और कुशल-मंगल के बारे में विस्तार से पूछा, जिनके काम से वे परिचित थे और स्पष्ट रूप से उनकी प्रशंसा करते थे।
उन्होंने कुछ देर तक सामान्य विषयों पर बातचीत की और जल्द ही फार्ले को यह स्पष्ट हो गया कि कनिंघम ने चाहे जो भी उपलब्धियाँ हासिल की हों, शोध में उनकी रुचि काफी समय से समाप्त हो चुकी थी। जब कनिंघम ने उन्हें बताया कि वे लगभग तीन साल बाद सेवानिवृत्त होने वाले हैं और अपने भविष्य के खाली समय को ध्यान में

रखते हुए, वे कलकत्ता में एक निजी प्रैक्टिस शुरू करने की संभावना तलाश रहे हैं, तो फार्ले को पूरी तरह आश्चर्य नहीं हुआ।
जब अंततः बातचीत मुख्य मुद्दे पर लौटी, तो युवा मिशनरी को निराशा हाथ लगी। कनिंघम ने उन्हें बताया कि एक अप्रत्याशित परिस्थिति के कारण उन्हें एक-दो दिन में कलकत्ता छोड़ना होगा: उनके एक बागान मालिक मित्र अचानक बीमार पड़ गए थे और उन्होंने उन्हें असम बुलाया था।
'पर इतना परेशान मत दिखो, मेरे लड़के,' कनिंघम ने गरजते हुए फ़ार्ले की पीठ थपथपाई। 'कल तुम जितनी चाहो उतनी स्लाइड देख सकते हो। मेरा यकीन मानो, इस लैवरन मामले को निपटाने में तुम्हें ज्यादा समय नहीं लगेगा।'
अगले दिन, फ़ार्ले अपने कर्तव्यों के चलते दोपहर तक मिशन में ही रहे। परिणामस्वरूप, वे प्रेसिडेंसी जनरल अस्पताल चार बजे पहुँचे, जब सूरज मैदान के हरे-भरे विस्तार पर ढल रहा था। यदि परिस्थितियाँ भिन्न होतीं, तो शायद वे अस्पताल की लाल ईंटों से बनी इमारतों की संयमित सुंदरता और उनके चारों ओर बने सुव्यवस्थित लॉन और पेड़ों से ढके रास्तों की प्रशंसा करने में कुछ मिनट व्यतीत करने के लिए प्रेरित होते। लेकिन अपने पास मौजूद समय का सदुपयोग करने के दृढ़ निश्चय के साथ, फ़ार्ले ने एक परिचारक से डॉ. कनिंघम की प्रयोगशाला की दिशा का पता लगाया और तेज़ी से चलते हुए उसकी ओर चल पड़े।
प्रयोगशाला अस्पताल के विशाल और घने पेड़ों से घिरे परिसर के काफी अंदर स्थित थी। यह अस्पताल के मुख्य परिसर से बांस के ऊंचे झुरमुटों से घिरी हुई थी, और इमारत की पहली झलक देखते ही फार्ले आश्चर्यचकित रह गया।
यह किसी भी ऐसी प्रयोगशाला से बिलकुल अलग थी जो उसने पहले कभी देखी थी: निश्चित रूप से यह उन अंधकारमय, कब्रनुमा कमरों से बिल्कुल भिन्न थी जो उस समय अमेरिका और यूरोप के अधिकांश विश्वविद्यालयों की प्रयोगशालाओं का घर हुआ करते थे। यह एक साधारण बंगला था, जो ब्रिटिश सैन्य प्रतिष्ठानों में हर जगह आम था।
घने छायादार जंगल में खड़े, चारों ओर बांस की सरसराहट के बीच, फ़ार्ले को एक अजीब सी बेचैनी महसूस हो रही थी। उसने पीछे मुड़कर देखा तो न तो जंगल में, न ही बंगले में। फिर भी उसे यह एहसास हुआ कि उसकी मौजूदगी किसी की नज़र से नहीं बची है। कुछ ही पलों में, मानो पुष्टि करते हुए, बंगले का दरवाज़ा खुल गया और डॉ. कनिंघम का लंबा, लाल रंग का चेहरा बरामदे में आ गया। 'अरे, तुम यहाँ हो फ़ार्ले,' वह चिल्लाया, 'उन्होंने मुझे बताया था कि तुम यहाँ हो। अच्छा, बस खड़े मत रहो, यार; अंदर आ जाओ। चलो इस मामले को हमेशा के लिए सुलझा लेते हैं।'
थोड़ा संभलकर, फ़ार्ले बंगले की सीढ़ियों पर चढ़े और कनिंघम से हाथ मिलाया। संक्षिप्त अभिवादन के बाद, उस बुजुर्ग व्यक्ति ने उनके कंधे पर हाथ रखा और उन्हें प्रयोगशाला के खुले दरवाजे की ओर ले गए। फ़ार्ले अंदर गए, लेकिन तभी स्तब्ध रह गए जब उन्होंने देखा कि साड़ी पहने एक महिला और पायजामा व प्रयोगशाला की वर्दी पहने एक युवक उन्हें बारीकी से देख रहे थे।
वह महिला उसे इतनी तीखी निगाहों से देख रही थी कि वह उससे अपनी नज़रें नहीं

हटा पा रहा था। सस्ते और चमकीले रंग की सूती साड़ी पहने वह न तो जवान थी और न ही बूढ़ी, शायद तीस के दशक के अंत में। जब उसने अपनी जाँच पूरी कर ली, तो वह घुटनों को मोड़कर ज़मीन पर बैठ गई।
कनिंघम ने फ़ार्ले की बेचैनी को अवश्य ही भांप लिया होगा, क्योंकि उसने कहा था: 'उस पर ज़रा भी ध्यान मत दो; उसे लोगों को घूरना बहुत पसंद है।'
'वह कौन है?' फार्ले ने दबी आवाज में पूछा।
'अरे, ये तो बस सफाईकर्मी है,' कनिंघम ने लापरवाही से कहा। तभी फार्ले ने ध्यान दिया कि उसके हाथ में उसके पेशे की निशानी, सफाईकर्मी का झारू था।
कनिंघम ने आगे कहा, 'वह थोड़ी गुस्सैल है, बहुत समय से यहीं है। आप जानते ही हैं कि वे कैसी होती हैं: आगंतुकों को अच्छी तरह से परखना पसंद करती हैं। उससे घबराइए मत; उसमें कोई बुराई नहीं है।'
फ़ार्ले ने देखा कि वह अपने बगल में खड़े युवक से नज़रें मिला रही थी और उसे स्पष्ट रूप से महसूस हुआ कि उनके बीच एक मुस्कान और एक हल्का सा इशारा हुआ, मानो किसी को न बताने का एक सूक्ष्म संकेत। फिर वह महिला खड़ी हुई, उसकी ओर पीठ करके कमरे के दूर कोने में चली गई, मानो यह जता रही हो कि अब उसकी उसमें कोई दिलचस्पी नहीं रही।
फार्ले को लगा कि उसका चेहरा खून से लाल हो रहा है।
'उस पर ध्यान मत दो;' कनिंघम ने फार्ले से आँख मारते हुए कहा, 'वह थोड़ी सनकी है... तुम्हें पता है।'
उन्होंने युवक को सामने आने का इशारा किया। उन्होंने व्यंग्यात्मक हंसी के साथ कहा, 'और यह छोकर-सा दिखने वाला लड़का, एक भारवाहक है जिसे मैंने अपनी स्लाइडों में मदद करने के लिए प्रशिक्षित किया है। आप इसे मेरा सहायक कह सकते हैं।'
प्रयोगशाला की मेजों के बीच से आगे बढ़ते हुए कनिंघम ने एक माइक्रोस्कोप की ओर इशारा किया। उन्होंने फ़ार्ले से कहा, 'आप यहाँ काम कर सकते हैं। मेरा सहायक आपको आपकी स्लाइड्स लाकर देगा।' यह कहते हुए वह हल्के से हँसे और बोले, 'आशा है आपको वह मिल जाएगा जिसकी आप तलाश कर रहे हैं।'
फ़ार्ले एक माइक्रोस्कोप के सामने बैठ गए, और अगले डेढ़ घंटे में सहायक उन्हें देखने के लिए कई दर्जन स्लाइडें लाकर देता रहा। चूंकि वह व्यक्ति एक मामूली कर्मचारी था, इसलिए फ़ार्ले को आश्चर्य नहीं हुआ कि कनिंघम ने उन्हें अपना नाम बताने की ज़हमत नहीं उठाई। लेकिन अब, जब वह उसे काम करते हुए देख रहे थे, तो वे उस युवक की कुशलता से प्रभावित हुए: उसकी परिस्थितियों को देखते हुए, उसकी दक्षता उन्हें काफ़ी उल्लेखनीय लगी।
लेकिन फ़ार्ले को दिखाई गई स्लाइड्स में कोई चौंकाने वाली बात नहीं थी। उन पर सूखे धब्बे थे और वे जानी-पहचानी तरह की थीं, जिनमें मलेरिया के रक्त की काली रंजित कोशिकाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। बाल्टीमोर में शोध छात्र के रूप में उन्होंने ऐसी दर्जनों स्लाइड्स देखी थीं। लैवरन के परजीवी का उन्हें कोई संकेत नहीं मिला। वास्तव में, अगर एक छोटी सी विचित्र घटना न हुई होती तो वे इस प्रयास को जल्द ही छोड़ देते।

लगभग एक घंटे तक माइक्रोस्कोप से देखने के बाद, फार्ले को प्यास लगी और उन्होंने युवा सहायक से पानी मांगा। तुरंत एक गिलास लाकर उनके सामने रख दिया गया। उन्होंने आधा पानी पी लिया और बाकी पानी बाद में पीने के लिए बचा लिया, इसलिए उसे माइक्रोस्कोप के ठीक पीछे, आसानी से पहुँचने योग्य जगह पर रख दिया।
कुछ मिनट बाद, माइक्रोस्कोप से नज़र हटाते हुए, उन्होंने पाया कि उन्हें अपने पीछे का पूरा कमरा कांच के गिलास की उत्तल सतह पर प्रतिबिंबित होता हुआ दिखाई दे रहा था। उन्होंने इस बारे में और नहीं सोचा, लेकिन अगली बार जब उन्होंने ऊपर देखा तो उनकी नज़र पीछे घट रहे एक दृश्य पर टिक गई।
स्लाइड की ट्रे लाने गई सहायक साड़ी पहनी महिला से फुसफुसा रही थी। यह इतना स्पष्ट था कि वे फ़ार्ले के बारे में ही बात कर रही थीं: उनके चेहरों के विकृत प्रतिबिंब कमरे में एक विचित्र और डरावने रूप में दिखाई दे रहे थे, जैसे ही वे सिर हिलाकर इशारा कर रही थीं। फ़ार्ले ने जल्दी से अपना सिर माइक्रोस्कोप की ओर झुकाया, और तिरछी नज़र से शीशे को देखता रहा।
इसके बाद उसने जो देखा, वह पहले की घटनाओं से भी कहीं अधिक चौंकाने वाला था। फुसफुसाहट भरी बातचीत के अंत में, दीवार के पास रखे दराजों के ढेर की ओर युवा सहायक नहीं, बल्कि वह महिला गई; उसी ने उन स्लाइडों का चयन किया जिन्हें उसे जांच के लिए प्रस्तुत किया जाना था। ध्यान से देखते हुए, फ़ार्ले ने देखा कि वह उन्हें इतनी तेज़ी से चुन रही थी कि यह स्पष्ट था कि वह न केवल स्लाइडों से पूरी तरह परिचित थी, बल्कि यह भी जानती थी कि उनमें क्या है। फ़ार्ले अब खुद को मुश्किल से रोक पा रहा था। उसका दिमाग सवालों से भर गया: एक महिला, और वह भी अनपढ़, ने इतनी विशेषज्ञता कैसे हासिल कर ली? और वह कनिंघम से इसे कैसे छिपाने में सफल रही? और वह, जो स्पष्ट रूप से अप्रशिक्षित थी और ऐसे ज्ञान के सिद्धांतों से अनभिज्ञ थी, सहायक पर इतना अधिकार कैसे जमा पाई? जितना अधिक वह इस पर विचार करता गया, उतना ही वह आश्वस्त होता गया कि वह उससे कुछ छिपा रही है; कि अगर वह चाहती तो उसे वह दिखा सकती थी जिसकी वह तलाश कर रहा था, लैवरन का परजीवी; और उसने उसे यह देने से इसलिए इनकार कर दिया था क्योंकि किसी अकल्पनीय कारण से उसने उसे इसके योग्य नहीं समझा था।
फ़ार्ले अब इस जगह, इस तथाकथित प्रयोगशाला से खुशी-खुशी चले जाना चाहते थे, जिसके जाने-पहचाने उपकरण उतने ही विकृत और रहस्यमय उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किए जा रहे थे। फिर भी वे जानते थे कि अगर वे अब चले गए तो जीवन भर अनिश्चितता और संदेह से त्रस्त रहेंगे। उनके पास अपनी खोज को जारी रखने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, चाहे वह उन्हें कहीं भी ले जाए।
और इसलिए फ़ार्ले ने खुद को वहीं पर डटे रहने के लिए विवश किया, अपनी नज़र माइक्रोस्कोप पर टिकाए हुए, युवा सहायक द्वारा उसके सामने रखी गई अर्थहीन स्लाइडों को बिना किसी भाव के घूरते रहे। पूरा आधा घंटा बीत जाने के बाद, उन्होंने उस युवक से कहा: 'आज मुझे परजीवी का कोई संकेत नहीं मिला, लेकिन मुझे विश्वसनीय सूत्रों से पता चला है कि यह वास्तव में मौजूद है। इसलिए मैं कनिंघम साहब से बात करूँगा, और उनकी अनुमति से, मैं कल अपने शोध को जारी रखने के

लिए वापस आऊँगा।'
यह देखकर सहायक के अब तक मुस्कुराते चेहरे पर घोर हैरानी छा गई। फ़ार्ले ने देखा कि वह प्रयोगशाला के दूसरे छोर से उन्हें ध्यान से देख रही उस अज्ञात महिला की ओर एक नज़र डाल रहा था। फिर वह हकलाते हुए विरोध करने लगा: अगले दिन वापस आने की कोई ज़रूरत नहीं थी; देखने लायक कुछ नहीं था, यह तो बस समय की बर्बादी थी, और वैसे भी कनिंघम साहब बाहर होंगे; बेहतर होगा कि बाद में, किसी और दिन वापस आएँ... दो सप्ताह या एक महीने बाद, शायद तब कुछ देखने को मिले...
उसके विरोध की तीव्रता ने फ़ार्ले के संदेह की पुष्टि कर दी: उस व्यक्ति ने इससे अधिक स्पष्ट रूप से संकेत नहीं दिया होगा कि वह और कमरे के दूसरी ओर बैठा उसका मौन साथी उससे छुटकारा पाने के लिए उत्सुक थे; कि अगले दिन उसकी उपस्थिति किसी पूर्व नियोजित साज़िश, किसी घटना या घटनाओं को बाधित कर देगी, जिसकी उन्होंने कनिंघम की अनुपस्थिति पर भरोसा करते हुए पहले ही योजना बना ली थी।
अब जब उसे फायदा समझ आ रहा था, तो फार्ले ने विनती कर रहे सहायक को पीछे छोड़ते हुए कहा: 'फिर भी मैं कल वापस आऊंगा।'
इतना कहकर वह कनिंघम को ढूंढने चला गया।
अंग्रेज अगले कमरे में एक सोफे पर बैठा था, लंबी डंडी वाले पाइप से धुंआ उड़ा रहा था। जब फार्ले ने अगले दिन जारी रखने की अनुमति मांगी, तो उसने मीठी सुगंध वाला धुआं उड़ाया और कहा: 'क्यों नहीं, मेरे लड़के! अगर तुम लैवरन के इस प्रेत की खोज में लगे रहने के लिए दृढ़ हो, तो जितनी बार चाहो वापस आना। मैं उन्हें बता दूंगा कि तुम आओगे।'
विदा लेने ही वाला था कि फार्ले हिचकिचाया। उसने जल्दी से चारों ओर देखा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे अकेले हैं, और फिर बैठे हुए अंग्रेज के पास जाकर वह घुटनों के बल बैठ गया।
'अगर मैं पूछ सकता हूँ, महोदय,' उसने कनिंघम के कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'आपने किन परिस्थितियों में इस महिला को अपनी प्रयोगशाला में प्रवेश दिया?'
'मंगला?' कनिंघम ने अपने कंधे के ऊपर पाइप की डंडी की ओर इशारा करते हुए कहा।
'अगर उसका यही नाम है, तो हां।'
'अगर आप मुझसे पूछ रहे हैं कि मैंने उसे कैसे ढूंढा,' कनिंघम ने कहा, 'तो इसका जवाब यह है कि मैंने उसे वहीं पाया जहां मुझे मेरे सभी सहायक और वाहनवाहक मिलते हैं: नए रेलवे स्टेशन पर - उसे क्या कहते हैं? - ओह हाँ, सीलदाह।'
'रेलवे स्टेशन पर, महोदय?' आश्चर्यचकित फ़ार्ले ने हांफते हुए पूछा। 'बिल्कुल,' कनिंघम ने कहा। 'अगर आपको किसी कामगार की ज़रूरत हो तो वही जगह है: मैं हमेशा से यही कहता आया हूँ - वहाँ नौकरी और रहने की जगह की तलाश में लोगों की भरमार रहती है। अगली बार जब आप वहाँ जाएँ तो खुद देख लीजिए।'
'लेकिन, महोदय,' फ़ार्ले ने हैरानी से कहा, 'अप्रशिक्षित और अशिक्षित लोगों को काम

पर रखना...'
'और अपने सहायकों को प्रशिक्षित करने के लिए खुद से बेहतर कौन हो सकता है, मेरे लड़के?' कनिंघम ने जवाब दिया। 'मेरी राय में, अति उत्साही और अधूरे ज्ञान वाले कॉलेज के छात्रों से घिरे रहने से कहीं बेहतर है। इससे बेकार और अनावश्यक ज्ञान देने के काम से मुक्ति मिल जाती है।'
'तो आपने ही उस महिला - मंगला - को प्रशिक्षित किया था?' फार्ले ने पूछा।
'जी हां, मैंने देखा था,' कनिंघम ने धुंधली निगाहों से दूर कहीं देखते हुए कहा। 'और मैंने पहले कभी इतनी फुर्तीली उंगलियां और आंखें नहीं देखी थीं। लेकिन...'
मुंह फुलाते हुए कनिंघम ने उंगली से अपने सिर पर थपथपाया। 'लेकिन वह पूरी तरह से ठीक नहीं है,' उसने कहा, 'उसका दिमाग खराब हो गया है - किसी बीमारी से, या व्यभिचार से, या पता नहीं किस वजह से?'
'और वो युवक?' फार्ले ने पूछा। 'उसके बारे में क्या?'
'वह यहां ज्यादा समय से नहीं है,' कनिंघम ने कहा। 'मंगला उसे यहां लाई थी: उसने कहा था कि वह उसके अपने इलाके से है।'
'और वो कहां है?'
'आप जहां हैं, वहां से ज्यादा दूर नहीं,' कनिंघम ने कहा। 'मेरा मानना है कि उस जगह का नाम रेनुपुर है - हो सकता है कि आप यहां आते समय वहां से गुजरे हों।'
'जी हां,' फार्ले ने कहा। 'मैं कलकत्ता जाते समय रेनूपुर से होकर गुजरा था।'
फ़ार्ले अभी सहायक का नाम पूछने ही वाला था कि तभी उसे पीछे से एक आवाज़ सुनाई दी। वह उठा और खुद को सीधे मंगला नाम की महिला के सामने पाया। वह कमरे के दूसरी ओर से उसे घूर रही थी, और उसकी निगाहों में इतना गुस्सा था कि उसे देखकर उसकी रूह कांप उठी। जैसे ही वह बाहर जाने लगा, उसने देखा कि वह युवा सहायक से दबी आवाज़ में सलाह-मशविरा कर रही थी।
फ़ार्ले अभी प्रयोगशाला के सामने बांस के घने जंगल तक पहुंचा ही था कि उसे अपने पीछे दौड़ते कदमों की आहट सुनाई दी। कुछ ही क्षणों में सहायक उसके पास पहुंचा और विनम्रतापूर्वक, लगभग विनती भरे स्वर में पूछा कि वह अगले दिन कब आने वाला है। आश्चर्य का लाभ बनाए रखने के लिए दृढ़ संकल्पित फ़ार्ले ने उसे टालमटोल भरा जवाब दिया: 'जब मैं आसपास होऊंगा तब आऊंगा। मेरे आने से आपके आज के काम में कोई बाधा नहीं आएगी।'
इतना कहकर उसने निराश सहायक की ओर पीठ फेर ली और चला गया।
लगभग पूरी रात, बिना किसी स्पष्ट कारण के, फ़ार्ले प्रार्थना करता रहा। फिर भी, उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसके सामने क्या है और वह उससे क्यों डर रहा है। यही बात उसका डर बन गई - कि वह उस चीज़ को नाम नहीं दे पा रहा था जिसका सामना उसे करना ही था। अगली सुबह वह अपने कमरे में ही रहा, न खाना खाया न पानी पिया, और दोपहर होने तक अपने कमरे से बाहर नहीं निकला।
इस प्रकार, एक बार फिर, जब वह अस्पताल पहुँचा तो शाम ढल चुकी थी। लेकिन आज, पिछले दिन के विपरीत, आकाश धूसर और बादलों से घिरा हुआ था, और मैदान में तेज़ हवा चल रही थी। प्रयोगशाला के पास पहुँचते ही, फ़ार्ले को ऐसा लगा

मानो अस्पताल से प्रयोगशाला को अलग करने वाले बाँस के झुरमुट सजीव हों, हलचल से भरे हों। और जब वह घने बाँस में दाखिल हुआ, तो उसने देखा कि उसके आगे रास्ते पर सचमुच परछाइयाँ थीं: तीन आकृतियाँ, लबादे में लिपटी हुई, धीरे-धीरे प्रयोगशाला की ओर लड़खड़ाती हुई आ रही थीं। फ़ार्ले संदेह से भर गया और रुक गया, फिर खुद को संभालकर वह आगे बढ़ा। जब वह उन आकृतियों से कुछ ही गज पीछे था, तो उसने देखा कि उस छोटे समूह में एक धोती पहने पुरुष और एक साड़ी पहने महिला थी। वे अपने बीच एक और लगभग बेजान सी आकृति को उठाए हुए थे। वह साहसपूर्वक उनके पास पहुँचा, अपनी उपस्थिति का आभास कराने के लिए उसने अपनी जेब की डोरी खड़काई। वे रुके और उसकी ओर मुड़े।

फ़ार्ले की नज़र तुरंत बीच में खड़े व्यक्ति पर पड़ी। वह एक आदमी था, शायद जवान, शायद अधेड़ उम्र का, यह बताना नामुमकिन था, क्योंकि उसका चेहरा बुरी तरह से बिगड़ा हुआ था, आँखें ऊपर की ओर उठी हुई थीं, केवल सफेदी दिखाई दे रही थी, त्वचा धब्बेदार थी, पपड़ी से भरी हुई थी, दाँत खुले हुए थे, लार टपकता हुआ मुँह गले की ओर झुका हुआ था मानो पीछे की ओर धक्के से मुड़ा हो। फ़ार्ले ने उसे बस कुछ पल के लिए ही देखा, लेकिन बैरिच में महीनों के अभ्यास से निखरी उसकी निदान क्षमता ने उसे तुरंत बता दिया कि वह व्यक्ति सिफिलिस के कारण होने वाले मनोभ्रंश की अंतिम अवस्था में था।

दया से भर कर, फ़ार्ले ने पीड़ित व्यक्ति की ओर मदद का हाथ बढ़ाया। लेकिन जैसे ही उस व्यक्ति के साथियों ने उसे देखा, वे भाग निकले और अंधेरे में गायब हो गए। फ़ार्ले उन्हें देखता रहा और फिर प्रयोगशाला की ओर चल पड़ा।

बंगले से कुछ ही गज की दूरी पर पहुँचकर, उसके कानों में एक अप्रत्याशित ध्वनि पड़ी: कई स्वरों द्वारा एक साथ गाया जा रहा एक धीमा मंत्रोच्चार। उसने अपनी गति धीमी कर ली और ध्यान से सुनने लगा। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि ध्वनि का स्रोत बंगले में नहीं, बल्कि कहीं और था। पेड़ों और बाँसों के बीच से चारों ओर ध्यान से देखते हुए, फ़ार्ले ने देखा कि कुछ लोग थोड़ी दूरी पर बने एक छोटे से बाहरी कमरे के चारों ओर इकट्ठा थे। वे आग के चारों ओर एक घेरे में बैठे थे और पीतल की झांझों की संगत में मंत्रोच्चार कर रहे थे, मानो किसी अनुष्ठान या समारोह की तैयारी कर रहे हों। अब उत्सुकतावश वह बाहरी शौचालय की ओर दौड़ा, लेकिन तभी प्रयोगशाला का मुख्य द्वार अचानक खुला और युवा सहायक दौड़ता हुआ बाहर आया। गर्मजोशी से स्वागत करने के बहाने उसने फ़ार्ले को जल्दी से प्रयोगशाला की ओर ले गया।

जैसे ही वह प्रयोगशाला में प्रवेश करने वाला था, फ़ार्ले ने पास के एक कमरे में हलचल देखी। सहायक ने उसे जल्दी से आगे बढ़ने के लिए कहा, लेकिन धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए फ़ार्ले ने किसी तरह कमरे में एक नज़र डाल ली। जो दृश्य उसकी आँखों के सामने आया, वह इतना स्तब्ध कर देने वाला था कि जब उसके गाइड ने उसे प्रयोगशाला के दरवाजे से अंदर ले जाया, तो उसने कोई विरोध नहीं किया। उसने जो देखा वह यह था: मंगला नाम की महिला कमरे के दूसरे छोर पर एक छोटे से दीवान पर बैठी थी, लेकिन अकेली और एक दबंग मुद्रा में, मानो सिंहासन पर बैठी हो। उसके बगल में कई छोटे-छोटे बांस के पिंजरे थे, जिनमें से प्रत्येक में एक कबूतर था।

लेकिन यह पक्षी स्वयं नहीं थे, बल्कि उनकी हालत थी जिसने उसे चकित कर दिया। क्योंकि वे अपने पिंजरों के फर्श पर बेसुध पड़े थे, कांप रहे थे, स्पष्ट रूप से मृत्यु के निकट थे।

बात यहीं खत्म नहीं हुई। सोफे के पास, फर्श पर, महिला के पैरों के चारों ओर लगभग आधा दर्जन लोग अलग-अलग मुद्राओं में विनती करते हुए बैठे थे, कुछ उसके पैर छू रहे थे, कुछ ज़मीन पर लेटे हुए थे। दो-तीन अन्य लोग दीवार से सटकर कंबल ओढ़े बैठे थे। हालाँकि फ़ार्ले ने उनके दागदार, भावहीन चेहरों को बस एक पल के लिए ही देखा था, फिर भी वह तुरंत समझ गया कि वे भी, उस आदमी की तरह जिसे उसने बाँस के घने जंगल में देखा था, सिफिलिस के मरीज़ थे और इस भयानक बीमारी की अंतिम अवस्था में थे।

अब युवा सहायक ने एक बार फिर पिछले दिन वाला नाटक शुरू कर दिया, स्लाइडें लाने लगा और कमरे में इधर-उधर भागने लगा, मानो उसे किसी असाधारण खोज की ओर प्रेरित कर रहा हो। फ़ार्ले ने कोई आपत्ति नहीं जताई। वह यंत्रवत रूप से प्रस्तुत स्लाइडों की जाँच करने में लगा रहा, जबकि उसका मन बाहर देखे गए उस असाधारण दृश्य पर ही केंद्रित था।

बाहर के विचित्र दृश्यों में भले ही बहुत कुछ हैरान करने वाला था, लेकिन एक पहलू ऐसा था जो फार्ले को अपने अनुभव से पूरी तरह समझ में आता था। बारिच में एक से अधिक बार, वह खुद को एक ऐसे हताश और भयभीत परिवार की आखिरी उम्मीदों का सहारा बनते हुए पा चुका था, जो जंगलों और पहाड़ों को पार करते हुए अपने किसी गंभीर रूप से बीमार रिश्तेदार को लेकर क्लिनिक के दरवाजे पर पहुंचा था। वह उन लोगों के चेहरों को जानता था, उनकी आवाजों में विनती भरी गुहार को, उनकी आंखों में उम्मीद की बुझती हुई किरण को। उसका अंतरात्मा उसे पुकार रहा था कि वह बाहर जाए और उन्हें बताए कि वे इस औरत के झाड़-फूंक भरे इलाज पर अपनी उम्मीदें बर्बाद न करें; उस औरत और उसके साथियों द्वारा उन भोले-भाले लोगों को धोखा देने के लिए गढ़े गए झूठों का पर्दाफाश करे। वह जानता था कि यह उसका कर्तव्य है कि वह उन्हें बताए कि उनकी इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है; कि यह झूठी भविष्यवक्ता उनसे ऐसे पैसे ठग रही है जो वे मुश्किल से ही दे सकते हैं।

फिर भी वह वहीं डटा रहा, इस उम्मीद में कि धैर्य रखने से वह इस मामले को अंत तक सुलझा पाएगा। मिनट-घंटे बीतते गए, और उसकी नज़रें माइक्रोस्कोप पर टिकी रहीं, मानो वह अपने सामने रखी हर चीज़ की जाँच कर रहा हो। जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, उसे अपने आसपास बेचैनी बढ़ती महसूस होने लगी; वह भागते कदमों में बेचैनी सुन सकता था; वह उन आँखों में बेचैनी महसूस कर सकता था जो उसकी पीठ भेद रही थीं, मानो उसे वहाँ से जाने के लिए कह रही हों ताकि वे अपनी योजना के अनुसार काम कर सकें। लेकिन वह अपनी जगह पर अडिग, स्थिर बैठा रहा, मानो पूरी तरह से स्लाइड्स में डूबा हुआ हो।

फिर अंत में, जब दिन का उजाला लगभग समाप्त हो चुका था, तो फ़ार्ले ने पुकारा: 'वाहक, कृपया गैस के लैंप जला दें। मुझे अभी बहुत काम करना है।'

इस पर सहायक ने आपत्ति जताते हुए कहा: 'लेकिन महोदय, यहाँ कुछ भी नहीं है,

आपको कुछ भी देखने को नहीं मिलेगा, आप बेवजह अपना समय बर्बाद कर रहे हैं।'
फ़ार्ले को ठीक ऐसे ही पल की उम्मीद थी और वह इसका इंतज़ार कर रहा था। अब ऊँची आवाज़ में उसने कहा: 'मेरी बात ध्यान से सुनो: मैं इस प्रयोगशाला को तब तक नहीं छोड़ूंगा जब तक मैं लैवरन द्वारा वर्णित परिवर्तनों को नहीं देख लेता। ज़रूरत पड़ने पर मैं पूरी रात यहीं रुकने को तैयार हूँ: मुझे जितनी देर रुकना होगा, मैं रुकूंगा।'
इतना कहकर उसने अपना सिर एक बार फिर माइक्रोस्कोप की ओर झुकाया। लेकिन इस बीच उसने सावधानी बरतते हुए कांच का गिलास फिर से अपने सामने रख लिया था, और अब उसने अपनी आंखों के कोने से देखा कि सहायक साफ स्लाइडों का एक सेट उठाकर प्रतीक्षालय की ओर चला गया।
उसके जाने के बाद, फ़ार्ले चुपचाप प्रयोगशाला में आगे बढ़ा। दीवार से सटकर, वह दरवाजे की ओर रेंगता हुआ तब तक बढ़ा जब तक कि वह ऐसी स्थिति में नहीं पहुँच गया जहाँ से वह बिना किसी की नज़र में आए प्रतीक्षालय में देख सके।
फ़ार्ले ने खुद को हर परिस्थिति के लिए तैयार कर लिया था, या कम से कम उसे ऐसा ही लगा था, लेकिन आगे जो उसने देखा उसके लिए वह बिल्कुल भी तैयार नहीं था। सबसे पहले सहायक उस महिला, मंगला के पास गया, जो अभी भी अपने दीवान पर शान से बैठी थी, और अपना माथा उसके चरणों से छुआ। फिर एक दरबारी या शिष्य की तरह उसने उसके कान में कुछ सलाह फुसफुसाई। उसने सहमति में सिर हिलाया और उससे साफ स्लाइड ले लीं। चिड़ियों के पिंजरों की ओर हाथ बढ़ाते हुए उसने बारी-बारी से हर चिड़िया पर हाथ रखा, मानो वह कुछ जानने की कोशिश कर रही हो। फिर मानो उसने कोई फैसला कर लिया हो; उसने एक पिंजरे में हाथ डाला और कांपती हुई चिड़िया को अपनी गोद में उठा लिया। उसने अपने हाथ उस पर रखे और उसका मुंह ऐसे हिलने लगा जैसे वह कोई प्रार्थना बुदबुदा रही हो। तभी अचानक उसके दाहिने हाथ में एक स्केलपेल आ गया; उसने चिड़िया को खुद से दूर रखा और कलाई के एक झटके से मरते हुए कबूतर का सिर काट दिया। जब खून का बहाव कम हो गया, तो उसने साफ स्लाइड उठाईं, उन्हें कटी हुई गर्दन पर मल दिया और सहायक को सौंप दिया।
फ़ार्ले ने सूझबूझ दिखाते हुए तेज़ी से कमरे के उस पार जाकर अपना माइक्रोस्कोप उठाया। जैसे ही वह बैठा, वह युवक अंदर आ गया।
'कृपया अब इनकी जांच कर लीजिए, महोदय,' उन्होंने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा। 'शायद अंततः आपको अपने लक्ष्य में सफलता मिल जाए।'
फ़ार्ले ने स्लाइड को अपने हाथ पर पलट दिया। 'लेकिन,' उसने कहा, 'ये ठीक से रंगी नहीं हैं: इन पर लगा खून अभी भी ताजा है।'
'जी जनाब,' सहायक ने लापरवाही से कहा। 'शायद आप जो खोज रहे हैं, वह केवल ताजा निकले खून में ही मिल सकता है।'
फ़ार्ले ने स्लाइड को माइक्रोस्कोप के नीचे रखा और उपकरण में देखा। पहले तो उन्हें कुछ भी असामान्य नहीं दिखा; ऐसा कुछ भी नहीं जिससे उन्हें पता चलता, अगर उन्हें यह न पता होता कि यह नमूना कबूतर से आया है। उन्होंने मलेरिया के रंजक के परिचित कण देखे। लेकिन फिर अचानक उन्हें हलचल दिखाई दी; उनकी आँखों के

सामने अमीबा जैसी आकृतियाँ रेंगने और हिलने लगीं, कांच जैसी सतह पर धीरे-धीरे लहरों की तरह चलने लगीं। फिर अचानक हलचल मच गई और वे बिखरने लगीं: तभी उन्होंने लैवरारी की छड़ें देखीं, सैकड़ों की संख्या में, छोटी बेलनाकार वस्तुएँ, जिनके नुकीले, भेदक सिरे रक्तमय धुंध को भेद रहे थे।
अब फार्ले के माथे से पसीना टपकने लगा था, क्योंकि वह सींग वाले जीवों को बिल खोदते, छटपटाते और बेचैनी से खोजते हुए देख रहा था। उसकी सांसें तेज़ हो गईं; उसका सिर घूमने लगा। वह हांफते हुए बैठ गया, उन ज़िद्दी, संघर्षरत जीवों का दृश्य अभी भी उसकी आँखों में ताजा था। उसकी नज़र खिड़की पर पड़ी, और उसने देखा कि शीशे के सामने कई चेहरे कतार में खड़े उसे देख रहे थे, जबकि वह अपनी सीट पर छटपटाते हुए अपना माथा पोंछ रहा था। उसकी नज़र मंगला से मिली; वह बाकी सभी के सामने खड़ी थी, उसे घूर रही थी और मन ही मन मुस्कुरा रही थी। उसके हाथ में, सबके सामने, सिर कटी चिड़िया का शव था, जिसके भयानक घाव से अभी भी खून बह रहा था।
'उसे बताओ,' महिला ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ कहा, 'उसे बताओ कि वह जो देख रहा है वह प्राणी का अंग उसके साथी के शरीर में प्रवेश कर रहा है, वही कर रहा है जो पुरुषों और महिलाओं को करना चाहिए...'
और यहीं, इस रहस्योद्घाटन के बिंदु पर, जिससे पता चलता है कि फ़ार्ले पहले ही उस निष्कर्ष पर पहुँच चुका था जिसने उसके पूर्व साथी को प्रसिद्ध बना दिया, कहानी समाप्त हो जाती है। अब और संयम न रख पाने के कारण, फ़ार्ले ने स्लाइड्स उस महिला पर फेंक दीं और तेज़ी से प्रयोगशाला से बाहर निकल गया।
लेकिन अगली सुबह डाक से पत्र भेजने से पहले, फ़ार्ले ने हाशिये में कुछ पंक्तियाँ लिख दीं: 'जल्दबाजी में: पिछले कुछ घंटों में मेरी आशंकाएँ सच साबित हो गई हैं। सुबह की प्रार्थना से कुछ देर पहले मेरे दरवाजे पर दस्तक हुई: यह कनिंघम का युवा सहायक था। उसने मुझे बहुत सी बातें बताईं - मैं समय आने पर उन सबके बारे में आपको लिखूंगा। अभी के लिए इतना ही कहना काफी है कि सब कुछ वैसा नहीं है जैसा दिखता है, मानो वह अपने आप का एक भ्रम हो। उस युवक ने मुझसे वादा किया है कि अगर मैं उसके साथ उसके जन्मस्थान चलूँ तो वह मुझे सब कुछ बता देगा। सौभाग्य से, जिस जगह की उसने बात की वह मेरे क्लिनिक से ज्यादा दूर नहीं है। हमें कल निकलना है: प्रिय मित्र, जब मुझे और जानकारी मिलेगी तो मैं फिर से लिखूंगा और विस्तार से बताऊंगा...'
लेकिन एलिजा फार्ले कभी बरिच नहीं पहुँच पाए: वे यात्रा के दौरान लापता हो गए और फिर कभी नहीं देखे गए। पुलिस ने पता लगाया कि वे वास्तव में निर्धारित समय पर सियालदह स्टेशन से ट्रेन में चढ़े थे, लेकिन मानसून के भीषण मौसम में अपने गंतव्य से पहले ही रेनूपुर नामक एक सुनसान और कम इस्तेमाल होने वाले स्टेशन पर उतर गए थे। बाद में एक गार्ड ने बताया कि एक युवक को उनका सामान ले जाते हुए देखा गया था।
अचानक अवा से बीप की आवाज़ आने लगी: शेष जानकारी अस्पष्ट है, आगे जारी नहीं रख सकते...

अध्याय 22

मुरुगन को नींद नहीं आ रही थी।
मच्छरदानी के नीचे तपते हुए, वह जागता रहा और छत के पंखे को भारी मानसूनी हवा को चीरते हुए देखता रहा। पंखे के छोटे-छोटे ब्लेड बालकनी के उस पतले से दरवाजे से छनकर आ रही रोशनी में सम्मोहक ढंग से चमक रहे थे, जो कभी खुल नहीं रहा था। बिस्तर की चादरें पसीने से तर-बतर होकर उसकी कमर के चारों ओर गुच्छों में सिमट गई थीं। उसने अपनी बनियान उतारकर उसे गेंद की तरह गोल किया और मच्छरदानी से बाहर फेंक दिया। अब वह सूती बॉक्सर शॉर्ट्स के अलावा पूरी तरह नंगा था।
सड़क के उस पार हो रही शादी में जनरेटर की आवाज़ अभी भी गूंज रही थी। संगीत अब और भी तेज़ लग रहा था। लेकिन किसी तरह, इतने शोर के बावजूद, उसे मच्छरों की भिनभिनाहट साफ़ सुनाई दे रही थी, जो बिस्तर के चारों ओर धैर्यपूर्वक भिनभिना रहे थे, छेद तलाश रहे थे, और हर बार जब हाथ या पैर कपड़े से छूता तो उत्तेजित हो जाते थे। जल्द ही वह यह नहीं बता पा रहा था कि भिनभिनाहट मच्छरदानी के अंदर थी या बाहर; उसके अंगों में झुनझुनी मच्छरों की अधूरी खोजों के कारण थी या गीली चादरों की रगड़ के कारण।
वह गद्दे पर लेट गया और स्थिर रहने की कोशिश करने लगा। अपने हाथ-पैर फैलाकर वह इंतज़ार कर रहा था - यह जानने के लिए कि क्या वे सचमुच जाल के अंदर हैं; क्या उसकी सूजी हुई त्वचा उसे उनके काटने का एहसास करा पाएगी।
गीले कपड़े पर लेटे रहना, निमंत्रण, आलिंगन और लालसा की उस सहज खुली मुद्रा में फैले रहना, अजीब तरह से अंतरंग था। जब उसने बिस्तर पर लेटे अपने शरीर को देखा, तो वह यह नहीं बता सका कि वह उनके प्रकट होने का इंतज़ार कर रहा था, या वह स्वयं को उनके सामने प्रकट कर रहा था: स्वयं को उन सूक्ष्म और बारीक तरीकों से प्रदर्शित कर रहा था जिन्हें केवल वे ही देख सकते थे, समझ सकते थे, क्योंकि केवल उन्हीं की आँखें थीं जो संपूर्ण को नहीं बल्कि उसके प्रत्येक भाग को, उसकी विशिष्टता में, देखने के लिए बनी थीं। अनजाने में ही उसने अपने कंधे झुका लिए, अपनी पीठ को मोड़ लिया, स्वयं को अर्पित कर दिया, यह जानने के लिए प्रतीक्षा कर रहा था कि वे उसे सबसे पहले कहाँ स्पर्श करेंगे, कहाँ उसे उनके काटने की झनझनाहट महसूस होगी, उसकी छाती पर या उसके पेट पर, उसकी बांह की मांसपेशियों पर या उसकी कोहनी के खुरदुरे हिस्से पर।
पंखा धुंधला सा हो गया; मच्छरदानी दूधिया धुंध में गायब हो गई। अब वह उसके बाहर तैर रहा था, अंदर देख रहा था, उन लोगों को जिन्हें वह जानता था, बहुत अच्छी तरह जानता था, भले ही सिर्फ किताबों और कागजों के माध्यम से। और अब वह फिर से

अंदर था, मच्छरदानी के अंदर; वह भी उनमें से एक था, अस्पताल की सख्त चारपाई पर लेटा हुआ, नग्न, अंग्रेज डॉक्टर को मच्छरों से भरी एक टेस्ट ट्यूब को मच्छरदानी में डालते हुए देख रहा था। उसकी मुट्ठी में अभी भी वे सिक्के थे जो उसे अस्पताल के द्वार पर दिए गए थे। उसने उन्हें कसकर पकड़ रखा था, उनके स्पर्श, उनकी तसल्ली का आनंद ले रहा था; वे छूने में इतने ठंडे, इतने सख्त थे; उन्होंने सब कुछ इतना सरल, इतना साफ बना दिया था: मुट्ठी भर सिक्के, एक रुपया, उस चीज को सौंपने के लिए जो उसके खून में रहती थी, उसकी सुरक्षा के लिए, डॉक्टर को।
अब उसे अपने बिस्तर के चारों ओर चेहरे दिखाई दे रहे थे, मच्छरदानी की सतह के पार सरकंडों की तरह लहरों की तरह, ऐसे चेहरे जो उसे देख रहे थे, उसके शरीर का अध्ययन कर रहे थे, जो वहाँ अपनी अशक्त नग्न अवस्था में पड़ा था; ऐसे चेहरे जिन्हें वह जानता था, या पहचानता था, एक सफ़ेद बालों वाली महिला जो टिमटिमाते चश्मे से मुस्कुरा रही थी; एक दाँतों के बीच गैप वाला लड़का, हँसता हुआ, बिस्तर के चारों ओर घूम रहा था; एक बूढ़ा आदमी जिसकी आँखों में आँसू थे, अँधेरे में उसे घूर रहा था; एक दुबली-पतली युवती, अपने दोस्त का हाथ थामे हुए। वे नर्सों और डॉक्टरों के सहायकों की तरह चिंता के भाव से उसके बिस्तर के चारों ओर खड़े थे, उसके बेहोशी की हालत में डूबने का इंतज़ार कर रहे थे।
और अब दाढ़ी वाला अंग्रेज फिर से प्रकट होता है, सफेद कोट पहने, सिगार पीते हुए, आधा दर्जन टेस्ट ट्यूब लिए हुए; वह एक छोटी तितली पकड़ने वाली जाली से अंदर हाथ डालता है, उसे बाहर निकालता है और कुशलता से एक भरे हुए मच्छर को टेस्ट ट्यूब में फंसा लेता है, और रुमाल से लिपटे अंगूठे से ट्यूब का मुंह ढक देता है। वह टेस्ट ट्यूब को ऊपर उठाता है और दूसरों को दिखाता है और वे ताली बजाते हैं; वे उत्साहित हैं, उनका हौसला बढ़ाते हैं।
अंग्रेज ने सिगार का ज़ोरदार कश लिया और टेस्ट ट्यूब में धुआं छोड़ा; कीड़ा मर गया, वह नन्हा भिनभिनाता जीव जो उसके खून को अपने अंदर लिए हुए था। डॉक्टर ने उसे ऊपर उठाया और दूसरों को दिखाया, वे उत्सुकता से उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़े; वे खुद देखना चाहते थे; उसके मांस का यह टुकड़ा, और उनकी उत्सुकता में टेस्ट ट्यूब उनके हाथों से फिसलकर फर्श पर गिर गई, चकनाचूर हो गई, जिससे कमरे में कांच के टूटने की हल्की सी झनझनाहट गूंज उठी।
मुरुगन अचानक सीधा बैठ गया, उसके चेहरे से पसीना बह रहा था, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह सपने में है या जाग रहा है। मच्छरदानी में मच्छर भिनभिना रहे थे; वह उन्हें अपने बिस्तर को दो भागों में बांटती रोशनी की पतली सी किरण में धूल के कणों की तरह नाचते हुए देख सकता था। उसका पूरा शरीर जलने जैसा लग रहा था, जगह-जगह मच्छरों के काटने के निशान थे। वह नींद में खुद को बुरी तरह खुजला रहा था; उसे अपने नाखूनों और चादर पर खून दिखाई दे रहा था।
वह बिस्तर से उठा और कमरे में इधर-उधर घूमते हुए जोर-जोर से खुजली करने लगा। हवा में उसके पसीने की दुर्गंध फैली हुई थी। उसने दरवाजा खोला और बालकनी में कदम रखा।
नीचे की सड़क अब खाली थी, लेकिन सड़क के उस पार वाली इमारत में जनरेटर

अभी भी चल रहा था। शादी के प्रवेश द्वार का मेहराब पहले से कहीं अधिक चमकदार लग रहा था, जिससे सड़क रोशनी से जगमगा रही थी। कामगारों की टोलियाँ प्रवेश द्वार से लगातार अंदर-बाहर आ-जा रही थीं और बाँस की हाथगाड़ियों में तह करने वाली कुर्सियों और मेजों के ढेर लाद रही थीं।
अचानक, टायरों की तेज़ आवाज़ के साथ, एक टैक्सी रॉडन स्ट्रीट के कोने से तेज़ी से आई और तीसरे नंबर के पुराने बंगले के दरवाज़े पर रुक गई। साड़ी पहने एक महिला बाहर निकली। वह मुरुगन से इतनी दूर थी कि वह उसका चेहरा नहीं देख सका, लेकिन शादी के मेहराब से आती रोशनी इतनी तेज़ थी कि उसे उसके बालों में सफेद रंग की एक लकीर की झलक मिल गई। उसने अपने पर्स से चाबी निकाली, दरवाज़ा खोला और अंदर चली गई।
मुरुगन ने एक मिनट इंतज़ार किया कि क्या वह फिर बाहर आएगी, और फिर बेडरूम में वापस चला गया। वह बिस्तर पर लेट ही रहा था कि उसे पास ही कहीं से दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुनाई दी। बिस्तर से उठकर उसने गलियारे में झाँका। फ्लैट में अँधेरा और सन्नाटा था। उसने एक टॉर्च ली और ड्राइंग रूम से होते हुए श्रीमती अरा-टूनियन के बेडरूम की ओर चल पड़ा। बंद दरवाज़े के पास एक घुटने के बल बैठकर उसने अपना कान दरार पर लगाया। उसे अंदर से एक धीमी, लयबद्ध आवाज़ सुनाई दी: जैसे हल्की खर्राटे की आवाज़ - या शायद पंखे की। पक्का कहना मुश्किल था।
मुरुगन हिचकिचाया, यह सोचकर कि क्या उसे श्रीमती अराटूनियन की सेहत की जाँच कर लेनी चाहिए। उसने ऐसा न करने का फैसला किया और दबे पांव तेज़ी से अपने बेडरूम में लौट गया। जैसे ही वह दरवाज़े से बाहर कदम रखने वाला था, उसे अपने दाहिने पैर में तेज़ चुभन वाला दर्द महसूस हुआ।
धीरे से बड़बड़ाते हुए, वह जाँच करने के लिए झुका। उसकी एड़ी में एक छोटा सा घाव था। किसी नुकीली चीज़ से कट गया था, जो ज़मीन पर पड़ी थी और हल्की रोशनी में चमक रही थी।
उसने उसे उठाया और देखा। वह पतले कांच का एक इंच लंबा टुकड़ा था, संभवतः किसी नली का।

अध्याय 23

एक बज चुका था जब सोनाली ने रोमेन को ढूंढने का फैसला किया: वह एक जगह स्थिर नहीं रह सकती थी और सोने का तो सवाल ही नहीं था।
सौभाग्य से, ठीक उसी समय, उसकी एक पड़ोसी पार्टी से टैक्सी में घर लौटी। सोनाली ने झट से अपना हैंडबैग उठाया और बिना सोचे-समझे टैक्सी में कूद पड़ी। अचानक ही, विकेट क्लब के गेट पर रोमेन की सुनी हुई बातचीत याद करके, उसने टैक्सी ड्राइवर को रॉबिन्सन स्ट्रीट जाने को कहा।
उसे समझ नहीं आ रहा था कि रात के इस समय रोमेन वहाँ क्या कर रहा होगा। फिर भी, जब टैक्सी पुराने घर के द्वार पर रुकी, तो उसे एक अजीब सी अनुभूति हुई कि

रोमेन अंदर है। सौभाग्य से, कुछ दिन पहले वह चाबियों का एक गुच्छा उसके फ्लैट पर छोड़ गया था: उसने उसे अपने पर्स में रख लिया था और वापस देना भूल गई थी। उसे किसी तरह गेट की चाबी मिल गई, लेकिन अंदर जाने के बाद उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करे। वह बजरी वाले रास्ते से होते हुए बरामदे तक गई और दरवाजे से अंदर झाँका। अंदर बहुत अँधेरा था; उसे दूर तक कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। उसने हाथों को जोड़कर पुकारा: 'रोमन, क्या तुम वहाँ हो?'
जब कोई जवाब नहीं मिला तो उसे आश्चर्य नहीं हुआ: बगल वाले घर में जनरेटर से बहुत तेज आवाज आ रही थी। उसे खुद अपनी आवाज भी मुश्किल से सुनाई दे रही थी।
वह हमेशा अपने पर्स में बिजली कटौती के लिए एक छोटी टॉर्च रखती थी। उसने टॉर्च निकाली और सामने फैले विशाल गलियारे में रोशनी डाली। रोशनी की किरण धीरे-धीरे अंधेरे में घूमती हुई, इधर-उधर बिखरे गद्दों, चारपाइयों और पुराने खाना पकाने के बर्तनों के ढेरों को रोशन करती हुई आगे बढ़ी।
कुछ महीने पहले, रोमेन सोनाली को अपने नए घर को दिखाने के लिए एक बार यहाँ लाया था। उस समय दालान लोगों से भरा हुआ था, जो खाना बना रहे थे, खा रहे थे, सो रहे थे और अपने बच्चों को खाना खिला रहे थे। पूरा निर्माण दल घर के जर्जर ढांचे में रह रहा था। वे नेपाल से आए थे और लगभग तीस लोग थे, जिनमें वे बूढ़ी औरतें शामिल नहीं थीं जिन्हें बच्चों की देखभाल के लिए लाया गया था। वे पीछे बने पक्के आंगन में खाना बनाते थे और दालानों में और बरामदे के नीचे सोते थे, जहाँ भी जगह मिलती थी, गद्दे और चारपाइयाँ बिछा लेते थे। रोमेन ने सोनाली को बताया था कि वे सब रिश्तेदार थे, बेटे, पोते, बहुएँ, बेटों की पत्नियाँ, माताएँ, चाचियाँ: एक पूरा गाँव जो एक जगह से दूसरी जगह बसा हुआ था।
उसने एक बार फिर चारों ओर देखा, गलियारे के धुंधले अंधेरे में मंडराती बेचैन छायाओं में झाँकते हुए। उनका सारा सामान वहीं था, जैसा उसे याद था, लेकिन उनमें से कोई भी नज़र नहीं आ रहा था।
दहलीज पार करते ही उसने कुछ हिचकिचाते हुए कदम हॉल में बढ़ाए। तभी उसे एक अजीब सी गंध आई और वह अचानक रुक गई। पहले तो उसे धुएं जैसी गंध आई और वह घबरा गई, उसे लगा कि कहीं अंदर आग तो नहीं लगी है। उसने फिर से हवा को सूंघा और अगरबत्ती की विशिष्ट गंध, जलते हुए कपूर की मीठी, तीखी गंध से चौंक गई। यह गंध पीछे से कहीं से हॉल में बादलों की तरह फैल रही थी।
वह अंधेरे में कुछ और कदम आगे बढ़ी, और अब उसके कान, जो बगल के घर से आ रही मशीनों की गड़गड़ाहट के आदी हो चुके थे, एक और आवाज़ सुनने लगे: एक खोखली, लयबद्ध आवाज़ जो जनरेटर की धड़कन से मुश्किल से अलग पहचानी जा सकती थी - ढोल की आवाज़, जो पूजा और त्योहारों के दिनों में आम थी, जब पूरे शहर में पूजा के दौरान ढोल बजते थे।
जैसे-जैसे सोनाली हॉल के पीछे स्थित भव्य औपचारिक सीढ़ियों की ओर बढ़ी, आवाज़ तेज़ होती गई। अचानक घुमावदार रेलिंग उसके सामने आ गईं, जिनकी टूटी-फूटी रेलिंग धुएँ से घिरी हुई थीं। टॉर्च की रोशनी ऊपर की ओर डालते हुए उसने देखा

कि ऊपर से सीढ़ियों में धुआँ भर रहा था। धुआँ उसके चारों ओर घना छा गया, जिससे टॉर्च की रोशनी दूधिया सफेद चमक में बदल गई।
सीढ़ियाँ जंग खाकर जर्जर हो चुकी थीं; पिछली बार जब उसने उन्हें देखा था, तब मज़दूरों ने उन्हें तोड़कर सिर्फ़ स्टील के मचान तक सीमित करने का काम शुरू ही किया था, ताकि उन्हें उनके पुराने वैभव में बहाल किया जा सके। उस समय वे महोगनी और लोहे की बनी भव्य घुमावदार संरचना में ऊपर की ओर जाती थीं। 'ढांचा अभी भी मज़बूत है,' रोमेन ने उससे कहा था। वह संभलकर, एक पायदान से दूसरे पायदान पर कदम रखते हुए उसके पीछे-पीछे चली थी और जब वह बिना गिरे ऊपर पहुँच गई तो उसने खुद को भाग्यशाली समझा था। अब उसे धुएँ में लिपटती हुई, एक विशाल बेल की तरह, देखकर वह झिझकी और अपनी नम आँखों को पोंछा। फिर, मन बना कर, उसने रेलिंग को पकड़ा और खुद को कुछ सीढ़ियाँ ऊपर खींच लिया। वह एक स्टील की रेलिंग पर खड़ी हुई और टॉर्च को आगे की ओर तब तक चमकाया जब तक कि वह कुछ सीढ़ियाँ ऊपर, सड़ी हुई लकड़ी के तख्ते के नीचे पड़े जंग लगे धातु के एक टुकड़े पर नहीं पड़ी। उसे अब याद आया कि रोमेन ने यही करने को कहा था: लकड़ी पर पैर मत रखना - स्टील के फ्रेम पर ही रहना। वह आगे झुकी और कूदी। उसका पैर फिसल गया लेकिन उसने रेलिंग को पकड़ लिया। नीचे न देखने की कोशिश करते हुए, उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और गहरी साँसें लीं, खुद को संभालने की कोशिश कर रही थी। वह टॉर्च को अपने दाँतों के बीच दबाकर, हाथों और पैरों दोनों का इस्तेमाल करते हुए, केकड़े की तरह अगले पायदान पर चढ़ गई। वह अगले कुछ कदम भी इसी तरह चढ़ी, सीढ़ियों के घुमाव को पार करते हुए। कुछ और कदम चढ़ने के बाद वह साँस लेने के लिए रुकी और टॉर्च को आगे की ओर किया। सीढ़ियों के शीर्ष पर स्थित लैंडिंग अब कुछ ही गज दूर थी। ढोल की आवाज़ बहुत करीब लग रही थी; वह धातु में, अपने हाथों और पैरों के नीचे, उसकी गूँज महसूस कर सकती थी। जब उसका हाथ सीढ़ियों तक पहुंचा तो उसने मुंह से टॉर्च निकालकर एक चबूतरे पर रख दी। उसने खुद को ऊपर उठाया और फर्श पर गिर पड़ी।
अब ढोल की आवाज़ उसके चारों ओर गूंज रही थी, इतनी तेज़ और नज़दीक कि वह यह नहीं बता पा रही थी कि आवाज़ किस दिशा से आ रही है। जैसे ही वह देखने के लिए मुड़ी, उसकी साड़ी मशाल से टकराई और उसे गिरा दिया। वह कुछ इंच लुढ़की, उसके हाथ से बच निकली और सीढ़ियों के किनारे से नीचे गिर गई। उसने उसे सीढ़ियों से नीचे जाते हुए देखा, उसकी रोशनी हॉल में घूमती रही जब तक कि वह ज़मीन से टकराकर बुझ नहीं गई।
सिसकते हुए, वह उठ बैठी। उसने अपने आस-पास के फर्श को थपथपाना शुरू किया, खुद को संभालने की कोशिश की, चारों ओर घूमी और टूटे हुए लकड़ी के टुकड़ों पर अपने हाथ पटके। फिर उसे एहसास हुआ कि उसे पता ही नहीं चल रहा कि वह किस दिशा में देख रही है - सीढ़ियों की ओर या उनसे दूर: वह पूरी तरह से दिशाहीन हो चुकी थी।
उसे अपने सीने में जकड़न महसूस हो रही थी। वह जानती थी कि अगर वह फर्श पर और देर तक पड़ी रही, पसीने और धुएं से उसकी आंखें चौंधिया गईं और शोर से

उसके कान बहरे हो गए, तो वह घबरा जाएगी। वह खड़ी हुई और धुएं के घूमते बादलों के बीच कहीं आगे एक हल्की नारंगी रोशनी दिखाई दी। उसने उसकी ओर एक कदम बढ़ाया और फिर अपने हाथों और घुटनों के बल बैठ गई। उसे सड़ी हुई ज़मीन पर चलने का भरोसा नहीं था, इसलिए उसने रेंगना शुरू कर दिया, धीरे-धीरे उस रोशनी की ओर बढ़ती हुई, चुभते धुएं से बचने के लिए उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।
कुछ कदम आगे बढ़ने पर उसने देखा कि एक मेहराबदार दरवाजे से रोशनी आ रही है। अब अचानक उसे पता चल गया कि वह कहाँ है: वह घर के सबसे बड़े कमरे के प्रवेश द्वार के सामने खड़ी थी, एक विशाल लकड़ी के पैनल वाला, शीशों से सजा कमरा जो कभी स्वागत कक्ष हुआ करता था। रामेन ने उसे यह कमरा दिखाने के लिए ज़िद की थी - उसने कहा था कि यह घर का गौरव है और वह इसे इसके पुराने स्वरूप में बहाल करने जा रहा है।
वह मेहराब के और करीब गई और उसके सामने धुंधली रोशनी में आकृतियाँ उभरने लगीं। वे ज़मीन पर पालथी मारकर बैठे थे, उनकी पीठ उसकी तरफ थी और उनका चेहरा दूसरी दिशा में था। उसने पहले कुछ लोगों के सिर देखे, फिर और, और, जब तक कि पूरा कमरा लोगों से भर नहीं गया। वे कुछ मंत्र जप रहे थे और कुछ लोग ढोल बजा रहे थे जबकि अन्य छोटे-छोटे झांझ बजा रहे थे।
वह आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी और पीछे हटने का भी कोई रास्ता नहीं था; टॉर्च के बिना वह नीचे जाने का रास्ता कभी नहीं खोज पाती। तभी उसे वह बात याद आई जो रोमेन ने अपनी मुलाक़ात के दौरान उसे दिखाई थी: स्वागत कक्ष के पीछे एक छोटी सी ऊँची गैलरी थी, जिसे रोमेन ने 'संगीत गैलरी' कहा था। वह उसे ऊपर ले गया था, ताकि उसे दिखा सके कि ऊपर से कमरा कितना विशाल दिखता है। अब उसने खुद को शांत करने की कोशिश की, उस दिन को याद करने की कोशिश की, जो कई महीने पहले की बात थी। वे एक संकरी, खड़ी सीढ़ी चढ़कर गैलरी तक पहुँचे थे, जो लगभग सीढ़ी जैसी थी। सोनाली ने खुद को शांत करने की कोशिश की ताकि उसे याद आ सके कि वे सीढ़ियाँ कहाँ थीं।
वह एक गज और आगे बढ़ी और उसे अपने दाहिनी ओर एक छोटे से प्रतीक्षालय का प्रवेश द्वार दिखाई दिया। धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ते हुए, वह प्रवेश द्वार के पास पहुँची और अंदर झाँका। दूर कोने में, उसने गैलरी की ओर जाने वाला द्वार देखा, जो कमरे के मखमली अंधेरे में नारंगी रंग से चमक रहा था। जहाँ तक वह देख सकती थी, प्रतीक्षालय में कोई भी व्यक्ति नहीं था।
वह कोने से निकलकर खड़ी हो गई। फिर वह एक हाथ फैलाकर दीवार के सहारे धीरे-धीरे आगे बढ़ी, जब तक कि उसका हाथ सीढ़ी की ठंडी धातु से नहीं टकरा गया। वह पीछे हटी और गैलरी के प्रवेश द्वार की ओर देखा: अब वह सीधे उसके ऊपर था। उसे केवल धुएं के बादलों से छनकर आती आग की टिमटिमाती नारंगी रोशनी दिखाई दे रही थी।
उसने सीढ़ी को मजबूती से पकड़ा और तेजी से ऊपर चढ़ गई। ऊपर पहुँचते ही धुआँ अचानक उसके चेहरे पर उमड़ पड़ा और फेफड़ों में घुस गया। उसने खाँसी रोकने की कोशिश में अपनी साड़ी का किनारा मुँह में ठूँस लिया और अंदर देखा।

संकरी, कमजोर सी दिखने वाली गैलरी खाली थी। अपने पैर ऊपर खींचकर, वह नीचे बैठ गई और गैलरी के फर्श पर लेट गई। उसने गौर किया कि यहाँ धुआँ नीचे से भी ज़्यादा घना था; छत से टकराकर, वह घने बादलों की तरह गैलरी में घूम रहा था। अपना चेहरा नीचे झुकाकर, उसने अपनी साड़ी को अपनी नम आँखों पर दबा लिया। उसकी आँखें इतनी जल रही थीं कि वह जानती थी कि अब वह उन्हें कुछ सेकंड से ज़्यादा देर तक खुला नहीं रख पाएगी।

जब जलन थोड़ी कम हुई, तो उसने अपना सिर किनारे पर झुकाया और नीचे देखा। उसे दर्जनों लोगों के सिर दिखाई दिए, कुछ पुरुष, कुछ महिलाएं, जवान और बूढ़े, सब एक साथ सटे हुए थे। उनके चेहरे धुएं और टिमटिमाती आग की रोशनी से ढके हुए थे, लेकिन उसने कुछ झुलसे हुए नेपाली चेहरों को देखा जिन्हें उसने पहले भी देखा था, जब रामेन पिछली बार उसे घर लाया था। बाकी लोग अजीबोगरीब लोगों का समूह लग रहे थे: पैबंद लगी लुंगी पहने पुरुष, सस्ते नायलॉन की साड़ियों में रंग-बिरंगी कुछ महिलाएं, कुछ युवा छात्र, कई सलीके से दिखने वाली मध्यमवर्गीय महिलाएं - ऐसे लोग जिन्हें आप कभी एक साथ देखने की उम्मीद नहीं करेंगे।

धुएँ से आँखें सिकोड़ते हुए सोनाली ने उनकी निगाहों का पीछा करते हुए कमरे के दूसरे छोर पर जल रही आग पर पड़ी: टूटे-फूटे सीमेंट के तवे से बने एक अंगीठी में कोयले का ढेर लाल रंग से चमक रहा था। तभी उसे एक झटका लगा: आग के चारों ओर मौजूद चेहरों के बीच उसने एक जाना-पहचाना चेहरा देखा। उसने दोबारा देखा: टी-शर्ट पहने एक दुबला-पतला लड़का था। सोनाली चौंक गई: यह वही लड़का था जो पिछले कुछ महीनों से उसके नौकर के कमरे में रह रहा था, इसमें कोई शक नहीं था। वह मुस्कुरा रहा था और अपने बगल वाले व्यक्ति से कुछ कह रहा था।

सामने एक छोटा सा खाली स्थान था और लड़का और उसके आसपास के लोग बीच-बीच में उसमें हाथ डालकर किसी चीज़ को छूते रहते थे। सोनाली देख नहीं पा रही थी कि वह क्या था: कई लोगों के सिर एक-दूसरे से सटे होने के कारण उसकी नज़र छुपी हुई थी। भीड़ उस चीज़ के चारों ओर घनी तरह से जमा थी; कमरे में मौजूद हर कोई उस जगह को घूर रहा था।

सोनाली ने अपनी दर्द से भरी आँखें बंद कर लीं और अपना सिर ज़मीन पर गिरा दिया। उसकी साड़ी पूरी तरह भीगी हुई थी और वह अपने अंगों को मुश्किल से हिला पा रही थी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे ज़मीन उसके पैरों तले घूम रही हो: उसे पता था कि वह बेहोश होने के कगार पर है।

तभी भीड़ में हलचल मच गई और सोनाली ने मजबूर होकर दोबारा नीचे देखा। परछाई से एक आकृति निकली: वह एक महिला थी और उसने बेहद सादे कपड़े पहने थे – कड़क इस्त्री की हुई साड़ी और बालों में सफेद दुपट्टा। उसका कद छोटा और उम्रदराज था और सोनाली को लगा कि वह अधेड़ उम्र की होगी। वह उसे बहुत जानी-पहचानी लग रही थी; सोनाली को यकीन था कि वह कोई जानी-पहचानी शख्सियत है जिसे उसने सालों से नहीं देखा था।

उसके एक कंधे पर एक साधारण सूती झोला टंगा हुआ था, जैसा कि हर छात्र कॉलेज जाते समय ले जाता है। उसके बाएं हाथ में एक बांस का पिंजरा था। वह आग के पास

बैठ गई और थैला और पिंजरा अपने बगल में रख दिया। फिर, फुर्ती से और कुशलता से थैले में हाथ डालकर उसने दो स्केलपेल और दो कांच की प्लेटें निकालीं।
उसने सफेद कपड़े पर प्लेटें और स्केलपेल अपने सामने रखे और फिर से अपने थैले में हाथ डाला। उसने मिट्टी की एक छोटी सी मूर्ति निकाली और उसे अपने माथे से छूकर अपने पास रख दिया। फिर उसने हाथ बढ़ाकर आग के सामने रखी किसी वस्तु पर हाथ रखा और मुस्कुराई - उसके चेहरे पर एक असाधारण मिठास छा गई।
ऊँची आवाज़ में, महिला ने भीड़ से पुरानी देहाती बंगाली में कहा: 'समय आ गया है, प्रार्थना करें कि हमारे लाखन के लिए एक बार फिर सब कुछ अच्छा हो।'
अचानक सोनाली को एक भयानक आशंका ने जकड़ लिया। उसने हिम्मत जुटाकर अपना सिर उठाया और आग के पास की जगह में फिर से देखा। उसे ज़मीन पर पड़ा एक शव दिखाई दिया।
ढोल की थाप तेज होती चली गई: चमकदार धातु की एक चमक दिखाई दी और खून की एक माला हवा में उड़कर आग पर गिर पड़ी।
सोनाली का सिर ज़मीन पर जा गिरा और चारों ओर अंधेरा छा गया।

अगले दिन

अध्याय 24

सुबह के सात बजकर पंद्रह मिनट हो चुके थे और उर्मिला की सहनशक्ति लगभग खत्म हो चुकी थी। वह रसोई में मसाले पीस रही थी, पसीने की बूँदें उसके चेहरे से टपककर उसकी तेल से सनी साड़ी पर गिर रही थीं। उसे उठे हुए एक घंटा हो चुका था: उसने अपने माता-पिता को नाश्ता दिया था; रसोई साफ की थी; अपने भतीजे और भतीजी को खाना खिलाया और नहलाया था; अपने छोटे भाई की दोपहर के फुटबॉल मैच की यूनिफॉर्म धोई थी। अगर उसे ग्रेट ईस्टर्न होटल में प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए समय पर पहुँचना था, तो उसे एक घंटे के भीतर निकलना ही था। लेकिन अभी भी मछली का काम बाकी था, और अभी तक कोई मछली बेचने वाला नज़र नहीं आ रहा था।
उर्मिला रसोई की खिड़की से बाहर देख रही थी और अंदाज़ा लगाने की कोशिश कर

रही थी कि गरियाहाट बाज़ार जाकर वापस आने में उसे कितना समय लगेगा। वह जानती थी कि अगर कोई चमत्कार नहीं हुआ तो वह मुसीबत में पड़ जाएगी: अगर उसे बाज़ार जाना ही पड़ा तो कम से कम आधा घंटा लग जाएगा, मछली चुनने, मोलभाव करने और बाकी सब कामों में – इससे बचने का कोई रास्ता नहीं था।
फ्लैट तीसरी मंजिल पर था, जो चारों ओर से बहुमंजिला इमारतों से घिरा हुआ था। रसोई की खिड़की ही फ्लैट का एकमात्र हिस्सा थी जहाँ से बालकनी के अलावा बाहर का नज़ारा दिखता था। वहाँ से शहर का एक छोटा सा हिस्सा दिखाई देता था: नीचे पार्क से दक्षिण कोलकाता की ऊबड़-खाबड़, फैली हुई गगनचुंबी इमारतें दूर तक फैली हुई दिखाई देती थीं – काई से काली पड़ी छतों का एक दृश्य जो ढलते मानसून के धुंधले आसमान में गायब हो रहा था।
नीचे पार्क में, हमेशा की तरह आधे दर्जन क्रिकेट मैच चल रहे थे। उसे लकड़ी और चमड़े की थपथपाहट सुनाई दे रही थी और कुछ ऊंघती हुई आवाज़ें हौसला बढ़ा रही थीं। पार्क के दूसरे कोने में, एक बॉडीबिल्डिंग स्कूल की टिन की छत के नीचे, आधे दर्जन आदमी क्लब घुमा रहे थे और पुश-अप्स कर रहे थे। थोड़ी दूर पर, रशबेहारी एवेन्यू में भीड़भाड़ शुरू होने की उम्मीद में चहल-पहल बढ़ रही थी। लेकिन सड़क के किनारे अभी भी अपेक्षाकृत खाली थे, सिवाय कुछ खरीदारों के जो गरियाहाट बाज़ार से शॉर्टकट से जल्दी-जल्दी लौट रहे थे, जिनके नायलॉन के शॉपिंग बैगों के ऊपर सब्जियों के गुच्छे लटके हुए थे।
मुख्य सड़क से कुछ सौ गज दूर, गरियाहाट बाज़ार जाने का शॉर्टकट रास्ता मुड़ता था। यह एक लंबी, संकरी गली थी, जिसकी पहचान एक पुराने ज़माने का, फैला हुआ मकान था, जिसमें बजरी का रास्ता, खंभों वाला बरामदा और एक सुव्यवस्थित बगीचा था। रसोई से यह मकान साफ़ दिखाई देता था: उर्मिला की नज़र अक्सर रसोई में काम करते समय इस पर पड़ती थी। यह रोमेन हलदर का घर था।
तभी दरवाजे की घंटी बजी।
'उर्मी, घंटी बज रही है,' उसकी माँ ने अपने कमरे से आवाज़ लगाई। 'क्या तुम्हें सुनाई नहीं दे रहा?'
उसके पिता अखबार लेकर बालकनी में बैठे थे और सुबह के पसंदीदा शगल, घोषणाओं वाले कॉलम को देख रहे थे। वे खुद ही जोर-जोर से खबरें पढ़ रहे थे, नामों को ऐसे थूक रहे थे जैसे चबाई हुई मछली की हड्डियां। उन्होंने अखबार को अपने घुटनों पर रखा और ऊपर देखा। 'कौन है?' उन्होंने पुकारा। 'कोई जाकर देख ले।'
कुछ ही देर में उसकी भाभी की आवाज़ उसके कमरे से सुनाई दी: वह अपने बच्चे को दूध पिला रही थी और बिस्तर से उठ नहीं पा रही थी। उसका बड़ा भाई सुबह की ट्रेन पकड़ने के लिए निकल चुका था। उसका छोटा भाई बाथरूम में उंगलियां चटकाते हुए 'डिस्को दीवाना' गा रहा था।
फिर उसकी मां ने अपनी सबसे कोमल, सबसे प्यार भरी आवाज में कहा: 'जाओ और देख लो, उर्मी, अगर तुम नहीं देखोगी तो कोई नहीं देखेगा...'
मैं यहाँ व्यस्त हूँ! वह चीखना चाहती थी। क्या तुम देख नहीं सकते; मैं यहाँ काम पर जाने से पहले चीज़ें तैयार करने में व्यस्त हूँ...?

दरवाजे की घंटी फिर बजी और अब उसका छह साल का भतीजा रसोई में दौड़कर आया और उसकी साड़ी खींचने लगा। 'दरवाजा खोलो, उर्मी-पिशी,' लड़का गाने लगा। 'उर्मी-पिशीकिरनी-पिशी, दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो...'
उसने हल्दी और मिर्च के चटख रंगों से रंगे हुए ओखली की खुरदरी सतह पर भारी मूसल पटका और ज़मीन पर लेटे अपने भतीजे को धक्का देकर आगे बढ़ गई। उसके जाते ही लड़के ने अपने हाथ फैलाए और उसकी साड़ी के निचले हिस्से को पकड़ लिया। उसने उसे कुछ कदम घसीटा और फिर उसकी मुट्ठी पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा।
वह जोर-जोर से रोने लगा और अपने माता-पिता के बेडरूम की ओर दौड़ते हुए चिल्लाया: 'उसने मुझे मारा, उसने मुझे मारा, किर्मी-पिशी ने मुझे मारा...'
जैसे ही उर्मिला ने दरवाजे की कुंडी खोली, उसने अपनी भाभी की चीख सुनी: 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे बेटे को मारने की?'
उसने दरवाजा खोला और देखा कि एक युवक एक बड़ी टोकरी के पास बाहर खड़ा है। उसने उसे पहले कभी नहीं देखा था; वह विक्रेता होने के हिसाब से बहुत छोटा लग रहा था। उसने लुंगी और एक फीकी सी टी-शर्ट पहन रखी थी।
'तू कुतिया,' खुली हुई दहलीज से आती हुई आवाज उर्मिला का पीछा करते हुए बोली। 'क्या तुझे लगता है कि मुझे पता नहीं कि तू हर रात देर से घर आकर क्या कर रही है? मैं तुझे सबक सिखाऊँगी; मैं तुझे अपने बच्चों को पीटना सिखाऊँगी...'
उर्मिला बाहर निकली और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया। शर्मिंदगी से उसकी आवाज़ में तीखापन आ गया और उसने झल्लाकर कहा, 'क्या बात है? तुम्हें क्या चाहिए?'
उस युवक ने मुस्कुराते हुए उर्मिला को देखा, जिससे उसके सामने के दांतों के बीच का चौड़ा गैप साफ दिख रहा था। उर्मिला अचानक शर्मिंदा हो गई, यह सोचकर उसे बहुत बुरा लगा कि उसने अपनी भाभी को एक अजनबी के सामने उसे उकसाने की इजाजत दे दी थी। अनजाने में ही उसने अपने माथे पर हाथ फेर लिया। पिसे हुए मसालों से उसके चेहरे और माथे पर जलन होने लगी और उसका चेहरा दर्द से सिकुड़ गया। उसने जल्दी से अपनी साड़ी के किनारे से अपनी आंखें पोंछीं।
'तुम क्या चाहते हो?' उसने फिर से, अधिक शांत स्वर में कहा।
अब वह युवक टोकरी के बगल में बैठा था। एक और मुस्कान के साथ उसने कागज और प्लास्टिक की एक परत हटाई, जिससे मछलियों का ढेर दिखाई दिया, जो सुबह की रोशनी में चांदी की तरह चमक रहा था।
वह मुस्कुराया। उसने कहा, 'मैं तो बस यह पूछने आया था कि क्या आपको आज सुबह मछली चाहिए, दीदी?' 'बस इतना ही।'

अध्याय 25

'मैंने तुम्हें यहाँ पहले कभी नहीं देखा,' उर्मिला ने मछली की टोकरी के पास घुटने टेकते हुए कहा। उसने मछलियों की जाँच शुरू की, उनके गलफड़े खींचकर देखने लगी - यह

उसकी आदत थी, क्योंकि आज उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह क्या खरीद रही है या कितने में।
युवा मछली विक्रेता ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाते हुए उससे कहा, 'अब मैं नियमित रूप से आऊंगा। एक मछली खरीदकर देखिए: मेरे पास बाजार की सबसे अच्छी मछली है, जो सीधे पानी से ताज़ी निकाली जाती है।'
उर्मिला ने कहा, 'हर मछली बेचने वाला यही कहता है। इसका कोई मतलब नहीं है।'
मछली बेचने वाला भड़क उठा। उसने कहा, 'अगर आपको यकीन नहीं है, तो जाकर पता कर लीजिए। मैं सभी बड़े-बड़े घरों में मछली बेचता हूँ। अरे, क्या आप जानते हैं कि अगली गली में रोमेन हलदार का घर है?'
उर्मिला ने भौंह उठाकर ऊपर देखा।
'मैं आपको बताता हूँ,' उसने गर्व से कहा। 'वे अपनी सारी मछलियाँ मुझसे ही खरीदते हैं। केवल मुझसे: अगर आप चाहें तो जाकर पूछ सकते हैं।'
टोकरी में हाथ डालकर उसने कुछ मछलियों को एक तरफ हटाया। 'देखो, मैं तुम्हें कुछ दिखाता हूँ,' उसने कहा। 'इसे देखो, यह बड़ी सी इलिश मछली? मैं इसे उनके लिए रख रहा हूँ। मैं अभी वहीं जा रहा हूँ। मैंने उनसे कहा था कि मैं आज सुबह उनके लिए कुछ खास लेकर आऊँगा।'
'मैं इसे ले लूंगी,' उर्मिला ने कहा।
मछली बेचने वाले ने सिर हिलाया। 'नहीं,' उसने मुस्कुराते हुए कहा। 'मैं आपको वह वाली नहीं दे सकता: वह उनके लिए है। लेकिन मैं आपको यह दूसरी वाली दूंगा, यह भी उतनी ही अच्छी है - देखिए।'
उर्मिला ने उसे बस औपचारिक सहमति में सिर हिलाया। 'ठीक है,' उसने कहा, 'वही वाली।' उसने उसे मछली काटने को कहा और अपना पर्स लेने अंदर चली गई। जब तक वह वापस आई, मछली बेचने वाले ने उसके लिए एक पैकेट तैयार कर रखा था: उसने मछली को कागज़ के टुकड़ों में लपेटकर एक प्लास्टिक की थैली में भर दिया था।
उर्मिला ने पैकेट देखते ही झुंझलाहट में अपनी जीभ चटकाई। उसने कहा, 'तुम्हें इसे लपेटना नहीं चाहिए था।'
मछली बेचने वाले ने कुछ बहाना बनाया और अपने पैसे गिनने लगा। उर्मिला अंदर चली गई। अब उसके पास समय नहीं था। जल्दी से रसोई में जाकर उसने पैकेट का सारा सामान सिंक में रखी प्लास्टिक की प्लेट पर उलट दिया। मछली के टुकड़े धड़ाम से गिरे और सिंक में बिखर गए। उर्मिला का चेहरा बिगड़ गया: जिस कागज़ में मछली लिपटी थी, वह पूरी तरह गीला हो गया था। उसने मछली के एक टुकड़े को धीरे से छुआ और उसकी उंगली के सिरे पर कागज़ का एक टुकड़ा चिपक गया। उसे हटाने में उसे बहुत मुश्किल हुई; वह चिपचिपे गोंद के गुच्छे में बदल गया था।
घृणा से नाक सिकोड़ते हुए उसने खिड़की से बाहर एक नज़र डाली। रशबेहारी एवेन्यू बसों और मिनीबसों से खचाखच भरा हुआ था, सभी से धुएं के घने बादल निकल रहे थे। प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए ग्रेट ईस्टर्न होटल समय पर पहुंचने के लिए उसके पास आधे घंटे से भी कम समय था। उसने तेज़ी से सफाई शुरू कर दी।

कुछ मिनटों बाद उसे एहसास हुआ कि रगड़ने से मामला और बिगड़ रहा है, कागज मछली के टुकड़ों में और गहराई तक धंस रहा है। वह पूरी तरह से चिढ़कर हाथ ऊपर उठा बैठी और अपनी उंगलियों से कागज का एक टुकड़ा छील लिया। यह पतला, सस्ता ज़ेरॉक्स पेपर था: कलकत्ता की कॉपिंग रूम में बड़ी मात्रा में जमा होने वाला कागज।

तो अंत में सब कुछ यहीं आकर खत्म होता है, उसने सोचा, मछली लपेटने के काम में।

उसने दोबारा प्लास्टिक की थैली पर नज़र डाली और देखा कि वह अभी भी कागज़ों से भरी हुई थी। कुछ कागज़ सूखे थे; खून अभी तक उन तक नहीं पहुँचा था। उसने कागज़ों को काउंटर पर पलटा और एक कागज़ को हथेली के पिछले हिस्से से दबाकर सीधा किया।

यह एक बड़े आकार की, कानूनी आकार की, उत्तम अंग्रेजी अखबार के एक पृष्ठ की फोटोकॉपी थी। फ़ॉन्ट अपरिचित और पुराने ज़माने का था: उसने एक नज़र में ही जान लिया कि यह पृष्ठ कलकत्ता में छपने वाले किसी भी मौजूदा अंग्रेजी अखबार का नहीं है। उसने शेल्फ पर उसके लिए जगह बनाई और उसे फैला दिया।

छपाई इतनी बारीक थी कि उसे पढ़ने में दिक्कत हो रही थी। उसने बत्ती जलाई और फिर से देखा, सहज ही अखबार का नाम ढूंढने के लिए ऊपरी हाशिये की ओर मुड़ी। मुखपृष्ठ पर सुंदर गॉथिक अक्षरों में 'द कोलोनियल सर्विसेज गजट' लिखा था। नाम के बगल में तिथि लिखी थी: 'कलकत्ता, 12 जनवरी, 1898।'

पृष्ठ आठ स्तंभों में विभाजित था, जिनमें से प्रत्येक में दर्जनों सामान्य प्रकार की घोषणाएँ थीं: 'डी. एटवाटर, एस्क्वायर का अल-मोरा में राजस्व उप मजिस्ट्रेट के रूप में तबादला हो गया है', 'अमुक व्यक्ति कलकत्ता बंदरगाह प्राधिकरण में अपना पद छोड़कर सिंगापुर में सहायक हार्बरमास्टर बनने जा रहे हैं' इत्यादि। उर्मिला ने सरसरी तौर पर उसे पढ़ा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि कोई इस तरह की पुरानी नौकरशाही नियुक्तियों के रिकॉर्ड की नकल करने की जहमत क्यों उठाएगा। वह उसे कूड़ेदान में फेंकने ही वाली थी कि उसने देखा कि एक घोषणा को स्याही से रेखांकित किया गया था।

पृष्ठ को ध्यान से देखते हुए उसने पढ़ा: 'सर्जन-कर्नल डी. डी. कनिंघम, प्रेसिडेंसी जनरल अस्पताल, कलकत्ता के लिए 10-15 जनवरी की छुट्टी स्वीकृत ...'

उर्मिला ने खाने की मेज के ऊपर लगी घड़ी पर एक सरसरी नज़र डाली। अब उसके पास बिल्कुल भी समय नहीं था, एक मिनट भी नहीं; अगर अगले दस मिनट में मछली नहीं पकती तो वह प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए देर हो जाएगी।

उसे पता था कि उसे खाना बनाना शुरू कर देना चाहिए। लेकिन इसके बजाय उसने खुद को प्लास्टिक बैग में बचे हुए कागज के दो और टुकड़े निकालते हुए पाया। अगला पृष्ठ पहले पृष्ठ से भी अधिक पेचीदा था। यह एक कागज की प्रतिलिपि थी जिस पर एक जटिल और अपरिचित लोगो के नीचे नामों की सूची थी। लोगो को प्रकाश में उठाकर देखने पर उसने पाया कि उस पर 'साउथ-वेस्टर्न रेलवेज़' लिखा था। इसके नीचे हस्तलिखित शब्द थे: '10 जनवरी 1898, यात्री सूची, डिब्बा 8'। इसके

नीचे नामों की एक सूची थी। उर्मिला ने उन नामों पर सरसरी नजर डाली; वे ब्रिटिश नाम लग रहे थे। उसने उनमें से कुछ नाम मन ही मन पढ़े और धीरे-धीरे उन्हें दोहराते हुए कहा: मेजर एवलिन उर्कहार्ट, डी. क्रेवन, एस्क्वायर, सर एंड्रयू एक्टन... तभी उसने देखा कि सूची के सबसे नीचे एक नाम रेखांकित था। वह था: 'सी. सी. डन, एस्क्वायर'।
यह अजीब है, उसने सोचा। दूसरा नाम डी. डी. कुछ था।
उसने देखने की जहमत भी नहीं उठाई। उसने पन्ने को एक तरफ धकेल दिया और बचे हुए एकमात्र पन्ने को फैला दिया।
यह कॉलोनियल सर्विसेज गजट के एक और पृष्ठ की प्रति थी। इस पर 30 जनवरी 1898 की तारीख थी। उसने इस पर सरसरी नज़र डाली: तबादलों, स्वीकृत छुट्टियों और भरे गए पदों की एक और लंबी सूची। फिर से एक घोषणा को रेखांकित किया गया था। उसमें लिखा था: 'जनता को सूचित किया जाता है कि सर्जन-कर्नल डी. डी. कनिंघम वर्तमान में अपनी सेवानिवृत्ति से पहले अवकाश पर हैं। उनकी जगह इंडियन मेडिकल सर्विस के सर्जन मेजर रोनाल्ड रॉस लेंगे।'
'उर्मी, क्या तुमने अभी तक खाना बनाना शुरू नहीं किया?' उसकी माँ ने बेडरूम से आवाज़ लगाई। 'बहुत देर हो रही है।'
उर्मिला चौंक गई। इस्तेमाल किए हुए ज़ेरॉक्स पेपर को घूरते हुए इतना समय बर्बाद करने पर वह खुद पर बहुत गुस्सा थी। उसने शेल्फ से कागज़ उठाए, उन्हें एक तरफ फेंका और जल्दी से सिंक की ओर चल पड़ी।
कागज में लिपटी मछली बदबूदार, चिपचिपी गंदगी में बदल गई थी। वह बड़ी मुश्किल से खुद को सिंक में उल्टी करने से रोक पा रही थी।

अध्याय 26

अचानक उर्मिला गुस्से से कांप उठी। वह जानती थी कि वह उन आवधिक आक्रोश के दौरों में से एक के कगार पर थी जो कभी-कभी खोजी लेखों पर काम करते समय उसे जकड़ लेते थे। वह अब इतनी गुस्से में थी कि उसे ग्रेट ईस्टर्न में होने वाली प्रेस कॉन्फ्रेंस के समय, समाचार संपादक और यहां तक कि दिल्ली के संचार मंत्री की भी परवाह नहीं थी। उसने मछली के टुकड़ों को वापस प्लास्टिक बैग में भरा और दरवाजे की ओर चल पड़ी। बाहर जाते समय उसने ज़ेरॉक्स पेपर के पन्ने उठाए और उन्हें मुट्ठी में मसलकर गेंद की तरह बना लिया।
उसकी मां यह देखने के लिए अपने कमरे से बाहर आई कि क्या बात है। उर्मिला को तेल से सनी साड़ी पहने, हाथ में कागज की गेंद और मछलियों से भरा थैला लिए फ्लैट से बाहर जाते देख उसकी मां का मुंह खुला रह गया। 'उर्मी, तुम कहां जा रही हो?' वह चिल्लाई।
उर्मिला ने बाहर निकलते हुए कहा, 'मैं यह मछली लौटाने जा रही हूँ। हम इसे नहीं खा सकते: यह हमें मार डालेगी। देखो, यह कितने गंदे कागज़ में लिपटी है। मैं उस आदमी से इसे वापस दिलवाऊँगी: मैंने इस मछली के लिए सौ रुपये से ज़्यादा दिए हैं। मैं इस

तरह धोखा नहीं खाऊँगी।'
उनके फ्लैट का सामने का दरवाज़ा एक संकरे, गलियारे जैसे बरामदे में खुलता था, जो उनके फ्लैट के अलावा तीन और फ्लैटों के लिए भी इस्तेमाल होता था। उर्मिला को पूरा यकीन था कि मछली बेचने वाला बाहर बाकी फ्लैटों के दरवाज़े खटखटा रहा होगा। लेकिन बरामदा खाली था: उसने पहले दाईं ओर देखा, फिर बाईं ओर। मछली की टोकरी लिए उस युवक का कोई निशान नहीं था।
उर्मिला कुछ पल असमंजस में खड़ी रही, फिर वह पास वाले दरवाजे पर गई और घंटी बजाई। कुछ मिनट बाद दरवाजा खुला और पायजामा और सूती बनियान पहने एक अधेड़ उम्र का आदमी संदेह भरी निगाहों से बाहर झाँका। 'जी?' उसने कहा। 'क्या चाहती हो?'
उर्मिला कुछ पल के लिए अवाक रह गई: उसके और उसके परिवार के बीच झगड़ों और विवादों का लंबा इतिहास रहा था। मुस्कुराने की कोशिश करते हुए उसने कहा, 'क्या आज सुबह किसी मछली बेचने वाले ने तुम्हारी घंटी बजाई थी? एक युवक, जिसने टी-शर्ट और चेकदार लुंगी पहनी थी?'
उस आदमी ने उसे तिरस्कार भरी निगाहों से देखा, उसकी निगाहें धीरे-धीरे मछली से भरे प्लास्टिक बैग से हटकर उसकी सिकुड़ी हुई, मसालों से सनी साड़ी पर गईं।
उर्मिला अपनी बात पर अड़ी रही। उसने फिर पूछा, 'क्या तुमने उसे देखा?'
'नहीं,' उस आदमी ने कहा। 'जब तक आपने घंटी नहीं बजाई, हम सो रहे थे।'
'क्या?' उर्मिला ने कहा। 'मछली बेचने वाला टोकरी लेकर यहाँ नहीं आया...'
'मैंने तुमसे क्या कहा था?' उस आदमी ने गुस्से से कहा। 'क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि हम गहरी नींद में सो रहे थे?' उसने दरवाजा उसके मुंह पर पटक दिया।
उर्मिला एक सीढ़ी चढ़कर इमारत की सबसे ऊँची मंजिल, चौथी मंजिल पर पहुँच गई। इमारत की सभी मंजिलें एक जैसी थीं, प्रत्येक में चार एक जैसे फ्लैट थे, जो एक खुली बालकनी के किनारे एक दूसरे के बगल में कतार में बने हुए थे। चौथी मंजिल पर मछली बेचने वाले का कोई निशान नहीं था। वह मुड़ी और तेजी से नीचे की ओर भागी, हर सीढ़ी पर रुककर लंबी बालकनी को ऊपर-नीचे देखती रही। जहाँ तक उसे पता था, वह आदमी इमारत में कहीं भी नहीं था। उसने भूतल की बालकनी को दो बार देखा, और फिर इमारत के प्रवेश द्वार के पास फुटपाथ पर बनी छोटी पान की दुकान की ओर दौड़ पड़ी।
स्टॉल की मालकिन काउंटर पर पालथी मारकर बैठी थी और दिन का काम शुरू करने से पहले प्रार्थना कर रही थी। उसे तब तक इंतजार करना पड़ा जब तक उसने एक आँख नहीं खोली। 'यह क्या है?' उसने आश्चर्य से कहा, उसके बिखरे बालों और रात की सिकुड़ी हुई साड़ी को घूरते हुए। 'तुम इस हालत में बाहर क्यों हो?'
उसने उससे मछली बेचने वाले के बारे में पूछा, और उसने सिर हिलाकर कहा: 'नहीं, मैंने किसी को नहीं देखा; जैसा कि आप देख सकते हैं, मैं अभी-अभी यहाँ आया हूँ।'
वह मुड़ी और सड़क पर चल पड़ी। 'कहाँ जा रही हो?' पानवाले ने पीछे से आवाज़ लगाई।
उसने कहा, 'मैं उस आदमी को दिन दहाड़े मुझे लूटने नहीं दूंगी। मैं उसे ढूंढकर अपना

पैसा वापस लूंगी।'
पानवाले ने उपहास भरी हंसी हंसते हुए कहा, 'कोई फायदा नहीं। वे विक्रेता तुम्हारे जैसे लोगों से कहीं ज्यादा चालाक हैं।'
'देखते हैं!' उर्मिला ने पीछे मुड़कर चिल्लाकर जवाब दिया।
रशबेहारी सड़क पर हमेशा की तरह सुबह-सुबह पैदल चलने वालों की भीड़ उमड़ रही थी, कुछ लोग लैंसडाउन की ओर, कुछ गरियाहाट की ओर जल्दी में थे। लोग उर्मिला को घूरने लगे, जो मुट्ठी बांधे लहराती हुई आगे बढ़ रही थी। रेलिंग के सहारे खड़े और सड़क किनारे बैठे कुछ आवारा लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया और ताने मारे। उर्मिला चलती रही, उसे अपनी गंदी साड़ी और मछली से भरे गीले थैले की कोई परवाह नहीं थी।
वह राशबेहारी से निकलकर एक गली में मुड़ी और देखते ही देखते वह लोहे के दो ऊंचे फाटकों के सामने खड़ी हो गई। खाकी वर्दी पहने एक तगड़ा चौकीदार फाटक पर पहरा दे रहा था। ठीक उसके ऊपर दीवार में जड़ा हुआ संगमरमर का एक नक्काशीदार नामपट्टिका था। उस पर सुंदर अलंकृत घुमावदार बंगाली अक्षरों में 'रोमन हलदार' नाम लिखा था।
चौकीदार ने उसे शक की निगाहों से ऊपर से नीचे तक देखा। 'तुम्हारा यहाँ क्या काम है?' उसने उसके सामने खड़े होकर अपनी लाठी अपनी जांघ पर मारते हुए कहा।
उर्मिला ने बिना रुके उसे एक तरफ धकेल दिया। उसने कहा, 'तुम्हें मेरे काम से कोई लेना-देना नहीं है। तुम जहाँ हो वहीं रहो और अपने काम पर ध्यान दो।'
वह घर के अंदर जाने वाले ढके हुए बरामदे की ओर, रास्ते से होते हुए आगे बढ़ गई। चौकीदार उसके पीछे भागा, अपनी लाठी लहराते हुए चिल्लाया: 'रुको: तुम अंदर नहीं जा सकती।'
उर्मिला ने कंधे के ऊपर से पलटकर उससे पूछा, 'मुझे एक बात बताओ। क्या आज मछली बेचने वाला यहाँ आया था?'
'कौन सा मछली बेचने वाला?' चौकीदार ने कहा। 'हमारे यहाँ कोई मछली बेचने वाला नहीं आता। क्या आप जानते हैं कि यह किसका घर है?'
'हां,' उर्मिला ने कहा।
अचानक तेज़ी से दौड़ते हुए चौकीदार उसके चारों ओर से निकल गया और रास्ता रोकने की कोशिश करने लगा। लेकिन उर्मिला को चौकीदारों और सचिवों को भी धक्का देकर आगे बढ़ने की आदत थी; वह उसके सामने कुछ भी नहीं था। उर्मिला ने बिना किसी भावना के उसके बगल से निकल गई। वह बड़बड़ाते हुए उसके पीछे-पीछे गया।
चौकीदार की चीख-पुकार से घर के अंदर हलचल मच गई। एक बुजुर्ग व्यक्ति हाथ में कलम लिए, कड़क सफेद कुर्ता और धोती पहने बरामदे में प्रकट हुआ। उसने चिढ़कर घर के अंदर झांकते हुए पूछा, 'क्या बात है?'
उसने उर्मिला को देखा और उसके माथे पर शिकन आ गई। 'जी हाँ, क्या बात है?' उसने उसे घृणा से देखते हुए कहा। 'तुम्हें क्या चाहिए? आज कोई अपॉइंटमेंट नहीं है - सारे अपॉइंटमेंट रद्द कर दिए गए हैं।'

उर्मिला ने उसकी बात अनसुनी कर दी। उसने कहा, 'मैं श्री रोमेन हलदार से मिलना चाहती हूं।'
सचिव ने चश्मे के ऊपर से उसे घूरते हुए पूछा, 'श्री हलदार से आपका क्या काम है?'
उर्मिला ने चुनौती भरे लहजे में कहा, 'मैं उससे उस मछली विक्रेता के बारे में पूछना चाहती हूं जो आज सुबह मेरे फ्लैट पर आया था।'
सचिव का मुंह खुला रह गया। 'मछली बेचने वाला?' उसने कहा। 'कौन सा मछली बेचने वाला?'
'एक युवक,' उर्मिला ने कहा। उसने उसका हुलिया बताने की कोशिश की, लेकिन उसे उसकी शक्ल-सूरत के बारे में बस इतना ही याद था कि उसने एक फीकी सी टी-शर्ट पहनी थी और उसके दाँतों के बीच गैप था, जिससे वह मुस्कुरा रही थी। 'वह यहाँ नियमित रूप से मछली बेचता है,' उसने कहा। 'वह अभी यहीं आ रहा था; उसने मुझे बताया था।'
उसने मछली का पैकेट उठाया और सचिव की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'देखिए: इसने मुझे यह आज सुबह ही बेचा है।'
सचिव पीछे हट गया। 'उस गंदी चीज़ को मुझसे दूर रखो,' उसने बेदाग सूती कपड़े से ढके अपने हाथ को झटकते हुए कहा। 'यह क्या बकवास है? सालों से कोई मछली बेचने वाला इस घर में नहीं आया है।'
'उसने मुझे बताया कि उसने श्री हलदर को मछली बेची थी।'
सचिव ने कहा, 'वह झूठ बोल रहा था।'
उर्मिला उसे घूरती रही, उसका सिर चकरा रहा था। 'लेकिन उस आदमी ने मुझसे कहा था...' उसने कहना शुरू किया।
सचिव ने अधीरता का भाव दिखाते हुए इशारा किया, 'बस करो। अब तुम जा सकते हो।'
उर्मिला का लहजा सख्त हो गया। 'नहीं,' उसने कहा। 'जब तक मैं श्री हलदार से खुद नहीं मिल लेती, तब तक मैं यहां से नहीं जाऊंगी।'
'ठीक है,' सचिव ने कहा। हाथ उठाकर उन्होंने दरवाजे पर खड़े चौकीदार को इशारा किया। 'श्याम बहादुर,' उन्होंने कहा। 'इस महिला को बाहर का रास्ता दिखाओ।'
उर्मिला ने उंगली उठाकर उसकी आंखों में सीधे देखते हुए कहा, 'मुझे नहीं लगता कि आप जानते हैं कि मैं कौन हूं। मैं आपको बता दूं: मेरा नाम उर्मिला रॉय है और मैं कलकत्ता की पत्रकार हूं। शायद आपको कुछ भी करने से पहले थोड़ा सोच लेना चाहिए।'
सचिव का चेहरा और भी गुस्से से लाल हो गया और उसने धमकी भरे लहजे में बोलना शुरू कर दिया। उर्मिला चुपचाप सुनती रही; पिछले कुछ सालों में उसे ऐसी स्थितियों की आदत सी हो गई थी। एक तरह से तो उसे इनमें आनंद भी आने लगा था।
वह भावहीन होकर तब तक इंतजार करती रही जब तक उसकी सांस फूलने लगी। उसने मधुर स्वर में कहा, 'अब क्या आप मुझे श्री हल्दार के पास ले चलेंगे?' 'जल्दी कीजिए, कृपया; मेरे पास ज्यादा समय नहीं है। थोड़ी देर में मुझे ग्रेट ईस्टर्न होटल में

संचार मंत्री के साथ एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में पहुंचना है।'
सचिव हकलाने लगा। उसने अपने बेदाग कुर्ते की आस्तीन से अपना माथा पोंछते हुए कहा, 'आप समझते नहीं हैं। मैं आपको श्री हलदर के पास नहीं ले जा सकता क्योंकि मुझे नहीं पता कि वे कहाँ हैं। वे गायब हो गए हैं। वे पहले ही दो मुलाकातों में नहीं आ पाए हैं।'
उर्मिला उसे अवाक होकर देखती रही, "लेकिन उसे आज रात हमारे फ्लैट में डिनर पर आना है," उसने बेमतलब ही समझाना शुरू किया। "इसीलिए मैं ये मछली पका रही हूँ; इसीलिए मुझे प्रेस कॉन्फ्रेंस में देर हो रही है..." उसने मछली का थैला एक बार फिर उसकी नाक के नीचे हिलाया।
सचिव ने ताना मारा। 'या तो तुम पागल हो या सपना देख रही हो,' उसने कहा। 'श्री हलदार की आज शाम बॉम्बे जाने वाली फ्लाइट बुक है - उन्हें वहाँ एक मीटिंग में जाना है। उनका यहाँ तुमसे या किसी और से मिलने का कोई इरादा नहीं था।' उसने बात टालने का इशारा करते हुए चौकीदार की ओर मुड़ा। 'इसे ले जाओ,' उसने कहा। 'मैं इस बकवास पर और समय बर्बाद नहीं करने वाला।'
उर्मिला कमरे से बाहर जाने के लिए तैयार हो गई, लेकिन बरामदे में पहुँचते ही वह अचानक उससे छूट गई। 'तुम झूठ बोल रहे हो,' उसने चौकीदार का हाथ झटकते हुए चिल्लाकर कहा। 'मुझे तुम पर विश्वास नहीं है। तुम बच नहीं पाओगे - देखोगे...'
चौकीदार ने उसका हाथ पकड़कर उसे रोकने की कोशिश की।
उसकी पकड़ से बचने की कोशिश में उर्मिला लड़खड़ा गई। और फिर कंकड़ वाली पगडंडी तेजी से उसकी ओर आने लगी।

अध्याय 27

अगली बार जब उर्मिला ने अपनी आँखें खोलीं, तो वह हल्दर हवेली के खंभों वाले बरामदे की छाँव में लेटी हुई थी। उसकी नज़र धुंधली थी और सिर चकरा रहा था। उसके ऊपर एक बड़ी सी अस्पष्ट आकृति मंडरा रही थी, और उसके परे लगभग एक दर्जन धुंधले चेहरे थे, जो चिंता से उसे देख रहे थे। उसके कान में कोई चिल्ला रहा था; वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या कह रहा है; लहजा अजीब था। कोई उसे अखबार से हवा कर रहा था; कोई उसे पानी का गिलास दे रहा था। चौकीदार कुछ दूरी पर था, इशारे कर रहा था और किसी ऐसे व्यक्ति से बहस कर रहा था जिसे वह देख नहीं पा रही थी।
धीरे-धीरे, जैसे-जैसे उसकी दृष्टि साफ़ होती गई, उसने देखा कि उसके सामने जो बड़ा सा धुंधलापन था, वह एक चेहरा था, एक आदमी का चेहरा, एक ऐसे आदमी का जिसकी दाढ़ी छोटी और सँवारी हुई थी। वह उसे किसी तरह जाना-पहचाना सा लगा।
'मिस कलकत्ता:' वह उसका कंधा हिलाते हुए बोला। 'चलो, उठो। ये तुम्हें कहाँ से मिले? मुझे जानना ही होगा।'
'क्या समझना है?' उसने कहा। वह उसकी ओर कुछ हिला रहा था, लेकिन वह देख

नहीं पा रही थी कि वह क्या है।
'ये सब,' उसने अधीरता से कहा। 'ये सब सामान जो तुम अपने साथ लाए हो; ये कागज़।'
उसका हाथ झटकते हुए वह उठ बैठी। 'तुम कौन हो?' उसने कहा। 'तुम मुझ पर इस तरह क्यों चिल्ला रहे हो?'
उसने अचंभित होकर उसकी ओर देखा। 'क्या तुम्हें मैं याद नहीं?' उसने कहा। 'हम उस दिन, उस सभागार में मिले थे।'
'तुम्हारा क्या मतलब है, हम मिले थे?' उसने कहा। 'मैं तुम्हारा नाम नहीं जानती, न ही तुम कौन हो, न ही तुम क्या करते हो, न ही कुछ और।'
'मैं एल. मुरुगन हूं,' उन्होंने कहा। 'मैं लाइफवॉच के लिए काम करता हूं।' मुरुगन ने अपना बटुआ निकाला और उन्हें एक कार्ड दिया। 'मैं आपको जानता हूं,' उन्होंने कहा। 'मुझे आपका नाम ठीक से याद नहीं है, लेकिन मुझे पता है कि आप कलकत्ता पत्रिका के लिए काम करती हैं।'
'बस इतना ही जानना काफी है,' उसने कहा। 'अब कृपया समझाएं कि आप यहां क्या कर रहे हैं।'
'मैं?' मुरुगन ने कहा। 'मैं श्री हलदर से उनकी रॉबिन्सन स्ट्रीट वाली संपत्ति पर जाने की अनुमति लेना चाहता था, इसलिए मैंने सोचा कि मैं आकर अपना परिचय दे दूं।'
'और तुम मुझ पर क्यों चिल्ला रहे थे?'
'मुझे जानना ही होगा कि ये तुम्हें कहाँ मिले।' उसने मछली के पैकेट में मिले ज़ेरॉक्स पेपर के मुड़े हुए टुकड़े निकाले। 'क्या तुम मुझे बता सकती हो?'
'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?' वह चिल्लाई। उसने झपट्टा मारकर उसका हाथ पकड़ा और कागज़ छीन लिए। 'ये मेरे हैं। ये मेरे ही हैं।'
'ये तुम्हारे नहीं हैं,' उसने उन्हें पकड़ते हुए कहा। 'इनका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है।'
'ये मेरे हैं और मैं इन्हें अपने पास ही रखूंगी,' उर्मिला ने कहा।
उसने कागजों को कसकर एक छोटी सी गेंद की तरह मोड़ा और उन्हें अपने ब्लाउज के सामने वाले हिस्से में रख दिया।
मुरुगन ने अपने दांत पीसते हुए कहा, 'देखो, तुम्हें ऐसी चीज मिली है जो शायद सदी के सबसे बड़े रहस्यों में से एक की कुंजी हो सकती है, और तुम बस हिरासत के लिए लड़ाई शुरू करना चाहते हो?'
उर्मिला धीरे-धीरे उठी। उसने कहा, 'तुम्हें इनकी इतनी चाहत क्यों है? ये तो बस बेकार कागज़ के टुकड़े हैं।'
'ठीक है,' मुरुगन ने कहा। 'मैं आपको बताता हूँ: मैं आपको इन्हें शौचालय में बहाने की परेशानी से बचाऊँगा। इन्हें मुझे वापस दे दीजिए।'
'घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है,' उसने ठंडे स्वर में कहा। वह खड़ी हुई और अपने आस-पास के चेहरों पर सवालिया निगाह डाली। 'मेरी मछली कहाँ है?' उसने किसी से विशेष रूप से नहीं पूछा। किसी ने उसे भीगा हुआ पैकेट वापस दे दिया। उसे मज़बूती से पकड़कर वह गेट की ओर रास्ते पर चल पड़ी।
मुरुगन उसके पीछे भागा। खुद को संभालते हुए उसने कहा, 'रुको। देखो, तुम्हें क्या

चाहिए? पैसे चाहिए या कुछ और?'
उसने उसे तिरस्कार भरी नजर से देखा और आगे बढ़ गई। 'फिर क्या?' मुरुगन ने कहा।
'मैं जानना चाहता हूं कि उन कागजों में क्या है।'
उसने उसकी कोहनी पकड़ ली। 'देखो,' उसने यथासंभव शांत स्वर में कहा। 'तुमने मुझे अपना नाम तक नहीं बताया। मैं तुम्हारे बारे में बस इतना ही जानता हूँ कि तुम कलकत्ता के लिए काम करती हो।'
'मेरा नाम आपके लिए कोई मायने नहीं रखता,' उसने उसका हाथ झटकते हुए जवाब दिया। 'और कृपया मुझे मत छुओ।'
'ओह, तो क्या यही तुम्हारा रवैया रहने वाला है?' मुरुगन ने ऊँची आवाज़ में कहा। 'तो फिर मैं तुम्हें क्या कहकर पुकारूँ, क्योंकि मुझे परिचय कराने का सम्मान तो नहीं मिलेगा? मिस कलकत्ता? या शायद सिर्फ़ कलकत्ता ही, या क्या यह बहुत अंतरंग हो जाएगा? बहुत स्नेहपूर्ण, तुम्हें क्या लगता है? तुम्हारे पति को कुछ गड़बड़, कुछ अनुचित हरकत का शक हो सकता है...'
'मैं शादीशुदा नहीं हूं,' उर्मिला ने ठंडे स्वर में कहा।
'वाह, बहुत बढ़िया! आपने मेरा दिन बना दिया, कलकत्ता! मैं इंतज़ार कर रहा हूँ कि कब तक सब कुछ चलता रहे और कब सब कुछ शुरू हो। लेकिन इससे पहले कि हम सब कुछ शुरू करें, कलकत्ता! मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ। मैं आपके डेटाबेस में एक छोटी सी जानकारी डालना चाहता हूँ: मैं आपको बताता हूँ कि यह कैसे काम करता है: मैं आपकी प्राथमिकताओं को वास्तविक दुनिया के अनुरूप ढालना चाहता हूँ। आप मुझसे सवाल नहीं पूछ सकते: समझ रहे हैं ना? यह डॉ. मॉर्गन तय करेंगे कि आपको क्या जानने का हक है और कब।'
उसने अपनी आँखें सिकोड़ीं। 'क्या ऐसा है?' उसने कहा।
उन्होंने कहा, 'तुम्हें स्पष्टीकरण चाहिए। तुम्हें मिलेगा। लेकिन हथियार और जगह का चुनाव मैं ही करूंगा।'
वह सड़क की ओर भागा और एक टैक्सी को रोक लिया।
'पो जी हॉस्पिटल,' उसने सिख ड्राइवर से कहा। 'जल्दी करो; चलो चलते हैं।'

अध्याय 28

अंतर कांप उठा: उसे अब बहुत अस्वस्थ महसूस हो रहा था। उसे तारा को यह बताने का कोई तरीका ढूंढना होगा कि वह उसके साथ रात का खाना खाने के मूड में नहीं है। सौभाग्यवश, पिछले कुछ हफ्तों से वह बीपर पहने हुए थी। स्क्रीन बदलते हुए, उसने कुछ शब्द टाइप किए: खेद है कि डिनर रद्द करना होगा; बाद में स्पष्टीकरण दूंगा। उसने उसका नंबर डायल किया और संदेश भेज दिया।
तारा को कुछ हफ्ते पहले एक नई नौकरी मिली थी, जिसके साथ उसे यह बीपर भी मिला था। वह जिस महिला के यहाँ काम कर रही थी, वह एक स्टॉकब्रोकर थी जो

अक्सर देर रात तक काम करती थी: उसे अपने चार साल के बच्चे के साथ लगातार संपर्क में रहना पसंद था और उसने तारा को बीपर साथ रखने पर जोर दिया था।
तारा ने कहा कि यह नौकरी अच्छी थी, पिछली नौकरी से कहीं बेहतर: वेतन उचित था और उससे भी अच्छी बात यह थी कि लड़का मिलनसार था और उसकी माँ भी अपेक्षाकृत कम अपेक्षा रखती थी। तारा ने नौकरी दिलाने में मदद करने के लिए अंतर को धन्यवाद देने का कोई अवसर नहीं छोड़ा।
लेकिन सच्चाई तो यह थी कि अगर अंतर ने किसी तरह की मदद की भी थी, तो वह बड़े ही अप्रत्यक्ष तरीके से थी। करीब एक महीने पहले, एक सुबह उसने देखा कि वह अपने अपार्टमेंट में इधर-उधर घूम रही थी, जबकि आमतौर पर वह काम पर बाहर होती थी। रसोई की खिड़की खोलकर उसने पूछा, 'क्या बात है? आज काम पर नहीं जा रही हो?'
उसने अपना सिर हवा के पाइप में डाला और उसे एक उदास मुस्कान दी। उसके पतले बाल बेतरतीब ढंग से एक गांठ में बंधे थे और ऐसा लग रहा था मानो बिस्तर से उठने के बाद उसने कपड़े बदलने की जहमत ही नहीं उठाई हो।
'अगर मैं कर सकती तो ज़रूर करती,' उसने कहा। 'लेकिन अब यह नौकरी मेरी नहीं रही।'
'क्या हुआ?'
'खैर,' उसने कहा। 'मामले को इस तरह पेश किया गया कि मुझे अनिच्छा से जाने की अनुमति दी गई थी। लेकिन असलियत यह थी कि उन्हें सही कागजात वाले किसी व्यक्ति की ज़रूरत थी ताकि वे टैक्स में छूट प्राप्त कर सकें।' उसने कंधे उचकाए और मुंह बनाया।
'ओह,' अंतर ने कहा। 'खैर, यह तो बहुत बुरा हुआ।' इस खबर को समझने में उसे कुछ पल लगे।
'क्या तुम्हें अभी तक कुछ और नहीं मिला?' उसने कहा। 'मुझे लगा था कि बेबीसिटर की भर्ती बाजार में आते ही तुरंत हो जाती है।'
तारा ने हताशा से सिर हिलाया। उसने कहा, 'सबसे अच्छी नौकरियां इंटरनेट पर ही मिलती हैं। और मेरे पास इंटरनेट सब्सक्रिप्शन के पैसे नहीं हैं। सच कहूं तो, मेरे पास कंप्यूटर खरीदने के भी पैसे नहीं हैं और अगर खरीद भी लूं तो मुझे पता नहीं कि उसका क्या करूंगी।'
'इंटरनेट पर?' अंतर अचंभित रह गया। 'बच्चों की देखभाल करने वाली नौकरियां? आप मजाक कर रहे हैं। सच में?'
'काश मैं होती,' उसने कहा। 'लेकिन यह सच है। मैंने आयरिश इको और इंडिया अब्रॉड में देखा है: दोनों में से किसी में भी इस बारे में कुछ नहीं है।'
उसने उसे एक फीकी मुस्कान दी और सिर हिलाया। 'मुझे अब जाना होगा,' उसने कहा। 'वरना मेरी चाय ठंडी हो जाएगी। और जिस तरह से हालात चल रहे हैं, मुझे लगता है कि टी बैग बर्बाद करना समझदारी नहीं होगी।' वह अंदर चली गई।
दिनभर अंतर के मन में वह बातचीत गूंजती रही, जब वह आवा की स्क्रीन को घूरता रहा: उसकी परिस्थितियों की अनिश्चितता उसे इस कदर परेशान कर रही थी कि वह

समझ नहीं पा रहा था। अगली सुबह वह हर कुछ मिनट में रसोई में आता-जाता रहा, जब तक कि उसने उसे अपने अपार्टमेंट में इधर-उधर घूमते हुए नहीं देख लिया।
सिंक के ऊपर झुककर उसने चिल्लाते हुए कहा: 'सुनो: मेरे पास एक विचार है।'
उसने उसे एक फीकी सी मुस्कान दी। 'जी?' वह समझ गया कि वह देर रात तक चिंता में जागती रही थी।
उन्होंने कहा, 'मेरे पास अलमारी में एक पुराना लैपटॉप पड़ा है। मैं उसे आवा से कनेक्ट कर सकता हूँ और केबल के ज़रिए आप तक इंटरनेट पहुँचा सकता हूँ। आप जितना चाहें उतना समय इंटरनेट पर बिता सकते हैं। मैंने इसे कई बार अपग्रेड किया है और यह सॉफ़्टवेयर चला सकता है। काउंसिल मुझे प्रति सप्ताह बीस घंटे मुफ़्त देती है, और मैं उसका एक अंश भी मुश्किल से ही इस्तेमाल करता हूँ। मेरे पास कम से कम एक हज़ार घंटे बचे हैं। आप उन्हें इस्तेमाल कर सकते हैं।'
उसका पतला, सुडौल चेहरा चमक उठा। 'सचमुच?' उसने कहा। 'क्या आप सचमुच ऐसा कर सकते हैं?'
वह हिचकिचाई, मानो उसे अपने भाग्य पर विश्वास ही न हो रहा हो: 'क्या आपको यकीन है कि सब ठीक रहेगा? मैं आपको किसी मुसीबत में नहीं डालना चाहती।'
अंतर ने बेपरवाही दिखाने की कोशिश की। उसने कहा, 'यह बहुत ही अनियमित है, बेशक। परिषद सुरक्षा को लेकर बहुत सतर्क है। लेकिन मुझे लगता है कि मैं इसमें कुछ जुगाड़ कर सकता हूँ। अगर आप सावधान रहें और छेड़छाड़ करने की कोशिश न करें तो हम दोनों ठीक रहेंगे।'
'मैं बहुत सावधान रहूंगी,' उसने गंभीरता से कहा। 'आप मुझ पर भरोसा रखिए: मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूंगी जिससे आप मुसीबत में पड़ें।' उसी दिन बाद में अंतर ने संपर्क स्थापित कर दिया।
उसे अपना पुराना लैपटॉप उसके पास छोड़ने में थोड़ी तकलीफ हुई: यह नब्बे के दशक की शुरुआत का कोरिया में बना मॉडल था, चिकना और काला, जिसके किनारे खूबसूरती से गोल थे। उसे यह हमेशा से पसंद था: हाथों में इसका वजन और भारीपन, कीबोर्ड की धीमी क्लिक की आवाज़, और इसकी पुराने ज़माने की क्रोम फिनिशिंग।
उसने उसे कुछ सबक सिखाने की पेशकश की, लेकिन उसने मना कर दिया। उसने कहा, 'तुम पहले ही बहुत मुसीबत में पड़ चुके हो। मैं तुम्हें और मुसीबत में नहीं डालूंगी। लकी मुझे सिखाएगा: उसे इन चीजों के बारे में थोड़ी जानकारी है।'
'लकी?' पेन स्टेशन के न्यूज़स्टैंड पर उस नौजवान का यही नाम था। अंटार ने कल्पना करने की कोशिश की, उसकी बनावटी मुस्कान और टेढ़े-मेढ़े दाँतों के साथ, लैपटॉप के सामने बैठा, तारा को इंटरनेट चलाने में मदद कर रहा होगा। उसे शक तो था, लेकिन उसने उसे अपने तक ही सीमित रखने का फैसला किया।
जैसा कि बाद में पता चला, लकी एक अच्छा शिक्षक साबित हुआ, क्योंकि तारा ने जल्द ही इंटरनेट चलाना सीख लिया। अंतर ने पहले कुछ दिनों तक उस पर कड़ी नज़र रखी। फिर वह बच्चों की देखभाल से संबंधित बुलेटिन बोर्ड पर उसका पीछा करते-करते थक गया और उसे अकेला छोड़ दिया।

कुछ ही दिनों में उसे नई नौकरी मिल गई और तब से वह बेहद आभारी थी। इसीलिए वह आज रात यहाँ आना चाहती थी। उसने कहा, 'मैं तुम्हें बाहर ले जाने का खर्च नहीं उठा सकती। इसलिए कम से कम मैं इतना तो कर ही सकती हूँ कि तुम कभी-कभी ठीक से खाना खा लो।'

अध्याय 29

लोअर सर्कुलर रोड पर, पीजी अस्पताल के आधे रास्ते में, उर्मिला खुद को एक भीड़भाड़ वाली मिनीबस के किनारे पर चमकीले पीले अक्षरों को बार-बार पढ़ते हुए पा रही थी, जो उसकी खिड़की से बिल्कुल सटकर खड़ी थी। टैक्सी ट्रैफिक में फंसी हुई थी, सुबह की गाड़ियों और बसों की सामान्य भीड़ में अटकी हुई थी। हिचकिचाते हुए उर्मिला ने मिनीबस की खिड़कियों की ओर देखा: ऐसा लग रहा था मानो एक दर्जन लोग उसे घूर रहे हों। उसने झट से नज़रें हटा लीं।
अगर वह काम पर जा रही होती, तो शायद अभी इसी बस में होती। शायद उसमें वही सारे लोग सवार होते, जो अक्सर वहाँ होते हैं: धोती पहने एक बूढ़ा आदमी जो महालेखाकार के कार्यालय में काम करता था और किसी विषय पर किताब लिख रहा था; रेलवे क्लर्क जो हर सुबह खाने से भरा एक बड़ा टिफिन बैग लेकर स्ट्रैंड जाता था; और ऑल इंडिया रेडियो की वह महिला, जिसने पिछले हफ्ते उसे 'बीबीडी बाग मिनीबस पैसेंजर्स क्लब' में शामिल होने के लिए मनाने की कोशिश की थी।
उर्मिला सीट पर सिकुड़ गई। कागज़ की मुड़ी हुई शीटें उसके स्तनों के बीच की कोमल जगह पर असहज रूप से रगड़ रही थीं। वह अंदर हाथ डालकर उसे निकालना चाहती थी, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकी, क्योंकि मिनीबस उसकी खिड़की के इतने करीब थी।
अगर 'बीबीडी बाग मिनीबस पैसेंजर्स क्लब' के लोग उसे अभी देख पाते तो क्या होता? अगर उन्हें पता चलता कि वह एक अनजान व्यक्ति के साथ पीजी अस्पताल जा रही है तो क्या होता? वे क्या सोचते? वे इस बारे में क्या राय बनाते?
अचानक वह क्रोधित हो उठी। 'मेरे कागज़ों के टुकड़ों का पीजी अस्पताल से क्या लेना-देना है?' उसने मुरुगन की ओर मुड़ते हुए कहा। 'तुम मुझे वहाँ क्यों ले जा रहे हो? तुम्हारा इरादा क्या है?'
'कलकत्ता, तुम्हें स्पष्टीकरण चाहिए था,' मुरुगन ने कहा। 'यही सौदा था। और मैं तुम्हें स्पष्टीकरण दूंगा, लेकिन मैं ठीक वहीं से शुरू करूंगा जहां से मैं चाहता हूं।'
'और आप पीजी अस्पताल से शुरुआत करना चाहते हैं?' उसने कहा।
'हाँ, बिल्कुल,' उसने कहा। 'इसीलिए तो मैं तुम्हें वहाँ ले जा रहा हूँ।' उसने देखा कि टैक्सी ड्राइवर उन्हें अपने शीशे में देख रहा है। वह झुकी और मछली का पैकेट उसके नाक के नीचे लहराया। 'क्या देख रहे हो, बेवकूफ?' उसने गुस्से से कहा। 'सड़क पर ध्यान रखो।'
शर्मिंदा होकर ड्राइवर ने अपनी नजरें नीचे कर लीं।
'वाह!' मुरुगन ने कहा। 'यह सब क्या था?'

'और तुम!' वह गुस्से से उसकी ओर मुड़ते हुए चिल्लाई। 'आखिर तुम हो कौन?' उसके मन में अब संदेह गहरा रहा था; उसे मध्य पूर्व में विदेशी ठगों, अपहरणकर्ताओं और वेश्यावृत्ति गिरोहों के बारे में सुनी हुई सारी कहानियाँ याद आने लगीं। 'मैं जानना चाहती हूँ कि तुम कौन हो और कलकत्ता में क्या कर रहे हो। मैं तुम्हारा पासपोर्ट देखना चाहती हूँ।'
'इस समय मेरे पास मेरा पासपोर्ट नहीं है,' मुरुगन ने कहा। 'लेकिन आप इसे ले सकती हैं।' उसने अपना बटुआ निकाला और उसे अपना पहचान पत्र दे दिया। उसने ध्यान से उस पर लिखे अक्षरों की जांच की और तस्वीर का मिलान उसके चेहरे से किया।
जब वे रवींद्र सदन सभागार पहुंचे, तो मुरुगन ने ड्राइवर के कंधे पर थपथपाया और सड़क की ओर इशारा करते हुए कहा, 'वहाँ,' 'रुको, वहाँ।'
'यहाँ?' उर्मिला ने खुद को एक संकरी खाई के पार एक ईंट की दीवार को देखते हुए पाया। 'यहाँ क्यों? यहाँ तो कुछ भी नहीं है; हम अस्पताल का प्रवेश द्वार पीछे छोड़ आए हैं: वह वहाँ है।'
'हमें प्रवेश द्वार की ज़रूरत नहीं है,' मुरुगन ने टैक्सी चालक को पचास रुपये का नोट देते हुए कहा। 'मैं आपको यहीं कुछ दिखाना चाहता हूँ।'
'लेकिन यहां देखने लायक कुछ नहीं है,' उर्मिला ने संदेह भरी निगाहों से कहा। 'यह तो बस एक दीवार है।'
'वहाँ देखो,' मुरुगन ने अपने खुले पैसे गिनते हुए कहा।
उसने अपने कंधे के ऊपर से रोनाल्ड रॉस के स्मारक की ओर इशारा करते हुए कहा, 'क्या तुमने उसे ध्यान से देखा?'
उर्मिला की आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं जब उनकी नज़र उस छोटे से मेहराब के शीर्ष पर लगी संगमरमर की पट्टिका पर पड़ी, जिस पर उन्होंने उंगली रखी थी। 'नहीं,' उसने कहा। 'मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा।' वह ज़ोर से पढ़ने लगी: "'इस द्वार से सत्तर गज दक्षिण-पूर्व में स्थित छोटी सी प्रयोगशाला में सर्जन-मेजर रोनाल्ड रॉस आई.एम.एस. ने 1898 में यह पता लगाया कि मलेरिया मच्छरों द्वारा कैसे फैलता है।"
उसने अपना सिर हिलाया। 'यह अजीब है,' उसने कहा। 'मैंने यहां सैकड़ों बार बसें बदली हैं। मैं गिन भी नहीं सकती कि मैं कितनी बार इस दीवार के पास से गुजरी हूं। लेकिन मैंने ऊपर लिखे उस शिलालेख पर कभी ध्यान नहीं दिया।'
'बेचारे रॉन पर अब कोई ध्यान नहीं देता,' मुरुगन ने कहा। वह सड़क पर थोड़ी दूर आगे एक फाटक की ओर चल पड़ा। 'मेरे पीछे आओ,' उसने इशारा करते हुए कहा। 'मैं तुम्हें कुछ और दिखाऊंगा।'
द्वार के खंभों से एक जंजीर लटकी हुई थी, जो इतनी ढीली थी कि एक बार में केवल एक ही व्यक्ति अंदर जा सके। मुरुगन पहले गया और जब उर्मिला उसके पास पहुंची तो उसने अस्पताल के व्यस्त परिसर के उस पार, परिसर के काफी अंदर स्थित एक सुंदर लाल ईंटों की इमारत की ओर इशारा किया।
मुरुगन ने कहा, 'जब रोनाल्ड रॉस 1898 में यहां काम करने आए थे, तब वह सामने वाली इमारत ही पीजी अस्पताल का एकमात्र हिस्सा थी।'

'तुम्हें कैसे पता?' उसने कहा।
वह हँसा। उसने कहा, 'यह बहुत आसान है। आप संयोगवश रोनी रॉस के बारे में दुनिया के सबसे महान जीवित विशेषज्ञ से बात कर रहे हैं।'
'तुम्हारा मतलब तुम हो?' उसने कहा।
'तुमने सही कहा।' वह मुड़ा और वर्दीधारी अस्पताल कर्मचारियों से भरी एक राह पर चल पड़ा।
'वहाँ देखो,' उसने सामने पीले रंग में रंगे चौकोर आकार के नए भवनों के एक समूह की ओर इशारा करते हुए कहा। 'जब रॉनी कलकत्ता में मलेरिया पर शोध कर रहा था, तब इनमें से कोई भी इमारत यहाँ नहीं थी। यहाँ चारों ओर केवल पेड़, बांस और हरियाली थी - सिवाय कुछ प्रयोगशालाओं और उन छोटे-छोटे कमरों के जहाँ नौकर और परिचारक रहते थे।'
जब वे एक खुले कूड़े के ढेर के पास से गुज़रे, जहाँ कौवे, कुत्ते और गिद्ध खाने के टुकड़ों और खून से लथपथ पट्टियों के लिए आपस में लड़ रहे थे, तो उसने अपनी नाक पर रुमाल रखा हुआ था। पास ही, कुछ आदमी एक दीवार के सहारे कतार में खड़े थे, और उस नोटिस को अनसुना कर रहे थे जिस पर लिखा था: 'कृपया यहाँ पेशाब न करें।'
मुरुगन दो वार्डों के बीच एक खुली जगह पर रुक गए, जिनमें से एक पर 'रॉस मेमोरियल वार्ड' का बोर्ड लगा था। उन्होंने अस्पताल के नए जोड़े गए विंग में शामिल किए गए एक पुराने जमाने के लाल ईंटों वाले बंगले की ओर इशारा करते हुए कहा, 'वहाँ देखो। वह रॉस की प्रयोगशाला थी।'
वह बंगले की ओर गया और उसका ध्यान दीवार में ऊँचाई पर लगे एक संगमरमर के पट्टिका की ओर दिलाया। पट्टिका पर मच्छर की एक कलात्मक छवि बनी हुई थी और उसके नीचे एक शिलालेख था।
'यह बहुत ऊपर लिखा है, पढ़ने में दिक्कत हो रही है,' उर्मिला ने कहा। 'क्या इसमें यह नहीं लिखा है कि इसी प्रयोगशाला में सर्जन-मेजर रोनाल्ड रॉस ने यह महत्वपूर्ण खोज की थी कि मलेरिया मच्छर के काटने से फैलता है?'
'कुछ ऐसा ही,' मुरुगन ने कहा।
उर्मिला ने हैरानी भरा चेहरा बनाया। 'यह कितनी अजीब सी छोटी इमारत है,' उसने कहा। 'यह तो बिल्कुल अपने आप में बंद सी लगती है। यह मानना मुश्किल है कि कोई इसके अंदर कुछ खोज सकता है।'
मुरुगन ने कहा, 'इससे भी ज्यादा अविश्वसनीय बात यह है कि यह कभी पूरे भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे अच्छी तरह से सुसज्जित अनुसंधान प्रयोगशालाओं में से एक थी।'
'क्या सच में?' उसने आश्चर्य से कहा।
उसने सिर हिलाया: 'बिल्कुल सही। और तुम्हें पता है इसे किसने करवाया था?'
'मुझे इसके बारे में कैसे पता चलेगा?' उसने झल्लाकर कहा।
'लेकिन तुम जानती हो,' मुरुगन ने कहा, 'दरअसल, उसका नाम तुम्हारे ब्लाउज में साफ-साफ लिखा हुआ है।' उसने उस कागज के टुकड़े की ओर इशारा किया जिसे

उसने अपने ब्लाउज में रखा हुआ था।
उसकी ओर पीठ करके उसने अपने ब्लाउज से कागज की गेंद निकाली। 'यह रही,' उसने कहा। 'मुझे दिखाओ।'
उन्होंने स्याही से खींची गई एक रेखा की ओर इशारा करते हुए कहा, 'ये वही हैं। सर्जन-कर्नल डी. डी. कनिंघम।'
'इसी ने इस जगह की स्थापना की थी,' मुरुगन ने कहा। 'रॉनी रॉस की तरह, वह भी भारतीय चिकित्सा सेवा में डॉक्टर थे, जो ब्रिटिश भारतीय सेना की एक इकाई थी। लेकिन कनिंघम रॉस से उम्र में काफी बड़े थे, लगभग वरिष्ठ नागरिक। और वह एक शोध वैज्ञानिक भी थे - एक पैथोलॉजिस्ट। वास्तव में, वह रॉयल सोसाइटी के फेलो थे; उनके नाम के साथ FRS जुड़ा हुआ था, जो उन दिनों मिलने वाले सबसे प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक था। कनिंघम ने कलकत्ता में अपना बहुत सारा काम यहीं इस प्रयोगशाला में किया। उन्होंने इसे दुनिया के इस हिस्से का सबसे सुसज्जित अनुसंधान केंद्र बना दिया। इसे प्रसिद्ध बनाने में रॉन का योगदान था, लेकिन वह पुराने डी.डी. के बिना ऐसा नहीं कर सकते थे।'
उर्मिला ने कहा, 'मैं आपकी बात मान लेती हूं। लेकिन मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा कि इससे वे कागजात इतने खास कैसे हो जाते हैं।'
'धैर्य रखो, कलकत्ता,' मुरुगन ने कहा। 'मैं अभी शुरुआत ही कर रहा हूँ। चलो।'
वह उसी रास्ते से वापस मुड़ा जिससे वे आए थे और उसे एक संकरे, मिट्टी से भरे रास्ते से होते हुए उस संकरे रास्ते तक ले गया जो रॉस मेमोरियल वार्ड को अस्पताल की चारदीवारी से अलग करता था। स्मारक मेहराब अब उनके बाईं ओर कुछ ही गज की दूरी पर था, और दीवार के ऊपर से वे लोअर सर्कुलर रोड पर जाम लगे वाहनों को देख सकते थे।
मुरुगन ने दीवार के सहारे जमा मिट्टी और मलबे के ढेर में बनी कुछ जर्जर, टूटी-फूटी टिन की छतों वाली इमारतों की ओर इशारा करते हुए कहा, 'क्या आप वे बाहरी कमरे देख रहे हैं?' 'वहाँ रॉनी रॉस के नौकर रहते थे। उनमें से एक, लचमैन नाम का आदमी, रॉस का खास आदमी था। वह वहीं कबूतर पालता था जिनका इस्तेमाल रॉस अपने शोध के लिए करता था।'
'कबूतर?' उर्मिला ने अनमने ढंग से कहा, मलबे में आधे छिपे हुए मल के छोटे-छोटे ढेरों पर घृणा भरी नज़र डालते हुए। 'मुझे लगा था कि आपने कहा था कि वह मच्छरों और मलेरिया पर काम कर रहा है।'
'अच्छा, मैं इसे इस तरह समझाता हूँ,' मुरुगन ने कहा। 'रॉनी रॉस हमेशा मलेरिया के सामान्य, साधारण प्रकारों पर ही काम नहीं करते थे। कलकत्ता में उन्होंने एक संबंधित पक्षी प्रजाति, हाल्टेरिडियम पर काम करना शुरू किया - आप इसे मलेरिया का पक्षी संस्करण कह सकते हैं।'
'सचमुच?' उर्मिला ने सावधानी से अपने आसपास के पेड़ों की ओर देखा।
'हां,' उन्होंने कहा। 'और उनके प्रयोगों के लिए सामग्री की आपूर्ति बनाए रखने के लिए, उनके सहायक, लुचमैन और उनके दल ने संक्रमित पक्षियों का एक बड़ा झुंड वहीं रखा हुआ था। और उन्होंने सितंबर 1898 में, रॉस द्वारा अपने अंतिम प्रयोगों की

श्रृंखला पूरी करने के कुछ ही दिनों बाद, अपने पूरे झुंड को यहीं छोड़ दिया।'
उसने ज़मीन से एक पत्थर उठाया। 'मैं तुम्हें कुछ दिखाता हूँ,' उसने कहा। उसने पत्थर को शौचालय की ओर उछाला। वह मलबे में जा गिरा, और कुछ ही क्षणों में कबूतरों का एक झुंड खतरे की आवाज़ करते हुए और अपने पंख फड़फड़ाते हुए हवा में उड़ गया। मुरुगन पीछे हटकर ऊपर चक्कर लगाते पक्षियों को देखता रहा।
उन्होंने कहा, 'अगर वहां लुचमैन के झुंड के कुछ वंशज हों तो मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं होगा।'

अध्याय 30

उर्मिला ने पैर की उंगलियों पर खड़े होकर चारदीवारी के ऊपर से लोअर सर्कुलर रोड पर अस्पताल के पास से गुजरती हुई ऑफिस की ओर जाती गाड़ियों को देखा। वह इस बात से हैरान थी कि बंगला कितना सुरक्षित और एकांत था, अस्पताल की चहल-पहल और पास के यातायात के शोर से कितना दूर था।
'यहाँ कितनी शांति है,' उसने शौचालय से रॉस स्मारक की ओर देखते हुए कहा। 'विश्वास करना मुश्किल है कि मैं हर दिन भीड़भाड़ वाले समय में दो बार इस जगह से गुजरती हूँ।'
'बिल्कुल वही जो रॉनी रॉस ने सोचा था,' मुरुगन ने कहा। 'जब वह पहली बार यहां आया था तो उसे लगा था कि उसे अपने सपनों की प्रयोगशाला मिल गई है।'
उर्मिला दीवार से पीछे हट गई। 'तो रॉस यहाँ कैसे आया?' उसने कहा। उसने अपने हाथों में रखे चिकने कागज़ों पर नज़र दौड़ाई। 'क्या यह डी. डी. कनिंघम नाम का आदमी था जिसने उसे यहाँ बुलाया था?'
'नहीं,' मुरुगन ने कहा। 'बिल्कुल उल्टा। कनिंघम ने हर संभव कोशिश की कि रॉस यहाँ न पहुँच पाए। रॉनी हर कुछ महीनों में उसे मिन्नतें भरे पत्र लिखता था, और कनिंघम का जवाब हमेशा एक ही होता था, संक्षिप्त और सरल: कोई संभावना नहीं।'
'लेकिन फिर भी,' उर्मिला ने कहा, 'रोनाल्ड रॉस यहाँ आए थे, है ना?'
'जी हां,' मुरुगन ने कहा। 'कनिंघम ने एक साल से ज़्यादा समय तक रॉस को टालमटोल किया। और फिर एक दिन, जनवरी 1898 में, अचानक ही कनिंघम झुक गया। दरअसल, उसने अपना इस्तीफा दे दिया और इतनी जल्दी में इंग्लैंड के लिए रवाना हो गया कि वह अपने बॉक्सर शॉर्ट्स पैक करना भूल गया। 30 जनवरी को भारत सरकार ने आखिरकार रॉनी रॉस के कलकत्ता तबादले को मंज़ूरी दे दी।'
आधिकारिक कहानी यह है कि यह सब महज एक संयोग था: बूढ़ा कनिंघम पुराने इंग्लैंड के हनीसकल की खुशबूदार झोपड़ियों के लिए तरस रहा था। खैर, अंत में वह सरे के एक बोर्डिंग हाउस में जा पहुँचा, जहाँ से नगरपालिका के गैस संयंत्र का दृश्य दिखाई देता था। क्या आप मुझसे यह कहेंगे कि उसने यहाँ का अपना आरामदायक छोटा सा ठिकाना सिर्फ इसलिए छोड़ दिया क्योंकि उसे अंग्रेजी मफिन की याद आ रही थी? खैर, मैं आपको बता दूं: मुझे इस पर यकीन नहीं होता।
'तो फिर तुम क्या कहना चाह रही हो?' उर्मिला ने कहा। 'तुम्हें क्या लगता है कि वह

क्यों चला गया?'
'मेरे पास इसका जवाब नहीं है,' मुरुगन ने कहा। 'लेकिन यह स्पष्ट है कि जनवरी 1898 के मध्य के आसपास कुछ ऐसा हुआ था जिसके कारण कनिंघम ने अपना इरादा बदल दिया। और यह कोई संयोग भी नहीं था: किसी ने इसे अंजाम देने के लिए काफी मेहनत की थी।'
उर्मिला ने अपने कागजात दोबारा देखे। 'देखो,' उसने एक पंक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा। 'यहाँ लिखा है कि डी. डी. कनिंघम को जनवरी के मध्य में छह दिन की छुट्टी दी गई थी - 10 से 15 फरवरी तक। घटना इसी दौरान हुई होगी।'
'ठीक है,' मुरुगन ने कहा। 'और उस रेलवे आरक्षण चार्ट पर तारीख देखो: 10 जनवरी 1898 को सी. सी. डन नाम के किसी व्यक्ति ने मद्रास के लिए ट्रेन ली थी।'
'और वह कौन था?'
'कोई नहीं,' मुरुगन ने कहा। 'बस यही बात है। मुझे लगता है कि कोई यह संदेश देने की कोशिश कर रहा है कि डी. डी. कनिंघम उस दिन झूठे नाम से मद्रास गए थे।'
'मद्रास?' उर्मिला ने कागजों पर भौंहें चढ़ाते हुए कहा। 'मद्रास क्यों? वहां क्या हुआ होगा? मुझे लगता है कि अब पता लगाने का कोई तरीका नहीं है क्योंकि यह घटना बहुत पहले हुई थी?'
'तो आप यही सोचेंगे,' मुरुगन ने कहा, 'मेरा मतलब है, ऐसा तो है नहीं कि आप टाइम पत्रिका के पुराने अंकों में 1898 में मद्रास में हुई किसी घटना को खोज सकें, है ना? लेकिन सच तो यह है कि मैं सी. सी. डन नाम के एक व्यक्ति को जानता हूँ जो उस समय के आसपास मद्रास में था। बस मैंने कभी उसे डी. डी. कनिंघम से नहीं जोड़ा था। आज सुबह तक नहीं, जब मैंने वे कागज़ात आपके हाथों से लिए। आप समझ रहे हैं, वे ही गुमशुदा कड़ी थे; वे ही सब कुछ जोड़ते हैं।'
'और आपको इस सी.सी. के बारे में कैसे पता चला... वो जो भी था?'
'क्योंकि किसी ने मुझसे ऐसा करने को कहा था,' मुरुगन ने कहा। 'यह एक लंबी कहानी है। क्या आप वाकई इसके लिए तैयार हैं?'
उर्मिला ने जोर से सिर हिलाया।
'कुछ साल पहले,' मुरुगन ने बात शुरू करते हुए कहा, 'मैं जिस संस्था में काम करता हूँ, वहाँ मलेरिया के अभिलेखागार को अपडेट करने की कोशिश कर रहा था। उत्तरी अफ्रीका और मध्य पूर्व की फाइलों पर काम करते हुए मुझे तीन महीने हो चुके थे, तभी मुझे उत्तरी मिस्र में, अलेक्जेंड्रिया से लगभग तीस मील दक्षिण में, एक छोटे से, बेहद सीमित क्षेत्र में फैली महामारी की एक अजीब रिपोर्ट मिली। एक छोटे से गाँव की आबादी कुछ ही दिनों में खत्म हो गई। इसके बाद कोई पुनरावृत्ति नहीं हुई, कोई और प्रकोप नहीं हुआ। यह गाँव दक्षिण से आए प्रवासियों के एक परिवार द्वारा बसाया गया था - कॉप्टिक ईसाई। उनका अपने पड़ोसियों से ज्यादा संपर्क नहीं था और वे निकटतम गाँव से बहुत दूर रहते थे। जब उनके शव मिले, तो वे पहले से ही काफी सड़ चुके थे।'
'यह किस तरह की महामारी थी?' उर्मिला ने पूछा।
'किसी को पक्का पता नहीं,' मुरुगन ने कहा। 'कोई पोस्टमार्टम नहीं हुआ था। असल

में, हमें इसके बारे में जो कुछ भी पता चला है, वह सिर्फ इसलिए है क्योंकि एक ब्रिटिश स्वास्थ्य अधिकारी ने इस पर एक छोटी सी रिपोर्ट लिखी थी। यह 1950 की बात है, युद्ध के तुरंत बाद, और उस समय ब्रिटिश ही उस जगह का संचालन कर रहे थे। ऐसा लगता है कि वह स्वास्थ्य अधिकारी एक सक्षम और गंभीर व्यक्ति थे: उन्होंने अपना पूरा करियर मिस्र में बिताया था। जब तक वह उस छोटे से गाँव में पहुँचे, शवों का अंतिम संस्कार हो चुका था। लेकिन उन्होंने मृतकों के लक्षणों के बारे में दो तरह के प्रत्यक्ष प्रमाण दिए: गर्दन की सूजी हुई ग्रंथियाँ और त्वचा पर कीड़ों के काटने जैसे कई छोटे-छोटे छेद। उन्हें लगा कि यह मलेरिया का एक असाधारण रूप से घातक प्रकार हो सकता है, लेकिन उनके पास अपने अनुमान की पुष्टि करने का कोई तरीका नहीं था। आसपास के गाँवों के लोगों ने कहा कि शायद कोई जीवित बचा हो: शवों की गिनती में एक चौदह वर्षीय लड़के का कोई पता नहीं चला। बताया गया कि उसे प्रकोप के समय के आसपास पास के एक कस्बे के रेलवे स्टेशन पर देखा गया था।' स्वास्थ्य अधिकारी को लगा कि वह लड़का वायरस का वाहक हो सकता है, और उसने उसे ढूंढने की कोशिश की। उसे लगा कि लड़के की जांच से घटना के बारे में कुछ सुराग मिल सकता है। लेकिन वह कभी नहीं मिला।

'तो उन्हें पता ही नहीं था कि क्या हुआ था?'

असल में, नहीं। स्वास्थ्य अधिकारी ने स्वीकार किया कि उन्हें पता नहीं था कि आखिर हुआ क्या था। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने ऐसे ही लक्षण लगभग बीस या उससे भी अधिक वर्ष पहले दक्षिण में, लक्सर में देखे थे। किसी ने उन्हें बताया था कि पुरातत्व के शौकीन लॉर्ड कार्नार्वोन की मृत्यु मच्छर के काटने से हुई थी, जिसके कारण उन्हें बुखार और गर्दन की ग्रंथियों में सूजन आ गई थी। उन्होंने लॉर्ड की बेटी द्वारा उनकी मृत्यु से ठीक पहले लिखे गए एक पत्र का भी हवाला दिया। "आपको याद है, लक्सर में उनके [पापा के] गाल पर मच्छर के काटने के निशान से उन्हें चिंता हो रही थी, कल अचानक उनकी गर्दन की सभी ग्रंथियों में सूजन आने लगी और कल रात उन्हें तेज बुखार था और आज भी है।"

उर्मिला ने कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा। हम मद्रास में 1898 में हुई एक घटना के बारे में बात कर रहे थे। पचास साल बाद हम मिस्र कैसे पहुँच गए?'

'मैं यही समझाने की कोशिश कर रहा हूँ,' मुरुगन ने कहा। 'आगे की बात ये है। हुआ ये कि स्वास्थ्य अधिकारी की रिपोर्ट मिलने के बाद, मैंने लोगों से पूछना शुरू किया कि क्या किसी के पास इस बारे में कोई सुराग है। मैंने वेब पर कुछ चैट ग्रुप में भी सवाल पूछे। एक दिन जब मैंने लॉग इन किया तो मुझे एक लंबा संदेश मिला: कई पन्नों का। उस पर कोई पता या कुछ भी नहीं था: उसे गुमनाम रूप से भेजा गया था। मुझे जल्द ही पता चला कि जिसने भी इसे भेजा था, उसने यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत मेहनत की थी कि मुझे उसकी पहचान का पता न चले: इसे इतने अलग-अलग रास्तों से भेजा गया था कि मैं इसका पता भी नहीं लगा सका।'

'और उस संदेश में क्या लिखा था?' उर्मिला ने पूछा।

'यह एक चेक मनो-भाषाविज्ञानी द्वारा लिखित पुस्तक का अंश था। यह अंश हंगरी की एक उच्च-वर्गीय महिला के बारे में था, जो एक विख्यात शौकिया पुरातत्वविद् और

पेशेवर सनकी बन गई थीं - काउंटेस पोंग्राज़। अपने जीवन के अंतिम समय में वह मिस्र चली गईं। उन्हें आखिरी बार 1950 में देखा गया था: वह उस गांव के पास कहीं खुदाई करने जा रही थीं जहां यह घटना घटी थी। उनके साथ क्या हुआ, यह कोई नहीं जानता।'
उर्मिला ने कहा, 'जनवरी 1898 में मद्रास से इसका कोई संबंध मुझे अभी भी समझ नहीं आ रहा है।'
'मैं बस उसी पर आ रहा था,' मुरुगन ने कहा। 'अपनी युवावस्था में ला पोंग्राज़ साठ के दशक की एक तरह की जेट-सेटर का आदर्श थीं, जो दुनिया भर में घूमती थीं, गुरुओं से सीखती थीं और इसी तरह की चीजें करती थीं। और जनवरी 1898 में वह उन्नीस साल की थीं, अपने लंबे करियर की शुरुआत ही कर रही थीं। और आपको क्या लगता है कि वह कहाँ थीं?'
'कहाँ?' उर्मिला ने पूछा।
'भारत में,' मुरुगन ने कहा। 'ठीक कहें तो मद्रास में। अब आप सोचेंगे कि अगर कोई गुरु-प्रेमी उस समय दुनिया के उस हिस्से में होता, तो वह मैडम ब्लावत्स्की और थियोसोफिकल सोसाइटी पर ऐसे टूट पड़ता जैसे कोई मिसाइल गर्मी की तलाश में निकलती है। लेकिन आप गलत होंगे। यह काउंटेस पोंग्राज़ एक सच्ची गुरु-प्रेमी थीं और उन्हें उस तरह के तैयार भोजन में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उन्होंने जिस गुरु को चुना, वह मैडम ब्लावत्स्की की कट्टर प्रतिद्वंद्वी थीं - फिनलैंड की एक महिला, मैडम लीसा सालमिनेन, जो 'सोसाइटी ऑफ स्पिरिचुअलिस्ट्स' नाम से अपना एक छोटा सा संगठन चलाती थीं। काउंटेस, मैडम सालमिनेन की प्रमुख शिष्या थीं, और उन्होंने अपनी गुरु के साथ घटी हर बात को लिख रखा था।'

अध्याय 31

12 जनवरी 1898 की रात को, ग्रोफ्ने पोंग्राज़ के अभिलेखों के अनुसार, कुछ चुनिंदा अध्यात्मवादी अपनी प्रथा के अनुसार, श्रीमती सालमिनेन के साथ अपने साप्ताहिक सत्र के लिए सोसाइटी द्वारा किराए पर लिए गए एक घर में एकत्रित हुए। कई स्वतंत्र स्रोत इस बात की पुष्टि करते हैं कि ये सत्र आम तौर पर गरिमापूर्ण और अत्यधिक अनुशासित होते थे। इनकी शुरुआत आमतौर पर एक छोटे से स्वागत समारोह से होती थी, जिसमें श्रीमती सालमिनेन उपस्थित रहती थीं और सभी को चीनी मिट्टी की चाय परोसती थीं। हालाँकि, इस अवसर पर चाय पार्टी की गंभीरता एक अप्रत्याशित और अनपेक्षित घुसपैठिए के कारण अचानक भंग हो गई। मद्रास में कई लोग श्रीमती सालमिनेन के करीबी लोगों के समूह में शामिल होने के निमंत्रण की लालसा रखते थे। कुछ लोग तो समूह में घुसपैठ करने के लिए काफी हद तक प्रयास भी कर चुके थे। इसलिए, केवल एक बिन बुलाए मेहमान के आगमन से ही एकत्रित अध्यात्मवादियों को आश्चर्य नहीं हुआ, बल्कि इसलिए हुआ क्योंकि वह व्यक्ति दूर-दूर तक भी ऐसे समूह से जुड़ने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति नहीं प्रतीत होता था। बल्कि इसके

विपरीत। यह उल्लेखनीय है कि आम तौर पर अध्यात्मवादी, थियोसोफिस्ट और उनके अनुयायी ब्रिटिश नागरिक और सैन्य अधिकारियों को घोर घृणा की दृष्टि से देखते थे - और यह घृणा ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा भी भरपूर मात्रा में व्यक्त की जाती थी। उनकी आपसी घृणा इतनी प्रबल थी कि मद्रास के फोर्ट सेंट जॉर्ज के बैरकों में, जब कोई घुड़सवार सैनिक कहता था, 'मैं अध्यात्मवादी बनना पसंद करूंगा', तो इसे आम तौर पर 'मैं मरना पसंद करूंगा' जैसे कथनों के समर्थ माना जाता था।
इसके विपरीत, 'मैं लेफ्टिनेंट-कर्नल बनना पसंद करूँगा' यह वाक्य अध्यात्मवादियों और उनके अनुयायियों के बीच प्राथमिकताओं का एक दृढ़ बयान माना जा सकता है। फिर भी, काउंटेस के संक्षिप्त लेकिन सजीव वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि वह घुसपैठिया वास्तव में सैन्य पृष्ठभूमि का व्यक्ति था। वह अपने विशिष्ट मग्यार लहजे में उसका वर्णन करते हुए कहती हैं कि वह पचास वर्ष से अधिक आयु का, मोटे, लाल चेहरे वाला अंग्रेज था, जिसके बाल कम थे और मूंछें हसार जैसी थीं। वह व्यक्ति स्पष्ट रूप से अत्यधिक भावनात्मक व्याकुल था, क्योंकि उसे अपने हाथ मलते और मूंछें खींचते हुए देखा गया था, जबकि उसकी आंखें लाल और सूजी हुई थीं, मानो वह कई दिनों से सोया न हो। फिर भी, उसके हाव-भाव से उसकी अति-व्याकुलता का आभास नहीं हुआ: काउंटेस ने तुरंत उसे उच्च या मध्यम श्रेणी का अधिकारी मान लिया, संभवतः किसी पैदल सेना रेजिमेंट का। ज़रा सोचिए, जब उस घुसपैठिए ने अपना परिचय देते समय अपने पद या रेजिमेंट का ज़िक्र तक नहीं किया, तो उसे कितना आश्चर्य हुआ होगा। उसने इसे अपनी दृष्टि पर एक तरह का अपमान समझा। और यह याद रखना ज़रूरी है कि काउंटेस पोंग्राज़ स्वयं महान अत्तिला नामक एक सैनिक की वंशज होने का दावा करती थीं, और इसके अलावा, वह शाही बुडा के दरबारी हलकों में सम्मान के स्थान की उतनी ही आदी थीं, जितनी कि सैन्य पेस्ट के शराबखानों की। इसलिए, एक सैनिक के गुणों को पहचानने में उनसे गलती होने की संभावना कम ही थी।
आध्यात्मिकवादियों का संदेह तब और बढ़ गया जब घुसपैठिए को अपना नाम याद करने में कुछ परेशानी हुई और अंत में (कुछ हिचकिचाहट के साथ) उसने अपना परिचय सी. सी. डन के रूप में दिया। इस संक्षिप्त परिचय के तुरंत बाद, स्वघोषित श्री डन ने श्रीमती सालमिनन के प्रभावशाली सिर की ओर झुककर फुसफुसाना शुरू कर दिया। संयोग से उस समय काउंटेस वहीं पास में मौजूद थीं और अब, जरा भी ध्यान न देते हुए, उन्होंने अपना ध्यान उस दिशा में केंद्रित करने का प्रयास किया। हालांकि वे इस दुर्लभ कुलीन कला में निस्संदेह निपुण थीं, फिर भी वे कुछ असंबद्ध शब्दों से अधिक कुछ नहीं समझ पाईं: 'बहुत दूर... तुम्हें देखना... सपने... दर्शन... मृत्यु... तुमसे विनती... पागलपन... विनाश।'
कमरे में मौजूद कई अन्य लोगों की तरह, काउंटेस को भी पूरी उम्मीद थी कि श्रीमती सालमिनेन उस अजनबी को नज़रअंदाज़ कर देंगी, जैसा कि उन्होंने उससे पहले कई अन्य लोगों के साथ किया था। लेकिन यहाँ उन्होंने उस प्रभावशाली फिनिश महिला को कम आँका। श्रीमती सालमिनेन उन लोगों में विशेष रुचि रखती थीं जो अत्यधिक भावुकता के लक्षण प्रदर्शित करते थे: उनका मानना था कि तीव्र जुनून, जब

कुशलतापूर्वक नियंत्रित किया जाता है, तो ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकता है जिन्हें वह 'मानसिक सफलता' कहती थीं। इसलिए, व्याकुल श्री डन को दूर भगाने के बजाय, उन्होंने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और जब वे सेन्स टेबल पर गए तो उन्हें उपस्थित लोगों के साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।
यहां यह बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि काउंटेस पोंग्राज़ के प्रेतवादन संबंधी विवरण हमेशा पूरी तरह सुसंगत नहीं होते थे। वे अक्सर प्रेतवादन के तुरंत बाद, जब वे स्वयं अत्यधिक उत्तेजित अवस्था में होती थीं, अपने विचार लिख लेती थीं। अक्सर ऐसी स्थितियों में, जिस त्रुटिहीन उच्च जर्मन भाषा में वे अपने विवरण लिखती थीं, उसमें तनाव के लक्षण दिखाई देने लगते थे; कभी-कभी उनकी वाक्य रचना की कमजोर समझ पूरी तरह से विफल हो जाती थी, और पूर्ण वाक्यों के बजाय वे स्पष्ट रूप से असंबद्ध अक्षरों की श्रृंखला लिख देती थीं। गहन कंप्यूटर विश्लेषण से पता चला है कि ये ध्वनि समूह मध्य यूरोपीय बोलियों के मिश्रण से लिए गए थे, जैसे कि स्लोवेनियाई और फिनो-उग्रियन के कुछ असामान्य कार्पेथियन रूप (निस्संदेह, ये सभी उन्होंने कास्टेली पोंग्राज़ के विशाल कर्मचारियों से सीखे थे)।
असल बात यह है कि हम यह दावा नहीं कर सकते कि काउंटेस एक विश्वसनीय गवाह थीं या उनकी डायरी में लिखे गए संक्षिप्त शब्दों के आधार पर कोई सटीक विवरण तैयार किया जा सकता है। हालांकि, उनके वृत्तांतों की पुष्टि अक्सर श्रीमती सालमिनेन के séances के नियमों और प्रक्रियाओं से की जा सकती है, और इन तथ्यों पर आमतौर पर कोई विवाद नहीं है। नियम के अनुसार, श्रीमती सालमिनेन और उनके कुछ अनुयायी चाय के बाद एक ऐसे कमरे में चले जाते थे जो केवल एक मोमबत्ती से रोशन होता था। एक भारी लकड़ी की मेज के चारों ओर बैठकर, सभी लोग हाथ मिलाते और अपनी एकाग्रता को केंद्रित करने का प्रयास करते, जिसमें श्रीमती सालमिनेन एक तरह से उनके मन की बिखरी हुई ऊर्जा के लिए लेंस का काम करती थीं। इस तरह के सत्र को सफल तभी माना जाता था जब उसमें आध्यात्मिकवादियों के लिए प्रिय मानसिक ऊर्जा की कुछ 'अभिव्यक्तियाँ' दिखाई देतीं - जैसे मेज पर हाथ रखना, स्वतः लेखन, निराकार आवाजें आदि। कुछ विशेष अवसरों पर, भाग्यशाली लोगों को मानसिक रूप से अत्यंत मूल्यवान पुरस्कार भी प्राप्त होते थे, जिसे 'एक्टोप्लाज्मिक ग्लो' कहा जाता था। यह बात बार-बार सिद्ध हो चुकी है कि सामूहिक उन्माद की स्थिति में इस प्रकार की 'अभिव्यक्तियाँ' आसानी से उत्पन्न की जा सकती हैं, और इस पर यहाँ टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है।
हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि 'चमक' की घटना एक दुर्लभ और असामान्य घटना थी। यह आमतौर पर सत्र के अंत में ही घटित होती थी, और इससे पहले हमेशा मेज थपथपाने जैसी अन्य अभिव्यक्तियाँ दिखाई देती थीं।
जिस अवसर की हम अभी चर्चा कर रहे हैं, उस समय काउंटेस पोंग्राज़ को श्रीमती सालमिनेन के बगल में और बिन बुलाए मेहमान, स्वयंभू श्री सी. सी. डन के सामने बैठने के लिए चुना गया था। अब ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीमती सालमिनेन के स्पष्ट निर्देशों के बावजूद, काउंटेस इन बैठकों के दौरान मेज पर बैठे लोगों पर कभी-कभार नज़र डालती रहती थीं। इसी दौरान उन्होंने देखा कि लगभग बीस मिनट बाद श्रीमती

सालमिनेन और श्री डन एक प्रकार की समाधि जैसी अवस्था में चले गए थे, उनके सिर आगे की ओर झुके हुए थे, लगभग मेज को छू रहे थे। जब यह स्थिति काफी देर तक बनी रही, तो काउंटेस ने कार्यवाही को रोकने के उस कदम पर विचार करना शुरू कर दिया, जो अन्यथा अकल्पनीय था (अकल्पनीय इसलिए क्योंकि उस समय यह मान्यता थी कि व्यवधान से एक 'आत्मा' अंतर-प्लाज्मिक अधोलोक में फंस जाएगी)। हालांकि, जब वह इस संभावना पर विचार कर ही रही थी, तभी श्रीमती साल्मिनेन का सिर अचानक और ज़ोर से कुर्सी पर पीछे की ओर पटक दिया गया, जिससे वह छत की ओर घूरने लगीं, उनके बाल बिखरे हुए थे, मुंह खुला और बेजान था। फिर श्री डन मेज से पीछे की ओर ज़ोर से उछले और दीवार से जा टकराए, उनके पैर ज़मीन से कुछ इंच ऊपर थे। अगले ही पल, अकेली मोमबत्ती बुझ गई और कमरा अचानक घने मखमली अंधेरे में डूब गया। भारी मेज ज़ोरदार आवाज़ के साथ उलट गई, और श्री डन ज़मीन पर गिर पड़े, जो हिंदुस्तानी भाषा में लग रहा था, चिल्ला रहे थे: 'मुझे बचाओ... उससे... पीछा करने से... दया की भीख मांगो...'

काउंटेस के अनुसार, इन मतिभ्रमों का सबसे विचित्र पहलू यह था कि उस अंधकार में भी, जो केवल प्रकाश की अनुपस्थिति ही नहीं, बल्कि उसका विपरीत, एक ऐसा विरोधाभास था जिसकी कल्पना केवल मन की अंतर्मन दृष्टि से ही की जा सकती थी: इस घोर अंधकार में भी वे सी. सी. डन को बिल्कुल स्पष्ट रूप से देख सकते थे, हालांकि प्रकाश पर निर्भर दृष्टि से नहीं; वे उसे संघर्ष करते हुए देख सकते थे; उसके चेहरे पर उभरती पीड़ा को देख सकते थे; उन्होंने उस पीड़ा से लड़ने के उसके व्यर्थ प्रयासों को देखा जिसने उसे इस यातना के शिकंजे में जकड़ रखा था - यह सब वे देख सकते थे, लेकिन एक बार भी उन्होंने उसकी पीड़ा के कारक, उस हाथ या उपकरण, या उस माध्यम की झलक भी नहीं देखी या कल्पना भी नहीं की जिसके द्वारा ये भयानक पीड़ाएँ उत्पन्न की गई थीं। उसका चेहरा भय से पीला पड़ गया था, और उन्होंने उसे अपने हाथ-पैर पटकते हुए, किसी चीज से लड़ते हुए देखा, शायद किसी हाथ से, या संभवतः किसी उपकरण से। उन्होंने उसे फर्श पर दुबका हुआ देखा, वह लेटा हुआ था लेकिन बेहोश नहीं था, लेकिन फिर अचानक ही उसके संघर्ष का स्वरूप बदल गया, और ऐसा लग रहा था मानो वह किसी जानवर से जूझ रहा हो, उसके दांतों को अपने गले पर कसने से रोकने के लिए संघर्ष कर रहा हो; वह बार-बार मंत्रों का जाप कर रहा था।

फिर अचानक शोर थम गया और मोमबत्ती फिर से तेज हो गई, जिससे अंधेरा छंट गया। आँखें खोलकर उन्होंने देखा कि मेज ठीक उसी जगह पर थी जहाँ पहले थी, और वे सभी अपनी-अपनी जगह पर बैठे थे, सिवाय उस बिन बुलाए मेहमान के, जो एक कोने में दुबका हुआ था, बिलकुल नग्न अवस्था में।

और फिर श्रीमती सालमिनेन ने अपने पहले शब्द फुसफुसाते हुए कहे, इतने धीमे कि उनके बगल में बैठी काउंटेस के अलावा किसी और को सुनाई नहीं दिए। इस पूरे समय श्रीमती सालमिनेन अपनी कुर्सी पर बेसुध पड़ी थीं, सिर पीछे की ओर झुका हुआ था, आँखें खाली और भावहीन थीं। जब उन्होंने बोलना शुरू किया तो वे पूरी तरह से होश में नहीं थीं। उनके होंठों से निकला वाक्य था: 'मैं कुछ नहीं कर सकती: मौन उसे अपने

साथ ले जाने आया है।'
ये कुछ शब्द कहकर वह मेज पर गिर पड़ी।
उसके घबराए हुए अनुयायियों ने उसे तुरंत उसके शयनकक्ष में ले गए, जहाँ वह अगले दिन तक रही। होश में आते ही उसने सबसे पहले काउंटेस को बुलवाया। दोनों महिलाएं कई घंटों तक एक कमरे में साथ रहीं।
दुर्भाग्यवश, काउंटेस ने उस दिन हुई उनकी बातचीत का कोई लिखित विवरण नहीं दिया, लेकिन यह ज्ञात है कि उन्होंने बाद में इसे अपने जीवन का निर्णायक मोड़ बताया था।
हालाँकि, श्रीमती सालमिनेन का अपनी शिष्या के आगे के करियर पर वास्तविक प्रभाव विवादित बना हुआ है। उदाहरण के लिए, जब उन्होंने मध्य एशिया, नेपाल और बंगाल में प्रारंभिक मानिचियन और नेस्टोरियन स्थलों की खुदाई में अपने अग्रणी पुरातात्विक कार्य का श्रेय श्रीमती सालमिनेन के प्रभाव को दिया, तो उनके मित्रों ने इसे केवल कहने का एक तरीका माना – एक कृतज्ञ शिष्या द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करना। लेकिन प्रारंभिक ईसाई युग के अलेक्जेंड्रियाई दार्शनिक वैलेंटीनस की शिक्षाओं के समर्थन में, उनके मित्रों ने उनके कथनों को अधिक सहजता से स्वीकार किया। जब उन्होंने कहा कि श्रीमती सालमिनेन ने ही उन्हें वैलेंटीनस के ब्रह्मांड विज्ञान की सच्चाई बताई थी, जिसमें परम देवता रसातल और मौन हैं, जिनमें से एक पुरुष और दूसरा स्त्री है, एक मन का और दूसरा सत्य का प्रतिनिधित्व करता है, तो कुछ ही लोगों ने उनके इस कथन पर आपत्ति जताई, क्योंकि इन मान्यताओं को स्पष्ट रूप से एक साधारण व्याख्या की आवश्यकता नहीं थी।
हालांकि उनके दोस्त उनकी विलक्षणताओं से परिचित थे, फिर भी जब वह 1940 के दशक के अंत में प्राचीन वैलेंटीनियन पंथ के सबसे पवित्र स्थल, मौन के खोए हुए मंदिर की खोज में मिस्र चली गईं, तो वे गंभीर रूप से चिंतित हो गए। उनके लापता होने के बाद, उनमें से कुछ ने याद किया कि वह अक्सर श्रीमती सालमिनेन द्वारा दिए गए एक वर्णन के बारे में बात करती थीं: रेगिस्तान के किनारे बसा एक छोटा सा गाँव; खजूर के पेड़, मिट्टी की झोपड़ियाँ और चरमराते हुए पानी के पहिये।

अध्याय 32

उमस भरी गर्मी के बावजूद उर्मिला कांप रही थी।
'तो क्या आपको लगता है कि यह सब आपस में जुड़ा हुआ है?' उसने कहा। 'जो संदेश आपको भेजा गया था, और कागज के ये टुकड़े जिनमें मछलियाँ लपेटी गई थीं...'
'क्या तुम मज़ाक कर रहे हो?' मुरुगन ने कहा। 'बिल्कुल, ये आपस में जुड़े हुए हैं। तुम्हारी मछली लपेटने वाली बातें ही सब कुछ स्पष्ट करती हैं। इसे इस तरह समझो: कनिंघम के पास महाद्वीप की एकमात्र प्रयोगशाला थी जहाँ रॉन के लिए कुछ नया करने की थोड़ी सी भी संभावना थी; रॉन यह जानता था और 1896 के अंत तक वह कलकत्ता जाने के लिए बेताब था। लेकिन कनिंघम को यह मंजूर नहीं था: उसने

अपनी प्रयोगशाला को अपने घर के पिछवाड़े की तरह सजाया था और वह किसी भी आवारा लड़के को अपनी पार्टी खराब नहीं करने देने वाला था। इसलिए: यदि कनिंघम रॉन के कलकत्ता जाने में मुख्य बाधा था, तो इस समय - 1897 के अंत में - वह मलेरिया की पहेली को सुलझाने में सबसे बड़ी बाधा था। अगर कोई इस समय रॉन पर नज़र रख रहा होता, तो उसे यह समझने में ज़्यादा समय नहीं लगता। तो वे क्या करते?' वे टाइमआउट लेते हैं और आपस में बातचीत करते हैं, और जब वे वापस मैदान पर आते हैं तो उनके पास एक नई योजना होती है: कनिंघम को जाना होगा। और निश्चित रूप से, ठीक यही होता है: जनवरी 1898 में अचानक, कनिंघम अपना मन बदल लेता है; वह मैच हार जाता है और इंग्लैंड भाग जाता है। इस बीच वह मद्रास में कुछ समय के लिए रुकता है जहाँ वह किसी प्रकार के मनोविकार से गुजरता है। वे अखबार, मेरी स्क्रीन पर वह संदेश - कोई मुझे कुछ जोड़ने की कोशिश कर रहा है: वे चाहते हैं कि मैं जानूँ कि मैं सही रास्ते पर था।

'लेकिन एक मिनट रुको,' उर्मिला ने कहा। 'तुम्हारा मतलब क्या है "मैं चाहती हूँ कि तुम जानो"? कागज़ात तुम्हें नहीं मिले थे। मुझे मिले थे - और तुमसे मेरी मुलाक़ात इत्तेफ़ाक से हुई - क्योंकि तुम रोमेन हलदर के घर पर मौजूद थीं जब मैं... जब मैं बेहोश हो गई थी।'

'क्या यह सही है?' मुरुगन ने कहा। 'ठीक है, अब आप मुझे ठीक-ठीक बताएं कि आपको वे कागजात कैसे "मिले" और हम यह देखने की कोशिश करेंगे कि क्या आपका दुर्घटना का सिद्धांत सही साबित होता है।'

उर्मिला ने उसे उस सुबह और पिछली रात की घटनाओं के बारे में बताना शुरू किया – अपने परिवार को किया गया फ़ोन कॉल, मछली पकाने का उसका वादा, और ठीक सात बजकर पंद्रह मिनट पर दरवाजे की घंटी का बजना। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे वह कहानी सुनाती गई, उसका बयान अनिश्चित होता गया, यहाँ तक कि जब वह उस अनजान मछली विक्रेता के पास पहुँची, तो उसकी आवाज़ लगभग धीमी होकर लगभग सुनाई न देने वाली फुसफुसाहट में बदल गई।

'लेकिन कोई इस पूरे मामले को इतने घुमावदार तरीके से क्यों निपटाएगा?' उसने कहा। 'अगर वे चाहते हैं कि आप कुछ जानें तो वे सीधे-सीधे क्यों नहीं बता देते - मुझे और रोमेन हलदार वगैरह को इसमें क्यों शामिल किया?'

मुरुगन अपनी दाढ़ी खुजलाने के लिए रुके। उन्होंने कहा, 'सच तो यह है कि मुझे नहीं पता। लेकिन कुछ बातें तो स्पष्ट हैं। कोई हमें कुछ जोड़ने की कोशिश कर रहा है; वे हमें कुछ बताने की कोशिश कर रहे हैं; कुछ ऐसा जिसे वे खुद नहीं बताना चाहते, ताकि जब हम अंत तक पहुंचें तो हमारे पास एक बिल्कुल नई कहानी हो।'

'क्यों?' उर्मिला ने कहा। 'इसका क्या उद्देश्य है? अगर हम अंत तक पहुँचें या न पहुँचें, तो इससे उन्हें क्या लाभ होगा?'

'मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं है,' मुरुगन ने कहा, 'लेकिन मुझे लगता है कि मैं एक संभावित परिदृश्य का खाका खींच सकता हूं।'

'आगे बढ़ो,' उर्मिला ने कहा।

'ठीक है,' मुरुगन ने कहा। 'अब मान लीजिए, मान लीजिए कि आपका यह विश्वास है

- मुझसे यह मत पूछिए कि क्यों या कुछ और, यह केवल एक काल्पनिक खेल है - मान लीजिए कि आप मानते हैं कि किसी चीज को जानना ही उसे बदलना है, तो यह स्वाभाविक होगा, है ना, कि किसी चीज को ज्ञात कराना परिवर्तन लाने का एक तरीका होगा? या कहें तो एक उत्परिवर्तन पैदा करना।'
उर्मिला ने संदेह भरी आवाज निकाली।
अब चलिए इसे एक कदम और आगे बढ़ाते हैं। अगर आप इस बात पर यकीन करते हैं, तो इसका मतलब यह होगा कि अगर आप किसी खास तरह का बदलाव या उत्परिवर्तन लाना चाहते हैं, तो उसे लाने का एक तरीका यह है कि आप कुछ चीजों को ज्ञात होने दें। आपको इसे करने में बहुत सावधानी बरतनी होगी, क्योंकि प्रयोग तब तक सफल नहीं होगा जब तक कि उससे किसी तरह की वास्तविक खोज न हो जाए। उदाहरण के लिए, यह काम नहीं करेगा अगर आप भीड़ में से किसी एक को चुनकर कहें: "देखो, ये दो हैं और ये एक और; इन्हें जोड़ो और क्या मिलता है?" यह कोई वास्तविक खोज नहीं होगी क्योंकि जवाब पहले से ही पता होगा। इसलिए आपको अपने प्रयोगकर्ताओं को सही दिशा में धकेलना होगा और उनके खुद से वहां पहुंचने का इंतजार करना होगा।
'तो आप यह कह रहे हैं,' उर्मिला ने कहा, 'कि कोई मेरे माध्यम से, इस बहुत ही घुमावदार तरीके से, एक प्रकार के प्रयोग के रूप में आपको कुछ बता रहा है; क्योंकि वे कुछ बदलने की कोशिश कर रहे हैं?'
'मैं इससे बेहतर खुद नहीं कह सकता था।'
'क्या बदलना चाहते हैं?' उर्मिला चिल्लाई। 'और क्यों? वे हमारे साथ क्या करना चाहते हैं?'
'हमें नहीं पता,' मुरुगन ने कहा। 'हमें नहीं पता क्या; हमें नहीं पता क्यों।'
उर्निला ने कहा, 'तो आपका मतलब यह है कि आप और मैं एक प्रयोग में फंसे हुए हैं, और हमें नहीं पता कि यह प्रयोग किसलिए है या क्यों?'
'बिल्कुल सही,' मुरुगन ने कहा। 'सच तो यह है कि हम एक ऐसे समूह से निपट रहे हैं जिनके लिए चुप्पी ही धर्म है। हमें यह भी नहीं पता कि हमें क्या नहीं पता। हमें नहीं पता कि इसमें कौन शामिल है और कौन नहीं; हमें नहीं पता कि उन्होंने अपने कितने प्रभाव को नियंत्रित कर रखा है। हमें नहीं पता कि वे हमसे कितने धागों को जोड़ने की उम्मीद कर रहे हैं और कितने धागों को वे अगले व्यक्ति के लिए लटकाए रखना चाहते हैं।'
उर्निला ने कहा, 'आपका मतलब है कि वे बाकी का हिस्सा किसी और के लिए रख सकते हैं ताकि वह भविष्य में कभी इसे पूरा कर सके?'
'मुझे लगता है कि यही बात है,' मुरुगन ने कहा। 'ये लोग इतनी जल्दी कहीं नहीं जाने वाले। ये लोग पिछली एक सदी से सावधानीपूर्वक चुने हुए सुरागों को फैलाते आ रहे हैं, और कभी-कभी, अपने निजी कारणों से, वे कुछ चुने हुए लोगों का ध्यान उन सुरागों की ओर आकर्षित करते हैं। सिर्फ इसलिए कि आपका और मेरा नाम उस सूची में शामिल हो गया है, इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने अपना काम खत्म कर दिया है।'

'तो आखिर ये सब कहाँ जा रहा है?' उर्मिला ने कहा। 'इसका अंत कहाँ होगा?'
'ऐसा नहीं होगा,' मुरुगन ने कहा। 'मैं आपको बताता हूँ कि यह कैसे काम करता है: उन्हें आखिरी पन्ना पलटने के लिए सही समय का चुनाव बहुत सावधानी से करना पड़ता है। देखिए, उनके लिए, इस कहानी के अंत में "द एंड" लिखना ही वह तरीका है जिससे वे अगली कहानी में छलांग लगाने की उम्मीद करते हैं। लेकिन ऐसा होने के लिए दो चीजों का बिल्कुल सटीक होना जरूरी है: कहानी जिसके लिए भी रखी गई है, उसके सामने उसी समय एंड क्रेडिट्स आने चाहिए।'
'तो वे किस बात का इंतजार कर रहे हैं?' उर्मिला ने कहा।
मुरुगन ने कहा, 'कई बातें हो सकती हैं। शायद वे मलेरिया के किसी ऐसे स्ट्रेन की खोज में लगे हों जिसके बारे में पहले कभी जानकारी न मिली हो। या शायद वे किसी ऐसी तकनीक का इंतज़ार कर रहे हों जिससे वे अपनी कहानी को जिसके लिए भी इसे सहेज कर रख रहे हैं, आसानी से और तेज़ी से पहुंचा सकें: एक ऐसी तकनीक जो इसे तैयार करने में अभी उपलब्ध किसी भी तकनीक से कहीं ज़्यादा कारगर हो। या शायद वे दोनों का ही इंतज़ार कर रहे हों। कौन कह सकता है?'
बिजली की गड़गड़ाहट से उसकी बात अधूरी रह गई। उर्मी-ला ने चारों ओर जल्दी से देखते हुए, जर्जर शौचालय की लटकती हुई छत के नीचे एक सुरक्षित जगह देखी। वह उसके नीचे घुस गई और ज़मीन पर बैठ गई, अपने घुटनों को ठुड्डी से सटाकर। मुरुगन भी उसके पीछे रेंगता हुआ आया और अपने पैरों को लड़खड़ाते हुए मोड़ लिया। कुछ ही मिनटों में, छत के किनारे से उनके सामने ज़ोरदार बारिश होने लगी।
उर्मिला घुटनों को थामे बारिश की धुंधली दीवार को घूर रही थी। अब सब कुछ धुंधला सा लग रहा था: क्लब से आया फोन, सुबह का मछली बेचने वाला, रोमेन हलदर, सोनाली दास। यह समझना बहुत मुश्किल था कि इनमें से क्या इसका हिस्सा था और क्या नहीं: हलदर के घर की ओर खुलने वाली रसोई की खिड़की, क्या वह इसका हिस्सा थी? उसके माता-पिता? उसके भाई? उसकी भाभी? (नहीं, वह नहीं।) क्या यह इसका हिस्सा था कि उसने हल्दी और मछली के खून से सनी यह भयानक, गंदी साड़ी पहनी हुई थी; क्या यह इसका हिस्सा था कि उसने आज सुबह गांगोपाध्याय परिवार के दरवाजे पर दस्तक दी और उन्हें जगाया? और यह सोचना कितना अजीब था कि यह सब तब हुआ जब वह सिर्फ यही सोच रही थी कि उसे जल्द से जल्द शोरशे-इलिश बनानी है, ताकि वह बीबीडी बाग की मिनीबस पकड़कर ग्रेट ईस्टर्न होटल में संचार मंत्री की प्रेस कॉन्फ्रेंस के लिए समय पर पहुंच सके। अब जब वह इसके बारे में सोचती है, तो ऐसा लगता है मानो बहुत समय बीत गया हो; उसे मुश्किल से याद आ रहा था कि संचार मंत्री और उनकी प्रेस कॉन्फ्रेंस इतनी महत्वपूर्ण क्यों थी, वह वहाँ पहुँचने के लिए इतनी जल्दी में क्यों थी, समाचार संपादक इतना ज़ोर क्यों दे रहा था: मंत्री जी आखिर कहते क्या? कि संचार व्यवस्था अच्छी है? कि संचार व्यवस्था को सुधारना ही उनका जीवन का उद्देश्य है? कीबोर्ड पर बैठकर, शुरुआत के लिए एक अच्छा वाक्य सोचने की कोशिश करना कितना अजीब होता: आज संचार मंत्री ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में घोषणा की कि उनका दृढ़ विश्वास है कि संचार भारत के भविष्य की कुंजी है। एक तरह से, यहाँ होना, लगभग, इस टपकती

हुई बरामदे पर बैठे रहना, जहाँ हर जगह गंदगी की बदबू फैली है, दिल्ली के किसी मोटे बूढ़े आदमी को चीखते हुए माइक्रोफ़ोन पर बोलते हुए सुनने से कम अजीब लग रहा था; यह समझना आसान था कि वह यहाँ क्यों थी, इस जर्जर शौचालय के इस नम कोने में दुबकी हुई, बजाय इसके कि वह यह जान पाए कि वह मछली क्यों पका रही थी ताकि उसका भाई प्रथम श्रेणी की फुटबॉल टीम में शामिल हो सके; मुरुगन की रोनाल्ड रॉस के बारे में बातें सुनना, इस बात की चिंता करने से कहीं ज़्यादा समझदारी भरा लग रहा था कि क्या वह बीबीडी बाग़ की मिनीबस में किसी तरह जगह बना पाएगी ताकि ग्रेट ईस्टर्न में होने वाली प्रेस कॉन्फ्रेंस में देर न हो जाए। हालाँकि उसने रोनाल्ड रॉस के बारे में पहले कभी नहीं सुना था, इस आदमी से पहले कभी नहीं मिली थी, जो अब उसके बिल्कुल पास बैठा था, उसका पैर उसके पैर से सटा हुआ था। वह किसी भी ऐसे व्यक्ति जैसा नहीं था जिसे वह जानती थी, लेकिन इसमें कोई बुराई नहीं थी, ज़ाहिर है, किसी नए व्यक्ति से मिलना अच्छा लगता है, और उसकी दाढ़ी भी अच्छी थी, एक तरह से कड़े ब्रश जैसी। उसकी दाढ़ी को छूने पर कैसा लगेगा – वह सोचने लगी, और फिर हैरानी से उसे एहसास हुआ, कि हाँ, वह उसे छू ही रही थी, लेकिन उसकी दाढ़ी को नहीं – उसकी जांघ उसकी जांघ से लगी हुई थी, सुखद रूप से गर्म, चिपचिपी नहीं। सड़क पर बसें अभी भी बारिश में गरज रही थीं; वह देख सकती थी कि लोग धुंध से ढकी खिड़कियों के पीछे दुबके हुए थे, छतरियों के नीचे फुटपाथ पर जल्दी-जल्दी चल रहे थे, नंदन सिनेमा परिसर और ललित कला अकादमी की ओर भाग रहे थे। यह सोचना कितना अजीब था कि उनके और उसके तथा मुरुगन के बीच बस एक छोटी सी दीवार थी, बस एक छोटी सी दीवार, फिर भी वह अपना काम बखूबी कर रही थी मानो वह चीन की महान दीवार हो, क्योंकि वे उसे या उसे देख नहीं सकते थे। एक तरह से यह एक टेस्ट ट्यूब में होने जैसा था: शायद यही महसूस होता था, यह जानते हुए कि कांच के इस तरफ कुछ होने वाला है लेकिन दूसरी तरफ नहीं; कि आपके और बाकी सभी लोगों के बीच एक दीवार है, बसों और मिनीबसों में बैठे वे सभी लोग, जो कंकुरगा-ची, बेलेघाटा और बंसद्रोनी से काम पर जा रहे थे, सुबह के चावल खाने के बाद, दाल की महक अभी भी उनके नाखूनों में बसी हुई थी; वे इतने दूर थे, भले ही वे दीवार के ठीक दूसरी तरफ थे; उन्हें पता भी नहीं चलता अगर उसने अपनी कमीज़ उतार दी होती और वह अपने नाखूनों से उसकी छाती से लेकर पेट तक सहला रही होती; उन्हें पता भी नहीं चलता अगर उसने अपनी पैंट नीचे कर ली होती, उसके टखनों तक, और उसका हाथ उसकी गोद में होता, उसकी तर्जनी उसकी जांघों के घुंघराले बालों में उलझी होती; उन्हें पता भी नहीं चलता अगर उसने अपना ब्लाउज उतार दिया होता और उसकी बांह उसके कंधे पर होती, उसका हाथ उसके स्तन को थामे होता और उसका अंगूठा उसके निप्पल पर रगड़ रहा होता; उन्हें पता नहीं चलता, उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं होता, काम पर जाते हुए वे जल्दी से उनके पास से गुज़र जाते, और सच कहें तो, यह कल्पना करना इतना मुश्किल भी नहीं था, उसकी बांह उसके कंधे पर और उसका हाथ उसके स्तन पर। यह एक प्रयोग जैसा ही होता; बिल्कुल वैसा ही होता, उसकी टांगों के बीच उसका स्पर्श, उसकी गर्दन पर उसके होंठ, उसके अंदर गहराई में कुछ

हलचल का एहसास। इसके लिए 'प्रयोग' के अलावा और क्या शब्द हो सकता है, कुछ नया, कुछ ऐसा जो वह जानती थी कि उसे बदल देगा, भले ही यह कुछ मिनटों या सेकंडों तक ही चले; कुछ ऐसा घट रहा था जो उसकी कल्पना से परे था, और जिस पर उसका किसी भी तरह से कोई नियंत्रण नहीं था।

अध्याय 33

तारा को अपना संदेश पहुँच जाने का पक्का करने के बाद, अंतर पानी का गिलास लेने रसोई में गया। तारा के कमरे में अभी भी अँधेरा था, लेकिन शाम की हल्की हवा में उसके सफेद लेस के पर्दे लहरा रहे थे। उसने खिड़कियाँ फिर से थोड़ी-सी खुली छोड़ दी थीं। अंतर ने अपने होंठ दबाए: उसे अजीब लगा कि उसने पहले ध्यान नहीं दिया। जब भी वह ऐसा करती, उसे चिंता होती थी। उसे अभी भी इस बात की आदत नहीं पड़ी थी कि अब यहाँ कोई और भी रहता है; अपनी खिड़कियाँ खुद खोलना, अपने दरवाजे खुद बंद करना।

एक बार जब उसने खिड़कियाँ खुली छोड़ दीं, तो दोपहर में अचानक तूफान आ गया। अवा ने अंटार को पहले ही चेतावनी दे दी, अपनी अंतहीन सूची बनाने की प्रक्रिया को बीच में ही रोककर उसे बताया कि खराब मौसम आने वाला है।

वह अपने अपार्टमेंट में घूम-घूम कर खिड़कियाँ बंद करने लगा। जब वह रसोई में पहुँचा, तब उसने देखा कि तारा ने अपनी खिड़कियाँ खुली छोड़ दी थीं – पूरी तरह से नहीं, लेकिन चार-पाँच इंच तक। उसके बैठक कक्ष में लगे सफेद लेस के पर्दे तेज़ हवा में फड़फड़ा रहे थे।

आधे घंटे बाद उसने फिर से देखा, और पर्दे गायब थे: हवा ने उन्हें पटरी से उखाड़ दिया था। तेज़ हवा के साथ बारिश अंदर आ रही थी। अगले कुछ घंटों में अंतर बार-बार रसोई की खिड़की की ओर खिंचा चला गया। उसे किसी तरह खुद को ज़िम्मेदार महसूस हो रहा था; मानो वही दोषी हो।

अंधेरा इतना घना था कि यह देखना मुश्किल था कि हवा और बारिश अपार्टमेंट के अंदरूनी हिस्से पर क्या असर डाल रही हैं। लेकिन वह इसकी कल्पना बखूबी कर सकता था: नंगे लकड़ी के फर्श पर बहता पानी, और उसके द्वारा बड़ी सावधानी और सटीकता से बिछाई गई चटाईयों के आसपास जमा होता पानी।

तारा के दोस्त लकी और मारिया ने कुछ महीने पहले जब वह पहली बार यहाँ रहने आई थी, तब उसका सामान सीढ़ियों से ऊपर ले जाने में मदद की थी। अंतर यह देखकर हैरान था कि उसके पास कितना कम सामान था: एक फ़्यूटन, कुछ चादरें और चटाई, और दो मेज़ें और कुर्सियाँ जो मानो सड़क से उठाई गई हों। दीवारों पर बस कुछ सुलेख वाले कागज़ लगे थे। और अब वे कागज़ भी बर्बाद हो चुके थे: वह उन्हें उसके बैठक कक्ष की दीवारों पर हवा से फटे हुए, टुकड़ों में बंटे हुए सफेद कागज़ों की तरह फड़फड़ाते हुए देख सकता था।

इससे भी बुरी बात यह थी कि उसके पास उसे बताने का कोई तरीका नहीं था। यह उसके पास फोन आने से पहले की बात है: वह तब भी अपनी दूसरी नौकरी कर रही

थी और उसके पास उसका फोन नंबर नहीं था। वह बस इंतजार कर सकता था।
जब तक उसके अपार्टमेंट में बत्ती जली, तब तक तूफान थम चुका था। अंतर जल्दी से रसोई में गई ताकि उसे सब कुछ बता सके, और उसने देखा कि अंदर तारा नहीं, बल्कि लकी आया था, और वह सफाई में जुट चुका था। अगले एक घंटे तक अंतर उस पर नज़र रखती रही: उसे शायद पता ही नहीं था कि उसे देखा जा सकता है। उसने अपनी टी-शर्ट और पैंट उतार दी और कमर के चारों ओर एक कपड़ा लपेट लिया, जैसे लंगोटी। फिर वह घुटनों के बल बैठ गया और फर्श को एक बार नहीं, बल्कि दो बार पोंछा। अंतर चिंता से देखती रही, सोच रही थी कि कहीं वह कोई नुकसान न कर दे। लकी अपनी लापरवाही के लिए मशहूर था, हमेशा ट्रे गिरा देता था और चाय फैला देता था: तारा अक्सर उसे 'बेवकूफ' कहती थी।
कुछ देर बाद अंतर ने तारा के दरवाजे के जोर से बंद होने की आवाज सुनी।
वह यह देखने के लिए रसोई में गया कि क्या वह आखिरकार घर आ गई है।
वह ठीक समय पर वहाँ पहुँच गया और उसने तारा को थकी हुई मुद्रा में अपना हैंडबैग उतारकर ज़मीन पर गिराते हुए देखा। तभी लकी दूसरे कमरे से जल्दी से बाहर आया – अंतर को लगा कि वह तारा का अभिवादन करने आया है। लेकिन इसके बजाय उसने कुछ ऐसा किया जिससे अंतर दंग रह गया। वह तारा के सामने ज़मीन पर गिर पड़ा और अपना माथा उसके पैरों से छू दिया।
तारा की पहली सहज प्रतिक्रिया ऊपर की ओर, अपार्टमेंट के उस पार, अंतर की रसोई की खिड़की की ओर देखने की थी। अंतर को वहाँ खड़ा देखकर वह बहुत शर्मिंदा हुई। उसने उसे एक अजीब सा हाथ हिलाकर अभिवादन किया और फिर लकी से कुछ बुदबुदाया, जो शर्मिंदा सा दिखते हुए सीधा खड़ा हो गया।
अंतर भी शर्मिंदा था, लेकिन उसने मुस्कुराकर हाथ हिलाया। उसने हमेशा यही सोचा था कि वे सिर्फ दोस्त हैं; उसने तो यहाँ तक सोचा था कि कहीं वे प्रेमी-प्रेमिका तो नहीं हैं – हालाँकि लकी तारा से थोड़ा छोटा लगता था। लेकिन तारा ने बाद में समझाया कि वे किसी जटिल रिश्ते से जुड़े हुए हैं: इसीलिए उन्होंने अभिवादन किया।
और अब उसने वही गलती दोबारा कर दी: खिड़की खुली छोड़ दी। अंतर ने कंधे उचकाते हुए कहा, चलो, कम से कम आज बारिश तो नहीं हो रही। उसने पसीने से तर चेहरा सिंक के पास झुकाया और उस पर पानी डाला।
वह अपने बेडरूम की ओर जा रहा था तभी फोन की घंटी बजी। उसने अपने लिविंग रूम में फोन उठाया और एवा की स्क्रीन के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया।
यह तारा थी, जिसकी आवाज़ थोड़ी हांफ रही थी। 'क्या तुम्हें मेरा संदेश मिला?' अन-तार ने कहा।
'जी हां, मैंने ऐसा ही किया,' उसने जवाब दिया। 'आपकी बातें इतनी रहस्यमय लग रही थीं कि मुझे यह पता लगाना ही पड़ा कि आप क्या कर रहे हैं।'
'अरे, कुछ खास नहीं,' अंतर ने कहा। 'बस कुछ सामान्य काम हैं जिनमें जरूरत से ज्यादा समय लग रहा है।'
'अरे, सच में?' उसने कहा। 'यह तो बेहद महत्वपूर्ण लगता है।'
'मुझे अच्छा भी नहीं लग रहा है।'

'क्या मैं मदद कर सकती हूँ?' उसकी आवाज़ में तुरंत चिंता झलकने लगी। 'क्या मैं कुछ कर सकती हूँ?'
'मैं ठीक हो जाऊंगा; मैं पहले भी इस स्थिति से गुजर चुका हूं।'
'मैं आ सकती हूँ,' उसने कहा। 'बस कह देना।'
'नहीं। धन्यवाद।' उसने विषय बदलने का फैसला किया। 'आप कहाँ से फोन कर रहे हैं?' उसने कहा।
'97वीं और रिवरसाइड के पास का खेल का मैदान,' उसने कहा। 'मेरा छोटा शैतान फाइबरग्लास के डायनासोर पर चढ़ने की कोशिश कर रहा है।'
'तुम खेल के मैदान में हो?' अंतर ने हैरानी से कहा। 'लेकिन मुझे तो कोई बच्चे सुनाई नहीं दे रहे।'
वह हंस पड़ी। 'नहीं। उनमें से अधिकतर लोग स्प्रिंकलर के नीचे हैं, पूरी तरह भीग रहे हैं।'
अंतर असमंजस में आकर रुक गया। कुछ तो गड़बड़ लग रही थी। उसने पूछा, 'क्या खेल के मैदान में सार्वजनिक फोन हैं?'
'नहीं,' उसने कहा। 'या कम से कम मैं तो इस्तेमाल नहीं कर रही हूँ, अगर वे करते भी हैं तो। एक बेबीसिटर ने मुझे अपना - उन्हें क्या कहते हैं? वो पोर्टेबल चीज़ दी थी। मुझे लगता है अब मुझे आपको जाने देना चाहिए। अगर आपका डिनर का प्लान बदल जाए तो मुझे बता देना। मैं कुछ ही मिनटों में आ जाऊँगी।'
'क्या तुमने कुछ मिनट कहा?' अंतर ने कहा। 'लेकिन 97वीं गली से यहाँ पहुँचने में तुम्हें कम से कम आधा घंटा तो लगेगा ही। टैक्सी से भी...'
'बस कहने का एक तरीका है...' उसने जल्दी से कहा।
ठीक उसी क्षण, आवा ने एक पिंग ध्वनि उत्सर्जित की, जिससे उसे चेतावनी मिली कि वह स्टैंडबाय मोड में जाने वाली है। एक क्षण बाद, अंटार ने टेलीफोन लाइन के माध्यम से वही ध्वनि सुनी।
'मुझे उतर जाना चाहिए,' तारा ने कहा।
अंतर चौंक गया। 'एक मिनट रुको...' उसने टेलीफोन पर चिल्लाकर कहा। लेकिन लाइन कट गई थी।
अंतर रिसीवर को घूर रहा था, उसे ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ है। एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे तारा उसके साथ कमरे में है और उसके माइक्रोफोन ने आवा की पिंग को पकड़ लिया है।
उसने अपने हाथ का पिछला हिस्सा अपने माथे पर रखा और उसे बहुत गर्म पाकर आश्चर्य नहीं हुआ। वह समझ गया था कि उसे वाकई तेज बुखार है।
उसने लेटने का फैसला किया।

अध्याय 34

अपनी जेब डायरी को घुटने पर टिकाए, बारिश की बौछारों से खुद को बचाते हुए,

मुरुगन ने बॉलपॉइंट पेन से एक खाली पन्ने पर चित्र बनाना शुरू किया। जब चित्र पूरा हो गया, तो उसने डायरी से पन्ना फाड़कर उर्मिला को दे दिया। यह एक आकृति का रेखाचित्र था, एक अर्धवृत्ताकार टीला जिस पर दो आंखें बनी हुई थीं। टीले के एक तरफ एक छोटा कबूतर था, और दूसरी तरफ एक छोटा अर्धवृत्ताकार यंत्र...
'क्या आपने इससे पहले कभी ऐसा कुछ देखा है?' उसने कहा।
उर्मिला ने ध्यान से चित्र का अवलोकन किया और एकाग्रता से भौंहें चढ़ा लीं। उसने कहा, 'अगर मैंने ध्यान दिया होता तो शायद मुझे पता ही नहीं चलता।' 'यह मंदिर की कई मूर्तियों की तरह है - सिवाय उस चीज़ के जो वहाँ है। वह क्या है?' उसने उस उपकरण की ओर इशारा किया।
मुरुगन ने कहा, 'मेरा अनुमान है कि यह पुराने जमाने के माइक्रोस्कोप का ही एक रूप है।'
'तो यह किसकी या किस चीज की छवि है?'
उन्होंने कहा, 'अगर मुझे अनुमान लगाना हो, तो मैं कहूंगा कि वही रॉन की खोज की सूत्रधार थी। मेरा अनुमान है कि इस पूरे प्रयोग के पीछे वही है।'
'तुम्हें क्या लगता है कि वह एक महिला थी?' उर्मिला ने कहा।
मुरुगन ने सिर हिलाया।
'यह तुम्हें कहाँ मिला?' उर्मिला ने पूछा।
'वहाँ,' मुरुगन ने अपनी पेंसिल दीवार की ओर इशारा करते हुए कहा: बारिश इतनी तेज़ हो रही थी कि वह कोना मुश्किल से दिखाई दे रहा था, जबकि वह कुछ ही गज की दूरी पर था। उसने बताना शुरू किया कि उसे पिछली रात वहाँ वह छोटी सी मूर्ति कैसे मिली थी। उर्मिला ध्यान से सुन रही थी, और जब उसने अपनी बात समाप्त की, तो उसने हल्के से सिर हिलाया, मानो वह मन ही मन किसी बात की पुष्टि कर रही हो।
उर्मिला ने कहा, 'यह अजीब है। अभी कुछ दिन पहले ही मैं फूलबोनी के निबंधों की एक किताब पढ़ रही थी - आपको पता है, वही लेखक जिन्हें कल रवींद्र सदन में पुरस्कार मिला था? आपकी बात सुनकर मुझे उनकी बहुत पुरानी लिखी एक बात याद आ गई। मुझे वह अंश लगभग मुंह ज़बानी याद है। उसकी शुरुआत होती है, "मैंने कभी नहीं जाना कि जीवन शब्दों में है या छवियों में, वाणी में है या दृष्टि में। क्या कोई कहानी मेरे मन में उत्पन्न होने वाले शब्दों में जन्म लेती है या वह पहले से ही कहीं मिट्टी में समाई हुई है - यानी किसी छवि में, जीवन की गढ़ी हुई नकल में?"
उर्मिला ने आगे कहा, 'जाहिर तौर पर, फुलबोनी ने कई साल पहले एक कहानी लिखी थी: एक महिला के बारे में, जो नहा रही थी...' लेखक की नकल करते हुए उसकी आवाज़ गहरी हो गई: "...एक औरत, उन सैकड़ों औरतों से अलग नहीं जिन्हें आप हर दिन अपनी कारों और बसों की खिड़कियों से देखते हैं, एक औरत जो पार्क में एक तालाब के नम, खरपतवार से भरे पानी में दिन भर की गंदगी धो रही है - हमारे शहर के कई तालाबों जैसा, जैसे मिंटो पार्क, या पोद्दोपुकुर, या ऐसे ही दर्जनों अन्य। औरत नरम, चिपचिपी मिट्टी में घुटने टेकती है, पानी एक गहरे पर्दे की तरह उसके गले तक उठता है, जिससे उसे क्षण भर के लिए अपनी मिट्टी से भूरी साड़ी का ऊपरी हिस्सा अपने कंधों से उतारने और अपनी उंगलियों के सिरों को अपने स्तनों पर फेरने, बच्चे

के काटने से सख्त हुई निप्पल्स की त्वचा पर साबुन की एक पतली सी बूंद रगड़ने, फिर अपना हाथ नीचे, दुबले-पतले पेट की सिलवटों से नीचे, और भी नीचे, नीचे, उस झागदार बूंद को उन फटे हुए होंठों से रगड़ते हुए ले जाती है जिन्होंने अपने पति के बिस्तर पर एक दर्जन बच्चों को जन्म दिया है, और उससे भी आगे मखमली नमी में..." कीचड़, उंगलियों पर चिपका साबुन, और फिर, बिना किसी चेतावनी के उसका पैर फिसल जाता है, और वह एक पल के लिए घबराकर खुद को उस कीचड़ को जकड़े हुए पाती है जो अचानक मौत की तरह नरम, लचीला और नरम हो जाता है, उसके हाथ उस अथाह धुंध में उलझ जाते हैं, और फिर, जब मृत्यु का चेहरा उसकी आँखों में निर्मम भाव से देखता हुआ प्रतीत होता है, अचानक उसके नाखून का किनारा किसी ठोस चीज से टकराता है, किसी खुरदरी चीज से, किसी ऐसी चीज से जिसमें जीवनदायी, रक्षक, जीवनदायिनी धारें हों, किसी ऐसी चीज से जो उसे पल भर का सहारा दे सके ताकि वह सतह पर वापस आ सके और हमारे शहर के नम और जीवनदायी वातावरण की एक सांस ले सके।

"'और जब उसका धड़ पानी से ऊपर उठता है, उसके स्तन नंगे होते हैं, उसके काले बाल उसके घुटनों तक लटके होते हैं, उसकी बाहें पानी की एक ऊंची चाप हवा में उछालती हैं, और वह चिल्लाती है: 'उसने मुझे बचाया; उसने मुझे बचाया,' और तुरंत ही बाकी सभी नहाने वाले पानी में कूद पड़ते हैं, उनके पैर रेशमी भूरे पानी को झागदार दलदल में बदल देते हैं, और उसे बाहों से पकड़कर किनारे पर खींच लाते हैं, जबकि वह मुंह भर पानी के बीच चिल्लाती रहती है: 'उसने मुझे बचाया, उसने मुझे बचाया।'

"जब वह घास पर लेटी थी, तो उन्होंने उसकी मुट्ठी खोली और देखा कि उसमें एक वस्तु फंसी हुई है, एक चिकना धूसर पत्थर जिसके केंद्र से सफेद रंग का एक बवंडर किसी सर्व-दृष्टि वाली आंख की तरह झाँक रहा है। वह चीखती है, निगले हुए कीचड़ और पानी की बौछारों के बीच से छटपटाती है; वह उस नन्ही सी आकृति से अलग नहीं होना चाहती जिसने उसे डूबने से बचाने के लिए सहारा दिया था, लेकिन दूसरे उसे उससे छीन लेते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि जिस पत्थर ने उसे बचाया, वह छोटा, जीवनदायिनी पत्थर का टुकड़ा किसी और चीज का नहीं बल्कि एक चमत्कारिक प्रकटीकरण था... किसका? वे नहीं जानते; केवल चमत्कार की वास्तविकता में विश्वास करते हैं..."

सांस लेने के लिए रुकते हुए उर्मिला मुरुगन की ओर मुड़ी। उसने कहा, 'और फिर, कई वर्षों बाद, एक दिन फूलबोनी एक पार्क से गुजर रहा था और उसने देखा कि वहाँ फूलों और चढ़ावों से सजा एक छोटा सा मंदिर है। वह रुककर पूछताछ करने लगा, लेकिन कोई उसे यह नहीं बता सका कि यह मंदिर किसका है और यह वहाँ कैसे आया। पता लगाने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर वह कालीघाट गया, उन गलियों में से एक में जहाँ ये मूर्तियाँ बनाई जाती हैं। वहाँ उसे एक ऐसा व्यक्ति मिला जिसने उसे एक ऐसी कहानी सुनाई जो उसकी अपनी कहानी से बहुत मिलती-जुलती थी, फिर भी उस व्यक्ति ने फूलबोनी के बारे में कभी नहीं सुना था और न ही उसने कभी उसकी कोई रचना पढ़ी थी। जब कहानी खत्म हुई, तो फूलबोनी को यह समझ नहीं

आ रहा था कि पहले क्या हुआ था या क्या ये सभी उस मूर्ति के दुनिया में आने के अलग-अलग पहलू थे: मिट्टी में उसकी उपस्थिति, उसकी कहानी का लेखन, उस स्नान करने वाले की खोज या कालीघाट में सुनी गई वह कहानी।'
मुरुगन ने अपनी दाढ़ी पर नाखून फेरा। 'मुझे समझ नहीं आ रहा,' उसने कहा।
उर्मिला ने बारिश की तीव्रता जांचने के लिए हाथ बढ़ाया। अब बारिश हल्की फुहार में बदल गई थी। उसने मुरुगन की पसलियों में जोर से धक्का दिया। 'चलो,' उसने कहा, 'चलते हैं।'
'कहाँ जाना है?' मुरुगन ने पूछा।
'कालीघाट चलते हैं,' उसने कहा। 'चलते हैं देखते हैं कि उस तस्वीर के बारे में हमें कुछ पता चलता है या नहीं।'

अध्याय 35

कालीघाट जाते समय, टैक्सी की धुंधली खिड़की से बारिश से भीगी सड़कों को देखते हुए, उर्मिला को उस गली की स्पष्ट याद आ गई जहाँ वे जा रहे थे: उसे एक संकरी गली याद थी, जो नीची, टिन की छतों वाली झोपड़ियों के बीच से होकर गुजरती थी, फुटपाथ भूरे-भूरे रंग की मिट्टी की मूर्तियों की कतारों से सजे थे, कुछ केवल धड़ थे, भरे हुए स्तन लेकिन बिना सिर के, उनकी गर्दन से भूसे के गुच्छे निकल रहे थे, कुछ बिना पैरों के, कुछ बिना हाथों के, कुछ की बाहें अदृश्य वस्तुओं - हथियारों, सितार, खोपड़ियों - के चारों ओर प्रेतवाधित इशारों में मुड़ी हुई थीं।
उसकी एक चाची पास ही में एक बड़े, पुराने ज़माने के घर में रहती थी, जो आसपास की गलियों से काफी ऊँचा था। बचपन में वह अक्सर उस गली से होकर अपनी चाची से मिलने जाया करती थी। वह कारीगरों की उंगलियों से मिट्टी के गूंथते हुए स्तनों और पेटों को आकार लेते हुए देखकर आश्चर्यचकित रह जाती थी, और उन आकृतियों के बारे में उनके गहन ज्ञान पर अचंभित होती थी। अपनी चाची के घर पर वह बालकनी में जाकर गली और मिट्टी की मूर्तियों की कतारों को देखती, मूर्तिकारों को काम करते हुए निहारती; सिर और हाथों को गढ़ने के उनके विभिन्न तरीकों पर ध्यान देती; देखती कि कैसे मूर्तियाँ ऋतुओं के साथ बदलती हैं; कैसे जनवरी में माँ शोरोशशोती की कतारें दिखाई देती थीं, जिनमें से प्रत्येक देवी के हंस और सितार से सजी होती थी; शरद ऋतु में माँ दुर्गा, जिनके चारों ओर उनका पूरा परिवार विराजमान होता था और महिषासुर उनके चरणों में लोटता रहता था।
टैक्सी गली के कोने पर रुकी और वे हल्की धुंध जैसी बूंदा-बांदी में बाहर निकले। मुरुगन ने किराया दिया और फिर उर्मिला उन्हें तेजी से गली के अंत में स्थित बांस की दीवारों वाली छोटी कार्यशालाओं की ओर ले गईं। जैसे ही वे तेजी से आगे बढ़े, सैकड़ों मुस्कुराते चेहरे उनके सामने से गुजरे, कुछ तिरपाल से ढके हुए थे, उनकी आंखें खाली थीं, और उनकी बाहें आशीर्वाद देने की मुद्रा में फैली हुई थीं।
उर्मिला हंस पड़ी।
'क्या हालचाल है?' मुरुगन ने कहा।

उर्मिला ने गले में हल्की हंसी के साथ कहा, 'बचपन में मुझे अक्सर एक सपना आता था। सपने में मैं देखती थी कि एक दिन मैं अपने फ्लैट का दरवाजा खोलूंगी और बाहर देवी-देवताओं का एक छोटा समूह अपनी मिट्टी की उंगलियों से घंटी बजा रहा होगा। मैं दरवाजा खोलकर हाथ जोड़कर उनका स्वागत करूंगी, और वे अपने हंसों, चूहों, शेरों और उल्लुओं पर सवार होकर अंदर आएंगे, और मेरी मां उन्हें उस छोटी सी मेज पर ले जाएंगी जिस पर हम खाना खाते थे। वे हमारी कुर्सियों पर बैठ जाएंगे जबकि मेरी मां रसोई में आती-जाती रहेंगी, चाय बनाएंगी और लूची और शिंगारा तलेंगी, और हम श्रद्धा से उन्हें देखते रहेंगे, प्रार्थना में हाथ जोड़े। हम हंस और उल्लू को मिठाई अर्पित करेंगे, और मां काली अपनी चमकती आंखों से हम पर मुस्कुराएंगी, और मां शोरोशोती अपने सितार पर एक-दो सुर बजाएंगी और मां लोक्खी अपने कमल पर पालथी मारकर बैठी रहेंगी, हाथ ऊपर उठाए, ठीक वैसे ही जैसे घी के डिब्बों के लेबल पर उनकी तस्वीर होती है।'
वह एक कार्यशाला के खुले दरवाजे पर रुक गई। 'चलो इसे आजमाते हैं,' उसने कहा और उसे अंदर ले गई। वे खुले दरवाजे से होते हुए कार्यशाला के मंद रोशनी वाले अंदरूनी हिस्से में दाखिल हुए और खुद को मुस्कुराते हुए, मांसल रंग के चेहरों की भीड़ से घिरे हुए पाया।
उर्मिला ने स्थिर तस्वीरों के बीच कहीं एक हिलती-डुलती आकृति देखी। 'क्या वहाँ कोई है?' उसने पुकारा।
'कौन है भाई?'
वह आकृति जितनी तेजी से प्रकट हुई थी, उतनी ही तेजी से छह फुट ऊंचे नृत्य करते गणेश के पीछे गायब हो गई।
'हम बस आपसे बात करना चाहते थे,' उर्मिला ने कहा।
एक बुजुर्ग व्यक्ति अचानक उसके सामने प्रकट हुआ, जो चबूतरे पर बने प्रतिमा-मंडल से अलग हो गया था। उसने धोती और कमरबंद पहन रखा था और उसका पतला, चिड़चिड़ा चेहरा गुस्से से भरा हुआ था। पीछे हटते हुए, उर्मिला लगभग शांत माँ दुर्गा के हाथों में उठे हुए भाले पर घायल हो गई।
'सावधान रहो,' उस आदमी ने चिढ़कर कहा। उसने उसे शक की निगाहों से देखा जब वह अपनी गीली, धूल से सनी साड़ी को सीधा कर रही थी। 'तुम्हें क्या चाहिए?' उसने कहा। 'हम अभी बहुत व्यस्त हैं; बात करने का समय नहीं है।'
उर्मिला एकदम सख्त हो गईं और तुरंत अपने पेशेवर अंदाज़ में आ गईं। उन्होंने स्पष्ट और दृढ़ स्वर में कहा, 'मैं कलकत्ता की रिपोर्टर हूं। और मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहती हूं।'
उस आदमी के माथे पर शिकन और गहरी हो गई। 'क्या सवाल?' उसने कहा। 'क्यों? मुझे कुछ नहीं पता। हम राजनीति में शामिल नहीं हैं।'
'यह राजनीति के बारे में नहीं है।' उर्मिला ने मुरुगन की बनाई हुई तस्वीर उनके हाथों में थमा दी। 'क्या आप बता सकते हैं कि यह किस तरह की तस्वीर है?'
उस व्यक्ति ने अपनी आँखें सिकोड़ लीं और मुरुगन पर तीखी नज़र डाली। उसने चित्र वापस देते हुए कहा, 'मैंने अपने जीवन में ऐसा कुछ कभी नहीं देखा। मैं सभी दिव्य

छवियों को जानता हूँ, लेकिन मैंने ऐसी छवि कभी नहीं देखी।'
उर्मिला ने मुरुगन से अनुवाद करने के लिए कहा, लेकिन उसने उसकी बात बीच में ही काट दी।
'मुझे समझ आ गया,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'लेकिन मुझे लगता है कि वह सच्चाई को मानने से इनकार कर रहा है।'
'तो आपको इस तस्वीर के बारे में कुछ नहीं पता?' उर्मिला ने धोती पहने उस आदमी से कहा। 'क्या आप सच में ऐसा कह रहे हैं?'
'मैंने तुमसे क्या कहा था?' उस आदमी ने ऊंची आवाज में कहा। 'क्या मैंने पहले ही "ना" नहीं कह दिया है? मुझे कितनी बार कहना पड़ेगा?'
अब कुछ युवा पुरुष उनके आसपास जमा हो गए थे। उर्मिला ने चित्र उन्हें दिखाया, लेकिन उस बुजुर्ग व्यक्ति ने उसकी बात बीच में ही काट दी।
'वे तुम्हें क्या बताएँगे?' उसने कहा। 'वे तो बस लड़के हैं।' वह उर-मिला और मुरुगन को जल्दी से दरवाजे की ओर ले गया और मन ही मन कुछ बुदबुदाया। उसने उन्हें दरवाजे तक पहुँचाया और अधीरता से उन्हें विदा किया: 'जाओ, जाओ, यहाँ तुम्हारे लिए कुछ नहीं है।' उसने उन्हें जाते हुए देखा और फिर कार्यशाला के भीतर गायब हो गया।
'ठीक है,' मुरुगन ने अपने हाथों से धूल झाड़ते हुए कहा। 'मुझे लगता है कि हमें उससे बस इतना ही मिलेगा।'
उर्मिला जाने ही वाली थी कि मुरुगन ने उसे अचानक रोक दिया। 'देखो!' उसने गहरी साँस लेते हुए कहा। 'वहाँ।' उसकी उंगली सड़क किनारे बैठी एक गुड़िया से खेल रही छह या सात साल की बच्ची की ओर इशारा कर रही थी।
'किस बात पर?' उर्मिला ने कहा।
'देखो उसने अभी अपनी गुड़िया के हाथों में क्या रखा है,' मुरुगन ने उसके कान में फुसफुसाया।
अब गौर से देखने पर उर्मिला ने पाया कि लड़की एक छोटी अर्धवृत्ताकार वस्तु को अपनी दृष्टिहीन प्लास्टिक की गुड़िया की मजबूत पकड़ में धकेलने की कोशिश कर रही थी। 'यह क्या है?' उसने कहा। 'मैं बता नहीं सकती।'
'क्या तुम्हें दिख नहीं रहा?' मुरुगन ने कहा। 'यह एक छोटा सा, स्टाइलिश माइक्रोस्कोप है, बिल्कुल वैसा ही जैसा मैंने देखा था।' उसने उसे कोहनी मारी: 'जाओ, उससे पूछो, उससे पूछो कि उसे यह कहाँ से मिला।'
उर्मिला एक कदम आगे बढ़ी, और जैसे ही उसकी परछाईं पास आई, लड़की ने ऊपर देखा, उसकी आँखें सतर्कता से चौड़ी हो गईं। उर्मिला ने उसे आश्वस्त करने वाली मुस्कान दी और धीरे से उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गई।
'वाह, कितना सुंदर है,' उसने बच्चों जैसी बंगाली में धीरे से बोलते हुए कहा और गुड़िया के हाथों में मजबूती से लगे छोटे माइक्रोस्कोप की ओर इशारा किया।
'यह मेरी है,' लड़की ने बचाव करते हुए कहा और गुड़िया के हाथ पर अपनी मुट्ठी कस ली।
'हां, बिल्कुल यह तुम्हारा ही है,' उर्मिला ने कहा। 'तुम्हारे पिता ने ही तो तुम्हें दिया था,

है ना?'
लड़की ने सिर हिलाकर सहमति जताई और धीरे-धीरे अपना सिर ऊपर-नीचे हिलाया। उसने कार्यशाला की ओर सिर झुकाकर कहा, 'मेरे पिताजी अंदर हैं। उन्होंने इनमें से बहुत सारे बनाए हैं।'
'ओह?' उर्मिला ने प्रोत्साहन देते हुए सिर हिलाया।
'उन्होंने इन्हें आज रात की बड़ी पूजा के लिए बनाया है,' लड़की ने कहा। 'सच में?' उर्मिला मुस्कुराई। 'मुझे पता ही नहीं था कि आज रात पूजा है।'
'जी हां,' लड़की ने ज़ोर से सिर हिलाते हुए कहा। 'आज मंगला-बीबी की पूजा का आखिरी दिन है। बाबा कहते हैं कि आज रात मंगला-बीबी एक नए शरीर में प्रवेश करेंगी।'
'और यह किसका है?' उर्मिला ने कहा।
'ज़ाहिर है, यह वही शरीर है जिसे उसने चुना है,' लड़की ने कहा। 'कोई नहीं जानता कि यह किसका है।'
मुरुगन ने उर्मिला के कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'उससे लुचमन के बारे में पूछो।'
लेकिन उर्मिला कुछ और कह पाती, तभी एक आदमी कार्यशाला से बाहर निकला। उसने लड़की को उठाया और अंदर ले गया। तभी धोती पहने वह बूढ़ा आदमी फिर से प्रकट हुआ, उसके हाथ में एक छड़ी थी।
'तुम अभी भी यहाँ क्यों हो?' उसने उर्मिला पर चिल्लाते हुए कहा। 'तुम उस बच्चे से क्यों बात कर रही थी? क्या तुम अपहरणकर्ता हो? मैं अभी पुलिस को फोन करने जा रहा हूँ।'
उर्मिला उठते हुए बोली, 'चिंता मत करो। हम जा रहे हैं।' उसने मुरुगन के हाथ पर थपथपाया और तेज़ी से गली में चल पड़ी।

अध्याय 36

अंतर को नींद आने लगी थी तभी अवा ने एक ज़ोरदार पुकार लगाई। आवाज़ बहुत तेज़ नहीं थी और अंतर को सुनने से पहले ही महसूस हो गई, उसके पेट में एक गूँज उठी जो ज़मीन पर गूंज रही थी।
अंतर धीरे-धीरे बैठक कक्ष में दाखिल हुआ और आवा के डिलीवरी स्लॉट के अंदर एक पैकेट का बाहरी घेरा देखा। यह परिषद के मानव संसाधन सहायक महासचिव के निजी कार्यालय से आया एक फोल्डर था। इसमें एल. मुरुगन मामले में उनके द्वारा लगाए गए समय और प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया गया था। फिर, विनम्र लेकिन स्पष्ट भाषा में, उन्हें सूचित किया गया कि चूंकि वे पहले से ही 'विवरणों से अवगत' थे, इसलिए यह निर्णय लिया गया कि वे इस मामले की आगे की जांच करें। इस प्रकार उन्हें कलकत्ता में परिषद के प्रतिनिधि से सीधी संपर्क स्थापित करने का अधिकार दिया गया, ताकि वे आवश्यक पूछताछ कर सकें (इसके बाद कोड और अनुमतियों की एक लंबी श्रृंखला चली)।

अंतर ने कुछ मिनटों में अवा को कलकत्ता ले जाने के लिए कई सारे आदेश तैयार किए। जब वह तैयार हो गया, तो वह रसोई में गया और अपने चेहरे पर पानी छिड़का। तारा के अपार्टमेंट में अभी भी अंधेरा था, सिवाय लिविंग रूम की एक बत्ती के, जिसे वह हमेशा दिन-रात जलाए रखती थी। जब अंतर अपना चेहरा पोंछ रहा था, तभी अचानक हवादार पाइप से कुछ निकला और शीशे की खिड़की पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक देने लगा। अंतर पीछे हट गया और अपने हाथ ऊपर उठा लिए: यह एक कबूतर था, जो शीशे से टकरा रहा था। उसकी चमकीली लाल आँखें एक पल के लिए उस पर टिकीं और फिर वह गायब हो गया।
अंतर ने अपने लिए एक गिलास पानी भरा और उसे अपने बैठक कक्ष में ले गया। फिर उसने बेड़ा तैयार करने की प्रक्रिया शुरू की।
कलकत्ता में परिषद के निदेशक के कार्यालय के निजी टर्मिनल पर पहुँचने से पहले राफ्ट को ठीक 5.65 सेकंड लगे। वह एक अवरोध से टकराई और ताले में फंसी मछली की तरह छटपटाने लगी, और घबराए हुए संकेत भेजने लगी: कार्यालय में कोई नहीं था और सीधे तौर पर जुड़ा एकमात्र व्यक्ति स्वयं निदेशक थे। निदेशक अपने आवास पर थे, जहाँ उनके निगरानी तंत्र में गोपनीयता नियंत्रण सक्रिय थे। आवा शटर कमांड के बिना अंदर नहीं जा सकती थी।
अंतर ने अपनी स्वीकृतियों की सूची में कोड देखा और कमांड दर्ज कर दी। आवा को इसमें महारत हासिल करने में बस एक पल लगा और कुछ ही क्षण बाद अंतर के लिविंग रूम में डायरेक्टर का आधा आकार का होलोग्राफिक प्रक्षेपण दिखाई दिया। वह शॉवर के नीचे खड़ा था, एक लंबा, तोंद वाला पेरूवासी। उसकी आँखें बंद थीं और वह खुद से गुनगुना रहा था और अपने अंडकोष खुजा रहा था।
'बू!' कहने की इच्छा को दबाते हुए, अंतर ने हल्की खांसी के साथ अपना गला साफ किया।
निर्देशक ने बड़ी धीमी गति से एक आँख खोली और अविश्वास से चारों ओर देखा। जब उन्होंने देखा कि क्या हो रहा है, तो उनके हाथ अपने जननांगों को ढकने के लिए नीचे चले गए। वे चीखने लगे, उनकी आवाज़ पहले धीमी सी घरघराहट से तेज़ चीख में बदल गई। वे चारों हाथों-पैरों के बल गिर पड़े और तेज़ी से रेंगने लगे, जिससे फर्श पर साबुन और पानी टपक रहा था। अंतर ने अनुमान लगाया कि वे तौलिये की ओर जा रहे थे, लेकिन उन्हें बाथरूम का बाकी हिस्सा दिखाई नहीं दे रहा था: उन्हें निर्देशक अपने लिविंग रूम के बीचोंबीच बेतहाशा स्थिर दिखाई दे रहे थे, मानो वे किसी कन्वेयर बेल्ट पर रेंग रहे हों।
निर्देशक उछलकर खड़ा हो गया, एक तौलिया उठाया और उसे अपनी कमर के चारों ओर लपेट लिया। निर्देशक जब अंतर पर चिल्लाने लगा, तो अवा ने खुशी से भरी बोलचाल की अरबी में अनुवाद करते हुए कहा, 'तुम हरामखोर कमीने! तुम ऐसा नहीं कर सकते! मैं तुम्हें सजा दिलवाऊँगी, मैं तुम्हें इसकी कीमत चुकाते हुए देखूँगी! तुम जेल जाओगे, इंतज़ार करो...'
अंतर ने समझाने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं सुना। इसलिए अंतर ने बाथरूम में तब तक अलर्ट सिग्नल बजाया जब तक वह शांत नहीं हो गया और फिर अपने कपड़े

ढूंढने चला गया।
कपड़े पहनते हुए भी वह बड़बड़ाता रहा। पैंट पहनते हुए उसने बुदबुदाते हुए कहा, 'तुम्हें पता नहीं यहाँ कैसा हाल है। मुझे पूरा दफ्तर खुद ही संभालना पड़ता है।'
'क्या यह कठिन काम है?' अंतर ने सहानुभूति जताने की कोशिश करते हुए कहा।
'कड़ी मेहनत!' निदेशक ने व्यंग्यपूर्ण हंसी हंसते हुए कहा। 'यही तो समस्या है; अब तो बिल्कुल काम ही नहीं है, क्योंकि नदी अब शहर से होकर नहीं बहती। मुझे दफ्तर के लिए काम पैदा करना पड़ता है। मैं लगातार परियोजनाओं की सिफारिश करता रहता हूं, लेकिन यहां के लोग परिषद को किसी भी काम को हाथ नहीं लगाने देते: मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा। पिछले एक साल में उन्होंने हमें सिर्फ एक परियोजना शुरू करने की अनुमति दी है। और आप जानते हैं कि वह कौन सी परियोजना है?'
'क्या?' अंतर ने कहा।
'एक आश्रय स्थल!' निदेशक ने हाथ उठाते हुए कहा। 'हम इसे जरूरतमंदों के लिए आश्रय स्थल कहते हैं। यहाँ एक बड़ा किला है, जिसे फोर्ट विलियम कहते हैं। इसे अंग्रेजों ने अठारहवीं शताब्दी में बनवाया था। परिषद ने इसे अपने अधिकार में ले लिया, लेकिन फिर समझ नहीं पाया कि इसका क्या किया जाए। सभी इस बात पर सहमत थे कि इसे आश्रय स्थल बनाया जाए। इसलिए अब मैं यही करता हूँ, मैं एक आश्रय स्थल चलाता हूँ।'
उसने कपड़े पहन लिए थे और अपने अंतिम स्टेशन पर बैठकर अपनी फाइलों को देख रहा था। 'ठीक है, आप किस बारे में पूछ रहे थे?' उसने पीछे मुड़कर देखते हुए कहा। 'एक इन्वेंट्री में एक पहचान पत्र? यह तो आसान है - यह केवल एक ही जगह से आ सकता है।'
उसने अपने कीबोर्ड पर कुछ अदूरदर्शी झटके मारे। 'हाँ,' उसने कहा। 'मुझे ऐसा ही लगा था। यह फोर्ट विलियम शेल्टर से प्राप्त इन्वेंट्री में था।'
'आगे बढ़ो,' अंतर ने कहा।
'खैर,' निदेशक ने कहा, 'ऐसा लगता है कि यह वैकल्पिक आंतरिक अवस्था विभाग में पाया गया है...'
उसने कंधे के ऊपर से अंतर को आँख मारी। 'हम पुराने लोग इसे पागलखाना कहते थे,' उसने कहा। 'यहाँ लिखा है कि इसे आज सुबह ही सिस्टम में दर्ज किया गया है। कैदी का पंजीकरण करते समय उन्हें यह मिला। किसी को भी अंदर लाने से पहले वे हमेशा उसकी तलाशी लेते हैं।'
पैनल में झांकते हुए उसने अंटार को एक शरारती मुस्कान दी। उसने कहा, 'यहाँ जो मैं देख सकता हूँ, उससे तो यही लगता है कि जिस व्यक्ति को आप ढूंढ रहे हैं, वह एक ऐसी आंतरिक अवस्था का अनुभव कर रहा है जो यथासंभव वैकल्पिक है।'
'वह कौन था?' अंतर ने पूछा।
'उसने अपना नाम नहीं बताया,' निदेशक ने कहा।
'वह कहाँ मिला?'
निदेशक ने एक बार फिर अपने पैनल पर गौर किया। उन्होंने कहा, 'यहाँ लिखा है कि उसने एक रेलवे स्टेशन पर आत्मसमर्पण कर दिया था - जिसका नाम सियालदह है।'

'मैं उनसे कब बात कर सकता हूँ?' अंतर ने कहा।
'आप उससे बात करना चाहते हैं?' निदेशक ने कराहते हुए कहा। 'आपको पता है कि मुझे उसे यहाँ लाना पड़ेगा? परिषद की एकमात्र सुरक्षित संचार सुविधा यहीं है - मेरे घर में। अगर वह यहाँ रहते हुए किसी और ही तरह की मानसिक स्थिति का अनुभव करे तो क्या होगा? अगर वह यहाँ तोड़फोड़ करे तो क्या होगा? अगर वह टर्मिनल को तहस-नहस कर दे तो क्या होगा?'
'मैं सुनिश्चित कर दूंगा कि आपका बीमा हो,' अंटार ने कहा। 'बस उसे यहाँ ले आओ: जितनी जल्दी हो सके।' उसने निदेशक को विरोध करने से पहले ही रोक दिया। फिर वह लड़खड़ाते हुए वापस बिस्तर पर चला गया।

अध्याय 37

श्यामा प्रसाद मुखर्जी रोड पर फुटपाथ पर लगी दुकानों के पास से गुजरते हुए, उर्मिला को दिलखुशा केबिन के दरवाजों से आती हुई मछली के कटलेट और ढाकाई पराठे की मनमोहक खुशबू महसूस हुई।
'अगर मैंने जल्दी खाना नहीं खाया तो मैं मर जाऊंगी,' उसने मुरुगन से कहा।
उसने बिना देर किए उसे भोजनालय के अंदर धकेल दिया। उसे पर्दे वाले बूथ तक ले जाकर, वह एक बेंच पर बैठ गई और मुरुगन को अपने सामने बैठने का इशारा किया। लगभग तुरंत ही एक वेटर दो ढीले मेनू कार्ड हाथ में लिए आ गया। उर्मिला ने दोनों के लिए ऑर्डर दिया और वेटर के जाते ही उसने पर्दा बंद कर दिया।
'मुझे बताओ,' उसने मेज के उस पार झुकते हुए कहा। 'यह लाचमैन कौन है जिसके बारे में तुम बार-बार बात कर रहे हो?'
'तुम्हारा मतलब लचमैन से है,' मुरुगन ने उसे सुधारते हुए कहा। 'रोनी रॉस इसे ऐसे ही बोलते थे; कम से कम वो इसे ऐसे ही लिखते थे।'
'लेकिन नाम लछमन ही रहा होगा,' उर्मिला ने कहा। 'रॉस ने शायद इसे ब्रिटिश तरीके से लिखा होगा।'
'एक ही बात है,' मुरुगन ने कहा। 'कौन जाने उसकी माँ उसे क्या बुलाती थी? हम वहाँ नहीं थे। खैर, लुचमैन एक नौजवान था जो 25 मई 1895 को रात 8 बजे रॉनी रॉस की ज़िंदगी में आया और खुद को एक प्रयोग के तौर पर पेश किया। उसने अगले तीन साल रॉनी के लिए सब कुछ किया, उसके नाश्ते के बैगेल काटने से लेकर उसकी स्लाइड गिनने तक। जब भी रॉनी गलत दिशा में भागने लगता, लुचमैन उसे रोकने और सही राह दिखाने के लिए तैयार रहता।
उसे सही रास्ता दिखा रहा था। उसने दावा किया कि वह पेशे से "धूली ढोने वाला" है, लेकिन मेरा अनुमान है कि वह रॉनी को बहका रहा था।
'लेकिन,' उर्मिला ने कहा, 'उसे कैसे पता चलता कि रोनाल्ड रॉस को कहाँ ले जाना है?'
उन्होंने कहा, 'यह एक लंबी कहानी है। मैं इसे संक्षेप में बताता हूँ: कुछ साल पहले

मुझे कलकत्ता में लिखा एक पत्र मिला, जिसे एलिजा फार्ले नामक एक अमेरिकी मिशनरी डॉक्टर ने लिखा था। धर्म अपनाने से पहले फार्ले अमेरिका में जॉन्स हॉपकिंस में चिकित्सा अनुसंधान कर रहे थे। एक छात्र के रूप में उन्होंने मलेरिया अनुसंधान के कुछ सबसे बड़े नामों के साथ काम किया था।'
खैर, उन्होंने जो आखिरी चीज लिखी थी, वह यह पत्र था जिसमें उन्होंने कलकत्ता में कनिंघम की प्रयोगशाला की यात्रा का वर्णन किया था। उन्होंने वहां कुछ ऐसी चीजें देखीं जो अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय में प्रचलित स्थिति से शायद तीन या चार साल आगे थीं। बेशक, उनमें से कुछ भी उन्हें समझ में नहीं आया, क्योंकि यह उनके द्वारा अब तक सिखाई गई किसी भी बात से मेल नहीं खाता था।
उर्मिला ने कहा, 'इतनी जल्दी-जल्दी मत बोलो। मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम क्या कहना चाह रही हो। क्या तुम कनिंघम के खुद के शोध की बात कर रही हो?'
मुरुगन हँसे और बोले: 'नहीं। कनिंघम को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था।'
'तो फिर ये काम कौन कर रहा था?'
मुरुगन ने कहा, 'फ़ार्ले के नज़रिए से, ये सब प्रयोगशाला में काम करने वाले लोग, कनिंघम के नौकर और सहायक थे।'
'लेकिन निश्चित रूप से,' उर्मिला ने कहा, 'कनिंघम के सहायकों ने उन्हें बताया होगा कि वे क्या कर रहे थे।'
'बात कुछ इस तरह है,' मुरुगन ने कहा। 'कनिंघम के सहायक काफी अलग-अलग पृष्ठभूमि के थे। दरअसल, वह नहीं चाहते थे कि कलकत्ता के पढ़े-लिखे कॉलेज के बच्चे उनकी प्रयोगशाला में आकर सवाल-जवाब करें। इसलिए उन्होंने इसके बजाय अपने सहायकों को खुद प्रशिक्षित करना शुरू कर दिया।'
'वे कौन थे?' उर्मिला ने पूछा। 'और उसने उन्हें कहाँ पाया?'
'ऐसी जगह जहां कोई भी ढूंढने की सोच भी नहीं सकता था,' मुरुगन ने कहा। 'सियालदह रेलवे स्टेशन पर। स्टेशन को बने ज़्यादा समय नहीं हुआ था, लेकिन अगर आपको ऐसे लोग ढूंढने हों जो बिल्कुल अकेले हों, बेसहारा हों और जिनके पास रहने की कोई जगह न हो, तो यही वो जगह थी। कनिंघम समय-समय पर पूरे स्टेशन का मुआयना करता था और जब उसे कोई ठीक-ठाक लड़का दिखता, तो वो उसे काम के बदले रहने और खाने की पेशकश करता था - कोई बड़ी बात नहीं, बस लैब में न्यूनतम मज़दूरी वाला काम, सफाईकर्मी, ढोली ढोने वाला, इस तरह का काम। वे तुरंत मान जाते थे, आखिर खोने को क्या था? वे अस्पताल की दीवार के पास बने उन छोटे-छोटे कमरों में रहते थे और लैब में मदद करते थे। यह एक बढ़िया, आरामदायक छोटा सा इंतज़ाम था।'
'तो उन्होंने उन्हें पढ़ाया?' उर्मिला ने कहा। 'और उन्हें प्रशिक्षित किया, इत्यादि?'
'सच में नहीं,' मुरुगन ने कहा। 'उन्होंने शायद उन्हें थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी पढ़ना सिखाया होगा और शायद कुछ चीज़ें दिखाई भी होंगी - लेकिन बस नकल करने जैसा ही। उन्हें शायद कोई फ़र्क ही नहीं पड़ता था। लेकिन एक महिला थी, जिसने प्रयोगशाला में बहुत सहजता से काम करना सीख लिया। मेरा अनुमान है कि कुछ ही वर्षों में मलेरिया की समस्या के मूल सिद्धांतों की सहज समझ के मामले में वह कनिंघम से कहीं आगे

निकल गई थी।'
'लेकिन यह महिला कौन थी?' उर्मिला ने पूछा। 'और उसका नाम क्या था?'
मुरुगन मुस्कुराया: 'जिस तरह से फ़ार्ले बताता है,' उसने अपने नम माथे पर अपनी आस्तीन फेरते हुए कहा, 'उसका नाम मंगला था।'
उर्मिला चौंक गई। 'मंगला?' वह चिल्लाई। 'तुम्हारा मतलब मंगल-बीबी जैसा है - जैसे उस लड़की ने नाम बताया था?'
'मुझे लगता है कि आप उसे एक प्रोटोटाइप कह सकते हैं,' मुरुगन ने कहा। 'और वह कौन थी - कौन जानता है? उसके अस्तित्व का एकमात्र संकेत हमें एलिजा फार्ले द्वारा लिखे गए इस पत्र से मिलता है। और वह पत्र भी अब मौजूद नहीं है: कम से कम कैटलॉग में तो उसका कोई पता नहीं चलता।'
'इलायजा फार्ले ने उसके बारे में क्या कहा था?'
'ज़्यादा कुछ नहीं,' मुरुगन ने कहा। 'उसे बस इतना ही पता था कि कनिंघम ने उसे क्या बताया था - कि उसने उसे सियालदह स्टेशन पर पाया था, वह बेहद गरीब थी और शायद उसे वंशानुगत सिफलिस था। लेकिन फिर बड़ा सवाल यह है: क्या कनिंघम ने उसे खोजा था या उसने उसे? खैर, फ़ार्ले ने प्रयोगशाला में कुछ ऐसी चीज़ें देखीं जिनसे उसे कोई संदेह नहीं रहा कि वह मलेरिया के बारे में कनिंघम के सिखाए गए ज्ञान से कहीं ज़्यादा जानती थी।'
'सच में?' उर्मिला ने अविश्वास से माथे पर शिकन डालते हुए कहा। 'क्या यह संभव है कि उसने इतनी तकनीकी चीज़ खुद ही सीख ली हो?'
मुरुगन ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'ऐसी ही घटनाएं पहले भी हो चुकी हैं। मद्रास के गणितज्ञ रामानुजन को ही ले लीजिए। उन्होंने आधुनिक गणित के एक बड़े हिस्से को फिर से गढ़ दिया, सिर्फ इसलिए कि किसी ने उन्हें बताया ही नहीं था कि यह काम पहले ही हो चुका है। और मंगला की बात करें तो हम गणित की नहीं, बल्कि सूक्ष्मदर्शी की बात कर रहे हैं, जो उस समय एक तरह का पारंपरिक कौशल था। असली प्रतिभा आपको इसमें बहुत आगे ले जा सकती है - रॉनी रॉस का करियर इसका जीता-जागता सबूत है। इस महिला की बात करें तो हम सिर्फ प्रतिभा से कहीं बढ़कर हैं; हम शायद उनकी प्रतिभा की बात कर रहे हैं। आपको यह भी याद रखना होगा कि उन्हें उन चीजों से कोई बाधा नहीं थी जो पारंपरिक रूप से प्रशिक्षित व्यक्ति को धीमा कर सकती हैं: उनके दिमाग में सिद्धांतों का बोझ नहीं था, उन्हें शोध पत्र लिखने या प्रमाण गढ़ने की जरूरत नहीं थी।' रॉस के विपरीत, उसे क्यूलेक्स और एनोफेलेस के बीच अंतर देखने के लिए किसी प्राणीशास्त्रीय अध्ययन को पढ़ने की आवश्यकता नहीं थी: वह इसे वैसे ही समझ जाती जैसे आप या मैं डैकशंड और डोबरमैन के बीच अंतर देख सकते हैं। उसे औपचारिक वर्गीकरणों की परवाह नहीं थी। वास्तव में, उसे मलेरिया की भी कोई परवाह नहीं थी। शायद इसीलिए वह रॉनी रॉस के पीछे खड़ी हो गई और उसे लक्ष्य की ओर धकेलने लगी। वह किसी बिल्कुल अलग चीज़ के लिए काम कर रही थी, और उसे विश्वास होने लगा था कि उसकी अंतिम सफलता का एकमात्र तरीका रॉनी रॉस को उसकी सफलता दिलाना ही है। उसके मन में मलेरिया के कीटाणु से कहीं बड़े लक्ष्य थे।

'जैसे क्या?' उर्मिला ने कहा।
'कलकत्ता क्रोमोसोम।'
एक हल्की सी खांसी के साथ, वेटर ने उनका पर्दा हटाया और उनके ऑर्डर टेबल पर रख दिए।
उर्मिला ने उसके जाने तक इंतजार किया। 'तुमने अभी क्या कहा?'
'कलकत्ता क्रोमोसोम,' मुरुगन ने कहा। 'यह वह नाम है जो मैंने उसके उद्देश्य के लिए रखा था।'
उर्मिला ने कहा, 'अब तो मैं सचमुच असमंजस में हूँ। मैं पूरी जिंदगी यहीं रही हूँ और मैंने इस बारे में कभी नहीं सुना।'
'और कौन जाने कि तुम कभी जान पाओगे या नहीं?' मुरुगन ने कहा। 'या मैं जान पाऊंगा या नहीं। या यह अस्तित्व में है या कभी अस्तित्व में था। इस समय तो यह सब मेरे लिए सिर्फ अनुमान ही है।'
'लेकिन आपके अनुमानों का कोई आधार तो होना चाहिए,' उर्मी-ला ने कहा।
मुरुगन ने कोई जवाब नहीं दिया। 'आगे बताओ,' उर्मिला ने लगभग विनती करते हुए कहा। 'हम सब इसमें एक साथ फंसे हैं। मुझे जानने का अधिकार है।'
मुरुगन हिचकिचाया। 'क्या आप वाकई जानना चाहते हैं?'
उसने सिर हिलाया।
'ठीक है, मैं आपको बताता हूँ कि मुझे इसकी शुरुआत कैसे हुई,' मुरुगन ने अनिच्छा से कहा। 'फ़ार्ले के पत्र से मुझे ऐसा लगा कि मंगला वास्तव में मलेरिया के कीटाणु का उपयोग किसी अन्य बीमारी के इलाज के रूप में कर रही थी।'
'क्या रोग?'
'सिफिलिस,' मुरुगन ने कहा। 'या अधिक सटीक कहें तो, सिफिलिटिक पैरेसिस - सिफिलिस की अंतिम लकवाग्रस्त अवस्था। फ़ार्ले के विवरण से ऐसा लगता है कि लोगों का एक गुप्त नेटवर्क था जो मानता था कि मंगला के पास इसका इलाज है। याद रखें कि हम 1890 के दशक की बात कर रहे हैं - पेनिसिलिन की खोज से बहुत पहले। सिफिलिस का कोई इलाज नहीं था: यह हर साल दुनिया भर में लाखों लोगों की जान लेता था। मंगला से मिलने आए ये लोग शायद मानते थे कि वह कोई चुड़ैल, जादूगरनी, देवी या कुछ भी हो सकती है: इससे कोई फर्क नहीं पड़ता - उस समय सिफिलिस के पारंपरिक चिकित्सा उपचार भी जादू-टोने से ज्यादा कुछ नहीं थे। चलिए, उस पुरानी कहावत पर ही टिके रहें कि बिना आग के धुआँ नहीं होता। अगर लोगों की एक पूरी भीड़ मानती थी कि मंगला के पास इलाज है, या कुछ हद तक प्रभावी उपचार है, तो यह निश्चित रूप से उसकी सफलता दर के कारण ही रहा होगा।' लोग पागल नहीं हैं: अगर वे उससे मिलने के लिए इतनी दूर यात्रा करके आए हैं, तो उन्होंने जरूर सोचा होगा कि वह किसी न किसी तरह की उम्मीद जगाती है।'
'तुम्हें क्या लगता है कि वह इलाज क्या था?' उर्मिला ने कहा।
'मैं यहाँ बस अंदाज़ा लगा रहा हूँ, ठीक है? लेकिन अगर आप मुझे मजबूर करेंगे, तो मैं कहूँगा कि उसने किसी ऐसी प्रक्रिया का पता लगा लिया होगा जिसके लिए जूलियस वैगनर-जॉरेग नाम के व्यक्ति को 1927 में नोबेल पुरस्कार मिला था। अंदाज़ा लगाइए

कि वह उपचार क्या था?'
उर्मिला ने अपनी थाली से नज़रें ऊपर उठाईं। 'तुम अच्छी तरह जानती हो कि मुझे कुछ पता नहीं,' उसने कहा। 'क्या बात थी?'
मुरुगन ने अपनी कुरकुरी, गोल ढाकाई पारोठा के ऊपरी हिस्से में उंगली डाली, जिससे भाप का एक झोंका निकला। 'ठीक है, मैं तुम्हें बताता हूँ,' उसने कहा। 'वैगनर-जॉरिग ने दिखाया कि कृत्रिम रूप से प्रेरित मलेरिया अक्सर सिफिलिटिक पैरेसिस को ठीक कर देता है, या कम से कम उसे कम कर देता है। वह क्या करता था कि वह एक छोटा सा चीरा लगाकर मरीज के शरीर में मलेरिया का खून इंजेक्ट करता था। यह एक काफी क्रूर प्रक्रिया थी, लेकिन अजीब बात यह है कि यह काम करती थी। वास्तव में, एंटीबायोटिक्स आने तक, वैगनर-जॉरिग प्रक्रिया लगभग एक मानक उपचार थी: हर बड़े यौन रोग अस्पताल में एक छोटा सा इनक्यूबेटिंग रूम होता था जहाँ एनाफिलीस बैक्टीरिया का झुंड पाला जाता था। सोचो ज़रा: अस्पताल बीमारी को बढ़ावा दे रहे हैं! लेकिन दूसरी ओर, आग से आग बुझाने से ज्यादा स्वाभाविक क्या हो सकता है? आप कह सकते हैं कि टीके भी इसी सिद्धांत पर काम करते हैं, लेकिन वे आपके प्रतिरक्षा तंत्र को खुद के खिलाफ तैयार करते हैं। यह चिकित्सा जगत में एक बीमारी से दूसरी बीमारी से लड़ने का एकमात्र ज्ञात उदाहरण है।'
आज तक कोई भी ठीक से नहीं जानता कि वैगनर-जॉरिग का इलाज कैसे काम करता था। वैसे भी, इस बात से किसी को कोई खास फ़िक्र नहीं है। यह एक वैज्ञानिक घोटाला था और एंटीबायोटिक्स आने के बाद चिकित्सा जगत ने लगभग इसे नज़रअंदाज़ कर दिया। जूलियस को भी इस बात की ज़्यादा चिंता नहीं थी कि यह कैसे काम करता है। याद रहे, वह जीवविज्ञानी नहीं थे: वह एक चिकित्सक और मनोवैज्ञानिक थे। उनका मानना था कि यह प्रक्रिया मरीज़ के शरीर का तापमान बढ़ाकर काम करती है। उन्हें इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था कि किसी और बुखार का ऐसा असर नहीं होता।
लेकिन यह बिल्कुल संभव है कि मलेरिया पक्षाघात पर किसी अलग तरीके से असर डालता हो: उदाहरण के लिए, मस्तिष्क के माध्यम से। सिफलिस के प्रभावों में से एक यह है कि यह रक्त-मस्तिष्क अवरोध को धुंधला कर देता है। मलेरिया भी मस्तिष्क पर अलग-अलग तरीकों से असर डालता है: इसीलिए फाल्सीपेरम मलेरिया को सेरेब्रल मलेरिया भी कहा जाता है। लेकिन अन्य प्रकार के मलेरिया के भी तंत्रिका तंत्र पर अजीबोगरीब प्रभाव होते हैं। मलेरिया से पीड़ित कई लोग यह जानते हैं: यह किसी भी नशीली दवा से ज़्यादा मतिभ्रम पैदा करने वाला हो सकता है। इसीलिए आदिम लोग कभी-कभी मलेरिया को एक प्रकार का प्रेत-आक्रमण मानते थे।
मंगला का आगमन: ऐसा लगता है कि उन्होंने भी डॉक्टर साहब के लगभग उसी समय इस उपचार का आविष्कार किया था। लेकिन उन्होंने इसमें थोड़ा सा बदलाव किया। उनकी तकनीक के बारे में जो जानकारी हमारे पास है, उससे ऐसा लगता है कि वह मलेरिया के किसी अजीब प्रकार पर काम कर रही थीं - यानी, घोड़ों के प्रजनन की किसी आदिम विधि से उन्होंने एक ऐसा प्रकार विकसित किया था जिसे कबूतरों में पाला जा सकता था। मेरा अनुमान है कि उन्होंने किसी तरह से इस जीवाणु को

कबूतरों में स्थानांतरित करने का तरीका खोज लिया था, ताकि कबूतर को एक टेस्ट ट्यूब या अगर प्लेट की तरह इस्तेमाल किया जा सके।
अब यहाँ असली चौंकाने वाली बात है। मैं बेझिझक कहूँगा: मुझे लगता है कि कुछ समय बाद मंगला ने गौर करना शुरू किया कि उसके इलाज से अक्सर अजीबोगरीब दुष्प्रभाव पैदा होते थे – जो देखने में अजीब व्यक्तित्व विकारों जैसे लगते थे। लेकिन असल में वे विकार नहीं थे, बल्कि व्यक्तित्वों का रूपांतरण थे। उसने धीरे-धीरे सब कुछ समझना शुरू किया और पाया कि वास्तव में उसके हाथ में मलेरिया दाता से प्राप्तकर्ता तक – पक्षी के माध्यम से – बेतरतीब ढंग से मिश्रित व्यक्तित्व लक्षणों का एक मिश्रण था। और एक बार जब उसने यह देख लिया, तो वह इलाज के इस पहलू को अलग करने में और अधिक रुचि लेने लगी, ताकि वह इन रूपांतरणों के काम करने के तरीकों को नियंत्रित कर सके।
उर्मिला ने कहा, 'मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा है। आप असल में क्या कहना चाह रही हैं?'
मैं क्या कह रहा हूँ? खैर, मैं यह कह रहा हूँ: मुझे लगता है कि मंगला को एक ऐसी चीज़ मिली है जिसका नाम न तो उन्हें, न रॉनी रॉस को, और न ही उस समय के किसी वैज्ञानिक को पता होता। बहस के लिए, चलिए इसे गुणसूत्र कहते हैं: हालाँकि इस बात का सार यह है कि यदि यह वास्तव में एक गुणसूत्र है, तो यह केवल एक तरह से सादृश्य के आधार पर है। क्योंकि हम यहाँ जिस चीज़ की बात कर रहे हैं, वह तेईस गुणसूत्रों के मानक मेंडेलियन समूह के लिए वैसी ही है जैसे देवताओं के लिए गणेश; यानी, भिन्न, गैर-मानक, अद्वितीय – और यही कारण है कि यह अनुसंधान की मानक तकनीकों से परे है। और इसीलिए मैं इसे कलकत्ता गुणसूत्र कहता हूँ।
कलकत्ता गुणसूत्र को सामान्य तरीकों से न खोज पाने का एक कारण यह है कि मानक गुणसूत्रों के विपरीत, यह प्रत्येक कोशिका में मौजूद नहीं होता। या यदि होता भी है, तो यह इतनी गहराई से एन्क्रिप्टेड होता है कि हमारी वर्तमान तकनीकें इसे अलग नहीं कर सकतीं। और प्रत्येक कोशिका में इसके मौजूद न होने का कारण यह है कि अन्य गुणसूत्रों के विपरीत, यह सममित रूप से युग्मित नहीं होता। और इसके युग्मित न होने का कारण यह है कि यह अंडाणु और शुक्राणु में विभाजित नहीं होता।
और अनुमान लगाइए कि ऐसा क्यों है? मैं आपको बताता हूँ: ऐसा इसलिए है क्योंकि यह एक ऐसा गुणसूत्र है जो यौन प्रजनन द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित नहीं होता। यह पुनर्संयोजन की प्रक्रिया से विकसित होता है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए विशिष्ट होता है। यही कारण है कि यह केवल कुछ प्रकार की कोशिकाओं में पाया जाता है: यह पुनर्योजी ऊतकों में मौजूद नहीं होता। यह केवल अ-पुनर्जीवित ऊतकों में पाया जाता है: दूसरे शब्दों में, मस्तिष्क में।
मैं इसे इस तरह समझाता हूँ: अगर सचमुच कलकत्ता क्रोमोसोम जैसी कोई चीज़ है, तो मंगला जैसी कोई व्यक्ति, जो वैज्ञानिक दृष्टि से पूरी तरह से अनभिज्ञ है, ही उसे खोज सकती है – भले ही उसे यह पता न हो कि यह क्या है और इसका कोई नाम भी न हो। क्योंकि यहाँ हमारे सामने मानव गुणों की एक ऐसी जैविक अभिव्यक्ति है जो न तो सीधे जीन पूल से विरासत में मिलती है और न ही उसमें संचारित होती है।

यह ठीक उसी प्रकार की चीज़ है जिसे एक पारंपरिक वैज्ञानिक के लिए स्वीकार करना सबसे कठिन होगा। जीवविज्ञानी अपने निष्कर्षों को राजनीति के अनुरूप ढालने के लिए बहुत दबाव में हैं: दक्षिणपंथी राजनेता गरीबी से लेकर आतंकवाद तक, हर चीज़ के लिए जीन खोजने के लिए उन पर दबाव डालते हैं, ताकि उनके पास गरीबों को नपुंसक बनाने या मध्य पूर्व पर परमाणु बम गिराने का बहाना हो। वामपंथी भड़क उठते हैं अगर वे मानव गुणों की जैविक अभिव्यक्ति के बारे में कुछ भी कहते हैं: उस छोर पर तो सब कुछ चेतना और आत्मा से जुड़ा है।
लेकिन अगर आप इस बारे में सोचें, तो यह स्वाभाविक है कि कुछ खास तरह के लक्षणों का जैविक संबंध होता है। लेकिन किसने कहा कि इनका निर्धारण जीव विज्ञान से ही होना चाहिए? शायद यह उल्टा भी हो सकता है – कि वे जीव विज्ञान पर अपनी छाप छोड़ते हों। कौन जाने?
और सिर्फ इसलिए कि ये जैविक सहसंबंध यौन प्रजनन द्वारा प्रसारित नहीं होते, इसका मतलब यह नहीं है कि वे अन्य तरीकों से व्यक्तियों के बीच स्थानांतरित नहीं हो सकते। और यहीं मंगला की भूमिका आती है। याद रखें कि उसने गुणसूत्र के बजाय संचरण की प्रक्रिया को समझने के लिए संघर्ष किया - आखिरकार, उसे पता ही नहीं था कि गुणसूत्र क्या होता है। उस समय किसी को भी नहीं पता था। याद रखें कि मलेरिया ही वह कारण था जिसने उसे इस ओर प्रेरित किया। याद रखें कि मलेरिया के जीवाणु की असाधारण विशेषताओं में से एक यह है कि इसमें अपने डीएनए को 'काटने और जोड़ने' की क्षमता होती है - ट्राइपैनोसोम को छोड़कर किसी भी ज्ञात जीव में यह क्षमता नहीं होती। याद रखें कि यही एक कारण है कि मलेरिया का टीका विकसित करना इतना कठिन रहा है। क्योंकि मलेरिया के जीवाणु की खासियत यह है कि अपने जीवन चक्र के दौरान यह अपने आवरण प्रोटीन को लगातार बदलता रहता है। इसलिए जब तक शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली खतरे को पहचानना सीखती है, तब तक जीवाणु को अगले चरण से पहले अपना रूप बदलने का समय मिल चुका होता है।
'शायद मंगला को संयोगवश यही पता चला कि मलेरिया का जीवाणु, अपनी पुनर्संयोजन क्षमता के कारण, डीएनए के इस अंश को तोड़कर और पुनर्वितरित करके वास्तव में पचा सकता है। फिर, जब इसे किसी ऐसे रोगी में पुनः प्रवेश कराया जाता है जिसका रक्त-मस्तिष्क अवरोध स्पंजी हो गया हो, तो शायद यह जानकारी को वापस ले जा सकता है और मेजबान के आर्द्र तंत्र में कुछ छोटे-छोटे परिवर्तन कर सकता है।'
'मेरा मानना है कि जैसे ही उन्हें इस प्रक्रिया का पता चला, उन्होंने बाकी सब कुछ छोड़ दिया और इसे परिष्कृत करने पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया - दो दिशाओं में। एक तो सिफलिस की प्रक्रिया से बचने का कोई तरीका ढूंढना था। और दूसरा स्थानांतरण की प्रक्रिया के दौरान गुणसूत्र को स्थिर करना था। क्योंकि तब तक जो हो रहा था वह यह था कि जीवाणु इसे सबसे अजीब तरीकों से तोड़ रहा था और वह उन लक्षणों को नियंत्रित करना चाहती थीं जो स्थानांतरित हो रहे थे।'
मेरा अनुमान है कि लगभग 1897 तक मंगला एक गतिरोध पर पहुँच गई थीं, और

उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला था कि मलेरिया के मौजूदा प्रकार उन्हें आगे बढ़ने नहीं देंगे। इसीलिए वह रोनी से इस पूरे मामले को सुलझाने और इसे प्रकाशित करने के लिए इतनी बेताब थीं। क्योंकि उनका वास्तव में मानना था कि इस जीवाणु और मानव मस्तिष्क के बीच का संबंध इतना घनिष्ठ है कि एक बार इसके जीवन चक्र का पता चल जाने पर यह स्वत: ही ऐसे रूपांतरण करेगा जो उनके काम को अगले स्तर तक ले जाएगा। मेरा मानना है कि उनका यही मानना था: कि हर बार जब वह किसी गतिरोध पर पहुँचती थीं, तो आगे बढ़ने का रास्ता एक और रूपांतरण को प्रेरित करने में ही था।
अपनी खाली प्लेट को एक तरफ धकेलते हुए उर्मिला ने कहा: 'कैसे?'
'कुछ बातों को लोगों तक पहुंचाने की कोशिश करके।'
'तो क्या वह सफल हुई?' उसने पूछा।
मुरुगन मुस्कुराया। 'मुझे लगता है कि हमें पता चल जाएगा।'
'कैसे?'
'मेरा अनुमान है कि यह प्रयोग इसी बारे में है।'
'लेकिन इस तरह क्यों? क्यों नहीं...?'
'क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा?' मुरुगन ने कहा। 'वह इसमें इसलिए नहीं है क्योंकि वह वैज्ञानिक बनना चाहती है। वह इसमें इसलिए है क्योंकि वह खुद को भगवान समझती है। और इसका मतलब यह है कि वह वह दिमाग बनना चाहती है जो चीजों को गति प्रदान करता है। उसके नज़रिए से, हम उसे, उसके इरादों को, या उसके बारे में कुछ भी कभी नहीं जान सकते: प्रयोग तब तक सफल नहीं होगा जब तक इसके कारण हमारे लिए पूरी तरह से रहस्यमय न हों, किसी बीमारी की तरह अनसुलझे। लेकिन साथ ही, उसे हमें अपने इतिहास के बारे में बताने की कोशिश करनी होगी: यह भी प्रयोग का एक हिस्सा है।'
उर्मिला ने कहा, 'तुम उसके बारे में ऐसे क्यों बात कर रहे हो जैसे वह अभी भी जीवित हो? क्या तुम सचमुच यही कहना चाह रहे हो कि वह जीवित है? कि उसने किसी तरह खुद को बचा लिया...?'
मुरुगन मुस्कुराया। 'अच्छा,' उसने कहा। 'तुम क्या सोचते हो?'
अपनी बाहों को मोड़कर उर्मिला ने खुद को गले लगा लिया, अचानक उसे ठंड लगने लगी। 'मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या सोचूँ,' उसने कहा। उसने बूथ के पर्दे को पकड़ा और उसे पीछे की ओर खींच दिया।
जैसे ही उसने केबिन में झांका, सब कुछ थम सा गया; ऐसा लगा मानो कमरे में मौजूद हर कोई उसे घूरने लगा हो - दूसरे ग्राहक, वेटर, बगल की मेज पर बैठे अस्त-व्यस्त कॉलेज के छात्र - मानो वे सब उसका चेहरा देखने के लिए ही इंतजार कर रहे थे। उसने झट से पर्दा बंद कर दिया।
'लेकिन लुचमन का क्या?' उसने कहा। 'आपने मुझे जो कुछ भी बताया है, उससे मंगला और लुचमन के बीच किसी भी तरह का संबंध साबित नहीं होता। वैसे भी, लुचमन कौन था? उसका अतीत क्या था?'
'कलकत्ता, तुमने मुझे सही पकड़ा,' मुरुगन ने कहा। 'यहीं पर मैं हमेशा पिछड़ जाता

हूँ। मेरे पास बस कुछ टुकड़े हैं - न कोई शुरुआत, न कोई मध्य और निश्चित रूप से न कोई अंत।'
उर्मिला ने कहा, 'मुझे उदाहरण दीजिए। आप इन छोटे-छोटे टुकड़ों की बात क्यों कर रहे हैं?'
'फ़ार्ले का पत्र मुख्य स्रोत है,' मुरुगन ने कहा। 'फ़ार्ले का कहना है कि कनिंघम की प्रयोगशाला में मंगला के साथ एक और व्यक्ति काम कर रहा था। वह लचमैन के लगभग समान उम्र का प्रतीत होता है और उसका हुलिया भी लचमैन से मिलता-जुलता है।'
'इससे ज्यादा जानकारी नहीं मिलती,' उर्मिला ने कहा।
'यह सच है,' मुरुगन ने स्वीकार किया, 'सिवाय इसके कि पत्र में कुछ संदर्भों से ऐसा प्रतीत होता है कि यह सहायक वही व्यक्ति था जो 25 मई 1895 को रॉस के दरवाजे पर आया था।'
'जैसे क्या?' उर्मिला ने कहा।
"खैर, एक बात जो हमें लुचमैन के बारे में एक अन्य स्रोत से पता चली है, वह यह है कि वह उंगलियों से विकलांग था - यानी, उसके बाएं हाथ में अंगूठा नहीं था। ऐसा लगता है कि इससे उसके शारीरिक कौशल पर कोई फर्क नहीं पड़ा। वह शायद इसी तरह पैदा हुआ था, क्योंकि उसकी तर्जनी उंगली ने अंगूठे का काम करने के लिए खुद को प्रशिक्षित कर लिया था..."
उर्मिला के मन में कुछ हलचल हुई, एक धुंधली सी याद।
'क्या बात है?' मुरुगन ने कहा। 'तुम क्यों मुंह फुलाए बैठे हो?'
उसने अपने होंठ दबाए: 'मुझे लगा था कि मुझे कुछ याद आ रहा है, लेकिन अब याद नहीं आ रहा। खैर, आगे बढ़ो। क्या फ़ार्ले ने सहायक के हाथ के बारे में कुछ कहा?'
'स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा गया है,' मुरुगन ने कहा। 'लेकिन एक वाक्य है जिसमें वह कहता है: "परिस्थितियों को देखते हुए वह आश्चर्यजनक रूप से कुशल था"। कुछ ऐसा ही। मेरा अनुमान है कि जिन "परिस्थितियों" का वह जिक्र कर रहा है, उनका संबंध उस व्यक्ति के हाथ से था।'
'बस इतना ही?' उर्मिला ने निराशा से कहा।
'बस एक और बात है। पत्र के अंत में फार्ले ने कहा था कि सहायक फर्जी नाम का इस्तेमाल कर रहा था।'
'तो फिर उसका असली नाम क्या था?'
'काश मुझे पता होता,' मुरुगन ने कहा। 'लेकिन मुझे नहीं पता। फ़ार्ले ने अपने पत्र में इसका ज़िक्र नहीं किया। जिस दिन उसने पत्र भेजा, उसी दिन वह कलकत्ता से चला गया। उसे सियालदह स्टेशन पर ट्रेन में चढ़ते देखा गया था और एक युवक, जिसका हुलिया सहायक से मिलता-जुलता था, उसका सामान ले जा रहा था। बाद में उन्हें एक सुनसान छोटे से स्टेशन पर ट्रेन से उतरते भी देखा गया। फ़ार्ले फिर कभी नहीं देखा गया। कुछ महीनों बाद, मई 1895 में, "लुचमैन" सिकंदराबाद में रोनाल्ड रॉस की प्रयोगशाला में गया।'
उर्मिला ने कहा, 'यह महज एक संयोग हो सकता है।'

'हो सकता है,' मुरुगन ने कहा। 'लेकिन अभी एक और संयोग बाकी है जिसका हिसाब लगाना बाकी है।'
'हाँ?'
'बात बस इतनी सी है,' मुरुगन ने कहा। 'मैंने एक अन्य स्रोत से यह पुष्टि की है कि लुचमैन का नाम भी असली नाम नहीं था।'
'यह क्या था?' उर्मिला ने पूछा। 'लाखन।' मुरुगन ने कहा।
उर्मिला ने अपने हाथों से अपना मुंह ढक लिया। 'बताओ,' उसने कहा। 'जल्दी बताओ: उस स्टेशन का नाम क्या था जहाँ फ़ार्ले और सहायक को आखिरी बार देखा गया था?'
'रेनूपुर,' मुरुगन ने कहा।
वह बिना आवाज किए उसे देखती रही।
मुरुगन ने उसका हाथ पकड़ा और हिलाया। 'अरे, उठो,' उसने कहा। 'क्या बात है?'
'बस मुझे लगता है कि मैं इस तस्वीर के एक हिस्से को पूरा करने में सक्षम हो सकती हूं,' उर्मिला ने कहा।
'ऐसा कैसे?'
'कल रात मैं सोनाली-दी के साथ घर गई और उन्होंने मुझे कुछ बताया: एक कहानी जो उन्होंने अपनी मां से सुनी थी, फुलबोनी के साथ कई साल पहले घटी एक घटना के बारे में।'

अध्याय 38

1933 में, अपनी पहली और एकमात्र नौकरी मिलने के तुरंत बाद, फूलबोनी को रेनुपुर के दूरस्थ प्रांतीय शहर की यात्रा पर भेजा गया था।
फुलबोनी एक प्रसिद्ध ब्रिटिश कंपनी, पामर ब्रदर्स में काम करती थी, जो साबुन, तेल और अन्य घरेलू सामान बनाती थी। यह कंपनी अपने व्यापक वितरण नेटवर्क के लिए प्रसिद्ध थी, जो छोटे से छोटे कस्बों और गांवों तक फैला हुआ था। कंपनी में भर्ती होने वाले प्रत्येक नए कर्मचारी को कुछ साल एक क्षेत्र में यात्रा करने, गांवों की दुकानों का दौरा करने, स्थानीय व्यापारियों से जान-पहचान बनाने, चाय की दुकानों पर बैठने, मेलों और मेला मैदानों का दौरा करने में बिताने पड़ते थे।
नौकरी में नए होने के कारण फूलबोनी ने रेनूपुर के बारे में कभी नहीं सुना था। पूछताछ करने पर उन्हें यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि छोटा सा कस्बा होने के बावजूद, यहाँ एक रेलवे स्टेशन है। कलकत्ता को बारिच के कपास बाजार से जोड़ने वाली एक ट्रेन हर दूसरे दिन यहाँ से गुजरती है।
सीधी दूरी के हिसाब से रेनूपुर कलकत्ता से तीन सौ मील से ज़्यादा दूर नहीं था, लेकिन सफ़र धीमा और काफ़ी उबाऊ था, क्योंकि यह दरभंगा और विशाल मैथिल मैदान के एक बड़े हिस्से से होकर गुज़रता था। लेकिन ट्रेन में दो दिन बिताने के विचार से फूलबोनी बिल्कुल भी निराश नहीं थे, बल्कि बहुत खुश थे: उन्हें रेलवे से जुड़ी हर

चीज़ पसंद थी – स्टेशन, इंजन, ब्रैडशॉ ट्रेनें, सागौन की लकड़ी के स्लीपरों की तीखी क्रियोसोट की गंध। खुली खिड़की के पास बैठकर हवा का आनंद लेते हुए दिन में सपने देखने से बेहतर उन्हें कुछ नहीं लगता था। इस बार वे खास तौर पर उत्साहित थे क्योंकि उन्हें बताया गया था कि रेनूपुर के पास के जंगलों में अच्छा शिकार मिलता है। हमेशा की तरह, उन्होंने अपनी पहले महीने की तनख्वाह से एक नई .303 राइफल खरीदी थी। अब वे उस बंदूक का इस्तेमाल करने के लिए बेताब थे।

जुलाई का मध्य था। मानसून शुरू हो चुका था और पूरा पूर्वी भारत बारिश से भीगा हुआ था। इस क्षेत्र की कई उग्र नदियाँ अपने किनारों को तोड़कर विशाल, समतल मैदानों में बह रही थीं। जिन नदियों का वे पोषण करती थीं, उनके लिए खतरा बनी रहने वाली ये नदियाँ, किसी ऊँचे तटबंध की सुरक्षा में ट्रेन में बैठे एक आम दर्शक के लिए बिल्कुल अलग रूप प्रस्तुत कर रही थीं। मानसून के ढलते बादलों के नीचे चांदी की चादरों की तरह फैला शांत जल एक मनमोहक और सम्मोहक दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। ओडिशा की पहाड़ियों और जंगलों के बीच बसा फूलबोनी शहर ने इससे पहले ऐसा कुछ कभी नहीं देखा था: यह राजसी, अंतहीन मैदान अशांत आकाश को प्रतिबिंबित कर रहा था।

दरभंगा से निकलने से पहले फूलबोनी ने ट्रेन के गार्ड से कहा था कि रेणुपुर पहुँचने से पहले उन्हें सूचित कर दे। यात्रा में आठ घंटे लगे, लेकिन युवा लेखक को ऐसा लगा जैसे कुछ ही मिनटों में समय बीत गया हो। परिदृश्य को निहारने की उनकी इच्छा अभी पूरी तरह से शांत भी नहीं हुई थी कि गार्ड प्रकट हुआ और उन्हें बताया कि वे लगभग रेणुपुर पहुँच चुके हैं।

फूलबोनी आश्चर्यचकित रह गया: खिड़की से बाहर देखने पर उसे केवल जलमग्न खेत ही दिखाई दिए, शांत जल केवल बांधों और तटबंधों की सावधानीपूर्वक निर्मित संरचना से ही टूट रहा था। पेड़ों के घने झुरमुट से उठता हुआ लकड़ी के धुएं का कभी-कभार का गुबार किसी गांव या बस्ती का आभास करा रहा था, लेकिन उसे किसी भी प्रकार की ऐसी बस्ती का कोई संकेत नहीं दिखाई दिया जो रेलवे स्टेशन के लिए पात्रता प्रदान कर सके।

पहरेदार के सामने अपनी हैरानी ज़ाहिर करते हुए फूलबोनी को यह जानकर बड़ा झटका लगा कि रेनूपुर कस्बा (या यूँ कहें कि गाँव) उसी नाम के स्टेशन से लगभग तीन मील दूर था। रेनूपुर इतना बड़ा या महत्वपूर्ण नहीं था कि दरभानगा को बारिच से जोड़ने वाली पटरियों में कोई मोड़ लाया जाए। रेनूपुर के जो ग्रामीण इस सुविधा का लाभ उठाना चाहते थे, उन्हें बैलगाड़ी से स्टेशन तक जाना पड़ता था। दरअसल, रेनूपुर स्टेशन का अस्तित्व स्थानीय आबादी की ज़रूरतों से ज़्यादा इंजीनियरिंग की मांगों के कारण था। रेलवे नियमों के अनुसार, इस तरह की एकल-पटरी वाली लाइनों पर नियमित अंतराल पर साइडिंग होनी ज़रूरी थी, ताकि आने वाली ट्रेनें सुरक्षित रूप से एक-दूसरे को पार कर सकें। इस तरह रेनूपुर में स्टेशन होने का दावा तो किया जाता था, लेकिन असल में यह एक साइनबोर्ड और साइडिंग से जुड़े एक प्लेटफॉर्म से ज़्यादा कुछ नहीं था।

गार्ड ने कहा, यह सब बस कागज़ी कार्रवाई और नियमों का खेल था। इस लाइन पर

साइडिंग की कोई ज़रूरत नहीं थी। इस पटरी पर चलने वाली यह इकलौती ट्रेन थी। यह धीरे-धीरे चलती रही, जहाँ भी ज़रा सा मौका मिलता, रुक जाती, जब तक कि पटरी के अंत तक नहीं पहुँच गई। और फिर यह मुड़कर वापस लौट गई। दरभंगा पहुँचने तक इसका सामना किसी दूसरी ट्रेन से नहीं हुआ।

पहरेदार एक अजीबोगरीब दिखने वाला आदमी था। उसका चेहरा विकृत था: उसका निचला जबड़ा ऊपरी जबड़े से इतना टेढ़ा था कि उसका मुंह हमेशा एक टेढ़ी, घूरती हुई मुस्कान में खुला रहता था। अब वह अपनी सूखी, कर्कश आवाज में हंसने लगा। खिड़की से बाहर झुककर उसने एक पटरी की ओर इशारा किया जो मुख्य लाइन के समानांतर कुछ सौ गज तक चलती थी और फिर उससे मिल जाती थी। पटरियां इतनी जंग लगी और झाड़ियों से ढकी हुई थीं कि मुश्किल से दिखाई दे रही थीं।

'और वहाँ आपको रेनूपुर साइडिंग दिख रही है,' उसने फूलबोनी के चेहरे के बिल्कुल करीब आकर कहा और उस पर खून जैसे लाल रंग का पान का थूक छिड़क दिया। 'जैसा कि आप देख सकते हैं, इसका इस्तेमाल नहीं होता। कहते हैं कि इसका इस्तेमाल सिर्फ एक बार हुआ है, और वह भी कई साल पहले।'

फुलबोनी ने कोई ध्यान नहीं दिया: वह अपने चेहरे से बर्तन के दाग पोंछने में बहुत व्यस्त था।

ट्रेन अचानक रुक गई और गार्ड ने दरवाजा खोलकर फुलबोनी का बंदूक का थैला और सूटकेस लेकर तेजी से नीचे उतरा। फुलबोनी के उसे इशारा करने से पहले ही वह वापस ट्रेन में चढ़ गया और अपना हरा झंडा लहराने लगा।

'एक मिनट रुको,' फुलबोनी चौंककर चिल्लाई।

सीटी की तेज आवाज के साथ ट्रेन धीरे-धीरे आगे बढ़ गई।

फुलबोनी ने चारों ओर देखा और बड़े आश्चर्य से पाया कि रेनूपुर में उतरने वाला वह अकेला व्यक्ति था। उसने ट्रेन पर एक आखिरी, ठहरती हुई नज़र डाली और देखा कि एक गार्ड खिड़की से उसे देख रहा था, उसका मुंह पागलों की तरह खुला हुआ था। तभी ट्रेन ने एक और सीटी बजाई और वह अजीब सा मुड़ा हुआ चेहरा धुएं के बादल में गायब हो गया।

फुलबोनी ने कंधे उचकाए और अपना सामान उठाने के लिए नीचे झुका। वह गाँव जाने के लिए बेचैन था और सहज ही उसने एक कुली को बुलाने के लिए हाथ उठाया। तभी उसे पता चला कि आस-पास कोई कुली नहीं था।

फुलबोनी ने अब तक जितने भी स्टेशन देखे थे, उनमें यह सबसे छोटा था, उन छोटे-छोटे गाँव के स्टेशनों से भी छोटा जो कभी-कभी तेज़ रफ़्तार ट्रेन में ऊंघते हुए अचानक नज़र आते हैं और फिर उतनी ही तेज़ी से गायब हो जाते हैं। क्योंकि छोटे से छोटे स्टेशनों में भी आमतौर पर कम से कम एक प्लेटफार्म होता है, और अक्सर कुछ लकड़ी की बेंचें भी होती हैं। लेकिन रेनूपुर का प्लेटफार्म कच्ची मिट्टी का एक टुकड़ा था, जिसकी सतह खरपतवारों और कुछ टूटे-फूटे पत्थरों से ढकी थी। पटरी के किनारे दो चरमराते हुए साइनबोर्ड लगे थे, जो सौ गज की दूरी पर थे, प्रत्येक पर मुश्किल से पढ़ा जा सकने वाला शब्द था: 'रेनूपुर'। उनके बीचोंबीच, सिग्नल रूम और स्टेशन हाउस के रूप में, एक जर्जर टिन की छत वाली ईंटों की इमारत थी, जिस पर रेलवे का

आम लाल रंग किया हुआ था। दूर-दूर तक कोई घर या झोपड़ी नज़र नहीं आ रही थी, न कोई ग्रामीण, न कोई रेलवे गार्ड, न कोई घूरता हुआ देहाती, न कोई आवारा बच्चा, न कोई खाने-पीने का सामान बेचने वाला, न कोई भिखारी, न कोई सोता हुआ यात्री, यहाँ तक कि भौंकता हुआ कुत्ता भी नहीं।

फूलबोनी ने चारों ओर देखते हुए महसूस किया कि स्टेशन बिल्कुल खाली था—पूरी तरह से खाली। वहाँ कोई नहीं था, दूर-दूर तक एक भी इंसान नज़र नहीं आ रहा था। यह नज़ारा इतना चौंकाने वाला था कि यकीन ही नहीं हो रहा था। युवा लेखक के अनुभव में, स्टेशन या तो भीड़भाड़ वाले होते थे या कम भीड़भाड़ वाले। कम भीड़भाड़ वाले तब होते थे जब आप बिना किसी रुकावट के, बिना लोगों को धक्का दिए, आराम से चल सकते थे। जब कभी ऐसा होता था, तो आप आश्चर्य से कहते थे: 'अरे, आज तो स्टेशन बिल्कुल खाली है!', इस शब्द का प्रयोग लाक्षणिक अर्थ में करते हुए, मानो आप उन कुलियों, विक्रेताओं, ऊंघते यात्रियों, इंतज़ार कर रहे रिश्तेदारों आदि को भुला रहे हों, जो वास्तव में आपकी राह में बाधा तो नहीं डालते थे, लेकिन फिर भी वहाँ मौजूद थे। जहाँ तक युवा लेखक को पता था, स्टेशन के संदर्भ में खाली शब्द का यही अर्थ होता था। लेकिन यह? अपनी तमाम प्रतिभाओं के बावजूद, फूलबोनी को एक ऐसे स्टेशन का वर्णन करने के लिए कोई शब्द नहीं सूझ रहा था जो सचमुच निर्जन और खाली था।

उस सुनसान जगह को देखकर युवक का दिल बैठ गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे कहाँ जाए और कैसे जाए। दूर-दूर तक कोई सड़क या पगडंडी नज़र नहीं आ रही थी। रेलवे तटबंध पर बना वह स्टेशन, चमकते बाढ़ के पानी के सागर में एक छोटे से द्वीप जैसा लग रहा था।

फुलबोनी को यह विश्वास दिलाया गया था कि स्टेशन पर कोई उससे मिलने आएगा: कोई दुकानदार, स्टॉल मालिक या कोई और व्यक्ति जो पामर के उत्पाद बेचता हो। लेकिन वह यहाँ रेनूपुर में था, और जहाँ तक उसकी नज़र जा रही थी, स्टेशन पर वह अकेला ही था। अपना बिस्तर उठाकर, उसने अपनी बंदूक कंधे पर टांगी और स्टेशन मास्टर को ढूंढने के लिए सिग्नल रूम की ओर चल पड़ा। जैसे ही उसने कुछ कदम बढ़ाए, उसे पीछे से एक आवाज़ सुनाई दी, 'साहिब, साहब।' मुड़कर देखा तो फुलबोनी ने एक छोटे कद के, टेढ़े पैरों वाले आदमी को तटबंध पर चढ़ते हुए देखा। उसने मिट्टी से सनी धोती और रेलकर्मी का कोट पहना हुआ था और पीतल का घड़ा उसके किनारे से पकड़े हुए था।

फुलबोनी को किसी दूसरे इंसान को देखकर इतनी राहत मिली कि वह खुशी-खुशी उसे गले लगा लेता। लेकिन पामर ब्रदर्स के प्रतिनिधि होने के नाते उसने अपनी पीठ सीधी की और ठुड्डी ऊपर उठाई।

उस आदमी ने फुलबोनी को पकड़ लिया और उसके हाथों से बिस्तर का रोल छीन लिया।

'अरे साहब,' वह हांफते हुए बोला। 'क्या करूं? बारिश शुरू होते ही मेरा यही हाल होता है: खेतों में भागता हूं और फिर वापस आ जाता हूं। एक केला भी खा लूं तो वो तोप के गोले की तरह पेट से निकल जाता है। ये तो एक मुसीबत है। घर पर रहने वाली

हमेशा मुझसे कहती है, "अरे बुद्धू दुबे, अगर तुम स्टेशन मास्टर की जगह गाय होते तो कम से कम मैं तुम्हारे गोबर से खाना तो बना लेती।" और मैं उससे कहता हूं, "औरत, बोलने से पहले थोड़ा सोच लो। खुद से पूछो, अगर मैं स्टेशन मास्टर की जगह गाय होता तो तुम्हें मेरे लिए खाना बनाने की क्या ज़रूरत पड़ती?"
फूलबोनी के होंठ थोड़े हिले, लेकिन नौकरी में नया होने के कारण उसे यह ठीक से पता नहीं था कि पामर ब्रदर्स के प्रतिनिधि से ऐसी स्थितियों में किस लहजे की अपेक्षा की जाती है। उसकी झिझक को भांपते हुए, बुधु दुबे पहले से ही पश्चाताप से भरा हुआ था।
'ओह साहब,' उसने कहा। 'बुद्धू दुबे मूर्ख है, आप जैसे बड़े साहब को अपने गोबर के बारे में बता रहा है। मुझे क्षमा करें, मुझे क्षमा करें...'
उसने फूलबोनी के चरणों में खुद को गिरा दिया। अब लेखक के लिए उसे अपने जूतों को माथे से चमकाने से रोकना ही एकमात्र उपाय था।
फुलबोनी ने उसे अचानक रोकते हुए कहा, 'बस करो। बताओ, मैं रेनूपुर कैसे पहुँच सकता हूँ?'
'यही तो बात है,' स्टेशन मास्टर ने माफी मांगते हुए कहा। 'अगर आपके पास नाव भी होती, तो भी आप आज रेनूपुर नहीं पहुंच पाते।'
फुलबोनी स्तब्ध रह गया। उसने कहा, 'लेकिन मैं कहाँ रहूँगा? मैं क्या करूँगा?'
'चिंता की कोई बात नहीं, साहब,' स्टेशन मास्टर ने कहा। उन्होंने फूलबोनी को देखकर मुस्कुराते हुए कहा, 'आप मेरे साथ रहेंगी।' उन्होंने बताया कि रेनूपुर से एक दुकानदार ने संदेश भेजा है कि वह फूलबोनी की देखभाल करें।
फुलबोनी ने इस प्रस्ताव पर काफी देर तक विचार किया। अंत में उसने पूछा, 'आप कहाँ रहते हैं?'
'ठीक वहीं,' स्टेशन मास्टर ने कहा, 'उन पेड़ों के पीछे।' उन्होंने दूर स्थित एक आम के बाग की ओर इशारा किया, जो एक हल्की सी ऊंचाई पर बसा हुआ था। फूलबोनी को वह स्थान स्टेशन से लगभग दो-तीन मील के जलमग्न मैदान से अलग प्रतीत होता था।
स्टेशन मास्टर ने कहा, 'वहाँ पहुँचने में एक पल भी नहीं लगेगा। हम आपके बैग सिग्नल रूम में रख देंगे और फिर चलना शुरू कर देंगे। आप देखेंगे, जब तक हम वहाँ पहुँचेंगे, घर पर जो होगा, उसने आपके लिए कुछ खास तैयार रखा होगा।'
उसने फूलबोनी का बिस्तर उठाया और लड़खड़ाते पैरों से सिग्नल-रूम की ओर चल पड़ा। फूलबोनी अपने कैनवास के तोप-थैली को लिए उसके पीछे-पीछे चल रहा था।
स्टेशन मास्टर ने धीरे से दरवाजा खोलकर फूलबोनी को अंदर बुलाया। जैसे ही वे अंदर दाखिल हुए, हवा का एक झोंका आया और दरवाजा बंद हो गया। अचानक वे मकड़ी के जालों से घिरे अंधेरे में डूब गए।
कमरा बहुत छोटा था, जिसमें केवल एक दरवाजा और एक बंद खिड़की थी। एक कोने में धूल से सनी एक मेज पड़ी थी। इसके अलावा, कमरा वीरान और अप्रयुक्त सा लग रहा था।
जब फूलबोनी की आँखें अंधेरे की आदी हो गईं, तब उसने दूर की दीवार से सटा हुआ एक तश्तरी देखा। यह एक पुरानी चारपाई पर था, जिस पर फटी हुई चटाई बिछी थी।

फूलबोनी पास गया और चटाई पर एक थप्पड़ मारा, जिससे धूल का गुबार उठ गया। 'यह किसका है?' उसने स्टेशन मास्टर से पूछा।
'अरे, यह तो यहाँ कब से है,' स्टेशन मास्टर ने उपेक्षापूर्वक कहा। 'यह तो साँपों और चूहों का है।' उसने झट से दरवाजा खोला और बाहर निकल गया। 'चलिए साहब, अब चलते हैं: जल्द ही अंधेरा हो जाएगा।'
फुलबोनी ने कमरे में एक और नज़र डाली। इस बार उसकी नज़र दीवार में बने एक छोटे से आले पर पड़ी। उसके अंदर एक सिग्नल लालटेन रखी थी। फुलबोनी पास जाकर उसे गौर से देखने लगा और यह देखकर सुखद आश्चर्यचकित हुआ कि लालटेन को हाल ही में साफ और पॉलिश किया गया था। टिन का ढांचा चमक रहा था और लालटेन की खिड़की में लगा लाल कांच सूर्य की रोशनी में जगमगा रहा था। फुलबोनी ने कांच पर उंगली से थपथपाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन स्टेशन मास्टर ने कमरे के उस पार आकर उसका हाथ हटा दिया।
'नहीं, नहीं!' वह चिल्लाया। 'ऐसा मत करो।'
फुलबोनी आश्चर्य से उछल पड़ी, और स्टेशन मास्टर ने जोर से कहा: 'नहीं, नहीं, इसे छुआ नहीं जाना चाहिए।'
'लेकिन तुम इसे छूते नहीं हो क्या?' फुलबोनी ने और भी आश्चर्यचकित होकर कहा। 'तो फिर इसे कौन साफ करता है? कौन पॉलिश करता है?'
स्टेशन मास्टर ने हाथ हिलाकर सवाल को टाल दिया और रेलवे संपत्ति के बारे में कुछ बुदबुदाया। 'हमें अब चलना चाहिए, साहब,' उसने फूलबोनी को दरवाजे की ओर ले जाने की कोशिश करते हुए कहा। 'अंधेरा हो रहा है; हमें जल्दी करनी होगी।' लेखक ने कंधे उचकाए और अपना बिस्तर उठाने के लिए नीचे झुका। 'नहीं,' उसने उसे चारपाई पर फेंकते हुए कहा। 'नहीं। मैं आज रात यहीं रुकूंगा।'
स्टेशन मास्टर का मुंह खुला रह गया और उनके हंसमुख, थोड़े नासमझ चेहरे पर घबराहट छा गई। 'नहीं, नहीं साहब,' उन्होंने ऊंची आवाज में कहा। 'आप ऐसा नहीं कर सकते - ऐसा नहीं हो सकता। यह मुमकिन ही नहीं है।'
'क्यों नहीं?' उसने पूछा। भले ही वह कमरा जर्जर हालत में था, लेकिन उसमें एक रात बिताने की संभावना दो मील लंबे बाढ़ के पानी में चलने की तुलना में कहीं बेहतर लग रही थी।
'नहीं, नहीं,' स्टेशन मास्टर चिल्लाया। 'नहीं: इसे अपने दिमाग से निकाल दो।' उसकी आवाज़ में घबराहट थी और उसके माथे पर पसीना आ रहा था।
'लेकिन मैं यहां ठीक रहूंगी,' फुलबोनी ने कहा।
'नहीं साहब, आपको यहां नहीं रुकना चाहिए,' स्टेशन मास्टर ने उनसे विनती की। 'मेरे साथ घर चलिए; मैं आपको यहां अकेले नहीं रहने दूंगा।'
इससे फुलबोनी का मन पक्का हो गया। उसने कहा, 'मैं यहाँ बहुत आराम से रहूँगा। मेरी चिंता मत करो।' स्टेशन मास्टर के जवाब देने से पहले ही वह अपना बैग खोलने लगा।
उस समय के सभी ट्रेन यात्रियों की तरह, फूलबोनी भी ऐसी किसी भी स्थिति के लिए पूरी तरह तैयार थे: उनके बिस्तर के थैले में एक पतला गद्दा, एक तकिया और कई

चादरें और तौलिए रखे हुए थे। जब उन्होंने थैले की डोरी खोली, तो वह एक तैयार बिस्तर की तरह खुल गया।
'देखो,' उसने विजयी भाव से इशारा करते हुए कहा। 'मैं यहाँ बहुत अच्छी नींद सोऊंगा।'
'नहीं,' स्टेशन मास्टर ने अपने बैग को बेअसर ढंग से खींचते हुए कहा। 'आप ऐसा नहीं कर सकते: यह सुरक्षित नहीं है।'
'सुरक्षित नहीं?' फुलबोनी ने कहा। 'क्यों? यहाँ मेरे साथ क्या हो सकता है?'
'कुछ भी हो सकता है,' स्टेशन मास्टर ने कहा। 'आखिरकार, यह शहर नहीं है। इस तरह की सुनसान जगहों पर तरह-तरह की चीजें होती रहती हैं: यहाँ चोर, डाकू और लुटेरे भी होते हैं...'
फुलबोनी जोर से हंस पड़ा। उसने कहा, 'आसपास इतना पानी है, तो डाकुओं को यहां आने के लिए नावों की जरूरत पड़ेगी। और अगर वे आ भी गए, तो उन्हें इसी का सामना करना पड़ेगा।' उसने अपने कैनवास के बंदूक के थैले पर हाथ मारा।
'और सांप?' स्टेशन मास्टर ने पूछा।
'मुझे सांपों से डर नहीं लगता,' फुलबोनी ने मुस्कुराते हुए कहा। 'जहां मैं पली-बढ़ी, वहां लोग अजगरों को तकिए की तरह इस्तेमाल करते थे।'
स्टेशन मास्टर ने कमरे में चारों ओर निराशा भरी नज़र डाली, मैली-कुचली मेज और छत से लटकते मकड़ी के जालों पर। 'लेकिन साहब, आप खाएंगे क्या?' उसने कहा।
'चूंकि आपका घर बहुत पास है,' फुलबोनी ने शांत भाव से कहा, 'मुझे उम्मीद है कि आपके लिए अपनी रसोई से मेरे लिए कुछ लाना कोई बड़ी परेशानी नहीं होगी।'
स्टेशन मास्टर ने आह भरी। 'ठीक है साहब,' उसने अनिच्छा से कहा। 'आप जो चाहें करें; लेकिन बस एक बात: बाद में बुद्धू दुबे को दोष मत देना।'
'चिंता मत करो,' फुलबोनी ने कहा। उसे गांव के लोगों के बारे में अपने ज्ञान पर गर्व था और वह जानता था कि ग्रामीण लोगों के कुछ चीजों के बारे में अक्सर पक्के विचार होते हैं। 'अगर मुझ पर सांप या डाकू हमला करते हैं,' उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'तो सारा दोष मैं ही लूंगा।'
स्टेशन मास्टर के जाने के बाद फुलबोनी अपना सामान खोलने और व्यवस्थित होने में जुट गया। उसने बंद खिड़की को तोड़कर खोला और दरवाज़ा खुला छोड़ दिया। थोड़ी सी झाड़-पोंछ और सफाई के बाद कमरा कुछ ज़्यादा खुशनुमा लगने लगा।
इससे उत्साहित होकर फूलबोनी ने चारपाई की धूल झाड़ने का भी फैसला किया। उसने बिस्तर से बैग उठाया और घिसी-पिटी पुरानी चटाई को बाहर ले जाकर ज़ोर से झाड़ा। धूल का गुबार उठा, और जब वह छंट गया तो फूलबोनी ने चटाई पर एक अजीब आकार का निशान देखा; एक धुंधला, जंग जैसा लाल धब्बा। उसने चटाई को ज़मीन पर बिछाया और ध्यान से देखा।
यह दो बड़े हाथों का निशान था, जो एक दूसरे के बगल में रखे हुए थे। लेकिन उनमें कुछ अजीब था, कुछ ऐसा जो पूरी तरह से मेल नहीं खाता था। फुलबोनी को यह समझने के लिए अपना सिर इधर-उधर घुमाना पड़ा कि यह क्या है: बाएं हाथ के निशान में चार उंगलियां थीं और अंगूठा नहीं था।

पीली पड़ चुकी घास पर छपी उस अजीब सी आकृति में कुछ डरावना और भयावह सा था। उसने चटाई लपेटकर एक तरफ रख दी, ताकि वह दिखाई न दे। वह वापस अंदर गया, अपना बैग चारपाई की रस्सियों से ऊपर उठाया और अपने लिए एक आरामदायक बिस्तर बना लिया। फिर उसने अपने रात के कपड़े निकाले और सुबह की तैयारी में शेविंग का सामान लालटेन के बगल में बने आले में करीने से रख दिया। पीछे हटकर उसने कमरे का चारों ओर देखा: अब सब कुछ व्यवस्थित था, लेकिन फिर भी उसके मन में कुछ खटक रहा था। उसने टहलने जाने का फैसला किया।

अब दोपहर ढल रही थी। बादल छंट गए थे और बारिश से भीगे आसमान में सूरज की किरणें चमक रही थीं, जिससे हर चीज़ इंद्रधनुषी चमक से जगमगा रही थी। फूलबोनी पटरियों के किनारे-किनारे चलती रही, एक स्लीपर से दूसरे स्लीपर पर कूदती हुई, समानांतर पटरियों को क्षितिज की ओर दूर जाते हुए देखती रही, जो ऊंचे तटबंध के दोनों ओर फैले जलमग्न, जगमगाते खेतों को चीरती हुई आगे बढ़ रही थीं।

जब वह उस बिंदु पर पहुँचा जहाँ पटरियाँ अलग होती थीं, तो उसने झाड़ियों से ढकी हुई साइडिंग की ओर मुड़कर देखा। उसने क्षण भर के लिए देखा कि साइडिंग को मुख्य पटरियों से जोड़ने वाले स्टील के नुकीले तार उपयोग न होने के कारण सख्त और जंग लगे हुए थे। फिर उसकी नज़र बगुले के एक परिवार पर पड़ी जो शिकार करने के लिए साइडिंग की घास से ढकी पटरियों का उपयोग कर रहे थे। मोहित होकर, वह चुपके से पक्षियों की ओर बढ़ा और सुरक्षित दूरी पर एक पटरी पर बैठ गया। समानांतर रेल पटरियों के बीच मिट्टी का एक टीला था - संभवत: कभी एक प्लेटफार्म रहा होगा। लेखक टीले से पीठ टिकाकर आराम से बैठ गया और लगभग एक घंटे तक नीचे बाढ़ग्रस्त खेतों की सतह पर तैर रहे मेंढकों के बीच भोजन की तलाश करते हुए बगुलों को देखता रहा।

अंतत:, मन में शांति और सुकून का भाव भरकर, वह उठा और अंगड़ाई ली। अब उसे दुगनी खुशी थी कि उसने स्टेशन मास्टर के घर जाने के बजाय सिग्नल रूम में ही रहने का फैसला किया था: यह एक ऐसी जगह थी जहाँ एकांत अपने आप में एक पुरस्कार था।

वह उठा और रेल की पटरी पर संतुलन बनाते हुए आगे बढ़ा। अब लगभग सूर्यास्त हो चुका था, और ऊपर उड़ते हुए सपाट तल वाले बादल लाल और मैजेंटा रंग की धारियों से भरे हुए थे। जब वह उस पॉइंट स्विच पर पहुँचा जो साइडिंग और मुख्य लाइन को एक ही पटरी में जोड़ता था, तो फुलबोनी ने वापस लौटने का फैसला किया। वह सूर्यास्त में चमकते हुए जलमग्न खेतों के शानदार दृश्य पर अंतिम नज़र डालने के लिए रुका। अनजाने में उसकी नज़र स्विचिंग लीवर के लाल हैंडल पर पड़ी। उसने आश्चर्य से देखा कि यंत्र की अच्छी देखभाल की गई थी। लीवर पर जंग का कोई निशान नहीं था और न ही उसे पॉइंट-रेल से जोड़ने वाले तार कहीं से भी बढ़े हुए थे, भले ही वे ज़मीन के बहुत करीब से गुजर रहे थे। इसके विपरीत, उनके नीचे घास में बनी गहरी खाँचें नियमित रखरखाव और उपयोग का संकेत दे रही थीं।

फुलबोनी को मशीनों में स्वाभाविक रुचि थी। उन्हें ठंडी धातु का स्पर्श अच्छा लगता था, और लोहे या स्टील के किसी अच्छे, सुव्यवस्थित टुकड़े को देखकर उन्हें आनंद

मिलता था। वे रेल की पटरी पार करके चमकते हुए लोहे के लीवर को निहारने के लिए आगे बढ़े: इस विचित्र परिवेश में अच्छी तरह से देखभाल की गई मशीन को देखकर उन्हें एक अस्पष्ट संतोष का अनुभव हुआ।
जैसे ही वह झुककर बांह फैलाए, उसे एक चीख सुनाई दी। सीधा होते ही उसने देखा कि स्टेशन मास्टर टीले पर चढ़ने की कोशिश कर रहा है। वह ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिला रहा था और फूलबोनी को स्विचिंग लीवर से पीछे हटने का इशारा कर रहा था। उसके एक हाथ में कपड़े का गट्ठा और दूसरे में मिट्टी का घड़ा था। फूलबोनी को अचानक एहसास हुआ कि उसे बहुत ज़ोर की भूख लगी है। उसने हाथ हिलाया और पटरियों के किनारे-किनारे तेज़ी से वापस चला गया।
स्टेशन मास्टर पटरी से सौ गज दूर उसका इंतजार कर रहा था। उसके माथे पर गुस्से की लकीरें थीं। उसने लेखक से कहा, 'देखो, तुम भले ही बड़े साहब हो, लेकिन अगर तुम अपनी भलाई चाहते हो, तो यहाँ के मामलों में दखल मत दो।'
उन्होंने बाद में सोचते हुए कहा, 'यह सरकारी संपत्ति है, यह रेलवे की है।'
फुलबोनी स्टेशन के स्विचिंग गियर के रखरखाव के लिए स्टेशन मास्टर की प्रशंसा करने का इरादा रखता था। अब वह शर्मिंदा होकर चुपचाप सुनता रहा, उचित जवाब देने में असमर्थ था।
स्टेशन मास्टर ने कपड़े का गट्ठा और मिट्टी का घड़ा उसके हाथों में थमा दिया। 'काम खत्म होने के बाद इन्हें एक कोने में रख देना,' उसने अचानक कहा। 'मैं सुबह इनका ध्यान रख लूंगा।' वह तेज़ी से तटबंध की ओर बढ़ा और नीचे पानी से भरे खेत की ओर सरपट दौड़ने लगा।
खुद को संभालते हुए फुलबोनी चिल्लाई: 'एक मिनट रुक जाओ? जाने से पहले मेरे साथ कुछ खा लो।'
'मैं सुबह वापस आऊंगा,' स्टेशन मास्टर ने पीछे मुड़कर जवाब दिया।
इस जल्दबाजी में हुई विदाई ने फूलबोनी को बेचैन कर दिया। तटबंध के किनारे जाकर उसने पुकारा, 'मास्टरजी, क्या आपने मुझे कुछ नहीं बताया है?'
'कल,' स्टेशन मास्टर ने जवाब दिया। 'कल... सब कुछ... अंधेरा हो रहा है...' पानी में छप-छप की तेज़ आवाज़ में उनकी आवाज़ दब गई।
ढलते सूरज की रोशनी में सुनसान रेल पटरियों के किनारे खड़े फुलबोनी को अजीब सी उदासी महसूस हो रही थी। वह धीरे-धीरे सिग्नल-रूम की ओर बढ़ा और दरवाजा खोल दिया। अंदर अंधेरा था, लेकिन धातु की एक चमक ने उसकी नज़र ज़मीन पर खींच ली। यह उसके रेज़र का घुमावदार ब्लेड था: उसके बगल में शेविंग साबुन का डिब्बा, ब्रश और फिटकरी का वह टुकड़ा पड़ा था जिसे उसने सैर पर जाने से पहले आले में रखा था।
फुलबोनी ने खाना और पानी मेज पर रखा और चारों ओर देखा कि कहीं खिड़की खुल तो नहीं गई जिससे कमरे में ठंडी हवा या ठंडी हवा आ गई हो। लेकिन खिड़की अभी भी मजबूती से बंद थी। कोई और बेहतर कारण न सूझने पर उसने सोचा कि दरवाजा खोलते ही ये चीजें उड़ गई होंगी। उसने उन्हें फर्श से उठाया और फिर से लालटेन के बगल में बने आले में करीने से रख दिया।

उसने सोचा कि जब तक उजाला बाकी है, बाहर ही खाना खा ले। खाना और पानी लेकर दरवाजे तक आया, फिर पालथी मारकर जमीन पर बैठ गया और कपड़े का बंडल खोला। उसे पराठों का ढेर, आम के अचार की भरपूर मात्रा और मसाले में लिपटे सुनहरे पीले आलू का ढेर मिला। खाने की खुशबू इतनी लाजवाब थी कि उसने पहले कभी ऐसी खुशबू नहीं सुनी थी और वह बड़े चाव से खाने पर टूट पड़ा।
वह अपना तीसरा पराठा आधा खा ही चुका था कि तभी उसे अपने पीछे वाले कमरे में कुछ गिरने की आवाज़ सुनाई दी। वह चौंककर पीछे मुड़ा। खुले दरवाज़े से उसने देखा कि उसका रेज़र और शेविंग का सामान ज़मीन पर पड़ा है। कमरे में कुछ भी नहीं गिरा था और हवा भी थम गई थी। उसे थोड़ी बेचैनी हुई, लेकिन फिर भूख ने उसे काबू में कर लिया और वह अपना खाना खाने लगा।
खाना खाने के बाद उसने हाथ धोए, खूब सारा पानी पिया और आराम से बैठकर एक टहनी से अपने दांतों में फंसी गंदगी को साफ करने लगा। हल्की हवा में बैठे हुए, नीचे बाढ़ग्रस्त खेतों से आती मेंढकों और झींगुरों की मधुर आवाज़ सुनकर उसे सुकून का एहसास होने लगा। माहौल इतना सुकून भरा और शांत था कि उसने सोचा कि कुछ खास करना चाहिए: यह एक ऐसा अवसर था जिस पर उसकी दुर्लभ सिरूट (एक तरह की सिरूट) का आनंद लेना ज़रूरी था।
फुलबोनी धूम्रपान का शौकीन नहीं था, लेकिन सप्ताह में एक या दो बार अच्छा भोजन करने के बाद वह सिगार या सिगरेट का आनंद लेता था। उसे याद था कि उसने यात्रा के लिए कुछ सिगरेट या सिगार पैक किए थे, लेकिन उसे ठीक से याद नहीं था कि उसने उन्हें कहाँ रखा था।
सिग्नल रूम में अब घोर अंधेरा था, लेकिन उसने माचिस की डिब्बी पास ही रखी थी। उसने एक माचिस जलाई और तुरंत उसकी नज़र एक कोने में चमकती हुई सिग्नल लालटेन पर पड़ी। उसके मन में एक विचार कौंधा। उसने लालटेन उठाई और उसे हिलाया। तेल के छलकने की आवाज़ से उसे पता चला कि टंकी भरी हुई है। उसने शीशे की खिड़की खोली और बाती चलाने वाले पेंच को ढूंढने लगा। उसे दो-तीन बार घुमाकर उसने बाती को लगभग एक इंच ऊपर उठाया और उसे जला दिया। जैसे ही उसने खिड़की को वापस बंद किया, कमरे में तेज़ लाल रोशनी फैल गई।
खुद पर गर्व करते हुए, वह अपने बैग के पास गया और सिगरेट का डिब्बा ढूंढने के लिए उसकी जेबें टटोलने लगा। जैसे ही उसे डिब्बा मिला, उसके पीछे धातु की एक चटकने की आवाज़ आई और बत्ती बुझ गई। फूलबोनी ने लालटेन जलाने से पहले दरवाजा बंद न करने पर खुद को कोसते हुए जीभ चटकाई। वह मेज के पास गया और एक और माचिस जलाई। लेकिन फिर उसने गौर से देखा और पाया कि वह गलत था: लौ हवा के झोंके से नहीं बुझी थी। बल्कि, पेंच घुमाने से बाती वापस सॉकेट में चली गई थी। वह भौंहें चढ़ाकर पेंच को टटोलने लगा, सोच रहा था कि कहीं वह ढीला तो नहीं हो गया। पक्का पता लगाना मुश्किल था, और अंत में उसने बाती को ऊपर घुमाकर फिर से जला दिया। इस बार उसने ध्यान रखा कि उसे हवा से सुरक्षित कोने में रखे।
फिर उसने दरवाजे पर पालथी मारकर बैठते हुए अपनी सिगार जलाई और मानसून के

असंख्य कीड़ों की आवाज़ सुनने लगा। आधी सिगार खत्म होने पर उसने लालटेन का पेंच फिर से घूमते सुना। उसने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि रोशनी बुझ गई थी। फूलबोनी जम गया; उसकी रीढ़ में सिहरन दौड़ गई। फिर उसे अपनी बंदूक याद आई और वह आश्वस्त होकर वापस बैठ गया। उसे ऐसी कोई चीज नहीं पता थी जो .303 कैलिबर की बंदूक से बच सके। वह अपनी सिगार पीता रहा।
उसने सिगरेट का आखिरी टुकड़ा तक पी लिया और फिर खड़ा हो गया। सिग्नल रूम में वापस जाना उसके लिए थोड़ा मुश्किल था, लेकिन अब उसके पास कोई विकल्प नहीं था। वह जानता था कि अंधेरे में वह अकेले स्टेशन मास्टर के घर का रास्ता नहीं ढूंढ पाएगा।
फुलबोनी ने बड़ी शांति और सावधानी से रात की तैयारी शुरू की। अंधेरे में ही उसने रात के पायजामे पहने और माचिस का इस्तेमाल सोच-समझकर किया। फिर उसने अपनी मजबूत चमड़े की बेल्ट पतलून से उतारी और उससे दरवाजा बंद कर दिया। उसने बंदूक को थैले से निकाला और बिस्तर के पास फर्श पर रख दिया, ताकि वह आसानी से उसे निकाल सके। फिर वह दरवाजे की ओर मुंह करके बिस्तर पर लेट गया। उसे आधा-अधूरा आभास था कि वह काफी देर तक जागता रहेगा। लेकिन दिन बहुत लंबा था और वह बहुत थका हुआ था: कुछ ही मिनटों में वह गहरी नींद में सो गया।
बारिश की बूँदें उसके चेहरे पर पड़ने से उसकी नींद खुली। वह चौंककर उठा और सहज ही अपनी बंदूक की ओर हाथ बढ़ाया। दरवाजा खुला था, हवा में फड़फड़ा रहा था और बारिश की बूँदें तेज़ झोंकों के साथ कमरे में आ रही थीं।
वह बिस्तर से उखड़ने में संघर्ष कर रहा था, मन ही मन खुद को कोस रहा था कि उसने दरवाज़ा ठीक से बंद क्यों नहीं किया। बेल्ट अभी भी दरवाज़े के पास ही पड़ी थी, बंधी हुई। उसने उसे उठाया, दरवाज़ा बंद किया और बेल्ट को फिर से दरवाज़े के चौखट पर कसकर बांध दिया। पीछे हटकर उसने माचिस जलाकर देखा कि बेल्ट टिकी रहेगी या नहीं।
तभी उसने देखा कि सिग्नल वाली लालटेन उस कोने में नहीं थी जहाँ उसने उसे आखिरी बार रखा था। उसने मेज पर चारों ओर देखा और फिर आले की ओर: लालटेन कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी। वह गायब हो गई थी।
फुलबोनी नींद से व्याकुल था और उसके मन में पहला ख्याल यही आया कि स्टेशन मास्टर उसके सोते समय लालटेन ले गया होगा; शायद पटरी पर कहीं कोई आपात स्थिति हो। उसने दरवाजा खोला और तेज बारिश में बाहर देखा। वाकई, वहाँ एक लाल बत्ती का छोटा सा गोला था, जो पटरी से लगभग पचास गज दूर ऊपर-नीचे हिल रहा था।
'मास्टरजी, मास्टरजी!' फूलबोनी ने हाथों को जोड़कर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए उनके पीछे से पुकारा। लेकिन प्रकाश अपने रास्ते चला गया, और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी: हवा ज़ोर से चल रही थी और बारिश को अपने साथ उड़ा ले जा रही थी।
फुलबोनी ने सोचने का समय नहीं दिया। उसने जूते पहने, अपने शरीर पर एक मोटा तौलिया लपेटा और दौड़ पड़ा। एक पल के लिए उसके मन में अपनी बंदूक ले जाने

का ख्याल आया। लेकिन फिर, बारिश और कीचड़ से बंदूक को होने वाले नुकसान के बारे में सोचकर उसने अपना इरादा बदल दिया। कंधे सीधे करके वह पटरी पर चल पड़ा, तेज़ हवा से बचने के लिए उसने अपनी आँखें सिकोड़ लीं। जब वह साइडिंग के आधे रास्ते तक पहुँचा, तब उसे आश्चर्य होने लगा कि स्टेशन मास्टर सिग्नल रूम में कैसे घुस गया होगा, जबकि दरवाजा अंदर से बंद था।
फुलबोनी लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा, और स्लीपरों के बीच की दूरी को पाटने के लिए अपने कदम लंबे करता गया। बारिश से लकड़ी फिसलन भरी थी, और उसे अपना संतुलन बनाए रखने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ रही थी। उसे लाल बत्ती को लगातार देखते रहने में परेशानी हो रही थी, लेकिन उसे लग रहा था कि वह उसके करीब पहुँच रहा है। हर बार जब उसे बत्ती की झलक मिलती, तो वह पहले से थोड़ी और करीब लगती।
फिर, बारिश के दो तेज़ झोंकों के बीच, उसने देखा कि बत्ती ने अपना रास्ता बदल लिया और दाईं ओर मुड़ गई। उसे अब अपनी स्थिति का ठीक से अंदाज़ा नहीं था, लेकिन उसने अनुमान लगाया कि स्टेशन मास्टर उस जगह पहुँच गया था जहाँ से पटरियाँ साइडिंग की ओर मुड़ती थीं। वह हैरान था: चाहे जो भी आपात स्थिति हो, यह समझना मुश्किल था कि स्टेशन मास्टर इतनी तेज़ आंधी में साइडिंग तक जाने के लिए इतनी दूर क्यों आएगा।
अब उसे रोशनी दिखना बंद हो गई और उसने अपनी गति थोड़ी धीमी कर दी। अंधेरा होने के बावजूद, उसने अपनी निगाहें पटरी पर जमा लीं, यह सुनिश्चित करने की कोशिश करते हुए कि साइडिंग की ओर मुड़ने का मोड़ उससे छूट न जाए। लेकिन अंत में उसे मोड़ तभी मिला जब वह संयोगवश घुमावदार रेल पटरियों पर ठोकर खा गया। उसने अपने पैरों से आगे बढ़ने का रास्ता टटोलना शुरू किया, पटरियों का अनुसरण करते हुए जो दाईं ओर मुड़ रही थीं।
कुछ कदम चलने के बाद वह रुका और अपनी आँखों पर हाथ रखकर आगे देखने लगा। मूसलाधार बारिश के बीच कहीं उसे एक लाल बत्ती हिलती हुई दिखाई दी। अब वह बहुत करीब लग रही थी और लगभग स्थिर प्रतीत हो रही थी।
कुछ और कदम चलने के बाद उसे यकीन हो गया। रोशनी रुक गई थी: वह ज़मीन पर, पटरी के किनारे, शायद उसी जगह के बहुत पास थी जहाँ वह उस दिन पहले बैठा था और नीचे पानी में मछली पकड़ते बगुले देख रहा था। उसे पूरा यकीन था कि स्टेशन मास्टर ने उसे देख लिया था और उसके आने का इंतज़ार कर रहे थे। अपने हाथों को मुँह के चारों ओर रखकर उसने एक बार फिर ज़ोर से चिल्लाया: 'मास्टर जी, मास्टर जी।'
रोशनी मानो उसे प्रोत्साहित कर रही थी और वह तेज़ी से दौड़ने लगा, जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, ताकि वह उसे पकड़ सके। फिर अचानक, जब रोशनी उससे केवल बीस फीट दूर थी, वह ठोकर खाकर गिर पड़ा। वह मुंह के बल गिरा, लेकिन समय रहते अपने हाथ फैलाकर अपने माथे को ठंडे स्टील से टकराने से बचा लिया।
उसने राहत की सांस ली, अपने हाथों को कसकर पकड़े हुए, पटरियों को थामे हुए, और थोड़ी देर रुककर सांस ली। फिर, जैसे ही उसकी सांसें सामान्य होने लगीं, उसे

पटरी में कंपन महसूस हुई। उसने दोनों हाथ पटरी पर रख दिए। इसमें कोई संदेह नहीं था: पटरी हिल रही थी, आती हुई ट्रेन के कारण उसमें कंपन हो रही थी।
फुलबोनी दंग रह गया: आस-पास कहीं भी ट्रेन होने की संभावना न के बराबर थी। जिस ट्रेन में वह सवार था, वह सुबह होने तक बारिच से वापस नहीं आने वाली थी, और उस लाइन पर कोई दूसरी ट्रेन नहीं चल रही थी। और अगर होती भी, तो उन्हें उस साइडिंग पर क्यों मोड़ा जाता – और पटरियों को कौन बदलता? वह पिछले कुछ मिनटों से स्टेशन मास्टर का पीछा कर रहा था, और वह जानता था कि वह स्विचिंग मैकेनिज्म के आस-पास भी नहीं था।
फिर भी, उसकी इंद्रियों द्वारा दिए गए प्रमाण को नकारा नहीं जा सकता था: उसके हाथों के नीचे रेल की पटरियाँ काँप रही थीं, और कंपन लगातार तेज़ होता जा रहा था। उसने अपना कान पटरी पर रखा और ध्यान से सुना। उसे आती हुई ट्रेन की स्पष्ट गड़गड़ाहट सुनाई दी। ट्रेन उसकी ओर तेज़ी से बढ़ रही थी, बिल्कुल नज़दीक। आखिरी क्षण में उसने खुद को एक तरफ, तटबंध के ऊपर से फेंक दिया और पानी की ओर लुढ़क गया।
फूलबोनी अभी गिर ही रही थी कि ट्रेन की बत्तियाँ बाढ़ग्रस्त खेतों पर चमक उठीं। एक झाड़ी को कसकर पकड़ते हुए, वह किसी तरह खुद को रोक पाया, उसका सिर पानी से कुछ ही इंच दूर था। ठीक उसी क्षण उसने एक चीख सुनी, एक भयानक, अमानवीय चीख जो तूफानी रात को चीरती हुई निकल गई। हवा में सिर्फ एक शब्द गूंजा - 'लाखन' - और फिर तेज रफ्तार ट्रेन की गड़गड़ाहट में वह शांत हो गई।
फुलबोनी तटबंध से चिपका हुआ था, सिर नीचे की ओर, पानी की तरफ़। उस स्थिति से उसे साइडिंग दिखाई नहीं दे रही थी, लेकिन उसे ट्रेन की बत्तियाँ बाढ़ के पानी पर सरकती हुई साफ़ दिखाई दे रही थीं, उसे ट्रेन के भार से तटबंध हिलता हुआ महसूस हो रहा था, उसे इंजन की दर्द भरी आवाज़ सुनाई दे रही थी और बॉयलर में कोयले की गंध आ रही थी। लेकिन हर पल उसके दिमाग में बस यही चल रहा था कि वह मौत से बाल-बाल कैसे बचा।
वह कुछ मिनट तक वहीं पड़ा रहा, भय और राहत के भाव से कांप रहा था।
अभी भी घना अंधेरा था, लेकिन तूफान थोड़ा थम गया था। जैसे ही उसके हाथ संभले, उसने खुद को पैरों पर खड़ा किया और तटबंध पर चढ़ने लगा।
जब उसे लगा कि ज़मीन उसके पैरों तले समतल हो रही है, तो उसने पुकारा: 'कोई है क्या?' कहीं चीखने वाला अभी भी आस-पास तो नहीं है। कोई जवाब नहीं आया, इसलिए वह घुटनों के बल बैठ गया और अपने आस-पास की ज़मीन को थपथपाने लगा, रेल की पटरियाँ ढूँढ़ने की कोशिश कर रहा था। वह जानता था कि पटरियों के बिना वह सिग्नल-रूम तक वापस नहीं जा पाएगा। कुछ मिनटों बाद उसे अपने एक हाथ पर एक ठंडी सी छुअन महसूस हुई। राहत की साँस लेते हुए उसने अपने दोनों हाथ रेल की पटरी पर जमा लिए।
वह भ्रमित अवस्था में था, फिर भी कुछ मिनट बीतने के बाद
फुलबोनी ने महसूस किया कि रेल की पटरी, जो कुछ देर पहले उसके हाथों के नीचे इतनी जीवंत हो उठी थी, अब बिल्कुल स्थिर और गतिहीन थी। वह जानता था कि रेल

की पटरी ट्रेनों की आवाज़ को मीलों दूर तक, दोनों दिशाओं में ले जाती है। ट्रेन को साइडिंग से गुज़रे अभी कुछ ही समय हुआ था: वह एक मील से ज़्यादा दूर नहीं हो सकती थी। उसने अपना कान पटरी पर लगाया और ध्यान से सुना। उसे केवल धातु पर गिरती बारिश की बूंदों की हल्की आवाज़ सुनाई दी। तभी उसका एक हाथ पटरी पर उग रही कुछ झाड़ियों को छू गया। वह दोनों दिशाओं में बेतहाशा अपने हाथ पटरी पर फेरने लगा। उसने पाया कि जो झाड़ियाँ उसने उस दिन पहले पटरी पर उगती देखी थीं, उन पर ट्रेन के गुज़रने का कोई निशान नहीं था।
फुलबोनी अब इतना डर गया था जितना वह अपने जीवन में पहले कभी नहीं डरा था, इतना डर कि उसका दिमाग सुन्न हो गया था, उसकी दृष्टि धुंधली हो गई थी। वह रेलिंग पर खड़ा था, स्तब्ध होकर इधर-उधर देख रहा था, तभी उसने फिर से लाल बत्ती देखी। वह लगभग सौ गज दूर थी और धीरे-धीरे उसकी ओर आ रही थी।
फुलबोनी ने राहत भरी आवाज में चिल्लाते हुए उसका अभिवादन किया: 'मास्टरजी, मास्टरजी, मैं यहीं हूँ...'
उसकी पुकार अनसुनी रह गई, लेकिन लालटेन थोड़ी तेज़ी से चलने लगी। फूलबोनी वहीं खड़ा रोशनी को देखता रहा, तभी उसकी नज़र थोड़ी साफ़ हुई; उसने लालटेन को ध्यान से देखा, उसके पीछे छिपे चेहरे की एक झलक पाने की कोशिश की। उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया; चेहरा अंधेरे में डूबा रहा।
फुलबोनी मुड़ा और भागा। वह इतनी तेज़ी से भागा जितनी तेज़ी से वह पहले कभी नहीं भागा था, हाँफते हुए, फिसलन भरी पटरियों पर अपना संतुलन बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा था। उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा और लालटेन को अपने पीछे भागते हुए, दूरी कम करते हुए देखा। वह और भी तेज़ी से भागा, खुद को आगे धकेलते हुए, डर से कराह रहा था।
फिर उसने अपने सामने सिग्नल-रूम को आकार लेते देखा, जो अंधेरे से उभरता हुआ सा लग रहा था। उसने एक आखिरी बार पीछे मुड़कर देखा। लालटेन अब उससे कुछ ही कदम पीछे थी; स्टील के हैंडल पर एक हाथ साफ दिखाई दे रहा था।
एक आखिरी, हताश प्रयास में फुलबोनी ने खुद को सिग्नल-रूम की ओर झोंका और लड़खड़ाते हुए दरवाजे से अंदर घुस गया। बंदूक वहीं थी जहाँ उसने उसे छोड़ा था, बिस्तर के बगल में। उसने उसे झट से उठाया और मुड़कर उसकी नली दरवाजे की ओर कर दी।
वह दरवाज़े की कुंडी खोलने की कोशिश कर ही रहा था कि तभी लालटेन दरवाजे पर दिखाई दी। वह अंदर आई और उसकी ओर बढ़ने लगी; लालटेन की लाल रोशनी में नहाया हुआ एक हाथ दिखाई दिया। चेहरा अभी भी अंधेरे में था, लेकिन अचानक वह अमानवीय आवाज़ कमरे में फिर गूंज उठी। उसने बस एक शब्द कहा, 'लाखन'।
फिर फुलबोनी ने लालटेन की खिड़की पर एकदम करीब से गोली चलाई। बंदूक की आवाज से कमरा ऐसे गूंज उठा जैसे किसी गुफा में डायनामाइट फट गया हो: बंदूक की नली के झटके से लेखक की ठोड़ी पर चोट लगी और वह बिस्तर पर बुरी तरह गिर पड़ा।

अध्याय 39

फूलबोनी को अगली बात जो पता चली, वह यह थी कि भोर हो चुकी थी और वह स्टेशन मास्टर के मुस्कुराते हुए चेहरे को घूर रहा था। वह अब सिग्नल-रूम में नहीं था: भोर हो चुकी थी और वह बाहर किसी नरम चीज़ पर पीठ के बल लेटा हुआ था।
स्टेशन मास्टर ने कहा, "मैंने घर पर रहने वाली महिला से कहा, मैंने उससे कहा, 'तुम्हें पता चल जाएगा कि चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है, वह ठीक हो जाएगा।'"
फुलबोनी ने अपनी आंखें बंद कर लीं। खुद को सुरक्षित और बिना किसी चोट के पाकर उसे इतनी राहत मिली कि उसका पूरा शरीर ढीला पड़ गया।
“साहिब, आपको वहाँ से निकालने में मुझे बहुत मशक्कत करनी पड़ी, आप तो सोच भी नहीं सकते कि आपका इतना बड़ा शरीर पीतल का बना है। मुझे बस अकेले ही खींचना पड़ा, खींचना पड़ा और खींचना पड़ा। लेकिन मैंने मन ही मन कहा, ‘बुद्धु दुबे, चाहे कुछ भी हो जाए, आपको उसे इस भयानक जगह से निकालना ही है; चाहे आपकी कमर में चोट ही क्यों न लग जाए। जब तक वह अंदर है, उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है। आपको उसे बाहर निकालना ही होगा।’”
'क्या हुआ?' फुलबोनी ने पूछा। 'जब तुमने मुझे पाया, तब मैं कहाँ थी?'
'मैं जितनी जल्दी हो सका, आ गया,' स्टेशन मास्टर ने कहा। 'घर पर मौजूद व्यक्ति ने मुझे अंधेरा रहते ही जगाया और कहा, "अभी जाओ और देखो कि बेचारा आदमी ठीक है या नहीं।" मैं जितनी जल्दी हो सका, भागा। मैंने तुम्हें ज़मीन पर पड़ा पाया, तुम्हारे शरीर पर बंदूक पड़ी थी। पहले तो मुझे लगा कि तुम मर गए हो, लेकिन फिर मैंने तुम्हें साँस लेते हुए पाया, इसलिए मैंने तुम्हें बाहर निकाला।'
'और लालटेन?' फुलबोनी ने कहा। 'मैंने उस पर गोली चलाई: क्या आपको सिग्नल रूम में कोई कांच दिखाई दिया?'
स्टेशन मास्टर ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा: 'कौन सी लालटेन?'
'सिग्नल लैंप,' फुलबोनी ने कहा। 'वही जो कल कमरे में था।'
'यह उसी जगह पर था,' स्टेशन मास्टर ने कहा। 'बिल्कुल चमकीला और साफ: इसे कोई कभी छूता नहीं। यह हमेशा ऐसा ही रहता है, हमेशा उसी जगह पर: हमेशा साफ, इस पर कभी धूल नहीं जमती।'
स्टेशन मास्टर ने फुलबोनी के चेहरे पर केले के पत्ते से ज़ोर से हवा की। उन्होंने कहा, 'यह स्टेशन बहुत भयानक जगह है। आस-पास के किसी भी गाँव का कोई भी व्यक्ति अंधेरा होने के बाद इस स्टेशन के एक मील के दायरे में नहीं आता। चाहे आप उन्हें आसमान में जमा सारा सोना ही क्यों न दे दें, वे नहीं आएंगे। मैंने तुम्हें समझाने की कोशिश की, लेकिन तुमने मेरी बात नहीं सुनी।'
'मैं अब सुनूंगी,' फुलबोनी ने कहा। 'मैं जानना चाहती हूं कि क्या हुआ था।'
स्टेशन मास्टर ने आह भरी। उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं पता कि मैं आपको क्या बताऊं। आप जैसे बड़े साहब को। मैं आपको केवल वही बता सकता हूं जो यहां के लोग कहते हैं: मेरे जैसे सीधे-सादे गांव के लोग...'
फुलबोनी आंखें बंद करके सुन रहा था और उसने अपना हाथ माथे पर फेरा। 'लोग

क्या कहते हैं?' उसने कहा। 'मैं जानना चाहता हूं।'
और फिर संयोगवश, पीछे की ओर बढ़ते हुए उसका एक हाथ एक रेल पटरी से छू गया, ठंडी, कंपन करती हुई स्टील की पटरी। उसने अपनी आँखें खोलीं और खुद को गुलाबी सुबह के आसमान में फैले पत्तों और पेड़ों के एक सुंदर दृश्य को निहारते हुए पाया। स्टेशन मास्टर या किसी और का कोई निशान नहीं था। उसने चारों ओर देखा और पाया कि वह पटरियों के पार, साइडिंग पर एक गद्दे पर लेटा हुआ था।
हिचकिचाते हुए उसने अपना हाथ बढ़ाया और पटरी को छुआ।
और फिर एक बार फिर फूलबोनी ने खुद को पटरियों से नीचे फेंक दिया। लेकिन इस बार वह गिरने से खुद को रोकने में कामयाब रहा, और ट्रेन के साइडिंग से तेज़ी से गुज़रते हुए, उस गद्दे के ऊपर से गुज़रते हुए, जिस पर वह अभी लेटा हुआ था, वह बस कुछ इंच ही दूर था, और गद्दे को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। इस बार ट्रेन उसके लिए बिल्कुल वास्तविक थी: उसने स्टोकरों और इंजीनियरों के भयभीत चेहरे देखे जब ट्रेन गड़गड़ाती हुई गुज़री; उसने उसके ब्रेक की तेज़ आवाज़ और सीटी की चीख सुनी। वह रेल की पटरी पर चढ़ गया और दौड़ने लगा। लगभग एक मील दूर जाकर उसने ट्रेन को पकड़ लिया, जहाँ वह आखिरकार रुक गई थी।
स्टोकर और इंजीनियर पॉइंट्स और स्विच की जांच कर रहे थे, यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि पटरियों को कैसे बदला गया था। एंग्लो-इंडियन मुख्य इंजीनियर ने कहा, "समझ से परे है; उस साइडिंग का इस्तेमाल दशकों से नहीं हुआ था, उसका तंत्र वर्षों पहले ही हटा दिया गया था। ट्रेन लगभग पटरी से उतर गई थी, यह एक चमत्कार ही था कि जंग लगी, झाड़ियों से ढकी उन पटरियों पर पड़े मलबे के बावजूद वह नहीं गिरी।"
तो फुलबोनी ने मुख्य अभियंता से कहा: 'शायद स्टेशन मास्टर ने गलती से स्विच खींच दिया हो?'
मुख्य अभियंता एक अनुभवी, उम्रदराज व्यक्ति थे। उन्होंने फूलबोनी को एक अजीब सी मुस्कान दी और कहा: 'रेनूपुर में तीस साल से अधिक समय से कोई स्टेशन मास्टर नहीं रहा है।'
फिर गार्ड हमेशा की तरह विनम्रता से प्रकट हुआ और फूलबोनी को एक खाली प्रथम श्रेणी के डिब्बे में ले गया। बाद में, जब ट्रेन दरभंगा की ओर चल पड़ी, तो वह चुपके से पास आया और लेखक के कान में फुसफुसाया: 'आप भाग्यशाली थे; कम से कम आप अभी भी जीवित हैं।'
'क्यों?' फुलबोनी ने पूछा। 'क्या ऐसे और भी लोग रहे हैं जिन्होंने...?'
'जिस साल मैंने यह नौकरी शुरू की थी, यानी 1994 में, एक और व्यक्ति इतना भाग्यशाली नहीं था: उसकी वहीं मौत हो गई - ठीक उसी तरह, भोर में रेल की पटरियों पर पड़े हुए। शव इतना क्षत-विक्षत था कि वे कभी ठीक से पता नहीं लगा पाए कि वह कौन था, लेकिन अफवाह थी कि वह एक विदेशी था।'
उसने फुलबोनी को उदास मुस्कान दी। उसने कहा, 'रात में उस स्टेशन के पास कोई नहीं जाता।'
'तुमने मुझे यह बात पहले क्यों नहीं बताई?' फुलबोनी ने कहा।

'मैंने कोशिश की थी,' गार्ड ने टेढ़ी मुस्कान के साथ कहा। 'लेकिन तुम मेरी बात पर विश्वास नहीं करते। तुम हंसते और कहते, "ये गांववाले तो कल्पनाओं और अंधविश्वासों से भरे हुए हैं।" सबको पता है कि तुम्हारे जैसे शहरी लोगों पर ऐसी चेतावनियों का हमेशा उल्टा असर होता है।'
इस बात को स्वीकार करते हुए फुलबोनी ने माफी मांगी और गार्ड से बैठने और उसे जो कुछ भी पता था, वह सब बताने को कहा।
गार्ड ने बताया कि कई सालों से सिग्नल रूम में लाखान नाम का एक नौजवान रहता था। स्टेशन बनने के कुछ ही समय बाद वह कहीं दूर से भटकता हुआ यहाँ आ गया था। वह अनाथ था, अकाल से बेहाल था, दुबला-पतला और कमजोर शरीर वाला था, और उसका एक हाथ विकृत था। उस समय सिग्नल रूम खाली था, क्योंकि कोई भी रेलवे कर्मचारी इतनी सुनसान और अलग-थलग जगह में रहने को तैयार नहीं था। इसलिए लाखान ने उसे अपना घर बना लिया। वहाँ से गुजरने वाले गार्डों और स्टोकरों ने उसे सिग्नल लैंप चलाना और स्विच चलाना सिखाया। उसने रेलवे के लिए खुद को उपयोगी साबित किया और उन्होंने उसे रहने दिया।
जब रेनूपुर स्टेशन के लिए आखिरकार एक स्टेशन मास्टर मिला, तब वह लड़का किशोरावस्था में था। पता चला कि यह स्टेशन मास्टर एक रूढ़िवादी, उच्च जाति का व्यक्ति था: उसे लड़के से तुरंत नफरत हो गई, क्योंकि वह उसे अपने लिए अपमान समझता था। उसने ग्रामीणों से कहा कि लाखान अछूत से भी बदतर है; कि उसे संक्रामक रोग है; कि वह शायद किसी वेश्या का बच्चा है; और उसका विकृत बायां हाथ वंशानुगत बीमारी का लक्षण है। उसने लड़के को स्टेशन से भगाने की पूरी कोशिश की, लेकिन लाखान के पास जाने के लिए कोई जगह नहीं थी। लड़के ने खाली पड़ी पटरियों पर बांस की एक झोपड़ी बनाई और लोगों की नजरों से छिपने की कोशिश की।
इससे स्टेशन मास्टर का गुस्सा और भी भड़क उठा। अमावस्या की रात, जब आसमान में आंधी चल रही थी, स्टेशन मास्टर ने ट्रेन के पॉइंट्स बदलकर लड़के को ट्रेन के आगे लाकर मारने की कोशिश की। लेकिन लाखान से बेहतर स्टेशन को कोई नहीं जानता था और वह बच निकलने में कामयाब रहा। इसके विपरीत, स्टेशन मास्टर ही पटरी पर ठोकर खाकर ट्रेन के सामने गिर पड़ा।
वह आखिरी बार था जब रेनूपुर में कोई स्टेशन मास्टर था।
फुलबोनी का मन सवालों से भरा हुआ था: इसी तरह की मौत से बच निकलने के कारण वह लड़के के भाग्य के बारे में जानने के लिए उत्सुक था। 'मुझे और बताओ,' उसने पहरेदार से विनती की। 'लाखान का क्या हुआ? मुझे जानना ही होगा; तुम्हें मुझे बताना ही होगा।'
'बताने के लिए और कुछ खास नहीं है,' गार्ड ने कहा। 'लोग कहते हैं कि वह एक ट्रेन में छिपकर कलकत्ता चला गया। वे कहते हैं कि वह सियालदह स्टेशन पर रह रहा था जब एक महिला ने उसे ढूंढ लिया और उसे अपने घर में पनाह दी।'
'बस इतना ही?' फुलबोनी ने पूछा। 'वह महिला कौन थी? लाखान का क्या हुआ?'
गार्ड ने माफी मांगने वाला चेहरा बनाया। 'मुझे बस इतना ही पता है,' उसने कहा।

'सिवाय इसके कि...'
'लेकिन क्या नहीं?'
इस पद पर मेरे पूर्ववर्ती ने एक बार मुझे कुछ बताया था। उन्होंने कहा कि उनकी मुलाकात उस विदेशी से हुई थी, जिसकी रेनूपुर में मृत्यु हो गई थी। वह विदेशी उनके पास प्लेटफार्म पर आया था, ठीक उसी समय जब वे ट्रेन को हरी झंडी दिखाने वाले थे। उसने बताया कि वह रेनूपुर के एक युवक के साथ यात्रा कर रहा था। साहब होने के नाते, स्वाभाविक रूप से वह विदेशी प्रथम श्रेणी में था जबकि दूसरा युवक तृतीय श्रेणी में। लेकिन अब वह युवक उसे नहीं मिल रहा था: वह गायब हो गया था। मेरे पूर्ववर्ती उसकी मदद नहीं कर सके; उन्होंने रेनूपुर में किसी और को उतरते हुए नहीं देखा था। वह विदेशी बहुत नाराज़ था और उसने कहा कि वह स्टेशन पर ही इंतज़ार करेगा। गार्ड, मेरे पूर्ववर्ती ने उससे कहा कि चाहे कुछ भी हो जाए, उसे रात स्टेशन पर नहीं रुकना चाहिए। उसने उसे वहाँ से हटाने के लिए हर संभव प्रयास किया, लेकिन साहब केवल हँसे और बोले, "अरे, तुम गाँव वाले..."

अध्याय 40

'हे भगवान!' उर्मिला अचानक चिल्लाई और बूथ के प्लास्टिक के पर्दे को खींचने लगी।
'क्या?' मुरुगन ने कहा।
'सोनाली-दी,' उर्मिला ने जवाब दिया। 'मुझे एक टेलीफोन ढूंढना है।' वह दौड़कर रेस्टोरेंट के पिछले हिस्से में मैनेजर के डेस्क तक गई और टेलीफोन उठा लिया।
मुरुगन बिल चुकाने के लिए रुका और फिर उसके पीछे-पीछे गया।
वह सदमे में रिसीवर को घूर रही थी जब वह उसके पास पहुंचा।
'सोनाली दीदी गायब हो गई हैं,' उसने कहा। 'वह न तो अपने दफ्तर में हैं और न ही घर पर। आज सुबह वह स्टाफ मीटिंग में नहीं आईं और उनसे संपर्क करने की कोशिश की जा रही है। कल रात से उनका कोई पता नहीं चला है। उनके फ्लैट पर कोई फोन नहीं उठा रहा है। लगता है कि मैं ही आखिरी व्यक्ति थी जिसने उनसे बात की थी।'
'उस समय क्या समय हुआ था?'
'लगभग साढ़े दस बजे के आसपास, मुझे लगता है,' उर्मिला ने कहा। 'हम साथ में उसके फ्लैट पर गए थे, और मैं लगभग उसी समय वहां से चली गई थी।'
'कलकत्ता, मेरे पास तुम्हारे लिए एक खबर है,' मुरुगन ने कहा। 'मैंने उसे तुम्हारे बाद देखा।'
'क्या?' उर्मिला चिल्लाई। 'लेकिन तुम तो उसे जानती भी नहीं हो।'
'लेकिन मैंने उसे फिर भी देखा,' मुरुगन ने कहा। 'मैं कल रात करीब एक बजे अपनी बालकनी में गया था, और मैंने उसे एक टैक्सी से उतरते देखा: वह रॉबिन्सन स्ट्रीट नंबर तीन में गई...'
निराशा से कराहते हुए उर्मिला ने उसे धक्का दिया और बोली, 'तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?' वह सड़क की ओर भागी और एक टैक्सी रोकी। 'चलो,' उसने पीछे मुड़कर

उसे पुकारा। 'हमें जल्दी करनी है।' मुरुगन उसके पीछे टैक्सी में बैठा और दरवाजा जोर से बंद कर दिया।
उर्मिला ने टैक्सी ड्राइवर से कहा, 'रॉबिन्सन स्ट्रीट। लाउडन और रॉडन के बीच।'
फिर उसने मुरुगन की ओर मुड़कर कहा, 'हमें सोनाली-दी को ढूंढना होगा। हमें उन्हें चेतावनी देने की कोशिश करनी होगी।'
'उसे क्यों?' मुरुगन ने कहा।
'क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा?' उर्मिला ने कहा। 'क्योंकि वह भी इसमें शामिल है: उसने ही मुझे यह कहानी सुनाई थी।'
शाम का व्यस्त समय अभी शुरू ही हुआ था और टैक्सी के चौरंगी पहुँचते ही यातायात बहुत बढ़ गया। उर्मिला आगे की सीट पर झुकी हुई बैठी थी और ड्राइवर को आगे बढ़ने के लिए कह रही थी।
जब मुरुगन ने उर्मिला से दोबारा बात की तो उनकी आवाज़ असामान्य रूप से शांत थी। उन्होंने कहा, 'सुनो, कलकत्ता। तुम आज सुबह से लगातार यात्रा कर रही हो; शायद तुम्हें यहाँ थोड़ा आराम करना चाहिए, ताकि तुम सब बातों पर विचार कर सको।'
'किस बात पर सोच रही हो?' उर्मिला ने अनमने ढंग से कहा। वे अब केनिलवर्थ होटल के बगल में थिएटर रोड पर थीं, और हवा में कबाब की खुशबू फैली हुई थी।
'क्या आप इस विषय में और गहराई से जाना चाहते हैं,' मुरुगन ने कहा।
'मैं और क्या कर सकती थी?' उसने हैरानी से कहा।
'हम टैक्सी को यहीं रोक सकते हैं,' मुरुगन ने कहा। 'और आप उतरकर घर जा सकते हैं; वापस जाकर अपना काम कर सकते हैं।'
उर्मिला के चेहरे पर उदासी छा गई।
'घर वापस जाऊं?' उर्मिला ने धीरे से खुद से कहा, ब्रिटिश काउंसिल की साफ-सुथरी, चमकदार इमारतों पर नज़रें टिकाते हुए। अगर वह घर जाती तो उसे रास्ते में मछली खरीदनी पड़ती। अगर वह कहती कि रोमेन हलदार सचमुच शाम को उनके घर आकर उसके भाई को प्रथम श्रेणी का अनुबंध देने वाला नहीं है, तो उसकी माँ उस पर विश्वास नहीं करती। वह पहले से ही अपनी माँ की बातें सुन सकती थी; 'ओह, तुम्हें हमारी ज़रा भी परवाह नहीं है: तुम्हारे लिए परिवार का कोई महत्व नहीं है; तुम्हें सिर्फ़ अपनी और अपने करियर की फ़िक्र है; इसीलिए कोई तुमसे शादी नहीं करेगा; श्रीमती गंगोपाध्याय ने भी यही कहा था...'
उर्मिला ने सिर हिलाकर मुरुगन की ओर देखा और कहा, 'नहीं,' 'मैं घर नहीं जाना चाहती।'
'यह तुम्हारी जिंदगी है, कलकत्ता,' मुरुगन ने दार्शनिक लहजे में कहा। 'तुम सबसे बेहतर जानते हो।'
लाउडन रोड चौराहे पर वाहनों की भीड़ बढ़ने से टैक्सी खड़खड़ाते हुए रुक गई। उर्मिला कोने पर स्थित पियरे कार्डिन बुटीक से मुड़ी। उसकी निगाहें जिज्ञासा से भरी हुई थीं और मुरुगन पर टिक गईं।
'तुम्हारा क्या?' उसने मुरुगन से कहा। 'तुम यह सब क्यों करते रहते हो? तुम्हें इसमें

इतना समय क्यों लग गया है?'
'क्या तुम नहीं बता सकते?' मुरुगन ने कहा।
उर्मिला ने सिर हिलाकर कहा: 'नहीं।'
मुरुगन ने उसे एक गंभीर मुस्कान दी। 'यह मैं नहीं हूँ,' उसने कहा। 'यह मेरे अंदर की बात है।'
'क्या आपका मतलब मलेरिया से है?'
'वो भी,' मुरुगन ने कहा।
'और क्या?' उर्मिला ने कहा।
कुछ देर का विराम हुआ, और फिर धीमी आवाज़ में मुरुगन ने कहा: 'सिफिलिस।'
उर्मिला सहम गई और अनजाने में सिकुड़ गई। मुरु-गान उसकी ओर मुड़ा और आँखें सिकोड़ते हुए बोला, 'तुम्हें चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। यह संक्रामक नहीं है: मैं आधिकारिक तौर पर बहुत पहले ही ठीक हो चुका हूँ।'
'मुझे माफ कर दो...' उर्मिला में अब और कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी।
मुरुगन की नज़र सड़क के दोनों ओर बनी दुकानों, खाने-पीने की दुकानों और ट्रैवल एजेंसियों पर टिकी हुई थी। चेहरा दूसरी तरफ़ करके उसने कहा, 'मुझे लगता है कि यह सब वहीं से शुरू हुआ होगा।' उसने आसमान की ओर इशारा करते हुए अस्पष्ट सा संकेत किया। 'फ्री स्कूल स्ट्रीट से। मैं पंद्रह साल का था: स्कूल के बाद मैं ग्लोब सिनेमा में फ़िल्म देखने गया था। घर जाते समय मैं न्यू मार्केट से गुज़र रहा था, तभी एक आदमी मेरे पास आया और मेरे कान में कुछ फुसफुसाया। मुझे लगा कि वह दलाल होगा: मैं अमेरिकी जासूसी उपन्यास बहुत पढ़ रहा था। मैं स्याही से सने स्कूल के पैंट और पसीने से भीगी कमीज़ में था, और मेरी किताबें और क्लास के नोट्स मेरे कंधे पर लटके हुए थे। उसने हरे रंग की चेकदार लुंगी पहनी हुई थी, उसकी पतली सी पेंसिल जैसी मूंछें थीं और उसकी छोटी-छोटी लाल आँखें थीं। उसने मेरे कान में फुसफुसाने से पहले आँख मारी और दाँतों वाली एक छोटी सी मुस्कान दी। मुझे उसकी साँसों से पान और बासी शराब की गंध आ रही थी। यह बहुत लुभावना था। मेरे पास सिर्फ़ पाँच रुपये थे, लेकिन वह काफ़ी थे।' वह मुझे फ्री स्कूल स्ट्रीट के आसपास की उन छोटी-छोटी गलियों में से एक में ले गया, जो अर्मेनियाई स्कूल के ठीक कोने पर थी, जहाँ विलियम थैकरे का जन्म हुआ था। हम एक अंधेरी, बदबूदार सीढ़ी पर चढ़े जो देखने में धरती के गुदा द्वार की ओर जाती हुई लग रही थी। लेकिन फिर हम ऊपर पहुँचे और अचानक वहाँ प्रकाश, शोर, आवाज़ों और संगीत का एक ज़बरदस्त विस्फोट हुआ: ऐसा लगा जैसे हम किसी मेले में आ गए हों - एक विशाल कमरा, जिसके चारों ओर छोटे-छोटे पर्दों वाले कमरे थे, और पान और चाय बेचने वाले विक्रेता थे, और दीवार के सहारे लगी कुर्सियों पर ढेर सारी औरतें बैठी थीं, जिनकी कलाइयों में फूल थे। मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा; मैं मोहित हो गया था। मुझे उनसे प्यार हो गया; मुझे उनके बारे में सब कुछ पसंद आया, यहाँ तक कि जिस तरह से वे मेरे पीछे हँस रही थीं जब मैं बाद में सीढ़ियों से नीचे भाग रहा था, मेरी पैंट के आधे बटन खुले हुए थे।
वह चुप हो गया और मन ही मन मुस्कुराने लगा।

'और फिर,' उन्होंने कहा, 'घाव दिखने लगे: पपड़ी, घाव और दांत ढीले पड़ने लगे। मैंने अपने कपड़े पहनने का तरीका बदल दिया; मैं बहुत सारे कपड़े पहनने लगा, और भी ज्यादा, यहाँ तक कि जून के उन दिनों में भी जब गर्मी किसी हथौड़े की तरह चेहरे पर वार करने को तैयार रहती थी। मैंने पपड़ियों को न जाने कितने समय तक, महीनों तक छिपाए रखा - हालाँकि तब तक बहुत दर्द होता था, हे भगवान, कितना दर्द होता था। और जब आखिरकार इसका पता चल गया तो इसे छुपाना नामुमकिन था। इसी वजह से मेरे परिवार को शहर छोड़ना पड़ा: शर्मिंदगी के मारे।'
'लेकिन सिफलिस का इलाज अब संभव है, है ना?' उर्मिला ने कहा। 'एंटीबायोटिक्स से?'
'ज़रूर,' मुरुगन ने कहा। 'मैं ठीक हो गया। अब इसका इलाज संभव है - सिवाय इसके कि इससे सिर पर क्या असर होता है।'

अध्याय 41

खिड़कियों के फड़फड़ाते शटरों से आती बारिश की आवाज़ ने सोनाली को जगाया। उसकी आँखें चिपचिपी और सूजी हुई थीं; उसे पलकें खोलने में मुश्किल हो रही थी। वह एक तरफ करवट लेकर लेटी हुई थी और लकड़ी के फर्श के किनारे जमा धूल की पतली पट्टी को घूर रही थी।
उसे बिलकुल भी पता नहीं था कि वह कहाँ है, वह दीवार कहीं भी कोई भी दीवार हो सकती थी; उसे यह भी नहीं पता था कि वह वहाँ कितने समय से है या फर्श पर क्या कर रही है। उसकी पहली सहज प्रतिक्रिया थी कि वह एकदम स्थिर हो जाए, छिपकली की तरह हिलती-डुलती रहे, खुद को अदृश्य कर ले।
ज़मीन पर बेसुध पड़ी हुई वह ध्यान से सुनने लगी, अपनी सुनने की शक्ति पर पूरा ध्यान केंद्रित करते हुए। धीरे-धीरे उसे पास की सड़क पर गाड़ियों की आवाज़ सुनाई देने लगी; ट्रांजिस्टर रेडियो पर विविध-भारती की एक धुन; साइकिल की घंटियाँ, इंजन की आवाज़, सड़क की आम आवाज़ें, लेकिन कहीं दूर से आती हुई। लेकिन यहाँ उसके आस-पास कोई आवाज़ नहीं थी; उसे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था – ऐसा कुछ भी नहीं जिससे उसे पता चले कि वह कहाँ है या कमरे में कोई और है या नहीं।
फिर उसे कुछ सुनाई दिया, जो सड़क की आवाज़ों से ज़्यादा दूर नहीं था: धातु की चरमराहट, बिना तेल लगे कब्ज़े की आवाज़, और एक भारी गेट के धीरे-धीरे खुलने की आवाज़। कुछ ही देर बाद उसे कंकड़ पर कदमों की आहट सुनाई दी: ऐसा लग रहा था जैसे वे करीब आ रहे हों, उसकी तरफ बढ़ रहे हों।
वह धीरे से करवट बदली और पाया कि वह एक संकरी लकड़ी की गैलरी के फर्श पर लेटी हुई है। खुद को ऊपर उठाते हुए वह धीरे-धीरे किनारे तक गई और नीचे देखा। उसने खुद को एक विशाल खाली कमरे में नीचे देखते हुए पाया। टूटी हुई रोशनदान से धुंधली, गोधूलि की रोशनी छनकर आ रही थी। उसने उस गुफा जैसे कमरे के दूसरे छोर पर राख और अधजली टहनियों का एक छोटा सा ढेर देखा। अब उसे सब कुछ

याद आने लगा: सीढ़ियाँ, शोर, धुआँ, एक शव के चारों ओर जमा लोगों की भीड़। एक गहरी साँस लेते हुए वह फिर से झुकी और चारों ओर देखा: वहाँ किसी का कोई निशान नहीं था; कमरा खाली था।
अब कदमों की आहट घर के अंदर सुनाई दे रही थी; वे नीचे की ओर, शायद सीढ़ियों के पास कहीं थे। सोनाली ने झट से अपना सिर पीछे खींच लिया और स्थिर लेट गई, उसकी सांसें धीमी गति से अंदर-बाहर हो रही थीं।
वे सड़ी-गली सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे; उसे स्टील के मचान पर उनके जूतों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। उसे एक आवाज़ सुनाई दी – बाहर कहीं से एक आदमी की आवाज़। फिर एक औरत की आवाज़ भी सुनाई दी; अभी भी दबी हुई थी, हालाँकि उनके कदमों की आहट उसके ठीक नीचे, स्वागत कक्ष के बहुत करीब थी।
उसे अंदर आते हुए कदमों की आहट सुनाई दी, लोग इधर-उधर टहल रहे थे। फिर उसे सिर्फ अपने कानों में खून की धड़कन सुनाई देने लगी। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, होंठ दबाए, नीचे देखने की हिम्मत जुटाने की कोशिश की।
'यहां कोई नहीं है,' एक आवाज आई। यह एक महिला बोल रही थी - कोई परिचित, कोई जिसे वह जानती थी।
उसने बहुत धीरे से अपना सिर उठाया और किनारे की ओर सरकती हुई आगे बढ़ी। तभी उसके होठों से एक चीख निकली: 'उर्मिला!'
'सोनाली-दी!' उर्मिला हांफते हुए घूमी। उसी समय मुरु-गान चिल्लाए: 'वह ऊपर है, चलो।' सोनाली ने राहत की सांस लेते हुए अपना सिर ज़मीन पर टिका दिया।
फिर वे उसके पास गैलरी में आ गए, सीढ़ी से नीचे उतरने में उसकी मदद करने लगे, उसके हाथ पकड़े हुए थे, और वह रो रही थी, सांस लेने के लिए संघर्ष कर रही थी, और सिसकियों के बीच उसने खुद को बोलने की कोशिश करते हुए सुना, कुछ सुसंगत कहने के लिए संघर्ष कर रही थी, लेकिन शब्द सब गलत, सब उलझे हुए, एक अर्थहीन गड़बड़ में निकल रहे थे।
'शांत हो जाइए सोनाली दीदी,' उर्मिला ने कहा। 'सब ठीक है; हम यहाँ आ गए हैं। बताइए: आप यहाँ क्यों हैं? कब आईं?'
सोनाली ने उर्मिला का हाथ और कसकर पकड़ लिया।
'मैं कल रात देर से आई थी,' उसने कहा। 'मैं रोमेन को ढूंढने आई थी; मुझे किसी तरह पता था कि वह यहीं होगा।'
'क्या तुम्हें वह मिला?' उर्मिला ने पूछा।
सोनाली फिर से रोने लगी।
'यही तो अजीब बात है, उर्मिला,' उसने कहा, 'मुझे नहीं पता।' सोनाली ने उन्हें रॉबिन्सन स्ट्रीट जाने वाली टैक्सी, सीढ़ियाँ चढ़ने, धुएँ, लोगों, गैलरी ढूंढने, लड़के, साड़ी पहनी महिला, आग, लाश... के बारे में बताना शुरू किया।
'फिर उसने अपने हाथ आगे बढ़ाए और आग के सामने पड़े शव को छूकर उसे लाखन कहकर पुकारा। बेहोश होने से ठीक पहले मैं देख पाई कि वह कौन था।'
उसका दम घुट गया।
'वह कौन था?' उर्मिला ने कहा।

'यह रोमेन था।' सोनाली रोने लगी।
'और वो औरत,' मुरुगन ने बीच में टोकते हुए कहा, 'वो कौन थी? क्या तुम उसे जानते थे?'
सोनाली ने अपना सिर अगल-बगल हिलाया और अपने चेहरे पर लगे आँसुओं को अपने ब्लाउज से पोंछा।
'मुझे पक्का नहीं पता,' उसने कहा। 'वह बहुत जानी-पहचानी लग रही थी, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा था।'
फिर उर्मिला ने उसका हाथ पकड़ा और मुरुगन को कोहनी मारकर रास्ते से हटा दिया। 'कोशिश करो, सोनाली दीदी,' उसने कहा। 'याद करने की कोशिश करो। वह कौन था?'
उर्मिला का चेहरा देखते ही सोनाली की आंखें चौड़ी हो गईं। 'उर्मिला, वह कोई जानी-पहचानी थी,' उसने कहा। 'मुझे पूरा यकीन है: इसीलिए वह जानी-पहचानी लग रही थी - जिसके बारे में मैंने तुम्हें बात करते सुना है, जिसे मैंने सालों से नहीं देखा।'
अचानक उर्मिला अपनी एड़ियों पर पीछे की ओर झुकी और सोनाली का हाथ छोड़ दिया। 'नहीं,' वह सिसकते हुए बोली, उसके हाथ उसके मुंह पर चले गए। 'नहीं, श्रीमती... नहीं।'
'हां,' सोनाली ने कहा। 'वही थीं - श्रीमती अराटूनियन।'

अध्याय 42

अंतर जब जागा तो उसने पाया कि उसके बिस्तर के कपड़े पसीने से भीगे हुए थे और उसका गला जल रहा था। वह लड़खड़ाते हुए दरवाजे तक पहुँचा और गलियारे में देखा: रसोई उससे दूर खिसकती हुई प्रतीत हो रही थी, मानो दूर जा रही हो। उसके घुटने कमजोर पड़ रहे थे और उसे खुद को सीधा रखने के लिए दीवार का सहारा लेना पड़ा। उसने अपना सिर घुमाकर अपनी हथेली को देखा और पाया कि वह काँप रही थी, दीवार की सपाट सफेदी पर झिलमिला रही थी। घबराहट में उसने अपने हाथों को अपने गालों, छाती और बगलों पर मारा, तब उसे एहसास हुआ कि वह पूरी तरह काँप रहा था।
दीवार के सहारे चलते हुए उसने रसोई की ओर एक कदम बढ़ाया। अब उसे थोड़ा आसान लग रहा था; वह अपने बैठक कक्ष के खुले दरवाजे से बस कुछ ही कदम दूर था, गलियारे के बीचोंबीच, रसोई और शयनकक्ष के बीच। आगे झुककर उसने दरवाजे के किनारे को पकड़ने की कोशिश की और खुद को आगे खींचने का प्रयास किया। उसकी उंगलियाँ दरवाजे तक पहुँचीं और उसे पकड़ लिया। तभी उसके फैले हुए हाथ में एक सिहरन दौड़ गई और उसने अपना हाथ झटक कर पीछे खींच लिया, मानो किसी अनपेक्षित स्पर्श से पीछे हट गया हो। दीवार पर झुककर खड़े हुए, अपनी उंगलियों को चबाते हुए, उसे अपने चेहरे के बाल खड़े होते महसूस हुए: ऐसा लगा जैसे उस कमरे में कुछ था, एक ऐसी उपस्थिति जिसे उसके शरीर ने उसके वहाँ होने

से पहले ही महसूस कर लिया था।
वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा, दीवार से खुद को दूर धकेला और दरवाजे से अंदर चला गया। वह वहीं स्तब्ध खड़ा रहा, अविश्वास से भरा हुआ। उसके घुटने लड़खड़ा गए और वह फर्श पर गिर पड़ा।
बैठक कक्ष के मध्य में बौने की तरह बैठा एक नग्न व्यक्ति था। उसके सूजे हुए पेट पर उलझे हुए, रस्सी जैसे बालों की एक मोटी परत लटक रही थी; उसका ऊपरी शरीर सूखे पत्तों और भूसे से ढका हुआ था, और उसकी जांघें कीचड़ और मल से सनी हुई थीं। उसके हाथ उसकी गोद में रखे थे, जो लोहे की हथकड़ियों से बंधे हुए थे।
वह खून से लाल, मैली-कुचली आंखों से अंटार को घूर रहा था; उसके होंठ एक मुस्कान में पीछे की ओर खिंचे हुए थे, जिससे उसके पीले, सड़े हुए दांत दिखाई दे रहे थे।
'क्या बात है?' अचानक एक आवाज़ गूंजी, जो एवा के छिपे हुए ध्वनि छिद्रों से होते हुए कमरे में गूंज उठी। 'तुम मुझसे मिलना चाहते थे, है ना? मैं बस थोड़ा जल्दी आ गया हूँ, बस इतना ही।'
अंतर ने खुद को संभाला और धीरे-धीरे एवा के कंट्रोल पैनल की ओर बढ़ा। वह कमरे के किनारों पर दीवारों की ओर पीठ करके चल रहा था, उस आकृति से यथासंभव दूर रहने की कोशिश कर रहा था, मानो वह सचमुच मौजूद हो।
'तुम कहाँ थे?' उस आकृति ने उसके पीछे चिल्लाकर कहा। 'तुमने मुझे इतनी देर तक इंतजार क्यों करवाया?'
अंतर की नज़र कीचड़ से सनी जांघों पर पड़ी और वह अनजाने में कांपते हुए मुंह फेर लिया। आवा के कीबोर्ड की ओर हाथ बढ़ाते हुए उसने छवि के वेक्टर को फिर से लिखा।
तस्वीर में एक कंपन हुआ और आदमी का धड़ गायब हो गया। अब केवल उसका सिर बचा था, जो बहुत बड़ा, जीवन के आकार से कहीं अधिक बड़ा, किसी विशाल प्रतिमा के आकार तक फैला हुआ था।
'लगता है तुम मेरे शरीर को और नहीं देख पाए,' उस आदमी ने फिर हंसते हुए कहा।
अब अंटार को अपने बालों में कीड़े दिखाई देने लगे; यह दृश्य इतना भयावह था कि उसने नियंत्रण पैनल की ओर हाथ बढ़ाया और सिर को दूसरी ओर घुमा दिया। लेकिन फिर, जैसे ही गर्दन का सपाट भाग धीरे-धीरे सामने आया, उसने पाया कि आवा ने सिर को इतनी वास्तविकता से काटा था कि हर धमनी और नस स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। वह धड़कती हुई केशिकाओं को देख सकता था; यहाँ तक कि रक्त का प्रवाह भी गति में दिखाया गया था, जिससे गर्दन ऐसी लग रही थी मानो उसमें से खून बह रहा हो।
अंतर का दम घुट गया: वह सिर चौंकाने वाली हद तक एक ऐसे दृश्य जैसा था जो अक्सर उसके सबसे बुरे सपनों में आता था; एक मध्ययुगीन चित्र की छवि जो उसने कभी एक यूरोपीय संग्रहालय में देखी थी, एक सिर कटे संत की तस्वीर, जो अपने ही टपकते हुए सिर को लापरवाही से अपनी बांह के नीचे पकड़े हुए था, मानो वह एक ताजा तोड़ी हुई गोभी हो।

जैसे-जैसे उस आदमी का सिर पीछे की ओर झुकता गया, वह चिल्लाने लगा।
'मुझे नीचे उतारो, कमीने!' वह चिल्लाया। 'मेरी आंखों में देखो।'
अंतर ने इशारे से तस्वीर को फिर से झुकाया, और उसकी लाल चमकती आँखें उस पर टिक गईं। 'तो तुम जानना चाहते हो कि मुरुगन का क्या हुआ?' उसने कहा।
'हां,' अंतर ने कहा।
वह आदमी एक बार फिर उन्मादपूर्ण हंसी हंसने लगा। उसने कहा, 'मुझे आपसे दोबारा पूछने दीजिए। क्या आप पूरी तरह से आश्वस्त हैं?'

अध्याय 43

जब वे जर्जर हो चुके पुराने मकान के खंभों वाले बरामदे पर पहुँचे तो ज़ोरदार बारिश हो रही थी। रॉबिन्सन स्ट्रीट पर लगी नियॉन बत्तियाँ मछलीघर की रोशनी की तरह धुंधली हरी चमक रही थीं। उर्मिला और सोनाली बरामदे के नीचे खड़ी होकर मूसलाधार बारिश को देखते हुए अपनी साड़ियाँ सिर पर ओढ़ लीं। मुरुगन दौड़ते हुए बजरी वाली सड़क पर आगे बढ़ा। द्वार पर पहुँचकर वह रुका और पीछे मुड़कर उन दोनों महिलाओं को देखा, जो अभी भी बरामदे के नीचे अनिश्चितता से इंतज़ार कर रही थीं।
'चलो,' उसने पूरी ताकत से चिल्लाते हुए उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। 'चलो जल्दी करो, चलो चलते हैं।'
उसकी आवाज़ हवा के झोंकों से दबकर और बारिश की बूंदों से धीमी होकर बरामदे तक पहुँची। उर्मिला ने सोनाली का हाथ खींचा और वे दोनों दौड़ने लगीं, पहले तो हिचकिचाते हुए, फिर तेज़ी से, मुरुगन के पीछे-पीछे, जो सड़क पर दौड़ता हुआ नंबर आठ के प्रवेश द्वार की ओर जा रहा था।
श्रीमती अराटूनियन की इमारत के गेट से अंधाधुंध मुड़ते हुए मुरु-गान सीधे संकरे रास्ते में खड़ी किसी चीज़ से टकरा गया। उसने खुद को संभाला और देखा कि रास्ते में दो बांस की ठेलागाड़ियाँ खड़ी थीं, जिन्होंने प्रवेश द्वार को अवरुद्ध कर रखा था। उनमें से पारदर्शी तारकोल के तंबू निकले हुए थे, जो अव्यवस्थित वस्तुओं के ढेर पर कसकर फैले हुए थे।
वह अपने घुटनों को रगड़ रहा था और बड़बड़ा रहा था, तभी सोनाली और उर्मिला वहाँ पहुँचीं। उर्मिला जल्दी से गाड़ियों के बीच से निकलकर प्रवेश द्वार की ओर बढ़ी और लिफ्ट की तरफ चलने लगी। मंद रोशनी वाले हॉल के बीच में ही उसने देखा कि दो आदमी लुंगी और बनियान पहने सीढ़ियों के पास बैठे बीड़ी पी रहे थे। उनके बगल में एक बड़ा सा फर्नीचर रखा था, एक भारी महोगनी का साइडबोर्ड।
उर्मिला एकदम रुक गई, उसकी नज़र उन दोनों आदमियों से हटकर साइडबोर्ड पर पड़ी और फिर वापस उन पर आ गई। वे दोनों आदमी शांत भाव से उसे घूर रहे थे, और उनके ऊपर बीड़ी का धुआँ घुमावदार गुबार की तरह उठता जा रहा था।
सोनाली उसके बगल में आकर रुक गई: 'क्या बात है?'
उर्मिला ने साइडबोर्ड की ओर इशारा करते हुए कहा, 'यह श्रीमती अराटूनियन का है।

यह उनके भोजन कक्ष में हुआ करता था। मुझे याद है।'
'तुम सही कह रहे हो,' मुरुगन ने कहा। 'मैंने उसे कल रात वहीं देखा था।'
उर्मिला ने उन दोनों पुरुषों से हिंदी में बात करते हुए कहा, 'यह आपको कहां से मिला?'
उनमें से एक आदमी ने कंधे के ऊपर अंगूठा हिलाकर सीढ़ियों की ओर इशारा किया।
कुछ ही देर बाद उन्हें एक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी, जिसके बाद चीखने-चिल्लाने और कराहने की आवाज़ें आईं। तीन नंगे बदन वाले आदमी सीढ़ियों के मोड़ से एक विशाल चिंट्ज़ प्रिंट वाला सोफा लेकर आए।
'अरे!' मुरुगन ने कहा। 'यह श्रीमती अराटूनियन की भी है; मैं कल रात इस पर बैठकर टीवी देख रहा था।'
उर्मिला ने ऊंची आवाज में कहा, 'क्या हो रहा है?'
उनमें से एक आदमी ने अपनी बीड़ी के पिछले हिस्से से निशाना साधा और उसे एक कोने में फेंक दिया। फिर वह धीरे से उठा और अंगड़ाई ली। उसने जम्हाई लेते हुए और अपना कंधा साइडबोर्ड पर टिकाते हुए कहा, 'कोई जा रहा है। और हम फर्नीचर ले जा रहे हैं।'
'कौन जा रहा है?' उर्मिला ने पूछा।
उस आदमी ने कंधे उचकाए और अपना कंधा साइडबोर्ड पर टिका दिया। 'मुझे कैसे पता चलेगा?'
उर्मिला दौड़कर लिफ्ट की ओर गई और दरवाजा खोलकर मुरुगन और सोनाली को भी पीछे आने का इशारा किया। वे दोनों उसके बगल में घुस गए और उर्मिला ने चौथी मंजिल का बटन दबा दिया। सीढ़ियों के खोखले बीच से धीरे-धीरे ऊपर जाती हुई पुरानी लिफ्ट को देखकर उनमें से किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा।
लिफ्ट रुकी और उर्मिला बाहर निकली। उसकी नजर श्रीमती अराटूनियन के दरवाजे पर पड़ी और वह वहीं जम गई।
दरवाजा पूरी तरह खुला हुआ था, एक ईंट के सहारे टिका हुआ था। फ्लैट से रोशनी बाहर आ रही थी, जिससे सीढ़ियों के खरोंच लगे, धूल भरे तख्ते सुनहरे रंग में चमक रहे थे। दरवाजे के बगल वाली दीवार पर, जहाँ कभी नामपट्टियाँ लगी होती थीं, अब दो फीके पड़े आयताकार धब्बे थे।
उनकी निगाहें अनायास ही दरवाजे के पार खिंच गईं। अंदर का हॉल खाली था; सारा सामान और सजावट गायब थी। दीवारें बिल्कुल खाली थीं। जब वे वहीं खड़े होकर घूर रहे थे, तभी दो आदमी अपने कंधों पर जूट के बोरे लटकाए बाहर आए: दोनों बोरे पूरी तरह भरे हुए थे।
मुरुगन सबसे पहले हरकत में आया। खाली ड्राइंग रूम से दौड़ते हुए वह उस कमरे में घुस गया जहाँ वह पिछली रात सोया था। उर्मिला उसके पीछे-पीछे ऐसे चल रही थी मानो किसी सम्मोहन में हो, और सोनाली उसके ठीक पीछे थी।
कुछ ही देर बाद मुरुगन के कमरे से एक चीख गूंजी: 'मेरा सारा सामान गायब हो गया है। सब कुछ: मेरा लैपटॉप, मेरे कपड़े, मेरा लुई विटन सूटकेस, सब कुछ...' मुरुगन घबराई हुई आँखों से वापस भागा आया: 'यहाँ तक कि बिस्तर और मच्छरदानी भी

गायब हो गई है - सब कुछ...'
उनके पीछे कहीं से कदमों की आहट सुनाई दी, रसोई की ओर जाने वाले गलियारे में। तीनों एक साथ मुड़े और खुद को एक दुबले-पतले, चश्मा पहने हुए आदमी के सामने पाया, जिसकी कमीज़ और पतलून फटी हुई थी। उसके कान के पीछे एक पेंसिल थी, और एक हाथ में क्लिपबोर्ड और स्टेपल किए हुए कागजों का एक बंडल था। दूसरे हाथ में उसने मुट्ठी भर मूंगफली पकड़ रखी थी।
उसने उन पर गुस्से से देखा, चश्मे की वजह से उसकी आँखें बड़ी-बड़ी लग रही थीं। 'तुम कौन हो?' उसने पलकें झपकाते हुए हैरानी से कहा। 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'
'तुम कौन हो?' उर्मिला ने झल्लाकर पूछा। 'और तुम श्रीमती अराटूनियन के फ्लैट में क्या कर रही हो?'
वह आदमी अकड़ गया और उसके माथे पर शिकन आ गई। उसकी आँखें गुस्से से उर्मिला के चेहरे से मुरुगन के चेहरे की ओर घूमीं। फिर उसने सोनाली की ओर देखा और अचानक उसका चेहरा उतर गया। उसका हाथ धीरे-धीरे काँपते हुए ऊपर उठा, जिससे मूंगफली ज़मीन पर बिखर गईं। उसका मुँह खुला रह गया और उसकी आँखें इतनी बड़ी हो गईं कि मानो चश्मे के फ्रेम से बाहर निकल रही हों।
'क्यों?' वह हकलाते हुए बोला और अपनी तर्जनी उंगली उसकी ओर इशारा करते हुए बोला। 'क्यों, लेकिन तुम... तुम... तुम सोनाली ओएस हो।'
सोनाली ने उसे सिर हिलाकर और हल्की सी मुस्कान देकर सहमति दी। उसने बड़ी मुश्किल से निगलने की कोशिश की, उसका कंठ मछुआरे के फ्लोट की तरह ऊपर-नीचे हो रहा था।
'क्या आप जानते हैं कि वह कौन है?' उसने उत्साह से बड़बड़ाते हुए और उनकी ओर थूक की एक पतली फुहार फेंकते हुए दूसरों से कहा। 'वह सोनाली ओस हैं... महान अभिनेत्री... मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था...'
अब वह अपने पैरों की उंगलियों पर उछल रहा था, उसका चेहरा खुशी और उत्साह से लाल हो गया था।
'ओह, महोदया,' उन्होंने सोनाली से कहा, 'हम बंसद्रोनी फिल्म सोसाइटी में आपकी फिल्में साल में कम से कम दो बार देखते हैं। मेरी ज़िद पर, अगर मैं कहूँ तो - मैं कोषाध्यक्ष, सह-संस्थापक और सदस्य-सचिव हूँ। आप बंसद्रोनी में किसी से भी पूछ लीजिए, वे आपको बताएँगे: बोलाइ-दा एक भी साल ऐसा नहीं जाने देते जब सोनाली दास की हर फिल्म कम से कम दो बार न दिखाई जाए। एक बार तो इस मुद्दे पर महाभियोग का प्रस्ताव भी आया था, लेकिन...'
वह रुक गया, उसके पास शब्द नहीं थे, उसकी आँखों में आँसू भर आए। 'ओह मैडम सोनाली,' उसने कहा, 'मेरे लिए आप ओपन सिटी में अन्ना मैग्नानी से भी महान हैं, कैमिला में गार्बो से भी महान हैं, यहाँ तक कि...'
उसने हिम्मत जुटाते हुए एक गहरी सांस ली। 'हां,' उसने बेपरवाही भरे लहजे में कहा। 'मैं कहूंगा, क्यों नहीं? यह तो चारुलता की अतुलनीय माधबी से भी महान है।'
सोनाली ने उसे शर्मिंदा मुस्कान दी।
मुरुगन अपना धैर्य और नहीं रोक सका। 'क्या हम इस फैन-क्लब वाली बात को बाद

के लिए छोड़ सकते हैं?' उसने मुट्ठी हिलाते हुए गुस्से में कहा।
वह आदमी चौंक गया और सपने से जागने की कोशिश में अपनी उंगलियों से अपने सिर पर थपथपाया। उसने कहा, 'मुझे खेद है। मुझे इतना उत्तेजित नहीं होना चाहिए था।' उर्मिला ने धीरे से उसके कंधे पर थपथपाया।
'कोई बात नहीं,' उसने कहा। 'आप सोनाली-दी के बारे में बिल्कुल सही कह रही हैं। लेकिन इस समय हमारे मन में कुछ और ही चल रहा है। हम श्रीमती अराटूनियन से मिलने आए हैं। क्या आप बता सकती हैं कि वह कहाँ हैं?'
'श्रीमती अराटूनियन?' चश्मा पहने हुए व्यक्ति ने स्वप्निल स्वर में कहा, 'उसकी निगाहें सोनाली की ओर लौट गईं। 'वह चली गई हैं।'
'कहां गए?' मुरुगन ने पूछा।
'अभी-अभी गया।' उस आदमी ने कंधे उचकाए और बातचीत में उसकी रुचि कम हो गई। अचानक उसके मन में एक विचार आया और वह सोनाली की ओर मुड़ा, उसका चेहरा खिल उठा। 'शायद आप हमारी सोसाइटी में आने के लिए राज़ी होंगी?' उसने कहा। 'क्या यह संभव है, महोदया?'
सोनाली ने एक सधे हुए हावभाव से जवाब दिया, जिससे न तो पुष्टि का संकेत मिला और न ही खंडन का।
मुरुगन ने उस आदमी का हाथ पकड़कर उसे ज़ोर से हिलाया। 'बाद में!' वह चिल्लाया। 'तुम इसके बारे में बाद में बात कर सकते हो। पहले हमें बताओ, श्रीमती अरातूनियन कहाँ हैं? और उनका सामान कहाँ है - उनका फर्नीचर, पौधे और सब कुछ? और मेरा सामान - मेरा सूटकेस, लैपटॉप और बाकी सब कुछ?'
उस आदमी ने बड़ी नज़ाकत से सूंघते हुए मुरुगन की उंगलियों को अपनी बांह से झटक दिया। 'वैसे,' उसने कहा। 'आवाज उठाने की कोई ज़रूरत नहीं है।'
'माफ़ कीजिए,' मुरुगन ने कहा। 'मैं बस आपका ध्यान भटकने से पहले उसे अपनी ओर खींचना चाहता था। जैसा कि मैं कह रहा था: मेरा सामान, उसका सामान - सब कहाँ है?'
उस आदमी ने हैरानी भरी निगाहों से उसे देखा, चश्मे की चमक साफ दिख रही थी। 'क्या तुम्हें नहीं पता?' उसने कहा। 'उसने सब कुछ बेच दिया। न्यू रसेल एक्सचेंज को। इसीलिए मैं यहाँ हूँ: मैं वसूली और मूल्यांकन का प्रभारी मुख्य क्लर्क हूँ।'
'लेकिन ये सब तो आज सुबह यहीं था,' मुरुगन हांफते हुए बोला। 'मेरा मतलब है, मैं कल रात यहीं रुका था। जब मैं आज सुबह निकला तो सब कुछ यहीं था। वो आज ये सब नहीं बेच सकती।'
क्लर्क ने उसे दया भरी मुस्कान दी। 'बिल्कुल नहीं,' उसने कहा। 'ऐसा सौदा एक दिन में नहीं हो सकता।' कानूनी औपचारिकताएं ही काफी नहीं हैं... बिक्री का पंजीकरण, शपथ पत्र और स्टाम्प शुल्क भी तो चुकाने होते हैं।'
उसने अपना क्लिपबोर्ड मुरुगन की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'लो, देखो,' और पेंसिल से इशारा करते हुए बोला, 'यह अनुबंध है।'
मुरुगन और उर्मिला ने कंधे के ऊपर से झाँकते हुए एक लंबे टाइप किए हुए दस्तावेज़ की कार्बन कॉपी देखी। लेटरहेड पर लिखा था, न्यू रसेल एक्सचेंज, नीलामीकर्ता और

मूल्यांकनकर्ता। प्रत्येक पृष्ठ के हाशिये पर कानूनी मुहरों, आद्याक्षरों और हस्ताक्षरों का जाल बिछा हुआ था।
क्लर्क दस्तावेज़ के पन्ने पलटते हुए गुनगुना रहा था। अंत में पहुँचकर वह विजयी स्वर में बोला, 'देखो! क्या तुम देख रहे हो? अनुबंध पर ठीक एक साल पहले, इसी दिन हस्ताक्षर और मुहर लगी थी। श्रीमती अराटोनियन ने इस परिसर की सभी चीज़ें 'जैसी हैं वैसी ही' के आधार पर बेच दी थीं, इस शर्त के साथ कि वसूली ठीक एक साल बाद की जाएगी।'
उसने पन्ने पलटे और अपनी पेंसिल के रबरयुक्त पिछले हिस्से से दस्तावेज़ पर थपथपाया।
उन्होंने कहा, 'इस सूची में हर चीज़ का हिसाब है। श्रीमती अराटूनियन ने आज सुबह मुझे व्यक्तिगत रूप से उस सूची में मौजूद हर वस्तु का स्थान दिखाया। इस फ्लैट की हर चीज़ का मूल्यांकन करते समय, फ्लैट बिकने से ठीक पहले, यहाँ दर्ज किया गया था।'
उर्मिला ने अविश्वास से चिल्लाते हुए कहा: 'फ्लैट बिक गया!'
'जी हां,' क्लर्क ने कहा। 'नए मालिक आज कब्जा ले लेंगे।'
मुरुगन ने उसे हैरानी से देखा। 'लेकिन,' उसने कहना शुरू किया, 'लेकिन मेरी चीजें उस सूची में नहीं हो सकतीं: मैं तो यहाँ था ही नहीं।'
क्लर्क ने मुरुगन की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि डाली। उसने कहा, 'क्या आप कुछ वस्तुओं पर अपना दावा स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं?' मुरुगन ने कहा, 'मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि इस अनुबंध के अनुसार, हमें इस परिसर में मौजूद हर वस्तु को हटाने का पूर्ण कानूनी अधिकार है।'
'मैं किसी चीज पर दावा करने की कोशिश नहीं कर रहा हूं,' मुरुगन ने कहा। 'मैं बस यह जानना चाहता हूं कि मेरी चीजों का क्या हुआ।'
'वे क्या थे?' क्लर्क ने पूछा। 'क्या आप उनका वर्णन कर सकते हैं?'
मुरुगन ने सिर हिलाया: 'एक सूटकेस, एक लैपटॉप - इस तरह की चीजें।'
क्लर्क ने गुनगुनाते हुए पेंसिल से सूची पर निशान लगाए। 'ये लीजिए!' उसने एक पंक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा। 'सूटकेस, चमड़ा, साथ ही विविध यात्रा सामग्री और आयातित इलेक्ट्रॉनिक उपकरण।'
मुरुगन चुप हो गया, क्लिपबोर्ड को घूरता रहा और समझ न आने के भाव से सिर हिलाता रहा। 'लेकिन यह तो पागलपन है,' उसने कहा। 'मेरा मतलब है - एक साल पहले तक तो यहाँ होना मेरे सपनों में भी नहीं था।'
क्लर्क ने मुरुगन को क्लिपबोर्ड थमा दिया और सोना-ली की ओर चल पड़ा। उसने अपनी पतलून की जेब से एक कागज़ का टुकड़ा निकाला और उसे देते हुए कहा, 'महोदया, अगर आप मुझे अपना ऑटोग्राफ दे दें... बस समाज को दिखाने के लिए...'
सोनाली ने कागज़ और दी गई पेंसिल ली। उसने अपना नाम लिखा और कागज़ वापस दे दिया। उसने दोनों हाथों से उसे ग्रहण किया और आदरपूर्वक हथेलियों में थाम लिया। 'तुम नहीं जानती कि इसका मेरे लिए क्या महत्व है,' उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'एक ही दिन में दो मशहूर हस्तियों से मिलना - यह मेरी कल्पना से भी कहीं

बढ़कर है।'
मुरुगन फिर प्रकट हुआ और उनके बीच में आ खड़ा हुआ। उसने कहा, 'मेरा आपसे एक और सवाल है। क्या श्रीमती अराटूनियन ने कोई कागजात छोड़े हैं? कोई ज़ेरॉक्स कॉपी, पुराने अखबारों की कतरनें, कुछ भी?'
क्लर्क ने सिर झुकाया और मुरुगन को हैरानी भरी नज़रों से देखा। उसने कहा, 'यह दिलचस्प है कि आप पूछ रहे हैं। आमतौर पर जब हम कोई फ्लैट खाली करते हैं तो बहुत सारा बेकार कागज़ इधर-उधर पड़ा होता है। लेकिन यहाँ कुछ भी नहीं था। न अखबार, न पुरानी किताबें, कुछ भी नहीं। मैंने इसलिए ढूंढा क्योंकि मैं इन्हें किसी कागज़ में लपेटना चाहता था।' उसने मुट्ठी खोलकर उन्हें अपने बचे हुए आखिरी मूंगफली के दाने दिखाए। 'लेकिन मुझे पूरे घर में कागज़ का एक टुकड़ा भी नहीं मिला। इसीलिए मैडम के ऑटोग्राफ के लिए मुझे फिर से वही कागज़ इस्तेमाल करना पड़ा जो श्रीमती अराटूनियन ने जाने से ठीक पहले मुझे दिया था।'
'कौन सा पेपर?' मुरुगन ने कहा।
क्लर्क ने धीरे-धीरे अपने हाथ फैलाए और वह कागज का टुकड़ा दिखाया जिस पर सोनाली ने अभी-अभी हस्ताक्षर किए थे।
'श्रीमती अराटूनियन ने तुम्हें वह कब दिया?' मुरुगन ने पूछा। 'और क्यों?'
उसने कहा कि अगर कोई उन्हें बताने के लिए यहां आया तो...
'उन्हें क्या बताऊं?'
क्लर्क ने छोटी सी पर्ची को ध्यान से देखा। उसने कहा, 'उसमें लिखा था कि वह साढ़े आठ बजे सियालदह से रेनूपुर जाने वाली ट्रेन पकड़ने वाली है।'
'क्या!' मुरुगन चिल्लाया। 'जल्दी बताओ: अभी क्या समय हुआ है?' क्लर्क की कलाई पकड़कर उर्मिला ने उसकी घड़ी देखी। 'सात बजकर पैंतालीस मिनट,' उसने कहा। 'अगर हमें अभी टैक्सी मिल जाए तो हम शायद समय पर पहुँच जाएँगे।'
उसने क्लर्क का हाथ छोड़ दिया और कहा: 'आपने हमें यह पहले क्यों नहीं बताया?'
'मुझे पता नहीं था,' उसने शर्मिंदा होकर जवाब दिया। 'मुझे लगा कि वह किसी और के बारे में बात कर रही है।'
'कौन?' मुरुगन ने कहा।
'फुलबोनी,' क्लर्क ने कहा।
'फुलबोनी!' सोनाली चिल्लाई।
'जी हां,' क्लर्क ने कहा। 'स्वयं फुलबोनी। महान लेखक; वे अभी कुछ देर पहले ही यहां आए थे। उन्होंने बताया कि कल रात बहुत देर से कोई उनके घर गया था और एक नोट छोड़कर गया था जिसमें उन्हें यहां आने के लिए कहा गया था। देखिए...'
उसने कागज़ पलटा और एक और हस्तलिखित हस्ताक्षर की ओर इशारा किया।
मुरुगन दरवाजे की ओर बढ़ा। उसने उर्मिला से कहा, 'चलो, जल्दी चलें।'
उर्मिला और सोनाली दौड़ती हुई उसके पीछे गईं, जिससे क्लर्क कुछ पल के लिए अचंभित रह गया। वे आधी सीढ़ी उतर चुकी थीं कि उसने सीढ़ियों के ऊपर झुककर उन्हें पुकारा: 'मैडम... मेरा निमंत्रण...' कोई जवाब नहीं मिला।
सीढ़ियों के नीचे पहुँचकर उर्मिला एक पल के लिए रुकी, ताकि साँस ले सके। हाँफते

हुए उसने कहा, 'सोनाली दीदी, आप हमारे साथ क्यों आ रही हैं? आपको आने की ज़रूरत नहीं है।' सोनाली खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसने कहा, 'ज़रूर आ रही हूँ।'
'लेकिन क्यों?' उर्मिला ने कहा। 'आपको इस धंधे के बारे में कुछ भी नहीं पता।'
'ऐसा कुछ है जो तुम भी नहीं जानती,' सोनाली ने कहा। 'क्या?'
'वह फूलबोनी मेरे पिता हैं,' सोनाली ने कहा। 'फूलबोनी और रोमेन के चले जाने के बाद मैं यहाँ क्यों रहूँगी?'
सीढ़ियों से एक चौंकी हुई चीख सुनाई दी। क्लर्क की आवाज धीमी थी, 'हे भगवान! फूलबोनी आपके पिता हैं, मैडम? हे भगवान! फिल्म सोसाइटी में लोग क्या कहेंगे?' उन्होंने उसके कदमों की आहट सीढ़ियों से नीचे आते हुए सुनी और दौड़कर सड़क पर चले गए।
मुरुगन ने पहले ही एक टैक्सी रोक ली थी। उन्होंने ड्राइवर से कहा, 'जल्दी करो। जितनी जल्दी हो सके, जल्दी करो।'

अध्याय 44

जैसे ही टैक्सी एक मोड़ से मुड़कर पार्क स्ट्रीट की ओर मुड़ी, मुरुगन ने उर्मिला का हाथ पकड़कर उसे अपने हाथों के बीच दबा लिया।
'मैं चाहता हूं कि तुम मुझे कलकत्ता में एक वादा करो,' उसने कहा।
'क्या?' उर्मिला ने कहा। 'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?'
मुरुगन ने उसका हाथ ज़ोर से खींचा। 'मुझसे वादा करो, कलकत्ता,' उसने कहा। 'मुझसे वादा करो कि अगर मैं खुद से पार नहीं जा पाया तो तुम मुझे पार करा दोगी।'
उर्मिला की आंखें चौड़ी हो गईं। 'इसे कहां बनाना है?' उसने कहा।
'जहाँ भी।'
वह जोर से हंस पड़ी और अपना सिर पीछे की ओर झुकाते हुए बोली, 'मुझे नहीं पता कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो।'
'लेकिन फिर भी वादा करो,' मुरुगन ने जोर देकर कहा। 'वादा करो कि तुम मुझे ले जाओगे, भले ही वे मुझे पीछे छोड़ने के लिए कहें?'
उर्मिला ने कहा, 'कोई तुम्हें पीछे क्यों छोड़ना चाहेगा? क्या हुआ है, क्या हो रहा है, यह सिर्फ तुम ही जानती हो। तुमने खुद कहा था कि किसी ने तुम्हारे लिए संपर्क बनाने में बहुत मेहनत की थी।'
'यही तो समस्या है,' मुरुगन ने कहा। 'इसमें मेरी भूमिका बस कुछ कड़ियों को जोड़ने की थी ताकि वे भविष्य में कभी भी इस पूरे पैकेज को एक साफ-सुथरे बंडल में उस व्यक्ति को सौंप सकें जिसका वे इंतजार कर रहे हैं।'
और आपको कैसे पता कि वे आपका ही इंतजार नहीं कर रहे थे?
'यह मैं नहीं हो सकता,' मुरुगन ने स्पष्ट स्वर में कहा। 'देखिए, उनके लिए ज्ञान के अत्याचार से बचने का एकमात्र तरीका है उसे ही अपने विरुद्ध इस्तेमाल करना। लेकिन इसके लिए उन्हें खोज का एक ऐसा आदर्श क्षण बनाना होगा जब खोज करने

वाला ही वह हो जिसकी खोज की जा रही है। मेरे साथ समस्या यह है कि मैं बहुत अधिक भी जानता हूँ और बहुत कम भी।'
'लेकिन फिर वो कौन है?' उर्मिला ने कहा।
'काश मैं आपको बता पाता,' मुरुगन ने कहा। 'लेकिन मैं नहीं बता सकता। वास्तव में, यह प्रश्न मुझे आपसे ही पूछना चाहिए।'
'तुम्हारा क्या मतलब है?' उर्मिला ने कहा।
'तुम्हें अब भी समझ नहीं आया?' मुरुगन ने अफसोस भरी आधी मुस्कान के साथ उससे पूछा।
'नहीं,' उर्मिला ने कहा। 'मुझे नहीं पता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं।'
मुरुगन ने उसकी आँखों में देखा। 'क्या तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा?' उसने कहा। 'तुम ही हो जिसे उसने चुना है।' उर्मिला चौंक गई। 'किसलिए?'
'अपने लिए।'
अचानक, उर्मिला को चौंकाते हुए, मुरुगन घुटनों के बल बैठ गया और पिछली सीट की तंग जगह में खुद को समेट लिया। झुककर उसने अपना माथा उर्मिला के पैरों से छुआया। 'मुझे मत भूलना,' उसने उससे विनती की। 'अगर तुम्हारे बस में कहानी बदलने की शक्ति है, तो मुझे भी शामिल कर लो। मुझे पीछे मत छोड़ो। प्लीज़।'
उर्मिला हंस पड़ी। उसने उसके सिर पर हाथ रखा और सोना-ली के कंधों पर बांह डाल दी। 'चिंता मत करो,' उसने कहा। 'मैं तुम दोनों को अपने साथ ले जाऊंगी, जहाँ भी जाऊंगी।'
फिर उसकी नजर टैक्सी ड्राइवर पर पड़ी, जो सीट के पीछे से गर्दन झुकाकर कामुक मुस्कान बिखेर रहा था।
'और तुम सड़क पर ध्यान रखो,' उसने झल्लाकर कहा। 'इसका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है।'

अध्याय 45

'लगता है तुम्हें मैं याद नहीं हूँ, है ना?' मुखिया ने अंटार से कहा। 'थाई रेस्टोरेंट वाला तुम्हारा पुराना दोस्त?'
'मुरुगन!' अंतर चिल्लाया।
'तुमने सही कहा,' मुरुगन ने कहा। 'यह मैं ही हूँ।'
'क्या सचमुच तुम ही हो?' अंतर ने कहा।
'बिल्कुल,' मुरुगन ने कहा। 'मैं आपसे संपर्क करने के लिए लंबे समय से इंतजार कर रहा था। मुझे लगा था कि पहचान पत्र जितना जल्दी कुछ और नहीं हो सकता।'
'लेकिन लोग तुम्हें सालों से ढूंढ रहे हैं,' अंटार ने कहा। 'तुम कहाँ थे?'
'मैंने तुमसे यह पहले भी पूछा है,' मुरुगन ने कहा। 'और मैं फिर से पूछ रहा हूँ। क्या तुम वाकई जानना चाहते हो?'
'हां,' अंतर ने कहा।

'ठीक है, एंट,' मुरुगन ने हंसते हुए कहा। 'यह तुम्हारी मौत है। पता लगाने के लिए तुम्हें बस वह गैजेट उठाना है जो वहां रखा है।'
शरीरविहीन ठुड्डी ने अंटार के एक साथ दृश्यीकरण वाले हेडगियर की दिशा में हिलना शुरू कर दिया।
'तुम्हारा मतलब है कि यह वहाँ है?' अंटार ने हांफते हुए कहा। 'लेकिन ऐसा हो ही नहीं सकता: किसी की भी वहाँ पहुँच नहीं है...'
'लगता है हमने सही समय पर कदम रख दिया,' मुरुगन ने कहा। 'खैर, सब कुछ वहीं मौजूद है, बस आपको बटन दबाना है।'
धीरे-धीरे और सावधानी से, अंतर ने सिर पर पहनने वाला कवच उठाया, उसे पहना और विज़र को अपनी आँखों के सामने ठीक से लगा दिया। उसने एक बटन दबाया और अचानक एक आदमी एक चौड़ी सड़क पर, एक धूसर गिरजाघर के बगल में चलता हुआ दिखाई दिया। उसने खाकी रंग की पतलून और हरी बेसबॉल टोपी पहन रखी थी। वह मुरुगन था। वह रुका और पीछे मुड़कर देखा: हरे-भरे मैदान में काले, खतरनाक बादल मंडरा रहे थे। एक मिनीबस तेज़ी से गुज़री और एक गड्ढे से पानी की एक फुहार उठी। मुरुगन भागने लगा।
अंतर ने त्रि-आयामी छवि के निचले भाग में 'रूपांतरण का समय' प्रॉम्प्ट पर एक सरसरी नज़र डाली। उसमें शाम 5:25 बजे का समय लिखा था। अंतर चौंक गया: इसका मतलब केवल यही हो सकता है कि किसी ने सिम विस सिस्टम को लगभग उसी समय लोड करना शुरू किया होगा जब अवा को मुरुगन का पहचान पत्र मिला था।
मुरुगन एक बड़े सभागार की लॉबी में खड़े थे और दो महिलाएं सीढ़ियों से ऊपर दौड़ती हुई आ रही थीं। वे पास आईं और अचानक अंतर ने तारा को पहचान लिया, सिवाय इसके कि उसने साड़ी पहनी हुई थी। वह मारिया से बात कर रही थी, जिसने भी साड़ी पहनी हुई थी।
उसे अपने कंधे पर एक ठंडा, कोमल स्पर्श महसूस हुआ और उसका हाथ सिम विस हेडगियर उतारने के लिए ऊपर उठा। लेकिन अब उसकी कलाई पर एक मज़बूत हाथ थामे हुए था, और उसके कान में एक आवाज़ गूंजी, तारा की आवाज़, फुसफुसाते हुए: 'देखते रहो; हम यहीं हैं; हम सब तुम्हारे साथ हैं।'
अब हर तरफ आवाजें गूँज रही थीं, उसके कमरे में, उसके दिमाग में, उसके कानों में, ऐसा लग रहा था मानो लोगों की भीड़ उसके साथ कमरे में मौजूद हो। वे कह रहे थे: 'हम तुम्हारे साथ हैं; तुम अकेले नहीं हो; हम तुम्हें पार करा देंगे।'
वह पीछे झुककर बैठ गया और उसने ऐसी आह भरी जैसे उसने सालों से न भरी हो।

आभार

मैं कोलंबिया विश्वविद्यालय के कंप्यूटर विज्ञान विभाग के राज कुमार राजेंद्रन का कुछ विशेष विवरणों पर उनके परामर्श के लिए अत्यंत आभारी हूं। मैं न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय चिकित्सा केंद्र के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग की अल्का मनसुखानी का विशेष रूप से ऋणी हूं: उनके विचार और सहयोग इस पुस्तक के लेखन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थे।